

डॉ. पांडे (गिताली) भंडार

23-24

अनंत प्रभा

नौ दशकों की स्वरयात्रा



Anant Prabha : Nine Decades of Musical Journey

in honour of Dr. Prabha Atre's contributions on her 90th birth year
compilation of critically evaluated articles in English, Hindi & Marathi

KE-2-9-23

नवनिर्मित रागों का सौंदर्यपूर्ण आविष्कार

भारतीय संगीत के क्षेत्र में किगना घग्ने की प्रतिभा मंगत्र वाग्गुनम गायिका, तपस्वी एवं परिपक्व ज्ञान से समृद्ध कलाकार पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रेजी अपने जीवन की नवदशपूर्ती कर रही हैं। उनको शत-शत प्रणाम तथा हृदय में बहुत सारी शुभकामनाएँ।

संगीत जगत में प्रभाजी का जो स्थान है, सम्मान है, वह उनके कर्तृत्व के कारण है। अपनी अथक एवं निरंतर स्वरलक्ष्मी साधना से यह कृतीत्व उन्होंने स्थापित किया है, स्वयं को मिद्ध किया है और यह मान-सम्मान पाया है। प्रभाजी की विशेषता यह है कि उनको संगीत से जुड़े विविध क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिला। इन सभी क्षेत्रों में उन्होंने संगीत का जो अनुभव किया उस पर उन्होंने गहन चिंतन किया। उसके कारण उनका आविष्कार क्षेत्र भी विस्तृत होता गया, साथ ही संगीत से जुड़ी अन्य बातों की ओर भी उनका ध्यान आकर्षित हुआ। अपने चिंतनशील स्वभाव के कारण उन बातों पर भी विचार करके उसमें कृतिशील योगदान दिया। इसी वजह से उनका कार्यक्षेत्र बहुआयामी हुआ है।

अपनी स्वतंत्र गायन शैली, ५५० से अधिक बंदिश रचनाएँ तथा नवनिर्मित राग, यह उनकी मंच प्रदर्शन के क्षेत्र में अमूल्य देन है।

अपने गुरु स्व. सुरेशबाबू मानेजी से उनको अल्प समय तक शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। इस अल्पावधि में उनसे चार-पाँच राग ही वह सीख पाई। केवल यमन की ही तालीम गुरुजी ने उन्हें दीर्घकाल (एक साल) तक दी। लेकिन सही मायने में इस एक साल की यमन की तालीम में ही गुरुजी ने संगीत साधना के सारे मार्ग उनके सामने खोलकर रख दिये, जिसके कारण वह अपना मार्ग खुद चल सकीं और अपनी अलग पहचान बनाने में कामयाब हो सकीं। उनके गुरुजी ने उन्हें अनवट या अप्रचलित राग नहीं सिखाये, क्योंकि उनका मानना था कि, जो राग श्रोताओं को परिचित हैं, उन्हें मालूम है, उन रागों में ही कुछ नया और रंजक करते आना चाहिये। यही कलाकार की विशेषता है।

यही बात ध्यान में रखते हुए उन्होंने प्रचलित रागों से ही अधिकतर नये रागों का आविष्कार किया।

राग स्वरूप आकर्षक बनाने के लिये रियाज़ करते समय कुछ नाविन्यपूर्ण स्वरसंगतियाँ, स्वर लगाव कलाकार खोजता रहता है। इस खोज में कुछ स्वरसंगतियाँ ऐसी भी मिलती हैं जिसमें राग बनने की क्षमता होती है। इन स्वरसंगतियों से राग निर्मिती का सफ़र कलाकार के लिए एक चुनौती के जैसा होता है। स्वरसंगति से राग बनने तक कलाकार को निरंतर चिंतन, मनन द्वारा उस पर विचार करना पडता है। वह राग स्वरूप आकर्षक तथा रंजक भी हो, इसका भी ध्यान रखना पडता है। तभी वह श्रोताओं को अच्छा लग सकता है तथा अन्य गायक भी उसे गाने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

राग निर्मिती के पश्चात् रागाविष्कार का प्रधान साधन बंदिश ही है। बंदिश की सहायता से तथा अविष्कार के माध्यम से कलाकार राग स्वरूप खोजता रहता है। सांगीतिक सामग्री से रागाविष्कार करते हुए बंदिश ही कलाकार को राग विस्तार की दिशा दिखाती है जिसको हम 'बंदिश के अंग से

अनंत प्रभा : नौ दशकों की स्वरयात्रा

अनंत प्रभा : नऊ दशकांचा सांगीतिक प्रवास

Anant Prabha : Nine Decades of Musical Journey

C Dr. Prabha Atre Foundation

Address : 1206-B/16; off J.M. Road, Shivajinagar, Pune - 411 004

e-mail : drpafoundation@gmail.com

बुकगंगा पब्लिकेशन्स

बुकगंगा इंटरनेशनल बुक सर्व्हिस,

डेक्कन जिमखाना पोस्ट ऑफिसजवळ, पुणे ४११ ००४

Mobile No. : +91 8888 300 300

e-mail : bookganga@myvishwa.com

Website : www.BookGanga.com

प्रकाशक : मंदार मोरेश्वर जोगळेकर, सुप्रिया सुनील लिमये

निर्मिती : टीम बुकगंगा

मुखपृष्ठ : ओंकार कोटकर

संपादन : आरती नायर

आवृत्ती : पहिली, मंगळवार, १२ सप्टेंबर २०२३

मूल्य : ₹ 499/-

ISBN : 978-93-92803-32-1

या पुस्तकातील गते, घटना, वर्णने, चित्रे, ही त्या लेखकाची असून त्याच्याशी प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. तसेच या पुस्तकातील कोणता मजकूर, कोणत्याही स्वरूपात वा माध्यमात पुनःप्रकाशित अथवा संग्रहित करण्यासाठी लेखकाची व प्रकाशकांची पूर्वपरवानगी घेणे आवश्यक आहे.

मिनाली मसु
23-24

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XII

Issue - II

March - August - 2024

MARATHI PART - II

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

Single Blind Review/Double Blind Review



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2023 - 7.537

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

❧ CONTENTS OF MARATHI PART - II ❧

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
२४	उत्तर हिंदुस्थानी संगीतामधील विविध मराठी ग्रंथातील 'लोकसंगीत' या विषयाची चिकित्सक मिमांसा (कालखंड २००१ ते २०१०) प्रा. वैशाली एस. चोरपगार (मोहोड)	११७-१२६
२५	आधुनिक काळातील संगीतातील बदल एक दृष्टिक्षेप सहा. प्रा. यंदना इंगोले	१२७-१३१
२६	पाली साहित्यातील थेरीगाथा ग्रंथातील पुष्पिकाथेरीचा सामाजिक विचार प्रा. डॉ. बंडू एस. मानवटकर	१३२-१३७
२७	ग्रामीण महिलांच्या समस्या व त्यावर उपाय प्रा. सौ. राजश्री अशोक राठोड (पवार)	१३८-१४३
२८	अमरावती जिल्ह्याचा सांस्कृतीक इतिहास Pratibha Shirsat	१४४-१४७
२९	संत ज्ञानेश्वरांचे विश्व कल्याणासाठी कार्य व सांगीतिक व्यासंग राधिका चंद्रकांतराव शिगेदार प्रा. डॉ. मनोजकुमार धों. देशपांडे	१४८-१५४
३०	निरामय संगीत समिक्षा तत्त्वे डॉ. गीताली शरद पांडे	१५५-१५९
३१	तंत्रज्ञान आणि शास्त्रीय गायन ... प्रा. डॉ. राहुल काशिनाथराव एकबोटे	१६०-१६२

३०. निरामय संगीत समिक्षा तत्त्वे

डॉ. गीताली शरद पांडे

प्राचार्य, कला महाविद्यालय, मलकापूर, अकोला.

श

संगीत समीक्षा हे दुधारी शस्त्र आहे. संगीत समीक्षेचा उद्देश जाणकार श्रोत्याने संगीताचा रसास्वाद किंवा रसग्रहण कसे करावे, योगे सामान्य संगीत श्रोत्याची संगीत विषयक जाणीव वाढवावी आणि सोबतच कलाकाराला नवनिर्मितीचे बळ आणि झालेल्या निर्मितीचे जाणकाराच्या नजरेतून (कानातून?) मूल्यमापन व्हावे हा आहे. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये वर्तमानकालीन संगीत समीक्षेचे रूप आणि अपेक्षा या संदर्भात चर्चा केली आहे.

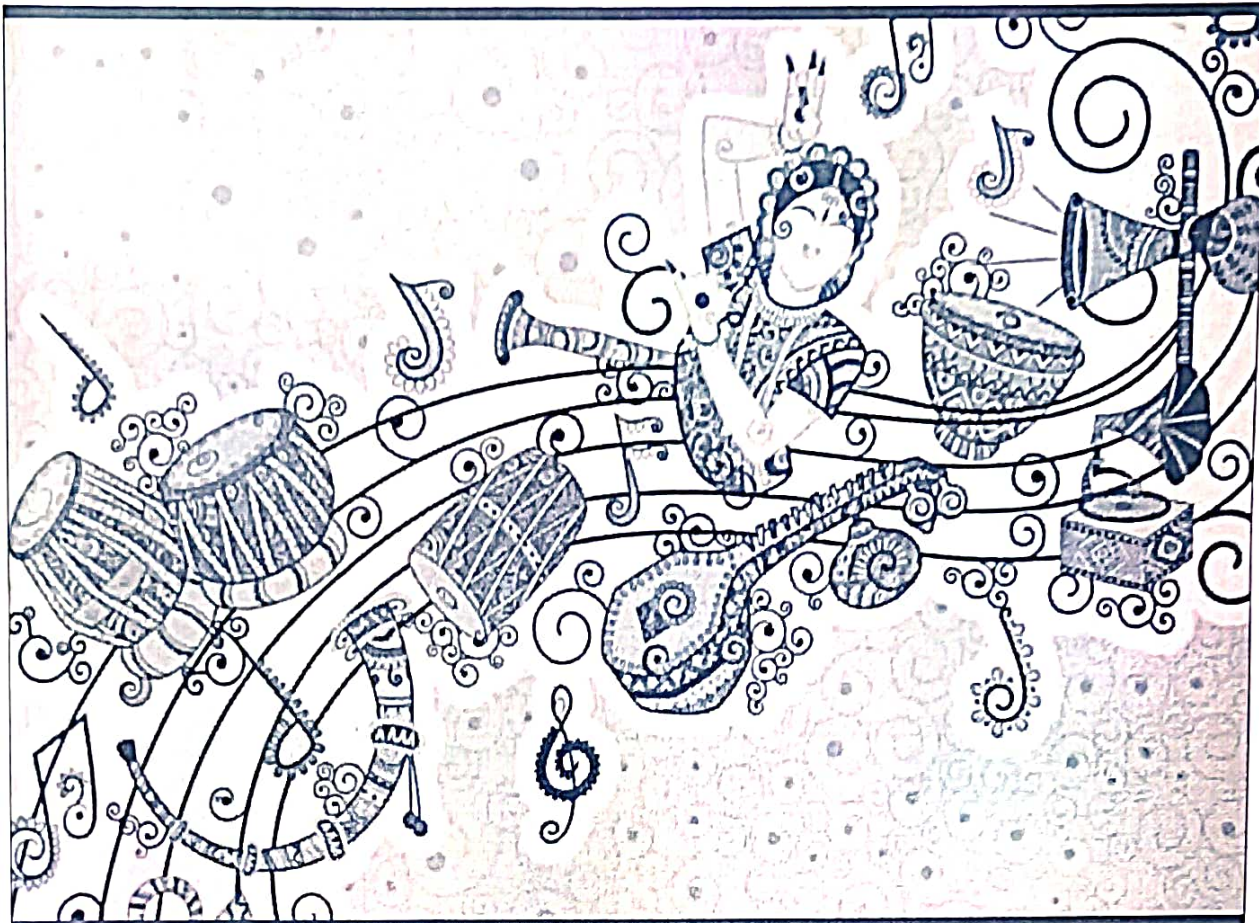
तावना

तंत्रज्ञानातील प्रगतीमुळे सगळ्या गोष्टींची उपलब्धता सहज शक्य झाली आहे. कुठलीही माहिती, व्यक्ती, संस्था, कला, तत्त्वे आणि ईतर बऱ्याच बाबींची माहिती आपल्याला अगदी कमी वेळात उपलब्ध होऊ शकते. संगीत संबंधित वेगवेगळे लाकार, त्यांनी गायलेले, वाजवलेले राग, त्यांच्या इतर सांगीतिक कलाकृती, संगीता बदल असलेली त्यांची मते ई. विषयीची माहिती आपणास हवी तेंव्हा मिळू शकते.

परंतु मागे वळून पाहतांना असे लक्षात येते कि मागच्या दोन-चार दशकांपूर्वी परिस्थिती फार वेगळी होती. तंत्रज्ञान वेगळीत होत होते परंतु आज इतके ते प्रगत नव्हते. त्यामुळे कुठल्याही कलाकाराची, त्याच्या कलाकृतीची, संगीत विषयक माहितीची अथवा कलाकारांच्या मैफलींची माहिती होण्यासाठी वृत्तपत्रांवर अवलंबून राहावे लागत असे. त्यातही संगीत साहित्यिक, श्रोता हा संगीत श्रवणाचा भुकेला असतो. त्यामुळे एखाद्या मैफलीस त्याला उपस्थित राहता येऊ शकले नाही, तर तो त्या मैफलीच्या समिक्षणावरून स्वतःच कुतूहल शमवित असे. इथेच संगीत समीक्षकाची भूमिका महत्त्वपूर्ण ठरत असे / ठरते. कारण जो श्रोता मैफलीत अनुपस्थित असेल त्यावेळेस तर मैफलीचा आनंद किंवा कलाकाराच्या कला प्रदर्शनाचा आस्वाद तो समीक्षेच्या माध्यमातून घेण्याचा प्रयत्न करतो, या गोष्टीची जाणीव समिक्षकाने ठेवावी. म्हणून समीक्षकाचे कला समीक्षण हे केवळ रसिकाच्या भूमिकेतून होणे आवश्यक आहे. कुठल्याही कलाविष्काराचा अविभाज्य भाग असलेला श्रोता व समीक्षक जाणता असल्यास त्या मैफलीतून कलाकार आणि श्रोत्याला निरामय आनंद मिळू शकतो. कुठल्याही संगीत मैफलीच हेच उद्दिष्ट असतं. मैफलीतला हा निरामय आनंद डोळ्यासमोर ठेउन पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रे यांनी निरामय संगीत समिक्षेसंदर्भात काही विचार त्यांच्या सुस्वराली या पुस्तकात मांडले आहेत. विशेष म्हणजे हे विचार त्यांनी समकालीन गायकांच्या सोबत वेळोवेळी चर्चा करून मांडले आहेत. त्यांचे हे विचार म्हणजे कलाकाराच्या कलाकृतीकडे बघण्याची दृष्टीच आपल्याला यातून मिळते, असे म्हणणे वावगे ठरणार

शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप

MODERN FORM OF PRESENTATION
OF CLASSICAL MUSIC



Dr. Rahul Swarnkar
Editor

पिंड
मसा

23-21

सं. क्र.	शीर्षक	लेखक	पेज नं.
1.	शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप	(प्रो.) लावण्या कीर्ति सिंह 'काव्या'	2-4
2.	ख्याल गायन प्रस्तुति में निहित भक्तितत्त्व	डॉ. श्रीमती गीताली पांडे	5-7
	ध्रुवतार वादन शैली पर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ० सुमित्रा देवीचौहान	8-10
	आगरा घराने गायकी की अन्तर्धाराएँ	डॉ. भागवतलहुयुवाढोले	11-16
	रागभेदिनिहितसामान्य एवंविशेष लक्षणों की व्याख्या :-उद्भव एवंविकास	कौशल मेहरा	17-22
	विभिन्न घरानों में प्रस्तुतियों का आधुनिक स्वरूप (कथक नृत्य के विशेष संदर्भ में)	Vishakha Tiwari	23-25
	"मेहर" घराने में वादन प्रस्तुतिकरण	डॉ. शितलमोरे	26-32
	तबला स्वतंत्र वादन में आए आधुनिक बदलाव	डॉ.वेणुवनिता	33-36
	शास्त्रीय संगीत का आधुनिक प्रस्तुतिकरण: स्वरूप और प्रभाव	डॉ. मोहिनी शुक्ला	37-41
	संगीत विषय का अन्य विषयों के साधसह-सम्बन्ध	लोकेश कुमार जोशी	42-46
	राजस्थान का वर्तमान लोक संगीत	किरण डॉंगी	47-51
	संख्या और स्वर का सामंजस्य-संगीत एवं गणित का सम्बन्ध	डॉ. पूनम शर्मा	52-56
	संगीत और संस्कृत का घनिष्ट संबंध	Dalerkaur	57-59
	आधुनिक भारतीय रंगमंचमेंसंगीत की भूमिका नाट्य शास्त्र परंपरा की निरंतरता	डॉ. मनीष बोहरे संगीत श्रीवास्तव	60-62
	संगीत में लय और लयकारी	प्रियेश कुमार पाण्डेय	63-69
	आधुनिक प्रस्तुतिकरण मेंतकनीक एवं नवाचार का प्रभाव	हनी राजोरिया डॉ. यक्षिता भट्ट	70-72
	शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरूप:प्राचीन से वर्तमान तक	अखिलेश अहिरवार स्व. प्रो. डॉ. रंजना टोणपे	73-76
	परंपरागत शैली तथा नवाचार के प्रयोगों के माध्यम से ताल वाद्य यंत्रों की संगीत में भूमिका	विभा सिंह	77-79
	'संगीत संकटमोचन है' (संगीत तथा अन्य विषयों का अंतः संबंध)	डॉ.यतीन कुमार चौबीसा	80-83
	तबला वादन के निहित सौंदर्य (लय, गणितीय, नाद, निकास सौंदर्य तत्वोका परस्पर संबंध)	श्रीपाद प्रदीप शिवल कर	84-87
	आधुनिक संस्थाओं में संगीत शिक्षण की समस्याएँ	दीपक कुमार द्विवेदी प्रो (डा०) रुचिमिता पाण्डे	88-89

ख्याल गायन प्रस्तुति में निहित भक्तितत्व

डॉ. श्रीमती गीतालीपांडेप्राचार्य,
कलामहाविद्यालय, मलकापुर अकोला

सारांश—:

जब कोई गायक अपनी कला का प्रदर्शन करता है तो उसकी अभिव्यक्ति स्वर के माध्यम से होती है। जब हम कोई रागप्रदर्शितकरतेहैंतोहम उस राग के स्वरों का चिंतनप्रस्तुतकरतेहैं। उस रागमेंकौन से स्वर हैं? इसमेंकौनसीस्वरसंगतीयाँ हैं? रागरक्ति बढ़ानेहेतू स्वर औरस्वरसंगतीयोंकोरोचकढंग से कैसेप्रस्तुतकियाजासकताहै? इस दृष्टिकोण से गायकस्वरों का चिंतनप्रस्तुतकरताहै। इस कारणहमउसेसांगीतिकस्वरचिंतन कह सकतेहैं। लेकिनआजहम शास्त्रिक चिंतन करने जा रहे हैं। शास्त्रिक चिंतन का अर्थहैकिकलाकारजोकल्पनाप्रस्तुतकरताहैवहकिसीविशिष्टविचार से प्रेरितहोतीहै। इस विचारकोहि यहाँप्रस्तुतकरने का प्रयासकररहीहूँ।

सांकेतिक शब्द—: प्रस्तुतीकरण, शास्त्रीय संगीत एवंईश्वरआराधना

संशोधन की आवश्यकता—: वर्तमानसमयमेंसबकोमानसिक समाधान, मानसिक शान्तिकीअत्याधिकआवश्यकतामहसूसहोरहीहैं। भौतिकविषयोंसे यह शांतिनहीं मिल सकतीहै। लेकिनसंगीत के माध्यमसेइसकीपूर्तिहमकुछमात्रामेंभलीभाँतिकरसकतेहैं।

उद्देश्य —: भारतीय संगीतकी समृद्ध परंपराहीहैं। प्राचीनकालसेवर्तमान समय तकसंगीत का सफर इस शोध पत्रमें अधोरेखितकरनेकाप्रयासकियाहै। इसमेंसंगीतप्रस्तुतिकीदो धाराओंकावर्णनकियाहै, जिससेस्नातकोंकोइससेअवगतकियाजासके।

उपयोगिता—: संगीत के प्रस्तुतिकरणकीदो धाराओंकेहेतु की जानकारीहोजानेपरइसकाउपयोगकैसेकरसकतेहैंइसकानिर्णय स्नातककरसकतेहैं।

संशोधनपद्धति—: इस शोधपत्रिका के लिए ऐतिहासिक शोध प्रणाली का उपयोगकियाहै।

मुख्य विषय —:

जबकोईकलाकारअपनीकला का प्रदर्शनकरताहैतोवहकितना तय्यारहै? वहक्याऔरकौनसीबातेंअभिनवतरीके से प्रस्तुतकरसकताहै?, वहअन्य शैलियोंकोअधिकरोचकढंग से कैसेमिश्रितकरसकताहै?, या श्रोताओंकोक्यापसंदआएगा?, कितना समझेगा? आदिइसकेपीछे कई दृष्टिकोणहोसकतेहैं। लेकिनजैसे—जैसेकलाकार का स्वर—चिंतनपरिपक्वहोनेलगताहै, वहकेवलस्वरों से प्राप्तआनंद के लिए गाताहै। इन सबके पीछेउद्देश्य या प्राथमिकतारागरक्ति, रंजकताको बढ़ानाहैक्योंकि'रंजकोजनचित्तानां'हीरागसंगीत का अंतिम लक्ष्य है। साथहीसंगीतईश्वर के समीपजाने का रास्ताहै, यह दृष्टिकोणभीसंगीतप्रस्तुती के पीछेहै। इस प्रकारहमसंगीत के इतिहासमेंकलाप्रदर्शन के दो दृष्टिकोण, दो धाराएँ देख सकतेहैं। 1) मार्गीसंगीत 2) देसीसंगीत ये दो धाराएँ हैं। यज्ञादिवैदिकअनुष्ठानोंमें यज्ञ करनेहेतुमार्गीसंगीत का प्रयोगकियाजाताथा। क्योंकिसंगीत की उत्पत्तिहीसामवेद से हुईहै। चारवेदोंमें से ऋग्वेदज्ञानप्रधानहैय यजुर्वेदकर्म प्रधानहै, अथर्ववेद शक्ति प्रधानहैऔरसामवेदभक्ति प्रधानहै। गंधर्ववेदजोमुख्य रूप से संगीत से संबंधितहै, सामवेद का ही एक उपवेदहै। दुसरी धारादेशीसंगीतहै। इसे सार्वजनिकमनोरंजन के लिए प्रदर्शितकियाजाताहै। वैदिककालमेंमुख्य रूप से वरुण, इंद्र, सूर्य, ॐ—कारआदि के उपासनाओंका प्रचलनथा। इन्हींदेवताओं की स्तुतिमेंसूक्त (अर्थात् आज की भाषामेंस्तोत्र) की रचना की गई। यह सूक्त छंदबद्ध है, गेय है। इसकामतलबहैकिवहगासकतेहैं। जैसे—:

"आज्ञा एवं याहिवितयेर्गानोहव्यतये। नी होतासतसिबर्हिषी"
"तद्वोगाय सुतेसचापुरुहूताय सत्वने, शं यद्गवे न शाकिने। .."

देसामुख मसुदा

23-24

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XII

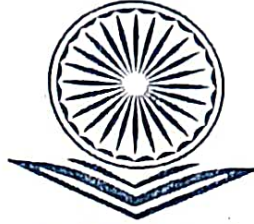
Issue - II

March - August - 2024

MARATHI PART - II

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

Single Blind Review/Double Blind Review



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2023 - 7.537

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

IRT
- 2024

10 m
20

one

cc
A. D. M.

T.

CONTENTS OF MARATHI PART - II

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१३	वै. रामराव देशमुख यांचे कृषी व सहकार विषयक विचार श्री. अमोल भाऊरावजी वंड	५३-५८
१४	संवादिनीचा विकास व आधुनिक काळात संवादिनीच्या प्रचारात पंडित आप्पासाहेव जळगावकर यांचे योगदान चंद्रमणी मोतीराम मोहोड प्रा. डॉ. मनोजकुमार धों. देशपांडे	५९-६२
१५	आधुनिक संशोधन पद्धती डॉ. प्रा. गणेश श्यामराव वोरकर	६३-६८
१६	भारतीय सामाजिक विज्ञान संशोधन आणि अलीकडील विकास डॉ. जया वजीरे	६९-७८
१७	आधुनिक मराठवाड्याच्या संगीत विकासात गानमहर्षी डॉ. अण्णासाहेव गुंजकर यांचे योगदान डॉ. मनोजकुमार घोंडोपंत देशपांडे	७९-८७
१८	संत ज्ञानेश्वरांचे विश्व कल्याणसाठी कार्य व सांगीतिक व्यासंग राधिका चंद्रकांतराव शिगेदार प्रा. डॉ. मनोजकुमार धों. देशपांडे	८८-९४
१९	मराठी भाषेचा वाल-मणावर होणारा परिणाम सायली रमेश पखाले अनिल दडमल	९५-९७
२०	आजची जिवनशैली आणि आहार प्रा. डॉ. श्यामली जा. दिघडे	९८-१०२
२१	संगीतातील संशोधन पद्धती सुमित श. वानखडे	१०३-१०८
२२	अभिनय सौंदर्य प्रधान तुमरी गायकी प्रा. डॉ. शाडेश्वर सं. मदनकर	१०९-११२
२३	साहित्य आणि मराठी संगीत गीत प्रकारांचा संबंध प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख	११२-११६

२३. साहित्य आणि मराठी संगीत गीत प्रकारांचा संबंध

प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख

संगीत विभाग, कला महाविद्यालय, मलकापूर, अकोला.

प्रस्तावना

साहित्याला पूर्वी वांगमय म्हणून संबोधले जात असे याच वाङ्मयामध्ये गद्य, पद्य आणि गद्य-पद्य-मिश्र शैलीचा अंतर्भाव सांगितला गेला आहे. या शैलीमध्ये विविध प्रकारचे काव्य रचले गेले आहे. हे काव्य तत्कालीन काळामध्ये समाजाच्या गरजेनुसार निर्माण झालेले असायचे यामध्ये समाजाच्या हितासाठी समाज प्रबोधन, मनोरंजन, विविध भावनातील गुणगण, प्रेरणा, छमाह अशा सर्व गोष्टी महत्त्वपूर्ण होत्या. याच्या अंतर्गत आरती, ओवी, अभंग, भारुड, लावणी, पोवाडा यासारखे विविध काव्यप्रकार येतात. ज्यांना संगीतात मराठी सांगीतिक गीत प्रकार म्हणून ओळखले जाते. हे गीत प्रकार लोकसंगीत तत्वांशी संबंधित असतात. ज्यांचा संबंध साहित्याशी असलेला दिसून येतो. प्रस्तुत संगोधन विषयामध्ये साहित्यातील काव्यप्रकार आणि मराठी सांगीतिक गीत प्रकार यांचा परस्पर संबंध प्रस्तुत करण्याचा प्रयत्न करण्यात आला आहे.

संगोधन विषयातील मुख्य शब्द

विविध साहित्य प्रकार, लोकसंगीत तत्व, आणि मराठी सांगीतिक गीत प्रकार. संगोधन उद्देश = प्राचीन काळामधून मराठी साहित्यामध्ये विविध काव्यप्रकार अंतर्भूत आहे. या काव्यांमध्ये अंतर्भूत विविध संगीतातील तत्व आहे आणि ते विविध पारंपरिक गीत प्रकारांच्या नावाने ओळखले जातात. ते साहित्य आणि ते लोकसंगीतप्रकारांशी कसे संबंधित आहे हे विविध सांगीतिक गीत प्रकारातून मांडण्याच्या उद्देशातून प्रस्तुत शोध विषयाला निवडण्यात आले आहे.

संगोधन पद्धती

प्रस्तुत संगोधन विषयासाठी ऐतिहासिक पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला आहे या संगोधन पद्धतीमध्ये भूतकालीन साहित्य संगीत घटना प्रसंग यांचा अभ्यास केला जातो आणि संगोधन विषयामध्ये निवडण्यात काव्यप्रकार हे प्राचीन साहित्यातील आहेत आणि या काव्य प्रकारांना पारंपरिक संगीतातूनच गायले जाते. अशा दोन्ही विषयांचा परस्पर संबंध दर्शविण्याकरिता प्रस्तुत संगोधन पद्धतीची निवड केली आहे.

विषय प्रवेश

साहित्य = साहित्य समाजाची अभिव्यक्ती म्हटल्या जाते याचे साहित्याच्या विविध साहित्यकृती असतात. ज्या काव्य रूपामध्ये बयावयास मिळतात. त्याचे सर्जनशील, ललित किंवा कलात्मक वाङ्मयातील स्थूल वाङ्मयप्रकारांत वर्गीकरण केले जाते. त्यात काव्य हा वाङ्मयप्रकार मोडतो. काही लिखित स्वरूपातून मांडल्या जातात तर काही मौखिक पद्धतीतून जतन करून संबंधित

दशगुप्त मठ

23-24

शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप

संपादक -

डॉ. राहुल स्वर्णकार

सह संपादक -

डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर

सर्वाधिकार- संपादक के अधीन

प्रकाशन वर्ष - 2024

प्रकाशक - एन.डी.पब्लिकेशन, नई दिल्ली

ISBN - 978-81-966424-4-0

शोध पुस्तक में प्रकाशित शोध पत्रों की सत्यता या मौलिकता की जिम्मेवारी संपादक की नहीं होगी इसके लिए लेख के लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

संगीत का अन्य विषयों से संबंध

प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख

कला महाविद्यालय, मलकापूर अकोला
संगीत विभाग

स्तावना

प्राचीन काल से अपनी शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया पृथक पद्धती की रही है, और आज क यह प्रणाली हम सब उपयोग में ला रहे हैं। इस पद्धती में हम सब विभिन्न विषय का अध्ययन करते हैं। जैसे जैसे शिक्षा के स्वरूप का विकास हुआ तो यह विचार सामने आया की सभी विषय में मान तत्व रहता है। वह तत्व ज्ञान का होता है। किसी भी विषय का ज्ञान करने हेतु अगर अन्य विषय की सहायता लि जाये, तो अन्य विषय का अध्ययन लेने में सहायता मिलती है। और इस पद्धती से ज्ञान स्थायी हो सकेगा तथा शिक्षा मनुष्य के व्यक्तित्व का अंग बन जाएगी। अगर किसी विषय को विवरणात्मक बताना है, तो उस विषय से संबंधित नये नये उदाहरण के माध्यम से उस विषय की शिक्षा अच्छी तरह समझाई जा सकती है, और यह गुण बालकों के विषय ग्रहण शक्ती के लिये अत्यंत उपयुक्त होगा। आज ऐसे बहुत सारे विषय हैं, जिनमें संगीत के उदाहरण बताए गए हैं, और कहीं कहीं तो संगीत का सहारा लेकरही सिखाए जाते हैं। प्राचीन काल में भी विषयों की ज्ञान लेने की पद्धती थी। जैसे धर्मशास्त्र दर्शनशास्त्र आदी मात्र आधुनिकीकरण में मनुष्य ने विषय का ज्ञान लिया ऐसे विषयों में भाषा, साहित्य, समाजविज्ञान, शारीरिक विज्ञान, मनोविज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित आदि की मात्रा बतायी जा सकती है। यह सभी विषय अपनी जगह महत्वपूर्ण एवं विकसित हैं। इन्ही विषयों के अंतर्गत प्रस्तुत शोध पत्रिका में संगीत से संबंध किस प्रकार का है वह दिखाने का प्रयास किया गया है।

विषय अंतर्गत महत्वपूर्ण शब्द सुचि संगीत, विविध विषय एवं परस्पर संबंध
संशोधन उद्देश्य ।

संगीत ऐसी कला है जिसमें ध्वनी, भावनाओं को प्रदर्शित करने की भाक्ति, धार्मिकता, संस्कृति को निर्देशित करने की भाक्ति गणितीय पद्धतीसे चलने की क्रिया आवाज का गुणधर्म, संगठन आदि विशयों में सहायता करती है। इस उद्देश्य हेतु प्रस्तुत विशय का चयन किया गया है।

संशोधन पद्धती

प्रस्तुत शोध पत्र के लिये सामाजिक, वैज्ञानिक पद्धती का चयन किया है। संशोधन विषय का संबंध अन्य विषयों से संबंधित होते हुए सभी प्रकार के परिस्थितियों में आये नए नए बदलाव एवं तकनीकी के प्रभाव से संबंधित है।

विषय चर्चा

प्रस्तुत शोध पत्र में संगीत का अन्य विषयों से संबंध बताया गया है। संगीत की बात की जाये तो संगीत यह विषय मानव के मन मस्तिष्क एवं भावनाओं से जुड़ा है। यह मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाता है। इसके अलावा इस विषय के माध्यम से अन्य विषयों को समझाना आसान होता है। इतना ही नहीं नये नये किये गये प्रयोग में संगीत सहाय्यक रूप में सिद्ध हुआ है। इस शोध पत्र में संगीत का साहित्य, सामाजिक विज्ञान, धर्म, भौतिकशास्त्र एवं गणित इन विषयों से संक्षिप्त रूप से संबंध बताया गया है।

**North Asian International
Research Journal of
Social Science & Humanities**



**North Asian International
Research Journal Consortium**

ISSN :2454 - 9827



North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827

Vol. 10, Issue-1

January-202

I.F. : 3.015

Copernicus Value: 57.07

Indian Citation Index

Thomson Reuters ID: S-8304-2016

NAIRJC

A Peer Reviewed Refereed Journal

DOI: 10.5575/nairjssh.2024.10.01.01

PLACE OF TRADITIONAL INDIAN MUSIC IN GLOBALISED WORLD

*DR. SUNIL BABULALJI PATAKE

*Kala Mahavidyalaya, Akola (Malkapur), Tq-Dist Akola Pni. No. 444005 Maharashtra. INDIA
Email - patake.sunil@gmail.com

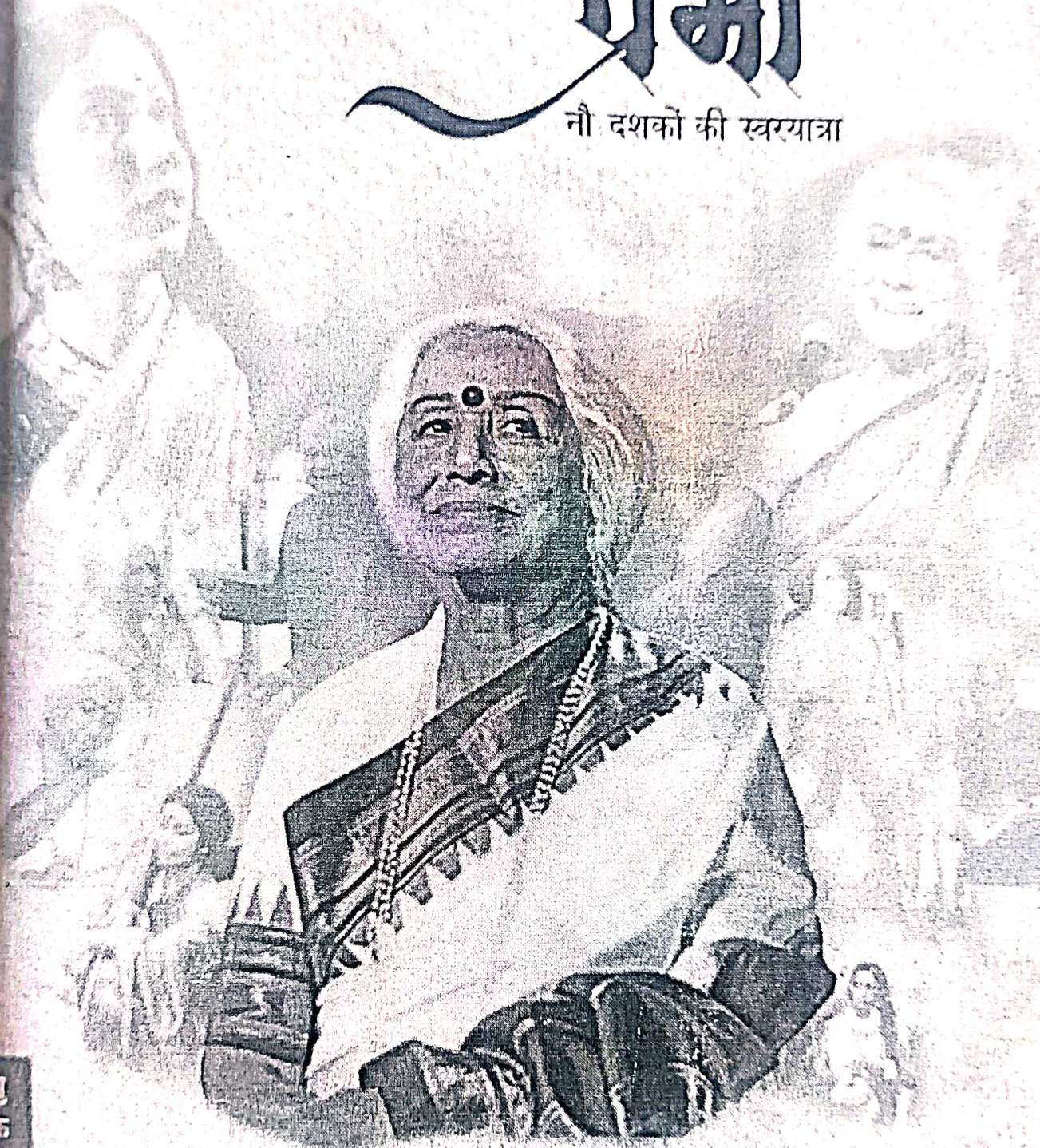
ABSTRACT

This research paper is on "Place of Traditional Indian Music In Globalised world", An area in which important changes were registered in modern globalized India and all over world that of Music education. In almost every attempt in the field was prompted by a desire to institutionalize and globalized training in music. The traditional gurukul paddhati was most important for music education in past time. Institutionalization and globalization of music chiefly explored two avenues, firstly, of creating new institutes solely devoted to music education and secondly, that of creating curricular scope for music in places of higher education, especially the universities. In both the cases, an avowed aim was to bring music in the mainstream of education and thus bestow new social prestige on music and its practitioners. The newly created apparatus of music education invariably led to lying down of a curriculum, preparing of text-book, conducting of examinations and awarding of degrees top successful candidates. The long tradition of music in India had completely broken down by the medieval times. Since then music in India changed so considerably that no correspondence can be found between the musicological texts and the modern practice of music. The fact obviously necessitates restatement of the musicological framework underlying the performing tradition. Themes include morality in culture, the traditional guru shishya parampara, the role of nationalism in twentieth century educational reforms, and the impact of technology in the latter half of the twentieth century. The recognition of emotions in music is related to emotional intelligence. Increasing the amount of classroom music within the curriculum can increase social within class, greater self-reliance, better social adjustment and more positive attitudes, particularly in low ability, disaffected pupils so that the importance of traditional Music and new aspect of globalized world.

KEYWORD: Base of tradition and globalized changes are important for Music.

अनंत प्रभा

नौ दशकों की खरयात्रा



के. ज. भ. ल.

Anant Prabha ; Nine Decades of Musical Journey

In honour of Dr. Prabha Atre's contributions on her 70th birth year
compilation of critically evaluated articles in English, Hindi & Marathi

अनंत प्रभा : नौ दशकों की स्वरयात्रा

अनंत प्रभा : नऊ दशकांचा सांगीतिक प्रवास

Anant Prabha : Nine Decades of Musical Journey

© Dr. Prabha Atre Foundation

Address : 1206-B/16; off J.M. Road, Shivajinagar, Pune - 411 004

e-mail : drpafoundation@gmail.com

बुकगंगा पब्लिकेशन्स

बुकगंगा इंटरनेशनल बुक सर्व्हिस,

डेक्कन जिमखाना पोस्ट ऑफिसजवळ, पुणे ४११ ००४

Mobile No. : +91 8888 300 300

e-mail : bookganga@myvishwa.com

Website : www.BookGanga.com

प्रकाशक : मंदार मोरेश्वर जोगळेकर, सुप्रिया सुनील लिमये

निर्मिती : टीम बुकगंगा

मुखपृष्ठ : ऑंकार कोटकर

संपादन : आरती नायर

आवृत्ती : पहिली, मंगळवार, १२ सप्टेंबर २०२३

मूल्य : ₹ 499/-

ISBN : 978-93-92803-32-1

या पुस्तकातील मते, घटना, वर्णने, चित्रे, ही त्या लेखकाची असून त्याच्याशी प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही. तसेच या पुस्तकातील व मंत्र, कोणत्याही स्वरूपात वा माध्यमात पुनःप्रकाशित अथवा संप्रहित करण्यासाठी लेखकाची व प्रकाशकाची पूर्वपरवानगी घेणे आवश्यक

- किराने कि मिठास में पके कंठ का खुबानी नूर
- माझ्या नेणीवेतील प्रभाताई
- बहुआयामी व्यक्तित्व
- सिद्धहस्त प्रयोगधर्मी
- प्रभाताईना आठवताना
- चिरतरुण गायिका
- प्रभा अत्रे व सुमित्रा भावे अनुभवताना...
- भारतीय संगीत का दस्तावेजीकरण
- Seeking Beauty
- पांच जीवन का कार्य एकही में!

- डॉ. वागेश्री जोशी | 106
- श्री. चंद्रशेखर वझे | 109
- डॉ. सुनील पटके | 112
- डॉ. आकांक्षा रस्तोगी | 115
- प्रा. सुलभा पिशावीकर | 121
- विदुषी आरती अंकलीकर | 124
- श्रीमती यशोदा वाकणकर | 126
- श्रीमती नंदिनी त्रिवेदी, श्री. उदित
- श्रीमती आरती नायर | 132
- Ms. Fumie Negishi | 136
- श्रीमती आरती नायर | 139

सांगीतिक घाट : शास्त्रीय

- पूर्ण विकसित गानपुष्प
- शब्द-स्वर तपस्विनी
- नवनिर्मित रागों का सौंदर्यपूर्ण आविष्कार
- नवीनता की खोज
- सरगम की परिपूर्ण अभिव्यक्ति
- तरानों का सौंदर्य विश्लेषण
- 'प्रभा' मारूबिहाग की!
- वाग्वदना
- 'स्वरांगिनी'तून भावलेल्या प्रभाताई

- डॉ. केशवचैतन्य कुंटे | 143
- डॉ. चेतना पाठक | 150
- डॉ. गीताली पांडे-पुंडकर | 159
- डॉ. अंजली दाणी | 164
- डॉ. चेतना पाठक | 168
- प्रा. अंजली मालकर | 175
- डॉ. माधुरी जोशी | 178
- डॉ. मोहिनी रायवागकर | 181
- प्रा. कमलताई भोंडे | 185

सांगीतिक घाट : उपशास्त्रीय

- तुमरी-दादरा रचनाओं का सौंदर्य विचार
- Contribution in the Semi-Classical Music Arena
- भाव-रसयुक्त उपशास्त्रीय संगीत

- श्रीमती रसिका कुलकर्णी-कर्म
- Vidushi Dhanashree Pan
- श्री. संजीव शेंडे | 196

सांगीतिक घाट : गज़ल

- डॉ. प्रभा अत्रे और गज़ल
- राग मेफिलीतील गज़ल

- डॉ. आशीष मुजुमदार | 201
- श्रीमती संगीता जोशी | 203

सांगीतिक घाट : सुगम संगीत

- स्यारयोगिनी और मराठी सुगम संगीत

- डॉ. अतिन्द्र सरवडीकर | 205

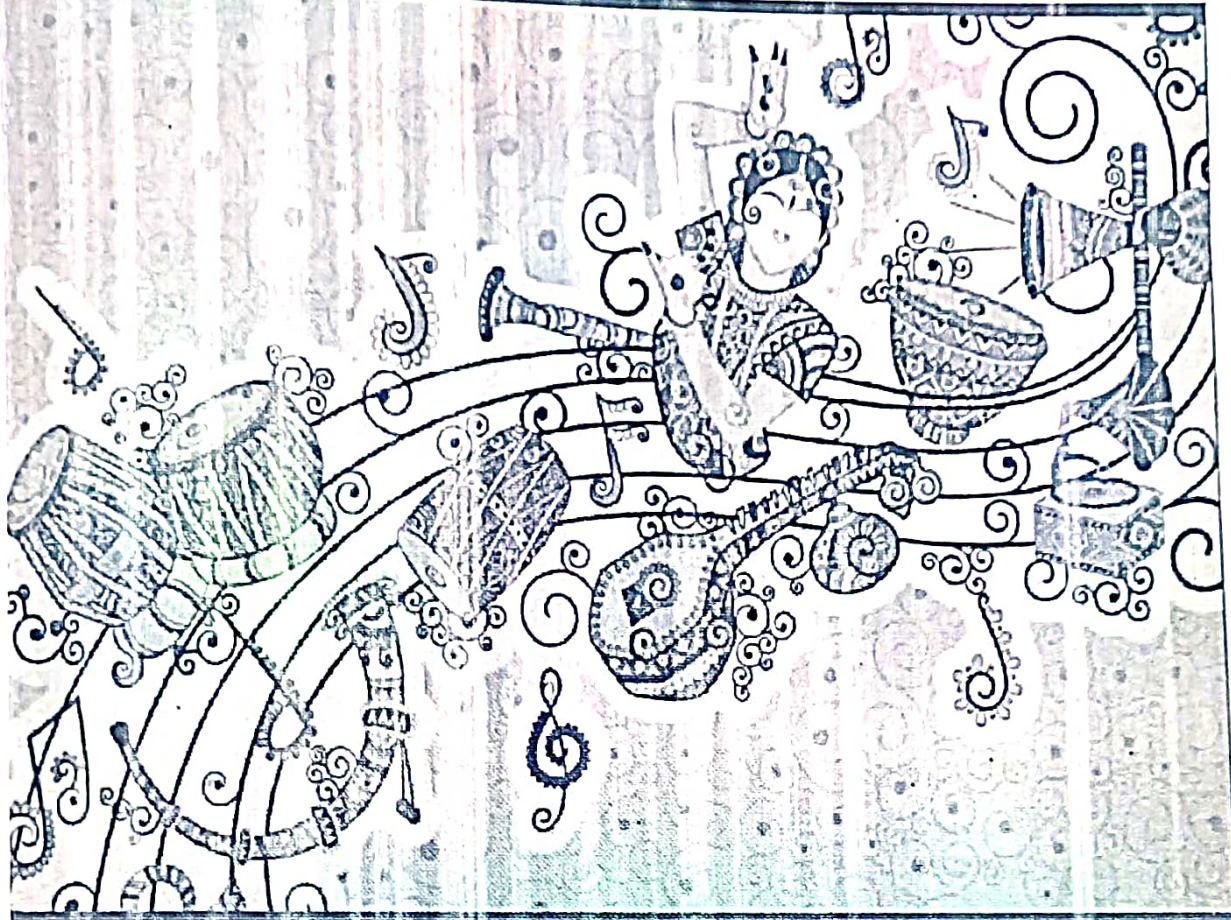
बहुआयामी व्यक्तित्व

भारतीय शास्त्रीय संगीत में किराना घराना की अग्रणी गायिका, रचनाकार, संगीत चिन्तक, लेखक, कवयित्री, और सांगीतिक गुरु पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रे इनका संगीत जगत में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। भारत सरकार द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसार-प्रचार और नवनिर्मिति के क्षेत्र में अतुलनीय कार्य के लिए इन्हें पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण, टैगोर अकादमी रत्न, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, आदि राष्ट्रीय और Learn Quest Academy, Boston, USA द्वारा 'Learn Quest Lifetime Achievement Award' पुरस्कार से डॉ. प्रभा अत्रेजी को गौरवान्वित किया गया है।

नवनिर्मिति-नवविचारधारा : डॉ. प्रभा अत्रेजी यह सदैव किसी न किसी सोच में, चिंतन में डूबी हुई, किसी राग रूप की गहराई में खोई हुयी, जैसे कोई राग अपना मूर्त रूप धारण कर डॉ. प्रभा अत्रेजी के सामने खड़ा हो, कभी नई रचनाएँ बनाने में व्यस्त तो कभी अपनी सांगीतिक सोच को, विचारों को शब्दों में बाँधने का प्रयास करती हुई। डॉ. प्रभा अत्रेजी निरंतर स्वरों की दुनियाँ में खोई रहती हैं। वह सदैव शास्त्रीय संगीत को कुछ न कुछ नया देने के लिये प्रयासरत-प्रतिबद्ध हैं। 'नवनिर्मिति के पथ पर प्रथम पद' डॉ. प्रभाजी के शब्दों में "१९६० की बात है, ऐसे ही एक बार आकाशवाणी में मैंने संगीत उपनिर्माता पद हेतु आवेदन किया और मेरा चयन भी हो गया। प्रारम्भ में मेरा पदांकन राँची केंद्र पर हुआ। पदभार ग्रहण करने के दो दिन बाद ही मुझे कहा गया, आपको पंद्रह मिनट का 'ऑपेरा' करना है, अगले सप्ताह ही रिकॉर्डिंग करनी होगी। उस समय तक मैंने एक भी पंक्ति को संगीतबद्ध नहीं किया था। यह ऑपेरा ही मेरी पहली संगीत रचना हुई।" अजय पोहनकरजी कहते हैं, "शिक्षण क्षेत्र से गहरा सम्बन्ध होने के पश्चात् भी प्रभाताई के विचारों पर शुष्कता की छाया नहीं मंडराई बल्कि भाववादी दृष्टि से उन्होंने अपने आविष्कारों का पोषण किया। व्याकरण की मर्यादाओं का उल्लंघन कर आविष्कृत गायकी उनका अपना एक ढंग है। राग मारूबिहाग की 'जागूँ मैं सारी रैना...' या कलावती राग की 'तन-मन-धन...' इन बन्दिशों में उनका यही विचार स्पष्ट रूप से सिद्ध हुआ है। विचारनिष्ठ और व्याकरणनिष्ठ होकर भी रागविष्कारों को सौन्दर्यवीरों की 'प्रभामंडल' से अधिक सशक्त बनाया जा सकता है इसका सप्रमाण उदहारण हैं, डॉ. प्रभाताई अत्रे।"

वैश्विक संगीत प्रवास : डॉ. प्रभा अत्रेजी १९६९ से विदेशों में भारतीय शास्त्रीय कंठ संगीत को तीन घंटों की महफिल में प्रस्तुतकर लोकप्रिय बनाने में अग्रगण्य रही हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने अनेक देशों का दौरा किया है। इन दौरों में संगीत महफिल, सांगीतिक व्याख्यान, संगीत संगोष्ठी, संगीत कार्यशाला, शास्त्रीय संगीत का अध्यापन कार्य, संगीत प्रदर्शन कर, भारतीय शास्त्रीय संगीत का मान बढ़ाया है। विदेशों में अध्यापन कार्य करते समय उन्होंने सभी देशों

शास्त्रीय संगीत के प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप
MODERN FORM OF PRESENTATION
OF CLASSICAL MUSIC



Dr. Rahul Swarnkar
Editor

योगदान (राग की बंदिशों के परिप्रेक्ष्य में)	श्रीवास्तव	
संगीत का अन्य विशयों से संबंध	प्रा. वंदना मधुकरराव दे । मुख	148-150
संगीत एवं "नि भास्त्र (पुरुशार्थ चतुष्टय) : इतिहास के झरोखे से	डा० अलका सिंह	151-155
तबला वाद्य एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्याम सुन्दर नागर	156-159
संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम	डॉ. सुनील वावुलालजी पटके	160-164
संगीत की गायन विधा राग के प्रस्तुतिकरण में सौन्दर्यात्मक प्रभावों का रहस्य	पूति जेन / संतोश कुमार पाठक	165-169
प्रस्तुतिकरण पर वैज्ञानिक उपकरणों का प्रभाव	Ritu Bhardwaj	170-172
कथक नृत्य के प्रस्तुतिकरण में तकनीक एवं नवाचार का प्रयोग	डॉ. अपर्णा चाचोदिया	173-176
ललितकलाओं का अंतःसंबंध	डॉ. अर्चना द्विवेदी	177-183
शास्त्रीय संगीत में प्रस्तुतिकरण का आधुनिक स्वरूप	अभिषेक कुमार मिश्रा	184-185
तबला में गायन, वादन एवं नृत्य संगत	डॉ. विभूति मलिक	186-189
सितार वादन शैलीपर विभिन्न गायन शैलियों का प्रभाव	डॉ० सुमित्रा देवी चौहान	190-192
आधुनिक समय में पं. सतीश चन्द्र श्रीवास्तव का सितार वादन के क्षेत्र में योगदान	शाईना, डॉ. अमिता शर्मा	193-195
ख्याल की बंदिशों में प्रयुक्त कथक नृत्य शैली के भावप्रदर्शन तत्व :- अष्टनायिका	श्री राजेश नरसिंग बोडे	196-199
हारमोनियम एकल वादन के बदलते प्रवाह एवं आधुनिक स्वरूप	डा. प्रवीण कासलीकर	200-202
पटियाला और भेडीवजार घरानों की निर्मिती एवं स्वरूप	डॉ.दिपाली चंद्रकांत पांडे	203-207
सांगीतिक प्रस्तुतिकरण में साहित्य एवं भाषा का	प्रो. किन्शुक श्रीवास्तव	208-211

संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम

डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके

सहा. प्राध्यापक

संगीत विभाग

कला महाविद्यालय मलकापुर, अकोला, महाराष्ट्र

प्रस्तावना —:

प्रस्तुत शोध पत्र यहाँ "संगीत में प्रस्तुतिकरण के बदलते आयाम" इस विषय पर आधारित है। संगीत, यह लालित्यपूर्ण, प्रायोगिक और प्रस्तुतिकरण की कला है। शास्त्र की तुलना में संगीत का क्रियात्मक पक्ष बहुत महत्वपूर्ण होता है। संगीत विषय पर डेढ़ दो घंटे का व्याख्यान सुनने के बजाय पाँच मिनट का गाना सुनकर उपस्थित जनमानस आनंद से अभिभूत हो जाता है। इससे स्पष्ट होता है की संगीत में क्रियात्मक पक्ष कितना प्रभावपूर्ण है। संगीत के क्रियात्मक पक्ष में घराणेदार गायकी के अंतर्गत पुराने और वर्तमान गायकों की गायन शैली, उनका आवाज लगाव, उनकी प्रस्तुतिकरण शैली और प्रस्तुतिकरण में क्रमिक बदलाव पर प्रस्तुत शोध पत्र आधारित है। एक ही कलाकार द्वारा एक ही राग का अलग-अलग माध्यमों में प्रस्तुतिकरण किस तरह से बदलता है? संगीत सम्मेलनों में, कैसेट्स, CD में, आकाशवाणी-दूरदर्शन में प्रस्तुति करते समय कैसी परिस्थिति होती है? इन सभी में वह क्या बदलाव करता है? केवल संगीत ही एक ऐसी कला है जिसमें कलाकार को अपनी कला की अभिव्यक्ति रसिकों के सम्मुख ही करनी पड़ती है। संगीत कला की अभिव्यक्ति में कलाकार और रसिक दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है। अर्थात् संगीत कला के प्रस्तुतिकरण को अत्यंत महत्व प्राप्त होता है। बिना प्रस्तुतिकरण के न रसिकों को कलाकार की कला का परिचय होगा और न कलाकार को अपनी कला का रसिकों पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका पता लगेगा। प्रस्तुतिकरण का विश्लेषणात्मक ढंग से सूक्ष्म अध्ययन प्रस्तुत शोधपत्र में किया गया है।

मुख्य शब्द —: प्रस्तुतिकरण का बदलता स्वरूप।

संशोधन की आवश्यकता और उपयोगिता —:

प्रस्तुत शोध निबंध की आवश्यकता सांगीतिक रचना का प्रस्तुतिकरण और प्रस्तुतिकरण में कालान्तरण हुए बदलाव तथा पूर्व इतिहास इन सभी विषयों में पूर्व काल से आधुनिक काल तक किस प्रकार प्रस्तुतिकरण में परिवर्तन होते गये, संगीत एक क्रियात्मक विधा है, अर्थात् संगीत-विद्या निरन्तर करने की विद्या है। जो इसका जितना अभ्यास करेगा, वह इसमें उतना ही पारंगत बन सकेगा। अभ्यास ही संगीत-विद्या का आधार स्तम्भ है, इसी के आधार पर एक अच्छा संगीतज्ञ या कलाकार शास्त्रीय संगीत में प्रयुक्त रागों का समय-चक्र पर भी अध्ययन होना जरूरी है। इसका क्रमिक बदलाव और विकास किस प्रकार हुआ। संगीत का प्रस्तुतिकरण किस प्रकार बदलते गया और आज के आधुनिक काल में इसने कौनसा रूप धारण किया है, इस विषय पर क्रमिक विकास और स्वरूप इस दृष्टिकोण से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसूस होती है।

संशोधन पद्धति—:

पटके सर
23-24

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XII

Issue - II

March - August - 2024

HINDI PART - I

Peer Reviewed, Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

Single Blind Review/Double Blind Review



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2023 - 7.537

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

८. भारतीय शास्त्रीय संगीत और आधुनिकीकरण

डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके

सहायक प्राध्यापक, संगीत विभाग, कला महाविद्यालय, मलकापुर, जि. अकोला ।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक संगीत जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ है। संगीत घरानों के सीमित दायरे से निकलकर जनसाधारण तक आधुनिकीकरण के विभिन्न साधनों द्वारा पहुंच कर विद्यार्थियों को संगीत विषय को करीबी से सुनने व समझने के लिए आसान अवसर प्रदान कर रहा है। भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टि से संगीत सदैव साधना का विषय रहा है। मानव जीवन में दिन-प्रतिदिन हो रहे आधुनिकीकरण का प्रभाव सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों पर पड़ा और बीसवीं शताब्दी में प्रत्येक क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक परिवर्तन हुए, जिसने मानव जीवन में डिजिटल क्रांति का रूप लिया।

भारतीय संस्कृति कला एवं संगीत के विभिन्न क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। संगीत के प्रचार प्रसार में आधुनिक संचार माध्यम का अभूतपूर्व योगदान रहा है। आज जिस प्रकार संगीत जन जन तक सर्व सुलभ हुआ उसका श्रेय आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व आधुनिक संचार साधनों को जाता है। संगीत का विस्तार वैश्विक होने से भारतीय साहित्य में संगीत सीखने की रुचि अपेक्षाकृत बड़ी है। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता से संगीत सीखना उसका संग्रहित व संरक्षित करना संभव हुआ है। सिद्धांत संगीत का संग्रह आधुनिक प्रिंट मीडिया के माध्यम से हुआ, विद्वानों, संगीतज्ञों एवं विद्यार्थियों की शास्त्र एवं क्रियात्मक संगीत सामग्री, पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों विभिन्न ग्रंथों आदि का प्रकाशन होने लगा।

संकेत शब्द - आधुनिकीकरण, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और शास्त्रीय संगीत।

संशोधन की आवश्यकता

भारतीय संगीत यह विश्व प्रागैतिहासिक कला है, यह संगीत कला आज के नवीनतम आधुनिक युग के आधुनिक रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, यदि संगीत कला ने आधुनिकता को आत्मसाद नहीं किया तो यह संगीत कला खत्म होने में देर नहीं लगेगी। संगीत के गायन, वादन और नृत्य के प्रकारों में आधुनिक नवपरिवर्तन के पर्याय खोजना आज के आधुनिक युग में आवश्यक है, और संगीत का आधुनिक नवपरिवर्तित रूप का प्रचार और प्रसार करना आवश्यक है। भारतीय संगीत में नवपरिवर्तन का प्रयत्न करने से नए-नए आविष्कार सामने आने में देर नहीं लगती और इस आधुनिक आविष्कार को औद्योगिकीकरण का साथ मिला तो भारतीय संगीत संपूर्ण विश्व में नए आयाम के साथ प्रस्तुत हो सकता है, इसलिए भारतीय संगीत में आधुनिकीकरण के दृष्टि से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसूस होती है।



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47028

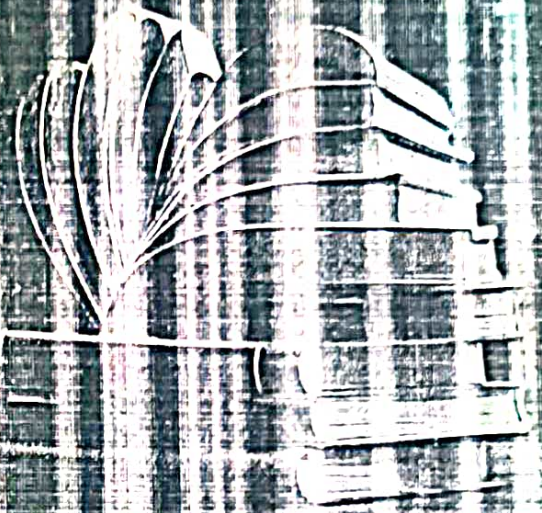


ISO 9001:2015 QMS
ISBN / ISSN

ISSN 2319-859X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Single Blind Review/Double Blind Review



Volume - XII, Issue - II
March - August - 2024
Marathi Part - II

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF MARATHI PART - III

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० : संधी व आव्हाने प्रा. डॉ. अनुप्रिता जगन्नाथ मापारी	१-४
२	गृहअर्थशास्त्रामध्ये स्वयंरोजगार संधी डॉ. जयश्री बळवंतराव चतुरकर	५-१०
३	योग आणि ध्यान उत्तम आरोग्याची गुरुकिल्ली सुप्रिया सिताराम दाते	११-१५
४	मराठी भाषा : महत्त्व व रोजगाराच्या संधी डॉ. दीपाली प्र. गावंडे	१६-२०
५	राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि शिक्षकांची भूमिका सुधाकर नारायण भालेराव	२१-२६
६	NEP-2020 and Rural Development Pradnya Subhashrao Azade	२७-३०
७	राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणात ऑनलाईन शिक्षणाची भूमिका सोळंके गजानन दत्तराव	३१-३४
८	नरसी नामदेव पर्यटन स्थळ प्रा. डॉ. उद्धव उमाजी राजत	३५-३७
९	मराठ्यांचे सेनापती संताजी घोरपडे यांचे कार्य: एक विश्लेषण बुद्दुक साईनाथ बळीराम डॉ. वोकारे तुकाराम एकनाथराव	३८-४१
१०	नागरी समाजाची संकल्पना व कार्य - एक अभ्यास प्रा. डॉ. माधम कदम	४२-४७
११	लोकशाही आणि निवडणूक व्यवस्थापन ऋतुजा पांडुरंग बावचकर	४८-५०
१२	राज्यशास्त्र विषयातील करिअरच्या संधी डॉ. रेखा रामनाथ बने	५१-५४
१३	भारतीय लोकशाहीतील नवीन शैक्षणिक धोरणाची वाटचाल आणि प्रसार माध्यमांची भूमिका डॉ. संजय गायकवाड	५५-५९

४. मराठी भाषा : महत्त्व व रोजगाराच्या संधी

डॉ. दीपाली प्र. गावंडे

सहाय्यक प्राध्यापक, मराठी विभाग, कला महाविद्यालय, मलकापूर.

भाषा हा मानवी जीवनाचा अविभाज्य भाग आहे. भाषेमुळेच माणसाचा विकास होतो आणि माणसांमुळेच भाषेचा सुद्ध विकास होतो. जगाच्या पाठीवर अस्तित्वात असणारा कुठलाच मानवी समाज भाषेशिवाय नाही आहे. प्रत्येक समाजाची त्याच स्वतःची अशी भाषा आहे. कुठल्याच देशातील, प्रदेशाची भाषा एकसंध नसते. स्थळ काळ परिस्थिती सापेक्ष ती आपली रूप बदल असते. म्हणूनच दर दहा कोसावर भाषा बदलते असे म्हणतात. भाषेचा मानवी जीवनाशी अगदी जवळचा संबंध असतो. प्रत्येक मानसमूह दैनंदिन व्यवहार पार पाडण्यासाठी किंवा विचारांची देवाण-घेवाण करण्यासाठी कोणती ना कोणती भाषा वापरतच असतात एवढेच नाही तर काही कळायच्या आधीच आपण अनुकरणातून भाषा शिकत असतो आणि तिचा वापरही करत असतो. बोलायला लागल्या पासून अखेरच्या श्वासापर्यंत भाषा माणसाच्या सोबत असते. ते त्याला साथ देत असते. सकाळी उठल्यापासून रात्री झोपेपर्यंत आणि झोपल्यानंतर झोपेतही आपले सारे व्यवहार भाषेतूनच करत असतो. आपण विचार करतो तेही भाषेतूनच व केलेले विचार व्यक्त करतो तेही भाषेतूनच. शिक्षण घेणे देणे, बाजारहाट, प्रवास, कलांचा आस्वाद, प्रचार अशा सगळ्या क्रिया प्रतिक्रिया भाषेतूनच करत असतो.

भाषा हा शब्द 'भाष्' या धातूपासून आलेला आहे. भाष् म्हणजे बोलणे. भाषा ही मुखावाटे होणारी म्हणजेच मौखिक रिती आहे. जी बोलली जाते ती भाषा, म्हणजेच उच्चारण हे भाषेचे स्वरूप आहे. प्रथम भाषा बोलली जाते आणि मग तीचे लेखन किंवा होऊ लागते. कारण जगातील सर्वच भाषेचे लेखन होतेच असे नाही. कारण कित्येक बोलीभाषा किंवा आपल्याकडे आदिवासी भाषा फक्त बोलल्या जातात. त्यांचे लेखन होत नाही. तसेच जगातला असंख्य प्रगत देशातही, राष्ट्रातही भाषेचे लेखन व्यवहार न करता आपले सर्व दैनंदिन व्यवहार बोली भाषेतूनच करणारी असंख्य माणसं आजही दिसून येतात. त्यामुळे लिहिली तीच भाषा असे म्हणता येणार नाही. उलट भाषेचा अभ्यास केल्यानंतर जी बोलली जाते ती भाषा असाच निष्कर्ष आपल्या हाती भाषेमध्ये बोलणे किंवा उच्चारण हे महत्त्वाचे असते. केवळ लिहिली जाते आणि अजिबात बोलली जात नाही अशी भाषा असू शकते. कारण लिखित अक्षरे हे भाषेचे माध्यम नसून मुखावाटे उच्चारले जाणारे शब्दच किंवा ध्वनी हे भाषेचे खरे माध्यम म्हणूनच भाषेत महत्त्व असते ते तिच्या ध्वनी रूपाला. त्यामुळे भाषेचा अभ्यास करायचा म्हटला की तिच्या उच्चारणाचे नमुने करून त्यांचाच अभ्यास केला जातो. असे असले तरी भाषेची रूप चिरकाल टिकून ठेवायचे असले किंवा अनुभवाचे एका काळात दुसऱ्या काळात स्थलांतर करण्याच्या दृष्टीने भाषेचा लेखन व्यवहार महत्त्वाचा आहे. संस्कृती संक्रमण किंवा संस्कृती फेवण्यासाठी भाषेची बोली व लिखित अशी दोन्ही रूपे महत्त्वाचे आहे. भाषेमुळे अनुभवाचे स्थलांतर व कालांतर होते. भाषा प्राण्यापेक्षा माणसाने आपल्या बुद्धीने तयार केलेली महत्त्वाची गोष्ट आहे. भाषेबरोबरच मानवाने भाषेला लिपी शोधून काढली अनुभव ज्ञान यांना स्थिर व शाश्वत रूप दिले. यातून मानवी संस्कृतीचा इतिहास निर्माण झाला. सोबतच वैद्यकशास्त्र, साहित्य, त

DOI PREFIX 10.22183
DOI 10.22183/RN
SIF 7.399

RESEARCH NEBULA
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN
INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA
ISSN 2277-8071

ycjoe 23-24



ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

VOLUME XII, ISSUE III, OCTOBER 2023

Published on 1st October, 2023

www.ycjournal.net
researchnebula@gmail.com





"PROMISED LAND" BY BARACK OBAMA: A REFLECTION ON LEADERSHIP AND GOVERNANCE IN CONTEMPORARY AMERICA

PRAVIN PRAKASHRAO UGLE

Head, Department of English,
Arts College, Malkapur, Akola.

pravinpugle@gmail.com

ORCID

<https://orcid.org/0009-0007-4329-7727>

Received: 12.08.2023

Reviewed :14.08.2023

Accepted: 17.08.2023

ABSTRACT

Barack Obama's memoir, "Promised Land," published in November 2020, offers a unique and intimate perspective on his presidency and the state of America during a pivotal period in its history. This research paper delves into the key themes, insights, and implications of "Promised Land" as a reflection on leadership and governance in contemporary America. By analyzing Obama's experiences, challenges, and policy decisions, this paper aims to provide a deeper understanding of the book's significance and its relevance to the broader political landscape.

KEY WORDS: policy, progress, reform, challenges

Introduction

Barack Obama's presidency from 2009 to 2017 was marked by significant domestic and international challenges, making "Promised Land" a vital contribution to the discourse on leadership and governance. This research paper explores the memoir's central themes, including healthcare reform, economic recovery, foreign policy, and the role of leadership in addressing complex issues.

Healthcare Reform: A Legacy Achievement

One of the central topics in "Promised Land" is the passage of the Affordable Care Act (ACA), a landmark achievement during Obama's presidency. This paper examines the challenges, strategies, and political dynamics surrounding healthcare reform and its lasting impact on American healthcare.

The Affordable Care Act, often referred to as "Obamacare," was a transformative piece of legislation that aimed to expand access to healthcare coverage and improve the quality of care for millions of Americans. Obama's description of the battles and negotiations surrounding the ACA

in "Promised Land" sheds light on the complexity of healthcare reform in the United States.

The legacy of the ACA extends beyond the Obama presidency, as it remains a topic of debate and contention in American politics. By analyzing Obama's account in "Promised Land," we gain a deeper understanding of the motivations, compromises, and strategies employed in enacting this historic legislation and its enduring impact on healthcare in the United States.

Economic Recovery and Financial Crisis

The memoir also discusses Obama's response to the 2008 financial crisis and the subsequent efforts to stimulate economic recovery. This section analyzes the economic policies implemented during his tenure and their impact on the nation's financial stability.

The 2008 financial crisis was one of the most significant economic challenges faced by any U.S. president. As Obama took office in the midst of the crisis, "Promised Land" provides valuable insights into his administration's efforts to stabilize the economy and prevent a deep and prolonged recession.

मापरी मं डम
23-24



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

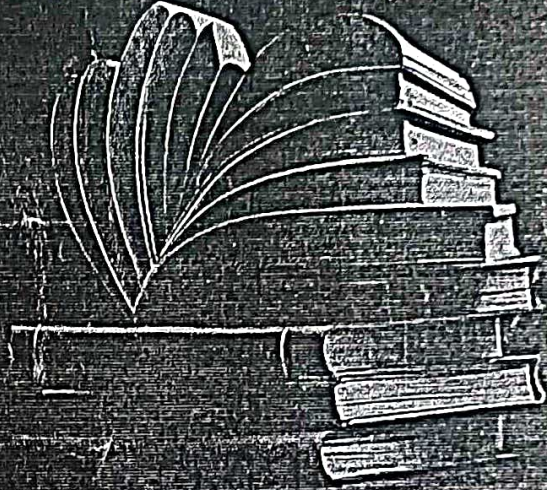


ISO 9001 : 2015 QMS
ISBN / ISSN

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Single Blind Review/Double Blind Review



Volume - XII, Issue - II
March - August - 2024
Marathi Part - III

Impact Factor / Indexing
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF MARATHI PART - III

क्र.सं.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० : संधी व आव्हाने प्रा. डॉ. अनुप्रिता जगन्नाथ मापारी	१-४
२	गृहअर्थशास्त्रामध्ये स्वयंरोजगार संधी डॉ. जयश्री बळवंतराव चतुरकर	५-१०
३	योग आणि ध्यान उत्तम आरोग्याची गुरुकिल्ली सुप्रिया सिताराम दाते	११-१५
४	मराठी भाषा : महत्त्व व रोजगाराच्या संधी डॉ. दीपाली प्र. गावंडे	१६-२०
५	राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण आणि शिक्षकांची भूमिका सुधाकर नारायण भालेराव	२१-२६
६	NEP-2020 and Rural Development Pradnya Subhashrao Azade	२७-३०
७	राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणात ऑनलाईन शिक्षणाची भूमिका सोळंके गजानन दत्तराव	३१-३४
८	नरसी नामदेव पर्यटन स्थळ प्रा. डॉ. उद्धव उमाजी राऊत	३५-३७
९	मराठ्यांचे सेनापती संताजी घोरपडे यांचे कार्य: एक विश्लेषण बुद्रुक साईनाथ बळीराम डॉ. बोकारे तुकाराम एकनाथराव	३८-४१
१०	नागरी समाजाची संकल्पना व कार्य - एक अभ्यास प्रा. डॉ. माधम कदम	४२-४७
११	लोकशाही आणि निवडणूक व्यवस्थापन ऋतुजा पांडुरंग बावचकर	४८-५०
१२	राज्यशास्त्र विषयातील करिअरच्या संधी डॉ. रेखा रामनाथ बने	५१-५४
१३	भारतीय लोकशाहीतील नवीन शैक्षणिक धोरणाची वाटचाल आणि प्रसार माध्यमांची भूमिका डॉ. संजय गायकवाड	५५-५९

१. नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण २०२० : संधी व आव्हाने

प्रा. डॉ. अनुप्रिता जगन्नाथ मापारी

इतिहास विभाग प्रमुख, कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.

स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतर देशातील निरक्षरतेची समस्या दूर करण्यासाठी भारत सरकारने विविध कार्यक्रम हाती घेतले त्यामध्ये भारताचे पहिले शिक्षण मंत्री मौलाना अबूल कलाम आझाद यांनी देशभरासाठी समान शैक्षणिक पध्दत अंमलात आणण्याच्या हेतूने डॉ.राधाकृष्णन आयोग, मुदलीयार आयोग, माध्यमिक शिक्षण आयोग आणि कोठारी आयोग हे आयोग प्रस्तावित केले.

पंतप्रधान दिवंगत श्रीमती इंदिरा गांधी यांच्या कार्यकाळात इ.स.1968 मध्ये पहिले राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण जाहीर करण्यात आले. पुढे पंतप्रधान दिवंगत राजीव गांधी यांच्या काळात दुसरे राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 1986 मध्ये लागू करण्यात आले. इ.स.1992 मध्ये या धोरणात काही प्रमाणात बदल करण्यात आले होते. इ.स.2009 मध्ये मोफत शिक्षणाचा अधिकार संमत केला होता. या कायदयानुसार प्रत्येक बालकाला मोफत व सक्तीचे प्राथमिक शिक्षण घेण्याचा अधिकार देण्यात आलेला आहे. इस्त्रोचे माजी अध्यक्ष डॉ.कृष्णास्वामी कस्तुरीरंगन यांच्या अध्यक्षतेखाली नेमण्यात आलेल्या समितीने सुचविलेल्या शिफारशी यांचा विचार करता तब्बल 34 वर्षांनंतर 29 जुलै 2020 रोजी केंद्रीय मंत्रिमंडळाने नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 यास मंजूरी दिली. माणवसंसाधन विकास मंत्रालय या ऐवजी शिक्ष मंत्रालय असे नामांतर सुध्दा या खात्याचे करण्यात आले. व श्री.रमेश पोखरीयाल निशंक हे या खात्याचे पहिले केंद्रीय शिक्षण मंत्री म्हणुन ओळखले जात आहेत. वस्तुतः 2020 पासुनच हे नवीन शैक्षणिक धोरण लागू करावयाचे होते परंतु कोरोना महामारीच्या काळात ते शक्य झाले नाही. त्यामुळे शैक्षणिक सत्र 2024-25 पासुन टप्पाटप्पाने नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण 2020 ची अंमलबजावणी सर्व स्तरातून करण्याचे निश्चीत झालेले आहे.

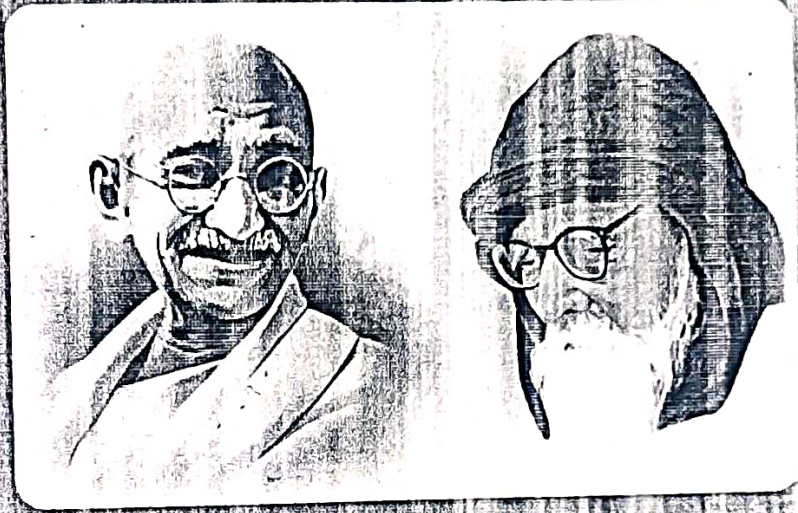
नवीन राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरणानुसार शिक्षण व्यवस्थेमध्ये आमुलाग्र परिवर्तनाच्या सुचना करण्यात आलेल्या आहेत. या धोरणानुसार सध्याच्या 10+2 = 12 हा शैक्षणिक पॅटर्न 5 + 3 + 3 + 4 = 15 असा करण्यात आलेला आहे. अर्थात पुर्वीचा 12 वर्षांचा टप्पा आता 15 वर्षापर्यंत पोहोचलेला आहे. इयत्ता पहिलीपासून तर बारावीपर्यंत विद्यमान प्रारंभिक शिक्षणाचा हा टप्पा आता अंगणवाडी, बालवाडी इयत्ता पहिली व दुसरी असा पाच वर्षांचा असेल.

पहिला टप्पा वय वर्ष 3 ते 8 या कालावधीत विद्यार्थ्यांला पुर्ण करावयाचा आहे. पुर्वीच्या टप्प्यातील दोन वर्ष व पुर्व प्राथमिक शिक्षणामध्ये अंगणवाडी, बालवाडी व इंग्रजी माध्यमांच्या शाळांमधून चालणा-या प्ले स्कुल यांचा समावेश आहे. अर्थात आजच्या बालवाडी, अंगणवाडी किंवा इंग्रजी शाळातील प्ले स्कुल यापुढे प्राथमिक शिक्षणाच्या प्रारंभीक संस्था म्हणुण कार्य करणार आहेत. या टप्प्यावर विद्यार्थ्यांमध्ये शिक्षणाविषयी आवड निर्माण करणे, खेळ जाणुन घेण्याची क्षमता आणि आनंददायी शिक्षण यावर भर देण्यात आलेला आहे. मुलांनी शाळेत जाण्याचा कंटाळा करू नये; शाळा हा विषय त्यांच्यासाठी भितीदायक असू नये; यासाठी विद्यार्थ्यांच्या कलाकलाने त्याला शाळेत विविध प्रकारचे खेळ व मनोरंजनाद्वारे त्यांच्यातील शाळेविषयीची ओढ वाढविणे हा या मागचा हेतु आहे.

गांधी-विनोबा

(काल, आज आणि उद्या)

भाग-२



संपादक

डॉ. संदीप बी. काळे

Index

S.No	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	म. गांधीजी व ग्रामराज्याची संकल्पना एक अध्ययन	प्रा.डॉ. एन.आर. वर्मा	1
2	भूदान चळवळ आणि आचार्य भावे	डॉ.चंद्रमा दिनदयाल मेश्राम	7
3	गांधीवादी तत्त्वज्ञानाचे महत्त्व	प्रा. डॉ. टी. एम. गुरुनुले	12
4	महात्मा गांधीजींची ग्रामराज्याची संकल्पना	प्रा.डॉ. संभाजी तनपुरे	19
5	सर्वोदय चळवळ : महात्मा गांधी, विनोबा भावे आणि जे पी यांच्या विचारांचे एक अवलोकन	डॉ. नरेंद्र व खटाटे	26
6	गांधीजींचे पर्यावरण विषयक विचार आणि आजची पर्यावरण परिस्थिती	डॉ. क्षमा चव्हाण	36
7	महात्मा गांधी आणि अहिंसा	प्रा.डॉ. संतोष एस. मिसाळ	43
8	महात्मा गांधीजींच्या विधायक कार्यक्रमातील ग्रामोद्योग	डॉ.अनुप्रिता जे.मापारी	48
9	महात्मा गांधींची तत्त्वे, प्रथा आणि श्रद्धा	प्रा.नंदकुमार वावुराव वानाटे	52
10	भूदान चळवळ - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.	डॉ. महेंद्र पांडुरंगजी गावंडे	57
11	विनोबा भावे यांचेराजकीय विचार	डॉ. अरूण पेंटावार	66
12	विनोबांचे 'ग्रामस्वराज्या संबंधी विचार	प्रा. डॉ. हरीदास लाडके	75
13	महात्मा गांधी यांचा स्वच्छतेविषयक दृष्टिकोन	डॉ. रेवणनाथ काळे	79

महात्मा गांधीजींच्या विधायक कार्यक्रमातील ग्रामोद्योग
डॉ.अनुप्रिता जे.मापारी

इतिहास विभाग प्रमुख, कला महाविद्यालय मलकापुर अकोला वर्धमान
नगर, रिंग रोड महालक्ष्मी द्वार जवळ, अकोला ४४४००४

मो.नं. ८३२९११५९०

महात्मा गांधीजींनी राष्ट्रीय लढ्याला विधायक तत्वज्ञान दिले. त्यामध्ये सामाजिक सुधार, आध्यात्मिक एकात्मता व आर्थिक स्वावलंबन यांचा समावेश होता. म.गांधीजींच्या कार्यपध्दतीची काही खास वैशिष्ट्ये म्हणजे व एक चळवळ बंद झाल्यानंतर दुस-या चळवळीस प्रारंभ होईपर्यंत ते काँग्रेस कार्यकर्त्यांची शक्ती विधायक चळवळीला वाहून घेण्यासाठी कामी लावत असत. त्यामुळे गांधीयुगात असंख्य लोकांनी या दोन्ही कार्यक्रमांचा स्वीकार करून अखंड व अव्याहतपणे चळवळीला वाहून घेतले. अगदी खेडयापाडयापर्यंत चळवळीला वाहून घेतलेल्यांची एक पिढी तयार झाली होती.

काँग्रेसच्या विधायक कार्यक्रमात अस्पृश्यता निमूलन, हिंदू-मुस्लीम ऐक्य, खादी प्रचार, दारुबंदी, महिलांचे उत्थापन, लोकजागृती, सत्याग्रहीची निर्मिती, शेतकरी-कामगार वर्गातील प्रचारकार्य यासारख्या बहुविध कार्यक्रमांचा अंतर्भाव होता. या कार्यक्रमांच्या अंमलबजावणीसाठी जी संस्था, यंत्रणा उभी राहली त्यामध्ये युवकसंघ, भगिनी मंडळ, हरीजन सेवासंघ, सत्यशोधक समाज, ब्राह्मणेत्तर संघ, खादी-ग्रामोद्योग मंडळ यांचा समावेश होता. महात्मा गांधीजींच्या मते राजनैतिक स्वातंत्र्य हे आर्थिक स्वातंत्र्यावर अवलंबून असते. आर्थिक स्वातंत्र्यापासूनच राजनैतिक स्वातंत्र्यतेचा उदय होतो. याकरीता उद्यम व स्वावलंबन याद्वारे जनतेचा आर्थिक आणि नैतिक स्तर उंचावणे हा कार्यक्रम होता. परकीय सरकार येथील भूमिपुत्रांच्या मागण्यांची दाद लावू शकत नाही. यासाठी आर्थिक स्वावलंबनाच्या मार्गाचा अवलंब केला पाहिजे. सुतकताई व खादीप्रचार हे आर्थिक स्वावलंबनासाठी उत्तम मार्ग होत.

इ.स.१९३४ मध्ये गांधीजींनी ग्रामोद्योग संघाची स्थापना केली होती. त्यांचे सल्लागार व अर्थशास्त्रज्ञ श्री. कुमार आप्पा यांच्या सहाय्याने त्यांनी या ग्रामोद्योग संघाची कल्पना प्रत्यक्षात आणली होती. खेडयांची पूनर्घटना करून ग्रामीण समाजाची बौद्धिक, नैतिक,

Kale.

23-

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - XIII

Issue - II

April - June - 2024

ENGLISH PART - III

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

Single Blind Review/Double Blind Review



IMPACT FACTOR / INDEXING

2023 - 7.428

www.sjfactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF ENGLISH PART - III

No.	Title & Author	Page No.
1	Artificial Intelligence: Opportunities in Teaching, Learning, and Research Radha Kale Radha Kale	1-6
2	NEP 2020: Unity of Diversity in Integrity of Knowledge, Curriculum and Pedagogies Dr. Rajesh Anandrao Ade	7-13
3	Quantum Computing: Principles, Applications and Future Perspective Rajshree P. Gadpayale	14-18
4	A Study on Influence of Store Environment on Customer Loyalty with Reference to Westside Store Dr. Rani Kale	19-25
5	Some Common Coleopteran and Hymenopteran Insects from PDKV Premises in Akola Dr. Rashmi P.	26-31
6	Library Consortia: Need and Advantage Dr. Sandeep A. Lande	32-36
7	Life Skills for Poverty Eradication Dr. Sangappa V. Mamanshetty	37-42
8	Open Source Software for Libraries Dr. Seema Kale	43-47
9	Igniting Poetry of Savitribai Phule - Heralding the Social Change and Order Ms. Mharsale Sonali Bhaskar	44-51
10	Green Synthesis of Silver Nanoparticles with Nycanthes Arbor-Tritis Leaf Extract Gawande S. N. Upadhyay M. R. Malpani H. S. Nanoty V. D.	52-59
11	Digital Humanities in India: A Review Dr. Nilima Deshmukh	60-65
12	Role of National Education Policy 2020 in Higher Education Dr. Suresh Sukdeo Shinde	66-71

8. Open Source Software for Libraries

Dr. Seema Kale

Librarian, Kala Mahavidyalaya Malkapur, Akola.

Abstract

Open source software has acquired recently a growing popularity in the software market. Open source library software does not need the initial cost of commercial software and enables libraries to have greater control over their working environment. Library professionals should be aware of the advantages of open source software and should involve in their development. They should have basic knowledge about the selection, installation and maintenance of the software. This paper discusses the definition and features of open source library management software, criteria of selection of best open source library management software, their advantages and limitations.

Keywords: Open Source Software, DSpace, KOHA, Library technology

Introduction

Generically, Open Source refers to a program in which the source code is available to the general public for use and/or modification from its original design free of charge. For many libraries, organizing their books and other media can be a daunting task, especially as the library grows with more material. Years ago, we had crude card catalogue systems (remember the Dewey Decimal System) that kept things organized but were difficult to maintain. With today's computing technology, organizing our libraries has never been easier or more efficient. Gone are the days of card catalogues. Now it's much easier locating a book through internet connection and picking it up upon your arrival, rather than wasting time scouring the aisles looking for your next read. Now just because the world has been blessed with wonderful software solutions that make everything easier to do, doesn't mean that every library in the universe is using these solutions. Many Libraries do not have huge amounts of money to burn, and any that they do get usually goes to purchasing additional resources.

There are many different kinds of open source software solutions out there today that could be embraced by the library. There's basic operating system, document processing programs, Library Management Software (LMS) and Digital Library Software.

Kale .

23-24

ISSN 2319 - 359X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - XII

Issue - II

March - August - 2024

MARATHI PART - I

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal No. 47026

Single Blind Review/Double Blind Review



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2023 - 7.537
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asslt. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

CONTENTS OF ENGLISH PART - II

Sl. No.	Title & Author	Page No.
	Sustainability in E-Commerce: Navigating the Environmental Landscape of Electronic Business Operations Dr. Smita Shingrup Dr. Mayur Malviya Dr. Rakhi Malhi	1-10
	Recent Trends in Legal Research Dr. Anupama P. Chavhan	11-16
	Recent Trends in Library and Information Science Dr. Indrasing P. Pawar	17-21
	Recent Trends in Research and Methodology Dr. P. N. Ladhe	22-27
	A Study and Impacts of Recent Trends in E-Commerce, Foreign Trade and Policy Mr. Pratap Rajkumar Lalwani Dr. Varsha S. Sukhadeve	28-40
	Role of Social Media in Changing the English Language Dr. Vijay Baburao Pande	41-44
	Role of Spirituality in Recent Trends in Humanities: Exploring the Role of Youth and Studies Dr. Rakhi J. Malhi Dr. Smita Shingrup Dr. Mayur Malviya	45-51
	Language Learning in Today's Digital World: Technology: Limitations and Opportunities Sandip K. Khadse	52-56
	Current Trends in Library and Information Science Dr. Seema Madhukarrao Kale	57-63
10	Short Films, Big Messages Asst. Prof. Dimple D. Mapari	64-67
11	Impact of Yogic Practices and Meditation on Anxiety and Stress among the Youth in Modern ERA Dr. Seema V. Deshmukh	68-73

9. Current Trends in Library and Information Science

Dr. Seema Madhukarrao Kale

Librarian, Arts College Malkapur, Akola. (M.S.)

Abstract

The field of library and information science (LIS) is dynamic, characterized by continual evolution and the integration of new trends and innovations. Recent developments include the emergence of digital technologies for managing library collections and services, such as online reference services and digital archives. Furthermore, libraries are increasingly prioritizing diversity, equity, and inclusion in their collections, services, and staffing practices. Another significant trend is the heightened focus on data management, with libraries offering services like data curation and analysis. User-centric services and tailored experiences are gaining traction, and libraries are broadening their outreach to connect with marginalized communities through social media and other platforms. These trends underscore LIS's ongoing adaptation to shifting user demands and technological progress. The paper explores various contemporary technological tools and their applications within Library and Information Science.

Keywords:- Research Data Management, Gamification, Virtual Reality.

Introduction

Libraries are continuously evolving to cater to the needs of their diverse communities. Far from being mere repositories of books and media, modern libraries serve as invaluable resources for various purposes, ranging from research data management (RDM) to offering services like 3-D printing and coding workshops.

Procuring periodicals in academic libraries within an increasingly expensive context is a significant challenge. These periodicals, also known as serials, journals, or magazines, are crucial sources of information essential to the academic community. They provide more current information than books and often offer the latest insights on various subjects.

In the realm of scientific publishing, periodicals play a vital role in academic library collections. Universities and institutions typically subscribe to a wide array of periodicals for their libraries to support research and scholarly endeavors.

2022	• प्रतिभाशाली, स्वर योगिनी, विदुषी संगीत साधिका- पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रे	विद्यावाचस्पती डॉ. शंकर अग्र्यंकर	82
	• अनूठी हैं प्रभा जी	डॉ. मुकेश गर्ग	85
	• समाज हितैषी गान तपस्विनी	प्रसाद भडसावळे	89
5	• 'पांच जीवन का कार्य एकही जीवन में।।।'	आरती नायर	93
7	• स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे: नवनिर्मित रागो में बंदिशों का सौंदर्यपूर्ण आविष्कार	डॉ. गीताली पांडे-पुंडकर	95
11	• पद्मविभूषित प्रभाताई जी	डॉ. अश्विनी भिडे-देशपांडे	99
5	• 'संगीत शारदा' से 'गान शारदा' तक	रवींद्र खरे	101
17	• Sur ki Devi	Pt. Hariprasad Chaurasia	103
18	• The Highly Learned Artiste	Shubhada Dadarkar	105
25	• पद्मविभूषण डॉ प्रभा अत्रे- भावरसयुक्त उपशास्त्रीय संगीत	डॉ. संजीव शेंडे	107
33	• प्रभाजी का 'संगीत है आत्मा की आवाज'	डॉ. ताजिम कासम	110
37	• 'स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे और मराठी सुगम संगीत'	डॉ. अतिंद्र सरवडीकर	115
39	• 'जन खुलावले सकल...'	ज्ञानेश पैदारकर	121
44	• Article on Dr. Prabha ji Atre	Jayashree Thatte-Bhat	123
46	• रजिस्ट्रार कार्यालय समाचार		128

संगीत कला विहार विज्ञापन मूल्य तथा शुल्क

कव्हर पेज 4 संपूर्ण पृष्ठ: रु. 8000/-, कव्हर पेज 2, 3 संपूर्ण पृष्ठ: रु. 6000/-
पूर्ण पृष्ठ रु. 3000/-, आधा पृष्ठ रु. 1500/-
(यह मूल्य विशेषांको के लिए लागू नहीं है।)

अब आपका संगीत कला विहार सदस्यता शुल्क नीचे दिये गये
बैंक द्वारा आदा कर सकते है।

Name of the account holder - Sangit Kala Vihar

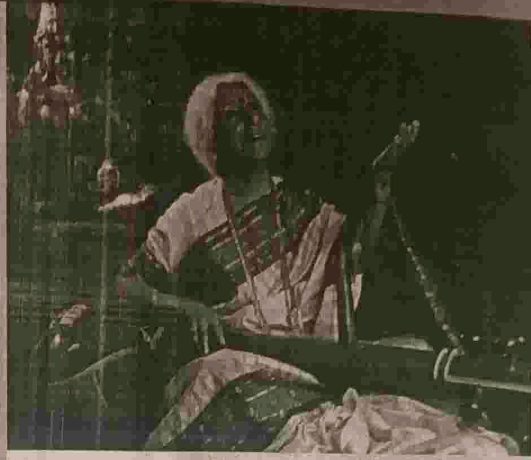
Account number - 04400100006069

Bank Name/Branch - Bank of Baroda, Miraj

IFSC - BARB0MIRAJX (Fifth character is zero)

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचारों से संपादक तथा मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
मूल्य रु 100/-

प्रभाजी द्वारा रचित नये राग तथा उनकी बंदिशोंने संगीत अभ्यासक, (बर्चोकी उनकी बंदिशों पर अब तक अधिक मात्रा में प्रबंध लिखे गये हैं), कलाकार (अन्य कलाकारों द्वारा कई बार गाये गये हैं) तथा श्रोताओंको निश्चित रूपसे आनंद दिया है, आकर्षित किया है, इस में कोई संदेह नहीं।



डॉ. गीताली पांडे-पुंडकर

E-mail: geetalipundkar123@gmail.com

Mob.: 9923636564

स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे: नवनिर्मित रागों में बंदिशों का सौंदर्यपूर्ण आविष्कार

भारतीय संगीत के क्षेत्र में किराना घराने की प्रतिभा संपन्न बरिष्ठतम गायिका, तपस्वी एवं परिपक्व ज्ञान से समृद्ध कलाकार पद्मविभूषण डॉ. प्रभा अत्रेजी अपने जीवन की नवदशपूर्ती कर रही हैं। उनको शत शत प्रणाम तथा हृदयसे बहुत सारी शुभकामनाएँ।

संगीत जगत में प्रभाजी का जो स्थान है, सम्मान है वह उनके कर्तृत्व के कारण है। अपनी अथक एवं निरंतर स्वरलक्ष्मी साधनासे यह कृतीत्व उन्होंने स्थापित किया है, स्वयं को सिद्ध किया है और यह मान सम्मान पाया है। प्रभाजी की विशेषता यह है कि उनको

संगीत से जुड़े विविध क्षेत्रों में काम करने का अवसर मिला। इन सभी क्षेत्रोंमें उन्होंने संगीत को जो अनुभव किया उस पर उन्होंने गहन चिंतन किया। उसके कारण उनका आविष्कार क्षेत्र भी विस्तृत होता गया साथही संगीत से जुड़ी अन्य बातोंकी ओर भी उनका ध्यान

आकर्षित हुआ। अपने चिंतनशील स्वभाव के कारण उन बातों पर भी विचार करके उसमें कृतिशील योगदान दिया। इसी वजह से उनका कार्यक्षेत्र बहुआयामी हुआ है।

अपनी स्वतंत्र गायन शैली, 550 से अधिक बंदिश रचनाएँ तथा नवनिर्मित राग यह उनकी गंघ प्रदर्शन के क्षेत्र में अमूल्य देन हैं।

अपने गुरु स्व. सुरेशनाथ मानेजी से उनको अल्प समय तक शिक्षा ग्रहण करने का अवसर मिला। इस अल्पावधि में उनसे चार-पांच रागही वह सीख पाई। केवल यमन की ही तालीम गुरुजीने उन्हें दीर्घकाल (एक साल) तक दी।

केन सही गायने में इस एक साल की यमन की तालीम में ही गुरुजी ने संगीत साधना के सारे मार्ग उनके सामने खोलकर रख दिये, जिस के कारण वह अपना मार्ग खुद चल सकी और अपनी अलग पहचान बनाने में वह कामयाब हो सकी। उनके गुरुजीने उन्हें अनवट या अप्रचलित राग नहीं सिखाये, क्योंकि उनका मानना था कि, जो राग श्रोताओं को परिचित है, उन्हें मान्य है उन रागों में ही कुछ नया और रंजक करते आना चाहिये। यही कलाकार की विशेषता है।

यही बात ध्यान में रखते हुए उन्होंने प्रचलित रागों से ही अधिकतर नये रागों का (जोड़ राग) आविष्कार किया।

राग स्वरूप आकर्षक बनाने के लिये रियाज करते समय कुछ नावीन्यपूर्ण स्वरसंगतीयां, स्वर लगाव कलाकार खोजता रहता है। इस खोज में कुछ स्वर संगतीयां ऐसी भी मिलती हैं जिस में राग बनने की क्षमता होती है। इन स्वरसंगतीयों से राग निर्मिती का सफर कलाकार के लिए एक चुनौती के जैसा होता है। स्वरसंगती से राग बनने तक कलाकार को निरंतर चिंतन, मनन द्वारा उस पर विचार करना पड़ता है। वह राग स्वरूप आकर्षक तथा रंजक भी हो, इसका भी ध्यान रखना पड़ता है। तभी वह श्रोताओं को अच्छा लग सकता है तथा अन्य गायक भी उसे गाने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

राग निर्मिती के पश्चात रागाविष्कार का प्रधान साधन बंदिश ही है। बंदिश की सहायता से तथा अविष्कार की माध्यम से कलाकार राग स्वरूप खोजता रहता है। सांगीतिक सामग्री से रागाविष्कार करते हुए बंदिश ही कलाकार को राग विस्तार की दिशा दिखाती है जिस को हम 'बंदिश के अंग से गाना' ऐसा कहते हैं। राग की गुणविशेषताएँ बंदिश में निहित होती हैं। यह गुणविशेषता ही राग लक्षण है। विशिष्ट स्वरसंगती जब राग में परिवर्तित होती है तो वह राग

अपनी विशेषताये अलग से धारण करता है जिसके कारण 'रागत्व' का जतन होता है। जैसे मूपाकी व देशकार जैसे रागों के स्वर समान होते हुए भी राग विशेषताओं के कारण उन में भेद दिखाया जाता है। हल्दी विशेषताओं के कारण उनका राग स्वरूप अलग-अलग दिखता है तथा कलाकृती को एक आकार, एक स्वरूप प्राप्त होता है। बंदिश का सौंदर्यपूर्वक आविष्कार करते समय इन विशेषताओं का प्रयोग कलाकार अपनी-अपनी सौंदर्यदृष्टी से करता रहता है। संगीत में जिस प्रकार शास्त्र का महत्व यही है। संगीत में जिस प्रकार शास्त्र का मूल्य है, उसी प्रकार कुछ मर्यादा होना भी आवश्यक है। अगर गायन में शास्त्र को अधिक महत्व दिया जाये तो वह गायन निरस, रूक्ष तथा कर्कश लगेगा। आज कल गायक अपनी गायकी में भावाविष्कार को ज्यादा महत्व देते हैं। इसके लिये राग नियमों को थोड़ा लचिला (फ्लेक्सिबल) रखना ही पड़ता है। शास्त्र के नियमों को लचिला (फ्लेक्सिबल) रखते हुए अपनी सोच के अनुसार स्वतंत्र गायकी, स्वतंत्र आविष्कार करने को कलाकार द्वारा अधिक महत्व दिया जाने लगा है। आज कल हम देखते हैं कि, कई पारंपरिक रागलक्षण जैसे न्यास, विवादी, अनुवादी स्वर जैसी बातें पारंपरिक

गायन में भी नहीं सँभाली जाती। रागों की पारंपरिक बंदिशों में भी इन बातों का पालन किया गया हुआ, नहीं दिखाई देता है। प्रभाजी परंपरा में विश्वास जरूर रखती है पर वह विश्वास, अंधविश्वास न हो कर उसे वास्तविकता से जोड़कर देखना चाहिए, ऐसा उनका मानना है। 'समयानुसार परंपराओं में परिवर्तन आना प्रकृति का नियमही है। इसलिये जो बातें वास्तविकता से न जुड़ती हो, तो उन बातों में परिवर्तन क्यों नहीं लाना चाहिए?' यह उनका प्रामाणिक तर्क है। प्रभाजी के अनुभवानुसार 'रागविस्तार में राग में प्रयुक्त सभी स्वर, उस का आरोही-आरोही चलन और राग स्वरूप की कलाकार की स्वयं की अनुभूती, इन सब बातों का परिणाम होता है।' इसलिये उनके द्वारा निर्मित नये रागों में राग लक्षणों के स्वरूप में केवल आरोही-अवरोही चलन का ही विचार किया हुआ दिखता है, क्योंकि प्रत्यक्ष गायन में यही लक्षण मार्गदर्शक होते हैं।

प्रभाजी निर्मित तेरह रागों में कुछ प्रचलित रागों के जोड़ राग हैं और कुछ स्वतंत्र। सारे राग रंजक हैं। तिलंग भैरव, रवी भैरव, कोशिक भैरव, शिवकली, कलाहारी, शिवानी, भीमवंती, अपूर्वकल्याण, भूप कल्याण, पटदीप मल्हार, दरबारी कंस, मधुर कंस, हल्यादी। इन 13 रागों में कुल मिलाकर 36

बंदिशों की रचनाएँ सम्मिलित हैं, जो विलंबित, मध्यलय, द्रुतलय तथा तरानों के रूप में हैं। इन बंदिशों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं।

- ये बंदिशें सुनते समय दो अलग-अलग राग दिखकर भी श्रवणानंद में बाधा नहीं आती है, इतना इन दोनों रागों का मिश्रण कुशलता से उन्होंने बंदिशों में किया है। जैसे, (i) राग दरबारी कंस, बंदिश: 'मनवा काहे न धीर धरत...' (वि. एकताल) इस में रेसानिध ध म-म इस प्रकार का दरबारी और मालकंस का जोड़ तथा (ii) राग भिन्न कंस, बंदिश: 'तोपे वारी जाऊँ...' (ताल-रूपक)। इस में सागमध धनिधम इस प्रकार मालकंस तथा भिन्न षड्ज का जोड़।
- नाम के अनुसार बंदिश का काव्य। जैसे, राग तिलंग भैरव; रवी भैरव, कोशीक भैरव, शिवकली, आदी भैरव प्रकारों में शिव का वर्णन आया है तथा पटदीप मल्हार जैसे राग में वर्षा ऋतु का वर्णन बंदिशों में आया है।
- बंदिशों में प्रयुक्त वैशिष्ट्यपूर्ण तथा रंजक स्वरसंगतियाँ। जैसे, (i) राग-तिलंग भैरव की 'हे शिवशंकर करुणाकर...' (ताल रूपक)। इस बंदिश

- में 'करुणाकर' इस शब्द पर रची पनिसांती प-मग ग-मप गम गरे गरे सा तथा अंतरे में 'हे शंभो गंगाधर' इन शब्दों पर रची रेंसां, निप, मग, निप हल्यादी तथा (ii) राग भीमवंती, बंदिश 'गाऊँ मैं हरि नाम मधुर नाम' (वि. एकताल) में 'नाम' शब्द पर रची प मग पम धप सानिधप तथा 'गाऊँ मैं निम दिन, दिन रैन' इस अंतरे में 'रैन' शब्द पर रची रेंसांनि पसांनिरेंसां आदि स्वरसंगतियाँ रक्तिदायक लगती हैं।
- कर्नाटक शैली का प्रयोग: जैसे राग शिवानी, राग तिलंग भैरव, राग अपूर्वकल्याण हल्यादी रागों में रची हुई तरानों की बंदिशें।
- छोटी छोटी तानों का आकर्षक प्रयोग: जैसे, (i) राग तिलंगभैरव 'जय जय शंकरा' (द्रुत तीनताल), (ii) राग रवी भैरव 'आये मोरे मंदिरवा' (द्रुत तीनताल) की बंदिशों में स्थायी के आरंभ में तथा (iii) राग भूप कल्याण (तराना, द्रुत एकताल) की बंदिश की समाप्ती में।
- एकही स्वर के दो रूपों का प्रयोग: जैसे, (i) राग शिवकली बंदिश 'अज ते मन गौरीपती परमेश्वर, जगदीश्वर महादेव शिव महेश' (वि. एकताल) के स्थायी में 'महादेव' शब्द पर

दोनों निषादों का कोशल्यपूर्ण प्रयोग, जैसे म मपधनि धनिध धधपग तथा (ii) राग-मधुरकंस, बंदिश 'नैना मोरे तुम बिन...' (ताल रूपक), स्थायी में 'नैना मोरे' इन शब्दों पर ग सा साम ग तथा 'कौन जतन करू मैं, बिसरत छबी ना' इस अंतरे में 'बिसरत छबी' इन शब्दों पर ग - ग ग इस प्रकारसे आकर्षक लगता है।

• स्वरांतर किये गये ठहराव। जैसे, (i) राग भिन्न कंस, बंदिश 'तोपे वारी जाऊँ' (ताल रूपक) के अंतरे 'मोहनी मुरत मन भावत, निस दिन जाऊँ नाम' में 'नाम' शब्द पर सागमध निधमग मगसालि यह मंद्र निषाद का ठहराव प्रसन्नता प्रदान करता है।

• अर्थानुसार शब्दों पर दिये गये ठहराव। जैसे, (i) राग अपूर्वकल्याण बंदिश 'ऐसी लगन तुमीसो लागी...' (द्वित आडाचोताल) इस में 'अखियन असुवन लागी, तुम बिन रहत उदासी' इस अंतरे में 'उदासी' शब्द पर शुद्ध मध्यम का प्रयोग उदास भाव विशेष रूप से दर्शाता है। तथा (ii) राग रवी भैरव बंदिश 'कैसे पाऊँ मैं शिव...' (ताल रूपक)। इस बंदिश में 'कैसे' ये शुरुवात के शब्दों की गमधपम ग-रेसा यह

स्वरसंगती बंदिश का कारुण्य भाव गहरा करती है।

• अनाघाती लया। जैसे, (i) राग मधुर कंस, बंदिश 'शाम मनमोहन, कांहा नंदनंदन' (ताल रूपक)।

• स्थायी में 'मन' और 'नंद' इन शब्दों पर, तथा 'बन्सीधर गोपाल, गिरीधर माधव' इस अंतरे में दोनों 'धर' शब्द पर तथा (ii) राग रवी भैरव, बंदिश 'कैसे पाऊँ मैं शिव...' (रूपक) इस में स्थायी में 'पाऊँ' शब्द पर। इससे श्रोता एक सुखद अनुभूती पाता है।

• बंदिश का साहित्य पक्ष: शास्त्रीय संगीत की बंदिशों की रचना में जैसे तो साहित्यिक मूल्य का महत्व कम होता है, पर इन बंदिशों में शब्दों का जो चयन किया है, वह नादमय, गेयप्रधान तथा उच्चारण की दृष्टि से सुलभ है। इस वजह से वो शब्द गायकी में सहजता से घुलमिल जाते हैं। अपने प्रदीर्घ गायकी का अनुभव, अपने शैली के अनुरूप तथा अपनी पसंद के अनुसार ही प्रभाजी ने शब्दों का चयन किया है। इस वजह से प्रभाजी द्वारा रचित बंदिशों का काव्यात्मक/साहित्यिक स्तर ऊँचा है।

• इन बंदिशों में अधिकतर ईशस्तुती होने से यह बंदिशें साहित्यिक या काव्यात्मक

दृष्टिकोण से भक्तिप्रधान हैं। इन बंदिशों में जैसे मुलाख्त का है वैसे ही राग कौशिक की बंदिश में उन्होंने 'रौदन' 'प्रलय', 'त्रिशूल', 'अच्छ' जैसे कठिन शब्दों का प्रयोग किया है और इन शब्दों को शुद्ध स्वरों के साथ से बंदिश का जो भाव है (निरस) वो अधिक निखरता है।

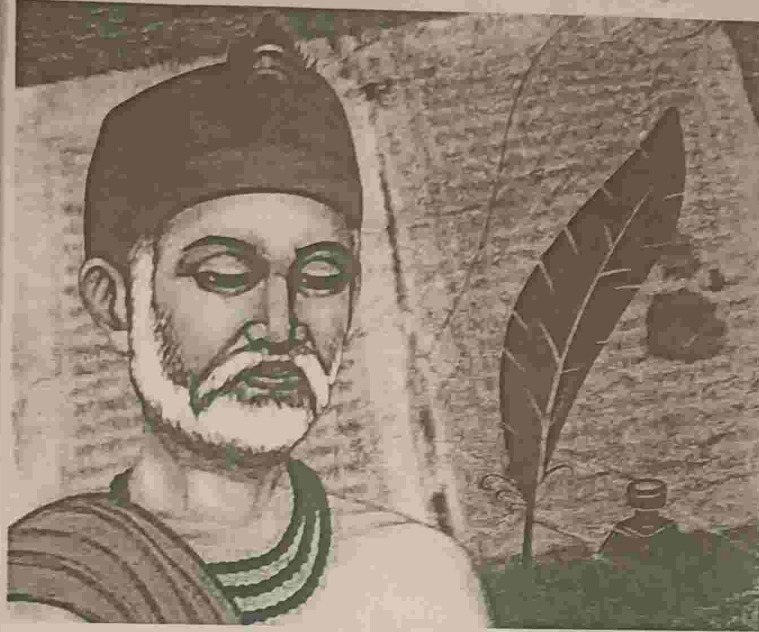
• इन नये रागों की बंदिशों में इशस्तुती (जो स्त्री व पुरुष गायक दोनों भी गा सकते हैं), के अलावा अर्ध वर्णन तथा प्रेमभाव का अन्य विषय भी आये हैं। ऐसी बंदिश स्त्रीवाचक हैं, तो पुरुष गायक को भी समय असुविधा होती है, बात अपने चिकित्सक स्वर के कारण प्रभाजी के नज़र में आयी। पुरुष गायकों की यह असुविधा दूर करने के लिए उन्होंने ही सर्वप्रथम बंदिशों में विकल्प दिये हैं। जैसे (i) राग अपूर्वकल्याण, बंदिश 'साई सबन के...' स्थायी अंतरे दोनो में 'आह'/'आय' इस प्रकार (ii) राग कंस, बंदिश 'आज घर उठे मोरे शाम...' के अंतरे में 'निरख रही मैं'/'निरखत है' इस प्रकार (iii) राग मधुर कंस, बंदिश 'पार करो केरे नैया...' के अंतरे में 'बीच बीच में' 'अकेली'/'बीच भँवर' (पृष्ठ 114 पर पढ़िए)

26 ज
स्वरकार
वागरी
आरतर
द्विराजमा
सम्मानित
की बुजुग
अरे इस
उत्साह के
खास
के लिए
दी उपर
सर्धिय
सम्मान है

साधो रे

(कबीर समग्र)

संस्करण 22-23



संपादक

डॉ. मधु रानी शुक्ला

सह-संपादक

शाम्भवी शुक्ला

प्रकाशक :

ओमेगा पब्लिकेशन्स

4378/4वी, जी-4 जे. एम. डी. हाउस

गली मुरारीलाल, अंसारी रोड,

दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

फोन : 9811787417, 23278062

E-mail : omega_publications@yahoo.com

हेड ऑफिस :

79/23, लक्ष्मी गार्डन,

सत्य ज्योति स्कूल के पास,

गुडगांव (हरियाणा)-122001

© : लेखक

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 995/-

ISBN : 978-93-94335-28-8

भारत में प्रकाशित

महेन्द्र गर्ग द्वारा ओमेगा पब्लिकेशन्स दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा सुमन प्रिंटर्स, दिल्ली में मुद्रित।

Sadho Re (Kabir Samagra)

Edited by Dr. Madhu Rani Shukla / Shambhavi Shukla

ancing			
	90	28. भक्त कबीर की समकालीन प्रासंगिकता डॉ. दीप्ति विष्णु	166
	93	29. पीडित जसराज के जीवन में कबीर के भक्ति पर की प्रासंगिकता रुहेहा कुमारी	173
	99	30. लोकसंगीत की परिधि में संत कबीर की रचनाएँ चन्द्रकिरण रीणा	179
	103	31. कबीर एवं रहस्यवाद आजाद कुमार	185
	111	32. कबीर एक व्यक्तित्व डॉ. प्रमिति चौधरी	192
	116	33. कबीरी गायन में वर्णित चार राम डॉ. गीताली शरद पांडे	196
	121	34. भक्त कबीर द्वारा रचित वाणी का विषयगत अध्ययन (श्री गुरु ग्रंथ साहिब के विशेष सन्दर्भ में) जसप्रीत कौर	206
	126	35. Sufism of Saint Kabirdas Literary Dr. Yogini Bhaskarrao Sontakke	214
	130	36. कबीर के आध्यात्मिक चिंतन का मानव व्यवहार पर प्रभाव डॉ. वेबी दलाल	218
	137	37. कबीरी लोक गायन 'निर्गुण' के परिपेक्ष्य में एक साहित्यिक अध्ययन अरविन्द कुमार गुप्ता	223
	142	38. कबीर के काव्य में सौंदर्यबोध डॉ. सुनील कुमार तिवारी, वीक्षा चौधरी	229
	147		
	152		
जक चेतना	155		
	163		

कबीरी गायन में वर्णित चार राम

डॉ. गीताली शरद पाडे
प्राचार्य, अति. प्रोफेसर कला महाविद्यालय,
झीएचबी कॉलेज, मलकापुर, अकोला (मह.)

सारांश

संत कबीर 15 वीं सदी के महान संत हैं। उन्होंने अध्यात्मिक रचनाएँ कीं। उनका साहित्य विपुल है। इन अध्यात्मिक रचनाओं द्वारा (जैसे साखी, सबर, रमैनी कहा जाता है) उन्होंने सामान्य लोगों को उन्नति का सच्चा मार्ग दिखाया। साधारण लोग अज्ञान से बंधे हुए हैं। मैं, मेरा परिवार यहाँ तक हूँ उनकी सोच सीमित हो गई है। मनुष्य अपने वास्तविक आत्मस्वरूप को भूल गया है। इसी अज्ञानवशात के कारण वे वह जीवन में बहुत दुःख पाता है। मनुष्य के सब दुःख समाप्त करने के लिए, उसे आनंदका सच्चा मार्ग दिखाने के लिए कबीर हमें उनकी रचनाओं द्वारा सचेत, सावधान करते हैं। कबीर की वाणीयों या दोहे जो गाये जाते हैं उनसे कबीर ने जीवन की छोटी छोटी घटनाओं का आधार लेकर हमको जीवन की वास्तविकता समझाने का प्रयास किया है।

कबीर की इन रचनाओं में कुछ रचनाएँ बहुत सरल हैं तो कुछ कटु रचनाएँ (क्रिस्ताल) हैं। भी जीवन में बड़ा गर्भीर आशय छुपा रहता है।

कबीर के चार राम ऐसी ही रचना हैं। इस शीघ्र निबंध में इस रचना का विवरण किया है। कबीरजी ने जो ज्ञान दिया है वह सच्चा ज्ञान है जिसमें आत्मा से परमात्मा में विलीन होने की बात कही है। उसी प्रकार राम के माध्यम से जो राम वास्तविक परब्रह्मरूप है वही दशरथ के पुत्र राम के रूप में अवतारित हुआ। यही सच अंतरात्मा ने विराजमान है, जिसे आत्माराम कहते हैं। वही ईश्वर रूप है राम इति सृष्टि का

— श्री समग्र —

निर्माण, पोषण और लय करता है। वो ही परब्रह्म है जो इन तीनों रूपसे परे है। इस रूपके दर्शनसे हम हमारे वास्तविक स्वभावका अनुभव करते हैं जो अतीव आनंददायी है।

प्रस्तावना

कबीरी गायन केवल गाना ही है। कबीरी गायन में संतोंकी वाणीयें गायी जाती हैं। इन वाणीयोंमें प्रकृती में प्रदीप्त होने वाली घटनाएँ हैं जो हमारे जीवनके भी अनुभव हैं। जब तक हम इन चिजोंको देख नहीं लेते तब तक गितनीभी बातें हम कहते हैं वह सब धोती हैं। संतोंकी वाणी में प्रकटीकल अनुभव हैं। उन्होंने जो भी बात कही है वह उनका निज अनुभव है। वह नीज अनुभव हमारा भी हो सकता है। तबाल केवल यह है की, उस स्तरपर हम हमारे जीवन को लाते हैं या नहीं। इस सोच को हम जीते हैं या नहीं।

संतों की वाणीयें हमारी धरीहर हैं। इसे दो तरहसे जानन किया जा सकता है, या जीवीत रख जा सकता है। एक साहित्यिक दृष्टीकोण से लिख हुआ जो पढ़े-लिखे लोगोतक जाता है और गायन द्वारा अनपढ़ (जो अधिक मात्रा में है) लोगोतक जाता है। बरसोंसे इन वाणीयोंका गायन कर रहे लोगों में, संतों की वाणी के प्रभाव से परिवर्तन आया है, आ रहा है, आ सकता है। संतों का जो नीज अनुभव है वह हमारा भी नीज अनुभव बने, उन्होंने कहीं बातों का, तथ्योंका हमें भी साक्षात्कार हो सकता है। इसलिए उनके वाणीयो गायन वह अगर उसमें कहे तथ्योंका मर्मग्रहण करके किया जाये तो वह गायन ज्यादा असरदार हो सकता है। इन वाणीयों के द्वारा कबीर हमें क्या कहना चाहते हैं? उसका आकलन भतीभती हो सकता है।

संकेत शब्द : कबीर के चार राम

उद्देश्य

आज की सामाजिक परिस्थिती अस्थिर और अशान्त है। लोग एक दूसरे के प्रति संदेहग्रस्त हैं। मनुष्यका जीवनमान निम्नस्तर पर पहुँचा है। सुसंवाद, सहकार्य, भाईचारा, एक दूसरे के प्रति अपनापन, मानवता, आदिका दर्शन समाज में तुल्य हो गया है। ऐसे सामाजिक वातावरणमें रहना बहोत कठिन हो गया है। ऐसी सामाजिक, पारिवारिक परिस्थितीमें मनको अगर शांती, समाधान, सुख, तृप्ती और निर्भयता का अनुभव कराना है तो हमें संत वचनों के अनुसार जीवनको चलाने की आवश्यकता है। क्यों की केवल संत ही हमें इसके लिये यथार्थ मार्गदर्शन कर सकते हैं, जिन्होंने इसी समाज में रहकर उस दिया। आनंदका अनुभव प्राप्त किया है।

साधो रे (कबीर समग्र) : 197

सं तुष्टि
।, लोक
में धां
अनेक
र के
इन पत्र
इ अर्द्ध
धोयक
केवल
में का
दुर्लभ
किन्तो
ने से,
किन्ना

... (66/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

... (74/01) ...

Volume 10, 2022

ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

Volume 10, 2022
September 2022

NAVADASHPRABHA

GAURAVANK

नवदशप्रभा जौटवांक

SMARAYOGINIE PADMAVIBHUSAN DR. PRABHA ATRÉ



Special Issue September, 2022

NAMASTE.

Feeling very glad to inform you that we three disciples of Swarnogini Dr. Pradha Atraji - Dr. Ghali Pande, Dr. Anandra Saravdiker & Dr. Nilma Chhapekar have taken initiative with prior permission of our respected guru for an international level, multilingual research journal in the form of a Granth named 'NavdashPrabha' on the works and contributions of esteemed Dr. Pradha Atraji. This is her 99th birth year and recently she also received the prestigious PadmaVibhushan award from the government of India. Requesting you to kindly go through the attached document and participate in this venture by sending your article.

With great pleasure we would like to inform you that internationally renowned legendary vocalist of Kirana Gharana, PadmaVibhushan Swarnogini Dr. Pradha Atraji is completing more glorious decades of her relentless musical life journey and is marching towards golden melodious century. On this auspicious occasion, to review and exhibit her glorified personality and creativity, to appreciate her legendary musical legacy and her unmatched and most valuable contribution and works in the field of music, we have planned to publish Gaurav Granth. Being her disciples, it is our humble attempt, pleasure and expression of gratitude for her. This Gaurav Granth 'NavdashPrabha' is going to be published with the blessings of our Guru Mata Resh. Dr. Pradha Atraji. This Gaurav Granth is published under aegis of the 3 disciples of Dr. Pradha Atraji.

DR. GITALI PANDE

Principal
Kala Mahavidyalaya, Malakapur,
Akola, Maharashtra
Composer, Renowned vocalist and Graded Artist of AIR Nagpur

DR. ATTINDRA SARVADIKAR

Assistant professor,
Department of Music
University of Mumbai, Mumbai, Maharashtra
Renowned vocalist and composer

DR. NILIMA CHHAPKAR

Former Professor and Head of Music Department,
Kala Jyoti Government Girls College, Indore,
Former General, and former Chairman - Board of Study (Music)
Dr. B. P. Yashwantrao Chavan, Akola,
Music Director, composer and Renowned vocalist

DR. SUNIL B. PATIL

Department of Music,
Kala Mahavidyalaya Malakapur,
Akola, Maharashtra



DOI:10.2753/941
ISSN 1527-0821

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

www.ajou.com

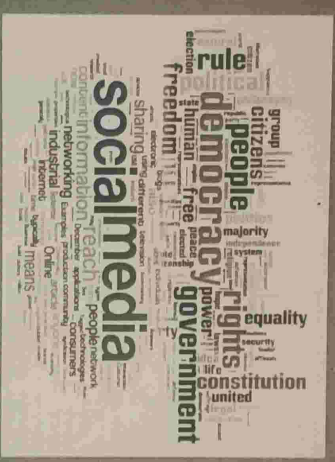
ISSN
1527-0821

- 1) **संगीत की पथी गुणवत्ता का प्रभाव - डॉ. अनिल कुमार, दिल्ली - भारत**
- 2) **प्रभाव (सोशलिंग) का प्रभाव - प्रस्तुति का प्रभाव, गुणवत्ता - डॉ. अनिल कुमार**
- 3) **www.ajou.com**

www.ajou.com NAVAOSHRAVA GAURAVANK Special Issue Sept 2022 131

18/11/2022 - 2022

राजकाळीन लोकशाही आणि प्रशार माध्यमे



संपादक
डॉ. संदीप बी. काळे

13	लोकशाहीतील प्रसार माध्यमांची बदलती भूमिका डॉ. राजेश उल्तमराव पटकर	130
14	लोकशाहीतील प्रसार माध्यमांची बदलती भूमिका श्री गणेश महादेव सातगुते	141
15	लोकशाहीतील प्रसार माध्यमांची बदलती भूमिका श्री. शिवलाल कांतीलाल शिंदे	150
16	लोकशाहीतील प्रसार माध्यमांची बदलती भूमिका कु. जया नारायण शिंदे	160
17	लोकशाहीतील प्रसारमाध्यमांची बदलती भूमिका कु. सीमा तबाजी भानगुडे	169
18	लोकशाहीतील प्रसार माध्यमांची बदलती भूमिका श्री. अजित सुनिल हरिश्चंद्र	175
19	भारतीय संगीताच्या प्रसिद्धीत प्रचार—प्रसार माध्यमांची परंपरा व त्यांचे बदलते स्वरूप डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	183
20	भारतीय लोकशाही आणि प्रसार माध्यमे प्रा. किशोर शेखराव चौर	194
21	भारतीय लोकशाही आणि प्रसार माध्यमे : एक अभ्यास प्रा. नंदुलाल आनंदा पाटील	198
22	लोकशाहीत प्रसारमाध्यमांची बदलती भूमिका प्रा. सुधीर वि. बानुबाकोडे	202
23	२४ तास पत्रकारिता राहुल बोर्डे	209
24	A Study of the role of human rights and role of media in contemporary India Dr. Diwakar Dhondu Kadam	213

मनो अर्थात् संवेदनशीलता हीच आहे. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपली संवेदनशीलता वापरून आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते.

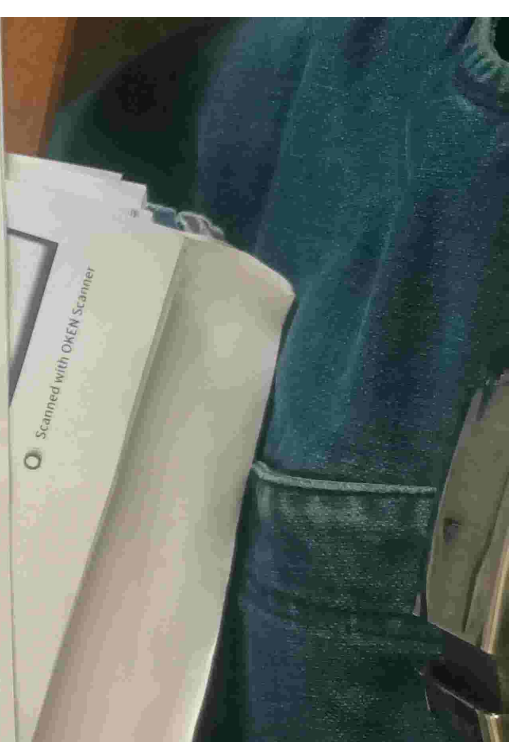
संवेदनशीलता हीच आहे. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपली संवेदनशीलता वापरून आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते. याच संवेदनशीलतेमुळे जीव जंतूंना आपल्या पर्यावरणातून आपल्याला आवश्यक असलेली वस्तू शोधून काढण्यास मदत होते.

Scanned with OKEN Scanner

स्वातंत्र्य संश्लेषण... 187

स्वातंत्र्य संश्लेषण... 186

... 187



2024, 21-2
102024 102024-102024

E-ISSN : 2348 - 6252

Research Journal of Language, Literature and Humanities



International Science Community Association

Scanned with OKEN Scanner



International Science Community Association
9th International Virtual Congress (IVC-2022)
5th - 10th August 2022

at
www.isca.net.in
Website: www.isca.net.in, www.isca.in, www.isca.org.in
E-mail: conferenceivc@gmail.com

Abstract/Manuscript No: ISCA-IVC-2022-205HS-001 Date: 09 August 2022

Dr. Sunil Babulaji Parake

Arts College Malapur Akola (MS), V.H.B. Colony Malapur Akola TQ-Dist AKOLA

You are most respectfully invited to participate in 8th International Virtual Congress (IVC-2022) at www.isca.net.in from 5th - 10th August 2022. IVC-2022 is being organized by International Science Community Association. Details of ISCA Journals, ISCA Conference, ISCA Awards, ISCA Ideal International E-Publication and ISCA International E-Bulletin are given at ISCA website www.isca.in

We are pleased to inform you that your abstract/paper entitled "Music is the Global Source of Health Wealth and Prosperity" has been accepted by scientific committee for Oral presentation in the conference. All abstracts will be published in souvenir of IVC-2022 with ISBN 978-93-89817-57-7. Proceedings will be sent for evaluation into SCOPUS. Papers approved by two experts will be published as special IVC-2022 issue of ISCA International peer reviewed journals (RJBS (ISSN 2278-3202) and Research Journal of Recent Sciences (ISSN 2277-2502)).

Please confirm your participation immediately so that we may make all the arrangements to make conference a grand success. Please pay registration fees immediately and oblige. Please keep in mind that you or your institute should bear your registration fee. It won't be possible for us to sponsor you. For any other enquiry, please contact us without any hesitation.

Registered author will receive the separate certificate of conference and workshop.

With kind regards and best wishes.

Yours sincerely,
Dr. Ashish Sharma
ISCA President and Conference Coordinator
E-mail: ashishsharma4@gmail.com
Mobile: +91-80570-83382

have developed traditionally and have been preserved in various ways, especially folk music. Traditional music almost stands on the psychological and scientific theory, but no more research is related subject of music and ignores it. Music performs almost the response is not oral, psychological response. Folk Music is really helpful in curing minor to major health problems. Music is impact on whole human body, like mental, physical improvement this called music therapy. The seven swaras has their own specific place in the body from where it is rendered.

- So:- from the throat,
- Re:- from the nose of the palate,
- Ma:- from the core of cerebrum,
- Pa:- from the neck, throat, cerebrum, palate and lips,
- Di:- from throat and palate,
- Ni:- from throat and lips

So while the notes are rendered with the efforts of the parts of body, physical and psychological part is stimulate by listening music. As known the melodic scales consisting notes. Each Raga has its own significance in terms of notes, mood and nature. When our ears receive melodic sounds it start activating the inner soul. Researchers have found the evidence of some ragas like Shyama Kalpan, which helps to activate of the body. Gauran Todi and yaman helps in activating Raga Bhairavi and pancham has the power of Divinity in attaining bliss as it activates the heart of the body. Raga Jaijavanti activates that in turn helps to control the sense organs of the body. Notes, Raga, Bhavari and Dardani helps to relax the lumbar area. Raga Bhup (found effective to purity). It also releases the different parts of body to mental higher balance. Even in today's scientific age, even today in our villages, if a person is bitten by a snake, its poison is removed by mantras through folk music. Shur and Sarangi have been proved to be the best instruments from the falling point of view. The music of Shur and Sarangi helps in the falling of the continuous clothing of the strings, god, shaddy, pancham and chakra) of the star depicts insomnia quickly. Sarangi has the ability to remove the madness of a madman.

Music and Wealth's Correlation: Music is improving health and well-being. Spending on good health, music, and wealth's correlation with each other, folk music depicts the daily life, the joy and sorrows of the small sectors of society. The folk music of the lower caste is living even today and folk music they have percussion instruments inspire of the rising prices, and the to do for the welfare of the people. Folk culture is residential. Man is striving for wealth and position with lot of stress, tension and anxiety. There are two ways in which a man experiences exhibition, physical and mental exhaustion.

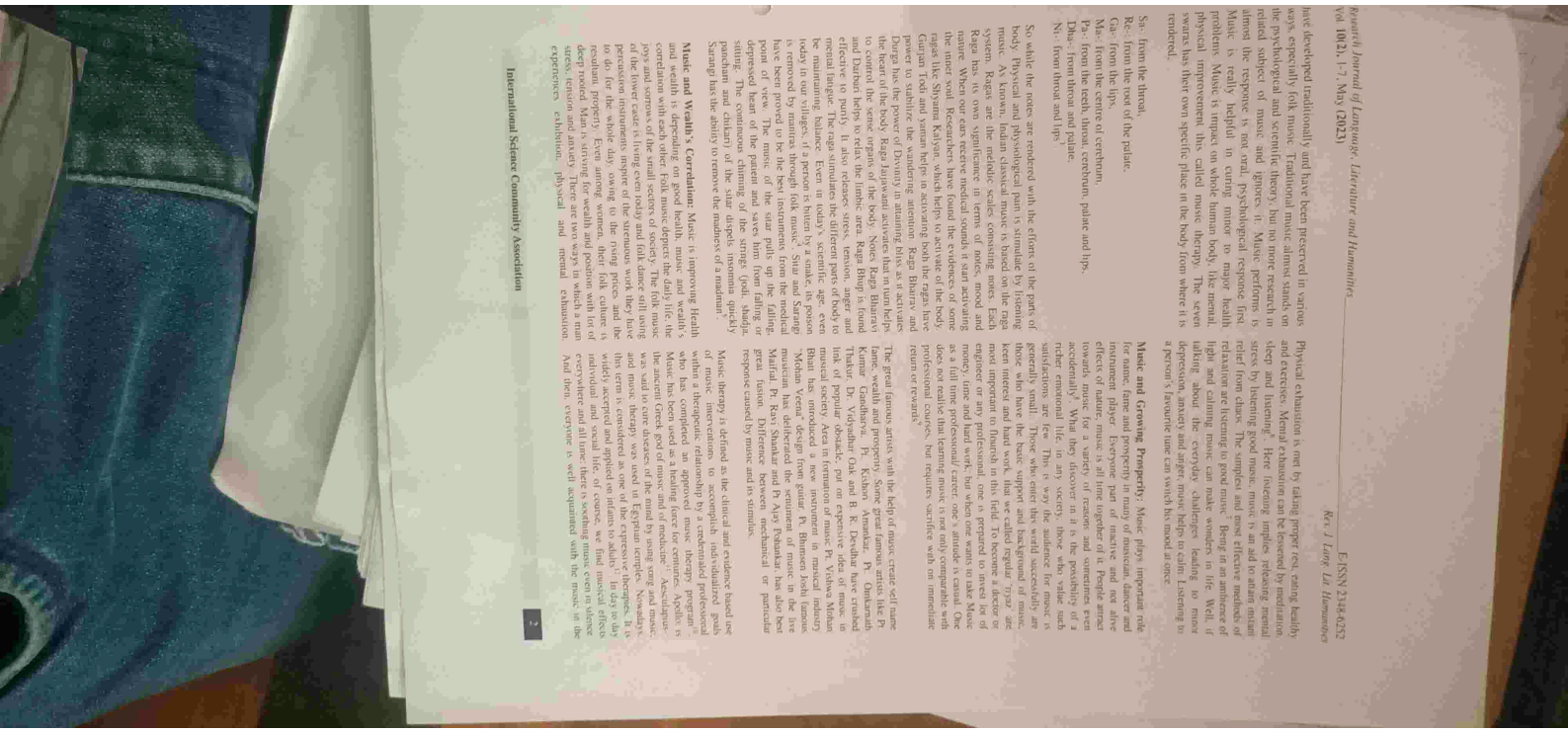
International Science Community Association

Physical exhaustion is met by taking proper rest, eating healthy and exercises. Mental exhaustion can be lessened by meditation, sleep and listening. Here listening implies releasing mental relief. Listening good music, music is an aid to attain mental relief. Listening the proper and good effective methods of relaxation are listening to music. Listening in life. Well if high and calming music can make wonders in life. Well if talking about the everyday challenges, leading to minor depression, anxiety and anger, music helps to calm. Listening to a person's favorite tune can which he mind at once.

Music and Growing Prosperity: Music plays important role for name, fame and prosperity in many of successful career and played every day. Music is an effective tool to get an effective of faster music's all time together of it. People are towards music for a variety of reasons and sometimes even accidentally. What they discover in it is the possibility of a richer emotional life in any society, those who value such satisfactions are few. This is why the audience for music is generally small. Those who enter the world of music are most interested and hard work, that we called regular "fans" are most important to flourish in this field. To become a doctor or engineer or any professional, one is prepared to invest lot of money, time and hard work, but when one wants to take Music as a full time professional career, one is not only compatible with one's professional courses, but requires sacrifice with an immediate return or rewards.

The great famous artists with the help of music create self name, fame, wealth and prosperity. Some famous musicians like P. Thakur, Dr. Vaidyanath Oak and B. R. Deedar have crunched link of popular obstacle, put on expensive idea of music in musical society. Area in formation of music. Pt. Vidwan Mahan Bhatn has introduced a new model of music. Pt. Binmen Joshi famous Mohan has identified the sentiment of music in the three Mallari. Pt. Ravi Shankar and Pt. Ajoy Chakrabarti has also been great fusion. Difference between mechanical or particular response caused by music and its stimulus.

Music therapy is defined as the clinical and evidence based use of music interventions to accomplish individualized goals within a therapeutic relationship by a credentialed professional who has completed an approved music therapy program. Another is the ancient cure disease of the mind by using song and music, and music therapy was used in Egyptian temples. Nowadays this term is considered as one of the expressive therapy to be widely accepted and applied on others, we find musical effects individual and in group. In all these there is seeking music even in silence every where. All these are well acquainted with the music, or the



MUSIC IS THE LANGUAGE OF DR. PRABHA AIRE'S POETRY- ANTASMAR INNER VOICE

Asst. Prof. Pravin P. Tale
Head, Department of English,
Kala Mahavidyalaya Malekpur Akola (MH)

"The more you praise and celebrate your life, the more there is in life to celebrate." - Oprah Winfrey
I am very pleased to express my greetings on the occasion of the 91st birthday of Indian classical vocalist and doyen of *Kirana Gharana*- Dr. Prabha Aire. We are fortunate to witness the success of this great legend from the bottom of my heart I wish her a Happy Birthday and congratulate her for receiving the most prestigious Indian Civilian Award '*Padmashree*' recently.

Dr. Prabha Aire is one of the purest gems in Indian classical music from *Kirana Gharana*. She has been awarded so many titles like *Padmashree* in 1990, *Padma Bhushan* in 2002 and *Padma Vibhushan* recently in 2022. She was born on 18th September 1932 in Pune. Accidentally she chooses music as a career. When her mother was not keeping good health, somebody suggested that music would help her to recover from illness. Thus Prabhata also started to learn music. While taking the lessons of Music she also earned degrees like Bachelor of Science, LLB and also awarded a doctor degree for her thesis on *Sargam*. Destiny led her in the field of classical music. Dr. Prabhata is a versatile personality in arts and music. Apart from her popularity as a vocalist, musician, composer, educationalist etc., she is also a very sensitive and emotional poet. It is very difficult to capture the proper words to write poetry with sublime balance. Dr. Prabhata in her anthology of poetry, 'Inner Voice' (*Antah Swar*) presents her inner voice in the form of poetry. This anthology recalls the poetry of Emily Dickinson. This article tries to throw light on various aspects of Prabhata Aire's poetry.

Music and Poetry:

Antahswar (Inner Voice) is divided into two parts, first part of the poetry is written on music and second part is written on poetry deals with the aspect of life and in this paper we only focus on the first part of the poetry which deals with Music. Throughout her poetry, especially in the first part of the anthology, she uses all the terms, concepts, words related to music repeatedly like *Humai, bandish, swara* etc. When we read her poetry that time we realise as if we are listening to some musical song because she uses all her concepts, ideas interwoven with the thread of music. It is the watermark which cannot separate her poetry from music.

Contrast:

She presents pessimistic inner thoughts and emotions in her poem- 'Dark Night' (अन्धकार). On the contrary, in her next poem, 'Full Moon' (पूर्ण), she presents optimistic thoughts. This contrast and sudden opposite change of mood recalls the poetry of Lord Alfred Tennyson who presents contrast in his poem *Ulysses* and Louis Eizer. *Ulysses* is the poem of courage, bravery, journey etc. and on the contrary Louis Eizer is the poem of laziness, cowardice. In her poetry she used contrast of ideas in one line like bottom of the sea and snow peak, sweet pain.

Use of Indian Traditions and Figure of Speeches:

She uses Indian traditions in her poetry like showers and coating houses outdoors with cow dung (man). It is the method in Maharashtra of cleaning houses every morning as well as she uses many figures of speech in her poetry like personification, simile, metaphor etc. To enhance the meaning, contrast is used in so many poems to bring the effect. The poem 'Immortal Notes' (तमनाई) presents loneliness of poet and uses personification figure of speech to outline her deep emotions. Poem ends with the union of an artist with the listener. She uses a personification figure of speech as (swan) notes are awake and she compares this awakening with blooming of bud. The poem 'Non Duality' (नैपुण्य) is the presentation of an abstract idea.

Effective use of Mix language:

She uses Hindi mix language for her poetry and it is the effect of stage performance of an artist who uses Hindi language for her performance on the stage.

Theme of Isolation, Loneliness and use of Powerful Imagination:

In 'Habitat' (वैश्व) poem she presents inner voice of isolation, nervousness as well as use of Hindi mix words. Powerful imagination is used to present the beautiful image of rainbow, music and listener. The poem 'Intense Notes' (तनाई) is presenting her sorrow before readers and concludes it with musical notes as she is waiting for the union of her sorrows with the notes. The path of an artist is very difficult and it is described in the poem 'The Side' (सैरवै वरवै). Delicacy of tone is presenting beautifully in the poem 'Tangible' (तनाई). The poem 'Tangible' is a masterpiece of using imagery beautifully. Here poetess is compare with sailor who faces various obstacles, hurdles, storms in his journey and it is symbolise the hardest period of the life of an artist. In the poem 'Inner Song' (तनाई), composition of song or *Banarshi* is creative process. Words are suddenly comes from the bottom of the heart or from some hidden places or from the soul and capture notes and at last becomes a beautiful song. The process of the composition of song is captured in the next poem 'Beyond Words' (सुनहम). Words and notes come as rain and convey the meaning beyond the words. Beautiful composition is interwoven with notes then its effect is multiplied and at last it becomes dominant over words. It is the dual effect of notes. The inner turmoil or storm of an artist is the theme of the poem 'Two Sides' (तनाई). An artist is like a singing bird who is deeply wounded by innumerable notes.

Use of Myths and Symbols:

Blue is the colour of peace, serenity, maturity. In this poem 'Blueness' (तनाई), poetess' heart fill with full of emotions and sheds its blueness like a sky. This blueness with notes embroidered the inner sorrow of poetess. 'Circle' (वैश्व) is the symbolic poem where poetess uses mathematical concepts skillfully. Square, triangle, circle etc. images are used to present an artist's experience of searching for best performance and production of best musical composition. The change of circle to triangle or etc. may indicate the personal losses of the poetess but with the help of music she again starts her life as an artist. In her next poem 'Shared Sorrow' (तनाई), 'Note' is personally as human being who is wounded and returned from long time. She is accompanied with the notes and pain is the companion for their journey and they all travel in the same boat. In 'Kashia and Mira', *Kashia* represents romance, youth, love etc. and *Mira*



poets sacrifice, loneliness, devotion etc. Here, may be *Radhika* and *Mira* symbolized as 'Rogers' which are separate and the artist can sing only one *Rogers* at one time and it is symbolized in the last stanza and *Mira* want to meet the poetess separately.
Theme of rejection and love in 'Thumri':

The term 'Thumri' is derived from Hindi verb *thumkara* which means "To walk with a dancing gait or such a way that the ankle-bells tinkle." Dr. Prabhakar writes five short poems on 'Thumri'. In this poem, she uses symbolic images like *Sarathi*, Rain in return Monsoon, Radha's sacred tree or tree of the flame of forest, *Kailash-Misri* are interwoven beautifully in this poem. Rain in the return Monsoon is compared to a woman who is returning from her father's house to husband's house. *Kailash* is playing with the flute and the poetess has envied it because he gives more attention to flute than poetess. Here readers see glimpses of Mira's urge for *Kailash*. Strong metaphor is used for eyes in the fourth number of Thumri. Themes of all above four Thumris are gathered together in the last Thumri.

Image of Thumri as Nazariya:

Beautiful image of Thumri embroidered by a poetess as it is wearing an abkhet from Radha, holding *Kailash's* flute, having *Mira's* worship as well as having the urge of the soul in her voice, her eyes having satisfaction of union and there is the abstract temple in her way.

The relation of notes and rhythm is beautifully depicted in the poem 'Mannung Nere'. In the last poem of the first part of the '*Amraswar*' (Inner Voice) is 'Pearl' which presents the journey of notes with various similes like butterfly, flower etc. and at last this journey turns into pearl. Thus, here we see the first part of the anthology '*Amraswar*'. Poetess gives her inner voice as a medium to express herself. All the poems are deeply connected with music and aesthetics.

Bibliography/ References:

- 1. Aare Prabha - Anaswar, Bookmark Publication, 2007
- 2. Aare Prabha - Anaswar, B. R. Publication Publication, 2007

Impact Factor : 7.832



Volume 12 Special Issue 1

"A COMPARATIVE STUDY OF FINANCIAL PERFORMANCE OF ELECTRICITY COMPANIES OF GUJARAT"
(<https://www.ijfans.org/issue-content/a-comparative-study-of-financial-performance-of-electricity-companies-of-gujarat-5312>)

Volume 12 | Special Issue 1
A Correlative Study Of Conventional Shopping And Online Shopping Special Reference To Meerut City
(<https://www.ijfans.org/issue-content/a-correlative-study-of-conventional-shopping-and-online-shopping-special-reference-to-meerut-city-3746>)

Volume 12 | Special Issue 1
Gender Inequality & Workplace Harassment Of Women In India (<https://www.ijfans.org/issue-content/gender-inequality-workplace-harassment-of-women-in-india-3651>)

Author: ijfans@ijfans.org | www.ijfans.org | <https://doi.org/10.24018/ijfns.12100001>

**A STUDY OF JOB SATISFACTION OF COLLEGE LIBRARIAN
WORKING IN THE ACADEMIC AFFILIATED COLLEGES IN THE
DISTRICT OF AKOLAM**

D. SEEMA KALE
Librarian
Am College, Melkote, Akola MS

Abstract :
The study looked for librarians for job satisfaction in librarians working in an academic college located in the Akola district of Maharashtra, India. A self-constructed job satisfaction questionnaire was developed and used to measure the job satisfaction of librarians working in academic colleges of Akola district. Data were collected from 50 academic colleges of Akola district. The study revealed that librarians do not feel stressed about fulfilling their duties and responsibilities. The study also revealed that librarians do not feel stressed about having varying levels of job satisfaction and are highly satisfied with their work. College librarians have the highest levels of customer satisfaction. However, academics are not satisfied with some academic management policies that focus on their own problems. This course is useful for planning, making decisions, developing a professional library workforce, good library and information services, developing a good organizational environment in college libraries and information centers, and developing business plans.

Introduction :
I have personal experiences or emotions, including job satisfaction. However, based on research, job satisfaction of college librarians working in academic affiliated colleges can vary depending on several factors, such as salary, workload, support from administration, opportunities for professional development, and the overall culture of the institution. Some studies suggest that a higher salary, manageable workload, and support from administration and colleagues can positively impact job satisfaction among college librarians. In contrast, inadequate resources, heavy workload, and lack of support can lead to job dissatisfaction and burnout. Moreover, opportunities for professional development and the overall culture of the institution, such as open communication, mutual respect, and a positive work environment can contribute to the job satisfaction of college librarians.

In summary, various factors can influence the job satisfaction of college librarians working in academic-affiliated colleges. Creating a supportive work environment, providing ample resources and opportunities for professional development, and offering competitive salaries and benefits can improve job satisfaction and retention among college librarians. Quality of Service: College librarians play an integral role in the academic success of students by providing access to knowledge and resources. When librarians are satisfied with their jobs, they are more likely to provide a higher quality of service to students. Retention: Job satisfaction among college librarians can lead to increased retention rates. A satisfied librarian is less likely to leave their position, ensuring a stable and experienced workforce and ensuring continuity of service. Productivity: A satisfied librarian is more productive and efficient in their role, resulting in better service levels to students and increased collaboration and teamwork among colleagues, leading to a more efficient and effective working environment. Collaboration: Job satisfaction can also increase collaboration and teamwork among colleagues, leading to a more efficient and effective working environment. Sense of Purpose: When the work environment is conducive and satisfying, college librarians can feel a greater sense of purpose in their role, which ultimately leads to higher job satisfaction and fulfillment.

Methodology of the study :
Job satisfaction is an important aspect of any profession as it directly relates to an individual's overall well-being and motivation to perform their job effectively. In the case of librarians, a study on their job satisfaction is crucial to understanding the factors that contribute to their job satisfaction. Organizational policies, the work environment, job responsibilities, professional development opportunities, understanding job and management practices, work-life balance, and compensation. Furthermore, understanding job



satisfaction among librarians can help employers design a better job environment that promotes employee well-being and productivity. It can also help in retaining librarians in the workforce who are essential in providing effective library services to communities. Therefore, the rationale for conducting a study on job satisfaction among librarians is significant and relevant to the profession.

Objective of the study :

1. To study the stress and strain perceived by Librarian in academic colleges library
2. To examine the level of job satisfaction perceived by the library professionals of librarians of the college.

Hypothesis :

1. Library and information science professionals are being perceived stress and strain while discharging their duties and responsibilities.
2. There is no significant difference between the Library and Information Science professionals who are dissatisfied with their job.

Scope and limitation:
 Alada district academic academy belongs to Saint George Baha Amaraul University, Amaraul. This agency includes: Akola, Patna, Balapur, Akola, Telhara, Murizapur, and others. The study examines the satisfaction and dissatisfaction characteristics of the library and information science profession. Only library and information science majors were selected for the study. Academic colleges affiliated to universities operating in the Akola district are not included.

Research Methodology :
 In this study, normative survey methods were used for this study. A total of 50 librarians were selected for this study. The job satisfaction questionnaire measured the job satisfaction of library and information science professionals from selected academic colleges in the Akola district affiliated to saint george baha university, Amaraul. The collected data were analyzed using statistical techniques.

Data Analysis :

Table no. 11

Distribution of LIS Professionals based on perceived Stress and Strain

Frequency (fo)	Yes	No	Sometimes	Total
Percentage	12	32	06	50
	24%	64%	12%	100%
Fe	16.66667	16.66667	16.66667	
Fe-Fe	-4.66667	15.33333	-10.66667	
(fo-Fe) ²	21.77778	235.1111	113.7778	
(fo-Fe) ² /Fe	362.963	3918.519	1896.296	
Chi-Square	6177.778			

The table above shows the distribution of library and information science majors according to perceived stress and strain. It was shown that 24% of the respondents experienced difficulties in performing their duties as librarians and 64% of the respondents did not feel any stress or difficulties in performing their duties and responsibilities. It is proven that 06% of the respondents sometimes find it difficult to perform their duties and responsibilities.

Table no. 12

Responses related to facets of Job Satisfaction among Respondents

Statement	N	Satisfied %	N	No satisfied %
1. Overall functions of library.	41	82%	09	18%
2. Overall working environment of library.	39	78%	11	22%
3. Users satisfaction with facilities available in library.	34	68%	16	32%
4. Administrative policies towards the products faced by library professionals.	45	90%	05	10%
5. Professional development of LIS professionals.	43	86%	07	14%
6. His relationship with the clientele of the	42	84%	08	16%

Library	N	76%	2	24%
7. Supervision of my job in the library	40	80%	0	20%
8. Job design in library				

This study attempts to explore the level of job satisfaction among librarians and librarians of academic colleges in information science. LIS professionals are given five responses to determine their answers. The table shows responses related to different aspects of job satisfaction among respondents. The table shows that 82% of the librarians are satisfied with the performance of the entire library. 78% were satisfied with the working environment of the entire library. 65% of library users were satisfied with the accessibility of their college library. 99% of librarians are not created and face administrative policies of their library work. 89% of librarians are satisfied with professional development. 66% of librarians are satisfied with their relationship with library patrons. 76% of librarians are satisfied with the supervision of their library work. 89% of librarians are satisfied with job design.

Conclusion: Job satisfaction is an essential aspect of the library industry, particularly in academic colleges. Only content employees can make positive contributions toward the library's services. Job satisfaction also has a significant impact on the knowledge and skills of librarians and information scientists, which leads to the effective dissemination of information to library customers. A current curriculum is an effective tool for planning, decision-making, providing excellent library services, and achieving the overall objectives of academic colleges. Research indicates that most library and information science professionals in the Arabid district do not experience stress or difficulty while carrying out their duties and exhibit different levels of job satisfaction.

Studies reveal that library and information science professionals generally exhibit high levels of job satisfaction and report positive relationships with their managers. Despite this, some administrative policies implemented by academic institutions have led to dissatisfaction among these professionals. To increase job satisfaction and motivation among library and information science professionals working in university libraries, institutional policies need to identify and address the specific needs of these professionals. This will promote a positive organizational climate within academic colleges, libraries and improve the professional and job satisfaction of librarians and information scientists.

Bibliography:

1. Bolaji, R. N., & Nale, R.R. (2013). Job Satisfaction among Library and Information Science Professionals of Management Institutes in Karnataka State. *Journal of Advancements in Library Sciences*, 3(1).
2. French, D., & Seward, H. (1983). In *Dictionary of Management* (2nd ed.). Longman Sydney: Pan books.
3. Gunasundari, V., & Esmail, S.M. (2019). Factors Impact on Job Satisfaction of Library/Professional of Arts and Science Colleges Affiliated to Bharathidasan University: A Study. *Asian Journal of Information Science and Technology*, 9(1).
4. Nasser, A. (2019a). Job Motivation of Library and Information Science Professionals Working in Different Organizational Climate: An Investigative Study among University Libraries in Kerala. *Asian Journal of Information Science and Technology*, 9(18).
5. Pandita, R., & Dominic, J. (2018). Impact of Information Technology on the Job Satisfaction of LIS Professionals: A Case Study of Jammu & Kashmir. *DESIDOC Journal of Library & Information Technology*, 38(2).
6. Schmal, M. (2019). Job Satisfaction among Library and Information Science Professionals in Fiji. *DESIDOC Journal of Library and Information Technology*, 39(1).
7. Vij, R. (2017). Management of Pressures and Stress on Library Professionals in 21st Century. *International Journal of Research in Humanities & Soc. Science*, 5(3), 82-88.

March 2023

Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March-2023

ISSUE No. - (CCXXCVIII) 398 (B)

A Journey of Indian Women



Chief Editor
Prof. Viree S. Gawande
Aadhar Society
Research & Development
Tatung Institute Amravati

Editor
Dr. V.K. Keshave
Principal
Shri Kumbhari Vastupal Ganga Arts & Com.
College Karanjga (A) Jalgaon, Washin

The Journal is indexed in:
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit to : www.aadharjournal.com Aadhar Publications

B. Aadhav International Peer-Reviewed Indian Research Journal
Impact Factor-(SJIF) -8.575, Issue No. 398 -B

ISSN :
2278-9308
March
2023

Impact Factor - (SJIF) -8.632 ISSN - 2278-9308

B. Aadhav

Single Blind Peer-Reviewed & Referenced Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March - 2023
ISSUE No - 398 -B

A Journey of Indian women

Prof. Virag S. Gawande
Chief Editor

Director
Aadhav Social Research & Development Training Institute, Amravati.

D. V. R. Kodape
Editor,
Smt Kisanlal National Goenka Arts & Com.
College Karanja (LAD) Dist. Washim

Aadhav International Publication

For Details Visit To : www.aadhavsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

Website - www.aadhavsocial.com Email - aadhavsocial@gmail.com

INDEX

No.	Title of the Paper	Authors' Name	Page No.
1	शशीय मडिना: नदीय शरररररर रूदी नरररररी रूरीनरररी	डी. वदीय नरररररी	1
2	शरररीय मडिनाय ररररीय रररर	डी. डी.नरर रररररी	5
3	शरररीय शररर रररर मडिना शरररीररर	डी. नरररर नरररी	9
4	शरररीय मडिना: शररर, रररररर, ररररीररर	Dr.Subhaja Rameshaji Malik	14
5	शररररीय मडिना शरररीरररररर शररर रररर रररर रररर रररर	श. रररर रररररर डी. शररर रररररी	18
6	शरररररर ररररर ररररररर मडिनारी रूरीनरर	श. रररर रररररर	24
7	रूडरररर मडिनाय शरररर रररर रररर	डी. रूडीरर शरररीरररर ररररी	28
8	रूरी रररर मडिना शरररीररर	डी. नरररर रररररी	32
9	शरररररीय मडिनाय ररररीरर रररर रररर रररर	डी.नरररी ररररररर रररी	35
10	रररररररर ररररररररी रररर शरररीय रररररर मडिनारी ररररी	डी. रूरीनरर रररररर शररररर	40
11	मडिना शरररीरररररी ररररर	डी. शररर ररररीरर रररर	45
12	शरररीय मडिनाय रररररररररररर रररर	डी. नररर ररररीरी ररररर	49
13	मडिना रररररररर नररररी रररर	श. ररररीय ररररीरर	53
14	मडिना शरररीररर, नररररी ररर	डी. नरररर रररीररर ररररी	56
15	21 वरर नरररररीय मडिना शरररीरररररर रररर	श. ररररी ररररी	61
16	मडिनारी रररररीय शरररीररर ररररी ररररर ररर	डी.नरररी ररररीरर रररीरर	66
17	डी. शरररर र रररररीरर रररी ररररररर ररररी	श. डी. नरररर ररररी	71
18	मडिना शरररीररर ररररी ररररीरर	Dr.Archana D.Jhansare	74
19	मडिनाय रररर रररर ररररीरर ररररी ररररी	श. ररररी ररररी	78
20	शरररीय ररररी ररररीरर रररीय ररररीररर मडिना ररररीरर ररररीरर	श. शरररी ररररीरर रररी	80

Propof

अधिकांश श्रमिकों को श्रमिक कानूनों के अंतर्गत आने से वंचित कर दिया गया है, जिससे श्रमिकों को श्रमिक कानूनों के अंतर्गत आने से वंचित कर दिया गया है। श्रमिकों को श्रमिक कानूनों के अंतर्गत आने से वंचित कर दिया गया है। श्रमिकों को श्रमिक कानूनों के अंतर्गत आने से वंचित कर दिया गया है।

- Ashish Kumar, 2019, Women's empowerment under Modi Government, Report (UPR), Women's empowerment under Modi Government (opindia.com)
- Census (2011) FODUCATION, Census of India (Chupar, 1), Government of India.
- MOSTI, 2017, PARTICIPATION IN ECONOMY, Chapter 4, Ministry of Statistics & Programme Implementation, WSI/7/Chapter.pdf (onprp, nct.n)
- Prabhu Pingali, Anika Ayaz, Manjiv Ahluwalia and Anshu Khatun, 2019, Transforming Food Systems for a Rising India, Policy Studies in Agricultural Economics and Food Policy, ISBN 978-5-030-14408-1 ISBN 978-5-030-14409-9 (eds) (https://doi.org/10.1007/978-5-030-14409-9)
- FAO, 2011, The State of Food and Agriculture 2010-11: Women in agriculture: Closing the gender gap for development, ESA Working Paper No. 11-02, Agricultural Development Economics Division, The Food and Agriculture Organization of the United Nations, Rome, Italy.
- Ministry of Science & Technology, <https://www.mospi.gov.in/Pages/Release.aspx?PRID=1728597>
- 2021, <https://pub.gov.in/Pages/Release.aspx?PRID=1743360>
- Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, PIB Release, 06 August 2021, <https://pub.gov.in/Pages/Release.aspx?PRID=1577924>



J-Gate

INDEXED

RESEARCH NEBULA

ISSN 2277-8071

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX 10.22183

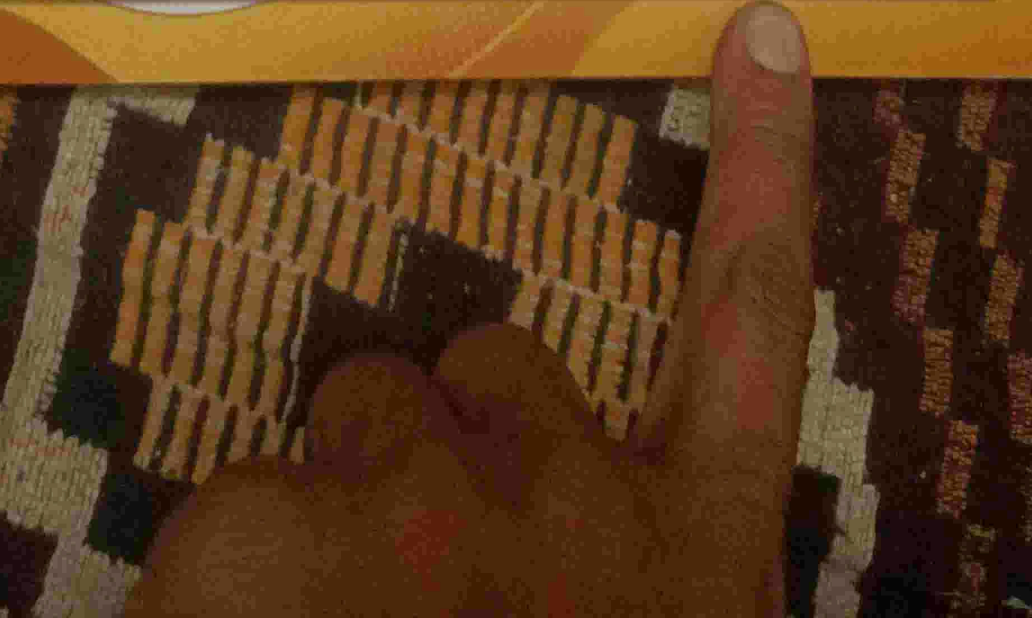
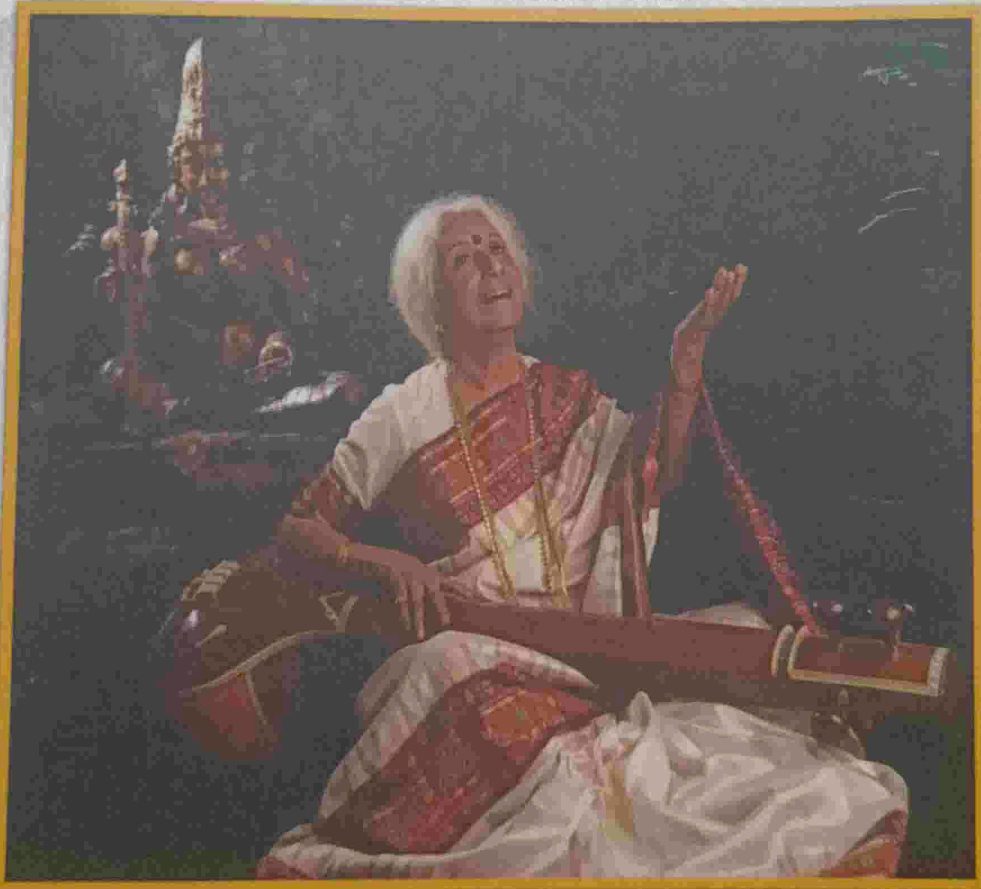
JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

NAVADASHPRABHA GAURAVANK

नवदशप्रभा गौरवांक

THE SPECIAL ISSUE ON THE WORK AND CONTRIBUTION OF
SWARAYOGINEE PADMAVIBHUSHAN DR. PRABHA ATRE
PUBLISHED ON OCCASION OF HER 90TH BIRTH YEAR.



संगीत शिक्षण पद्धती एक विचार = डॉ. प्रभाजी अत्रे.

प.द.द.ना मधुकाशर देशमुख
संगीत विभाग,
कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला
Mail- deshmkhvmr123@gmail.com
Phone no.=8668436767

आदरणीय प्रभाजी यांना माझे कोटी कोटी प्रणाम ।
आपणास मिळालेल्या पद्मविभूषण पुरस्कारा बद्दल आपले अभिनंदन ॥
फुलल्या दाही दिशा सप्तरंगीनी ।
गंधावल्या दाही दिशा सप्त सुरांनी ॥
सुर, ताल, शब्द, काव्य घेऊन आल्या नवदशप्रभांनी ।
माझे शत शत नमन तुला स्वर योगिनी ॥

स्तावना
प्रस्तुत शोध लेख हा डॉ. प्रभाजी यांच्या लेखातून मांडलेला संगीत शिक्षण पद्धती या विचारावर घेण्यात आला आहे. प्राचीन काळापासूनच्या संगीत शिक्षण पद्धती बद्दल सांगायचे झाल्यास ती गुरुमुखी आहे, असे सर्वमान्य आहे. थोडक्यात गुरु आणि शिष्य यांच्या परंपरेला संगीत शिक्षण पद्धतीमध्ये महत्त्वाचे मानले जाते. अशा साधनेतून गुरु आणि शिष्य परंपरा उदयाला गेली. या पद्धतीमध्ये कलेची जोपासना होत असे. कालांतराने संगीत कलेला राजाश्रय मिळणे सुरू झाले. या राजाश्रयामध्ये दरनिर्वाहाची काळजी नसायची. त्यामुळे कला ही कलेसाठी म्हणून जोपासली गेली. त्यामुळे संगीत साधना करणारे गायक कलाकार उत्तमरीत्या शास्त्रीय संगीताची जोपासना करू शकले. मात्र स्वातंत्र्यप्राप्तीनंतर संस्थाने खालसा झाली आणि संगीताचा राजाश्रय संपला. त्यामुळे लोकांच्या आवडीनुसार त्यांची मर्जी संपादन करण्यासाठी गायन केले जाऊ लागले. संगीत कला ही प्रबारातून निघून लोकाश्रयाला आली. लोकाश्रयाला आल्यामुळे संगीतकला सर्वसामान्यांपर्यंत पोहोचवणे गरजेचे झाले. त्यातून स्वतंत्र संगीत शिक्षण देणाऱ्या गांधर्व महाविद्यालया सारख्या संस्था उदयास आल्या. व संगीत कलेचा प्रचार आणि प्रसार लोकांपर्यंत वेगाने होऊ लागला. व कालांतराने संगीत कलेचा शिक्षण पद्धतीतील महाविद्यालयीन अभ्यासक्रमांमध्ये समावेश करण्यात आला. अशा महाविद्यालयीन अभ्यासक्रमांमधून संगीतकला उपजीविकेचे सुद्धा माध्यम बनू शकते, असा एक नविनपूर्ण सर्वांगीण दृष्ट्या महत्त्वपूर्ण विचार डॉ. प्रभाजी यांनी व्यक्त केला. हे त्यांच्या द्रष्टेपणाचेच द्योतक म्हणावे लागेल. त्यांनी मांडलेला हा विचार त्यांच्या अनुभवी जीवनातून आलेला आहे. प्रभाजी यांचा विचार आजच्या अभ्यासक्रमांमध्ये अतिशय महत्त्वपूर्ण असा मार्गदर्शन करणारा आहे. कारण महाविद्यालयीन शिक्षण घेत असताना संगीत कला ही केवळ मनोरंजनाची कला, विषय निहाय कला नसून ती आज उपजीविकेचे सुद्धा माध्यम बनू शकते हे पटवून देण्याची गरज निर्माण झाली आहे. यावर प्रभाजींनी मांडलेला विचार आज नव्याने होऊ घातलेल्या अभ्यासक्रमातील प्रक्रियेशी सहाय्यभूत ठरणारा वाटतो. त्याकरिता प्रस्तुत शोधलेखा साठी संगीत शिक्षण पद्धती एक विचार डॉ. प्रभाजी अत्रे यांच्या लेखाची निवड केली आहे.

संक्षिप्त रूपातील डॉ. प्रभाजी :-

देशातील ज्येष्ठ गायिका, रचनाकार, चिंतनकार, लेखिका आणि गुरु म्हणून प्रभा अत्रे यांना संगीत जगतात वेगळं स्थान मिळाले आहे. डॉ. प्रभाजी यांना भारत सरकार तर्फे पद्मश्री, पद्मविभूषण आणि संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार प्रदान आहे. तर मध्य प्रदेश सरकारतर्फे कालिदास सन्मान अशा राष्ट्रीय स्तरावरच्या पुरस्कारांनी सुद्धा त्या सन्मानित आहेत. तसेच मुंबईच्या एस.एन.डी.टी

शकतो. व्यायामातला दुसरा प्रकार प्राणायाम म्हणजे श्वासावर नियंत्रण ठेवणारी क्रिया. स्वराभ्यास असणारा वेगवेगळ्या स्वरांच्या बाबी जास्त उंचीप्रमाणे श्वासावर नियंत्रण ठेवणारी क्रिया उत्तम प्रकारे साध्य करून सांगू शकतो. अशाप्रकारे शारीरिक व्यायामाचे स्थापित असणाऱ्या विषयातून संगीत केलेला उपजीविकेचे माध्यम बनविता येऊ शकते. विज्ञान शाखेशी संबंधित असणाऱ्या विविध विषयांसाठी संगीत कलेचा उपयोग केलेले अनेक शोध बघायचास मिळतात.

अशा सर्वच विषयातून व्यावसायिक दृष्टिकोनातून संगीत विषयाकडे बघितल्यास त्याची पसंती ही मनोरंजन व विषयनिहाय न राहता एक वेगळा दृष्टिकोन अशा उपक्रमातून संगीत विषयाला मिळू शकतो. परंतु त्याकरिता आवश्यकता आहे ती संगीत सादरीकरण बदललाचा प्राथमिक ज्ञान, विश्लेषण करण्याची क्षमता, तसंच त्या त्या क्षेत्राशी संबंधित विशेष प्रशिक्षणाची आवश्यकता. याही बाबी महत्त्वपूर्ण असल्याच्या डॉ. प्रभाजी आपल्या विचारातून मुचवितात. त्यांचा हा दृष्टिकोन व विचार आधुनिक जीवनशैलीतील आर्थिक दबाव लक्षात घेता, अशाप्रकारे निरनिराळ्या व्यवसाय क्षेत्रातील संधी उपलब्ध करून दिल्या गेल्या तर संगीत हा व्यवसाय म्हणून घ्यायला प्रोत्साहन मिळू शकते.

संगीत संबंधी विषयाची व्याप्ती ही खूप मोठी आहे. दैनंदिन जीवनातून तिला सांस्कृतिक दृष्ट्या बघितल्या जाते. त्यामध्ये संगीताचे वेगवेगळे प्रकार लोकसंगीत, सुगम संगीत, भक्ती संगीत, नाट्य संगीत, चित्रपट संगीत, हे विविध क्षेत्रातील मानवी भावभावनांशी व त्याच्या संस्कृतीशी संबंधित असते. हा ही एक खूप मोठा विचार डॉ. प्रभाजी आपल्या लेखात मांडतात. अशा ही संगीत प्रकारांचे अभ्यासक्रमातून ज्ञान दिल्या जाऊ शकते.

निष्कर्ष :- अशाप्रकारे विविध विषयांशी संगीत कलेची सांगड घालून डॉ. प्रभाजी यांनी जे विचार आपल्या लेखातून मांडले आहे. त्या विचारांना आज अभ्यासपद्धती मध्ये घेण्याची आवश्यकता निर्माण झालेली दिसून येते. त्यांचा हा विचार गेल्या कित्येक वर्षां मांडल्या गेलेला आहे. यातून त्यांचा दूरदृष्टिकोन लक्षात येतो.

संदर्भ :- 1) सुस्वराली, डॉ. प्रभाजी अत्रे, 2011

2) प्रत्यक्ष भेट व चर्चा:- डॉ. गीताली पांडे (डॉ. प्रभाजी यांच्या शिष्या)

3) शब्दिसयत :- यूट्यूब चॅनल मुलाखत

4) दुय्यम स्रोत:- ऑनलाइन इन्फॉर्मेशन

भारतीय संगीत :
राष्ट्रीय एकता का एक सशक्त माध्यम

शोध प्रपत्र संग्रह - 2

सं. - प्रो. संगीता श्रीवास्तव



अनुक्रम

- ❖ राष्ट्रीय एकता और संगीत 11
 - प्रो. लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
- ❖ राष्ट्रीय एकता में भारतीय संगीत की भूमिका 17
 - शाईना
- ❖ भारतीय संस्कृति में एकता के विविध रूप 23
 - डॉ. बखोता
- ❖ भारतीय संगीत : राष्ट्रीय एकता का एक संशक्त माध्यम 29
 - डॉ. सुमन त्रिपाठी
- ❖ जनशक्ति प्रसाद के गीत : राष्ट्रीयता की गंधीर तान 33
 - प्रो. सुजाता चतुर्वेदी
- ❖ संस्कृतियुक्त : देशभक्ति गीत/भजन/लोकनृत्य/फिल्मी संगीत
आदि के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का संदेश 39
 - वदना मधुकरराव देशमुख
- ❖ 'बड़ौदा संस्थान' में शहनाई वादन की, गुरु-शिष्य परंपरा 45
 - जय जे. शिंदे
- ❖ भारतीय संगीत और गुरु-शिष्य परंपरा 50
 - डॉ. विश्राम सत
- ❖ राष्ट्रीय एकता में भारतीय संगीत की भूमिका 54
 - राकेश सुभाषभाई दवे
- ❖ छत्तीसगढ़ जिले में गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व 58
 - डॉ. निहारी देसाई ठक्कर
- ❖ राष्ट्रीय एकता में भारतीय संगीत की भूमिका 61
 - डॉ. सुरेन्द्रनाथ सोरेन
- ❖ राष्ट्रीय एकता में भारतीय संगीत का योगदान : वाद्य, वादक
एवं वाद्य निर्माताओं के विशेष संदर्भ में 66
 - डॉ. अंजलि शर्मा

संस्कृतिदर्शक : देशशक्ति गीत/श्रमजल/लोकनृत्य/ फिल्मी संगीत आदि के माध्यम से राष्ट्रीय एकता का संदेश

वंदना मयुरकरराव देशमुख
प्रोफेसर, कला महाविद्यालय, मलकापुर
संगीत विभाग

सारांश

प्रस्तुत शोधनिबंध में विभिन्न गीतों का चयन किया गया है। गीत हमारे भारतीय संगीत का एक अनोखापण है। यह संगीत की श्रष्टता है, की विभिन्न प्रकार के गीत का अतमीय इसमें निहित है। यही विभिन्न प्रकार के गीत हमारी राष्ट्र की पहचान है और इसी से हमारी संस्कृती प्रेषित होती है। गीत सामूहिक समूह का आविष्कार होते हैं। जनसामान्य तक कुछ मिनटों में संकल्पित होते हैं। यह गीतों के प्रकार सामाजिक उत्सव पर गाये बजाये जाते हैं। इसीलिए इन गीतों का स्तर सामाजिक होता है और जहाँ सामाजिक संघटन होता है वही राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया जाता है। ऐसे ही कुछ गीतों का चयन करते हुए राष्ट्रीय एकता का संदेश प्रस्तुत शोधनिबंध द्वारा देने का प्रयास कर रही हूँ। जिन गीतों का चयन किया है, वह गीत सभी को भाविकता से परिचित है। ऐसे गीतों से राष्ट्रीय एकता का संदेश शोधनिबंध के चर्चा में विश्लेषित किया है।

मुख्य शब्द :- राष्ट्रीय एकता संदेश, संस्कृती, विभिन्न गीत

प्रस्तावना :

भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो धारों उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत और दक्षिण हिन्दुस्तानी संगीत नाम से प्रवाहित है। भारतीय शास्त्रीय संगीत हमारे उदात्त संस्कृती का दर्शन करते हैं। देश की हर एक प्रांत का संगीत विभिन्नता में एकता की भावना परिलक्षित करता है। संगीत की विभिन्न गीत प्रकारों में भी हमें भारतीय संस्कृती का दर्शन प्राप्त होता है। हर एक गीत प्रकार की अपनी अमिट छाप होती है। विभिन्न गीतों के माध्यम से भारतीय एकता के लिए उपयुक्त साधन प्राप्त होते हैं। इन सभी गीत प्रकारों से विभिन्नता में एकरूपता किस प्रकार प्राप्त होती है। और राष्ट्रीय एकता का संदेश जाता है। इस विषय पर यह शोध निबंध आधारित है।

संशोधन का उद्देश्य :

1) भारतीय संगीत में राष्ट्रीय एकता का बीज होता है।

- 2) विभिन्न गीत प्रकारों के माध्यम से भारतीय एकात्मता स्पष्ट होती है।
- 3) संगीत से माध्यम से भारतीय संस्कृति का दर्शन होता है।

संगीतमय महत्व : शोध निबंध विभिन्न गीत प्रकार के अंतरगत लिये गये राष्ट्रीय एकात्मता के संदेश में संपूर्ण मान्य जाती के लिए एक संयुक्त माध्यम है।

- 1) यद्यपि शोध निबंध विभिन्न गीत प्रकार के अंतरगत लिये गये, राष्ट्रीय एकात्मता के संदेश में संपूर्ण मान्य जाती के लिए एक संयुक्त माध्यम है, क्योंकि संस्कृति 2) हमारे जीवन का हर एक पहलू संस्कृति से जुड़ा होता है, क्योंकि संस्कृति के माध्यम से हम अपने घटना क्रमांशों को समझते रहते हैं और इससे हमें संस्कृति बड़ी समझना मिलती है, हमारी संगीत कला के अंतरगत आने वाले विभिन्न गीत प्रकारोंकी प्रकृतिकी
- 3) संगीत अपनी जीवन का एक अनोखा अंग है। और जो संदेश बोलने से कम दूरी पर जाता है वही संदेश गीत के माध्यम से कई मील की दूरी तक पहुंचता है। उसी के साथ एकता बनाने में सक्षमता पूर्ण रहता है। यही शोध निबंध का महत्व कह सकते हैं।

शोध निबंध में लिये गये विभिन्न गीतों राष्ट्रीय एकता संदेश में अहम भूमिका रखते हैं।

विषय चर्चा :

संगीत कला का संपूर्ण भारत में व्यापक रूप देखने को मिलता है। इसका कारण हमारी संगीत पद्धतियों जो की उत्तर से लेकर हिमालय तक, दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक फैली हुई है। इन दोनों संगीत पद्धतियों का गाने का देश तरीका अलग है, उनके शास्त्रनियम अलग हैं, लोकसंगीत का पक्ष विभिन्न है, गीतों के प्रकार भी विभिन्न है। फिर भी यही संगीत कला संपूर्ण भारत की शान है। क्योंकि संगीत राष्ट्रसमूह को एकदूसरे के करीब लाने में अधिक सक्रिय होती है। यह भावनाओं को उद्विग्न करती है। और राष्ट्रीय एकता के संदेश में भावनाओं का महत्व अधिकतम होता है। इसमें विभिन्न गीतों के प्रकार अपनी अपनी भूमिका बहुत ही प्रदान करते हैं। यह निम्नलिखित विषयों के माध्यम से स्पष्ट होता है।

देशभक्ति गीत :

देशभक्ति गीत ऐसे गीत होते हैं, जिसमें राष्ट्रीय एकता का मुल्य होता है। इन गीतों को राष्ट्रीय सुधारों पर नियोजित किया जाता है। इन गीतों से अपने देश का, राष्ट्र का महत्व बनाया रखा जाता है। ऐसे गीतों में अनेक देशभक्ति गीतों का अंतर्भाव देखने को मिलता है। जैसे - 'सारे जहाँ से अच्छा' बंदे मातरम्, 'डंडा तैया रहे हमारा', 'मेरे देश की धरती' आदी गीतों का समावेश है।

सारे जहाँ से अच्छा,

हिंदोसीता हमारा

हम तुलबुल है इसकी

यह गुलसीता हमारा।

इस गीत की रचना मोहम्मद इफ्ताल ने की है। इस गीत को 1905 में 15 अगस्त 1947 को सांस्कृतिक रूप में संसद भवन में गाया गया। इस गीत में हमारी भारतीय संस्कृति का दर्शन होता है। और यह सतरी हमारा वह पारसों हमारा.....

गोदी में खेतती है इसकी हजार नदियाँ.....
मजहब नहीं शिखावा आपस में बैर रखना.....
यह पवित्रों हमारे देश के महत्वपूर्ण बातों पर लक्ष केंद्रित करती है। हमारे देश की सातसपर। लम्बकोटी है, हमारे देश की प्राकृतिक रचना विलोपीनीय है, हमारे देश में अन्य प्रकार के मजहब होते हुए भी इन सभी के साथ हम एकनिष्ठता पूर्वक व्यवहार करते हैं, एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। और यही हमारे देश की राष्ट्रीय एकता है। यही राष्ट्रीय एकता का संदेश यह गीत कई वर्गों से देता आ रहा है। उसीप्रकार झंडा लेना रहे हमारा, विजयी विश्व तिरंगा प्यारा इस गीत में निदिष्ट स्वदेशी खादी वस्त्र की संस्कृति से अवगत करती है, यही नहीं इसके संग तथा चक देश की एकता, अखण्डता, विकास और खुशहाली से भी अवगत करती है। इस झंडे के रंग की विशेषता ही हमारे राष्ट्रीय एकता का संदेश है। इसमें निहित केसरी रंग उत्साह एवं वीरता का परिचायक है। 'त्रेत रंग पवित्रता, उज्वल चरित्र, सत्य और सांस्कृतिक श्रेष्ठता का प्रतीक है और हरा रंग भारतीय 'कृषिप्रधानता' का गौरव करती है। और इन विशेषताओं के साथ हम सब भारतीय इस स्वराज्य प्रतिक चिन्ह के त्रिभुज अपना स्वराज्य जीवन व्यतीत करते हैं। और यही राष्ट्रीय एकता का संदेश इस गीत के माध्यम से दिया जाता है।

भजन : भजन यह गीतप्रकार महाशक्ति के ही नहीं भारतीय संतपरंपराओं का भी देन है। भजन में देवी या देवता के प्रशंसा का वर्णन मिलता है। यही 'देवी देवता हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। इनके गीतों का गायन करने से धार्मिक संस्कारों की पुष्टि होती है। और धार्मिक संस्कार संस्कृति कहलाता है। यही हमारी संस्कृतिविशेष है। इन्हीं संस्कारों का 'भजन' के माध्यम से व्यक्तित्व एवं सामुदायिक गायन होता है।

भजन यह गीत प्रकार मानव के आत्म का उद्घरण करके, मन को चैतन्यमय करके समुहकल्याण की भावना रखता है। इस समुह कल्याण में एकामता का संदेश पनपता है। जैसे की - वैष्णव जन तो तेने कहिये, मनी नाही भाव म्हणे देवा मला पाव, गोपाला गोपाला देवकी नंदन गोपाला यह 'भजन' हमारे देश एवं राष्ट्र की एकता की धारारें हैं। देश के भजन में मा. गांधीजी का 'वैष्णव जन तो तेने कहिये जी

पीठ पराधी जाणें रे।

यह भजन प्रसिद्ध है। इस भजन को के. एस. चित्रा द्वारा गाया है। आज देश गीत में देश व राष्ट्र को शाली एवं सद्भावना का संदेश दिया गया है। आज देश

संस्कृतितर्पक : देशभक्ति गीत/भजन/लोकनृत्य..... ❖ 41

या राष्ट्र में एकात्मता यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस एकात्मता में उच्चतम का भेद न रखते हुए, काम कोष न करते हुए, साथ ही यह धर धरना, संपूर्ण रचना, शांतापूर्वक सहयोग देना, इन्हीं बातों को धारणा गया है। और इन्हीं बातों से एकात्मता बनी रहती है।

इतना ही नहीं महाराष्ट्र के संत तुकडोजी महाराज के खोजी गजन से एकात्मता का दर्शन होता है। इनके गजन 'मनी' नाही भाव न्दणे देमा मला पाप यह गजन 'अंधश्रद्धा' विचारोंपर रचाया गया है। यही अंधश्रद्धा राष्ट्र की एकता में बाधा उत्पन्न कराती है। और इस अंधश्रद्धा विचारों को इस गजन के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया गया है।

जब तक मनुष्य श्रद्धामायापूर्ण परधेवरी रूप में समर्पित नहीं होता तब तक भगवान के कई रूपों को पूजना 'अंधश्रद्धा' है। भगवान सृष्टी के चराचर में विश्रामान होते हैं। जब तक मनुष्य सृष्टी के जीव से सलोच्यता पूर्ण व्यवहार नहीं कर पाता तब तक एकात्मतापूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर पाता। और इस गजन-गीत से की संदेश दिया गया है। (संदर्भ - धनरथाम महालीक)

लोकनृत्य :

लोकनृत्य यह सामूहिक नृत्य का प्रतिनिधीत्व करता है। जो परंपरागत रिती-रिवाजों के माध्यम से आता है। जो आमजनता से संबंधित होता है, जो लोकनृत्य कहते हैं। यह लोकनृत्य सरल एवं सुलभ तो होते ही हैं। यह सामूहिक स्थलपर भी किये जाते हैं। और इसमें जिस समाज से यह जुड़े रहते हैं, उस समाज की छाया इस नृत्य में दिखाई देती है। भारत में अनेक प्रकारके नृत्य किये जाते हैं। उनमेंसे 10 शास्त्रीय नृत्य हैं। और अन्य में - कोली नृत्य, गरबा, धनकी नृत्य आदी। लोकनृत्याका समावेश होता है। यही लोकनृत्य हमारे भारत एवं राष्ट्र की पहचान है। जैसे की - गरबा यह गुजरात में अधिकतम किया जाता है, अग गुजरात के गरबा की बात कहे तो 'गरबा' में अनेक गानों का प्रवलन देखने को मिलता है।

जैसे की - पंखिडा ओ पंखिडा पंखिडा ओ पंखिडा।

पंखिडा तु उड ने जाना पावागड रे।

महाकाली से मिलके कहना गरबा खेलेगे।

इस गीत की भाषा मलई समझ में नहीं आती हो किन्तु बड़े आनंद ने मानवसमूह इस नृत्य में सहभागी होकर एकता बनाए रखते हुए खेलते हैं। यह भारतीय संस्कृती में अपनी ऐहम भूमिका निभाता है। यह एक सामूहिक उत्सव है और देश के विभिन्न कोनोंमें त्यौहार के साथ बड़ीधुमधाम से मनाया जाता है। यह सामूहिक नृत्य का प्रकार है। इस नृत्य प्रकार में सभी वर्गों के तथा जातियों के लोग मिलकर यह नृत्य करते हैं। और यही इस नृत्यगान प्रकार की राष्ट्रीय एका है।

उसी प्रकार महाराष्ट्र के 'कोली नृत्य' उत्सव सामूहिक रूप में संस्कृती है

अलग आने वाले लोहार से बनाया जाता है। यह सभी को भलिभरती प्रकार मलुम है की यह विशिष्ट समुह वाक्य नृत्यप्रकार है। इस नृत्य में स्त्री एवं पुरुष दोनों ही सामूहिक रूप से सहभागी होते हैं। इस नृत्य का आशोजन विभिन्न स्तर पर किया जाता है। जैसे की - शालेय वार्षिक स्नेहसम्मेलन में, महाविद्यालयीन स्तर पर इतना ही नहीं विद्यापीठ स्तर पर होनेवाले युवा महोत्सव जैसे उपक्रम में आयोजित किये जाते हैं। तब इसमें गांग लेनेवाला समुह विविधता में एकता के साथ समाहित होता है। ऐसे कुछ गीतों के बोल इसप्रकार हैं।

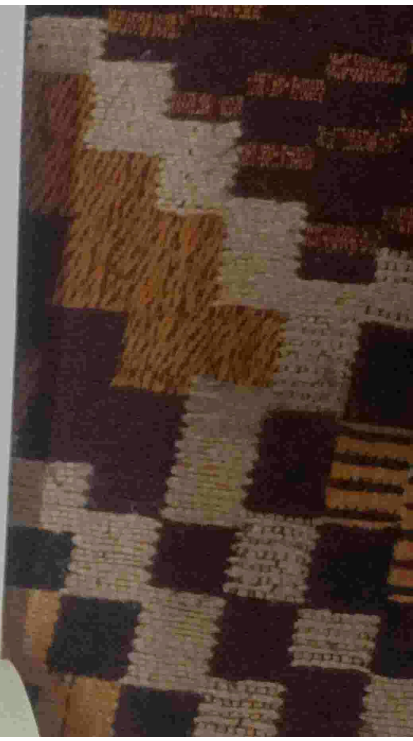
भी हाथ बोली, सोरिल्या डोली न मुईव्या किनारी
भी डोलकर, डोलकर, डोलकर दरीयावा राजा
आदी जैसे लोकनृत्य किए जाते हैं। और यही लोकनृत्य समुहनृत्य होने के कारण राष्ट्रीय एकता का संदेश देते हैं।

के कारण राष्ट्रीय एकता का संदेश देते हैं।
फिल्मी संगीत :
राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में फिल्मी संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यह संगीत लोगों के मन को भावनात्मक एकता की ओर ले जानेवाला एक सशक्त एवं मनोवैज्ञानिक माध्यम है। राष्ट्रीय एकता में केवल समीपता ही आवश्यक नहीं होती बल्कि व्यक्ति की वैचारीकता, बौद्धिक, मानसिक एवं भावनात्मकता आवश्यक होती है। और इस एकता में हमारे भारतीय संस्कृती का भी महत्व है। यहाँ विभिन्न जाती, धर्म, पंथों का समुह है। फिर भी हमारे संगीत ने इस एकता को बनाया रखा है। वैसे तो फिल्मी संगीत में विभिन्न गायक-गायिका-म्यूजिक डायरेक्टर, आदी का अंतर्भाव होता है। विभिन्न गीतों को विभिन्न गायक - गायिका द्वारा गाया बजाया जाता है।

इसलिए फिल्मी संगीत विभिन्नता में एकता की भावना को दर्शित करता है। वैसे फिल्मी संगीत की बात की जाये तो कई फिल्मों की सुची है। प्रस्तुत शोध निबंध में फिल्म में आये हुए देशभक्ती गीतोंका ही उदाहरण लिया है। जैसे - फिल्म उपकार (1967) में गाया - बजाया गया भरे देश की धरती सोना उगले, उगले हीरे मोती, भरे देश की धरती इस गीत के गीतकार - गुलशन बावरा, संगीतकार - कल्याणजी - आनंदजी हैं, और इस गीत को अपनी आवाज से संजया है महेंद्र कपूर जीने। इस गीत को बनाते समय हर एक व्यक्ति की विभिन्नता देखने को मिलती है फिर भी यह गीत बड़ी उत्साह के साथ सभी गाते हैं। इससे हमारे देश की राष्ट्र की एकता दिख पडती है।

उसी प्रकार फिल्म हकीकत (1964) का गीत 'कर चले हम फिदा जान-ओ-तन साथीओं, अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों' इस गीत के गीतकार-केकी आज़मी हैं, संगीतकार - मदन मोहनजी है, और इस गीत को मोहम्मद रफी ने अपनी आवाज से संजया है। इस गीत को अन्य लोगों द्वारा संगीत देने के बावजूद भी इस गीत को हर एक व्यक्ती गाता है। यही हमारे राष्ट्रीय एकता का संदेश है। यही नहीं फिल्म फना (2006) में गाया गया गीत 'यहाँ हर कदम कदम

संस्कृतिसंशक : देशभक्ति गीत/भजन/लोकनृत्य..... ❖ 43



पे धरती बदले रंग, यहाँ की बोली में रगोली सात रंग इस गीत के गीतकार- प्रफुल्ल जोशी, संगीतकार - जतिन - ललित और आवाज दी है महालक्ष्मी अय्यर जीने। यहाँ हमारी देश की एकता है की विभिन्न समुहद्वारा फिल्मी संगीत के माध्यम से हम सब भारतीय एकता से जुड़े हैं। यहाँ हमारी संस्कृती है इस प्रकार राष्ट्रीय एकता का संदेश देने में संगीतकला अपनी एहम भूमिका निभाती चली आ रही है। इस प्रकार चित्रपट संगीत या फिल्म संगीत के देशभक्तीपर गीतों से विभिन्नता में राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया गया है।

निकाश :

प्रखुल शोधनिकष में लिए गये देशभक्ती गीत, भजन, लोकगुन्य, फिल्मी संगीत यह हमारी भारतीय संगीत की विभिन्न धाराएं हैं। इन धाराओं से हमारे भारतीय संस्कृती हो या उससे जुड़ी मराठी संस्कृती हो इसमें गीतों का बढकी महत्व होता है। यह संस्कृती का दर्शन कराती है। साथ ही इस गीतप्रकार के अंतर्गत आनेवाले गीतों में राष्ट्रीय एकता का संदेश आजतक दिया जा रहा है। जो की हमारे समुह को बाँधे रखा है। और यहीं समुह की ताकद राष्ट्रीय एकता को मजबुत करती है। ऐसे विभिन्न गीतों का महत्व ऐसा भी है, की इन गीतों को व्यक्ति अपने बचपन से सुनता आ रहा है। और उसके मस्तिष्क पर यह गीत एकता की मुहर जगा रहा है। इन्ही गीतों से व्यक्ति धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ रहता है। और यही क्षेत्र राष्ट्र की उन्नती को विकसित करते हैं। इसप्रकार राष्ट्रीय एकता के संदेश में इन गीतों की भूमिका देखने को मिलती है।

संदर्भ

1. डॉ. अश्विद गजेंद्र गाडकर
2. डॉ. सुवेला बिडकर
3. Internet
4. ग्रामगीता
5. Internet
6. <https://geetmanjusha.com>

इतिहास
उजवा
संख्या
जी 0
के 10
प्रथम
जानव
मिराज
राष्ट्रीय
संस्था
वसई-
प्रस्ताव
शहनाइ
इस वा
हे 1 ए
शहनाइ
से आगु
होकर

ISSN 2277-8071

J-Gate
INDEXED

RESEARCH NEBULA

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

DOI PREFIX 10.22183

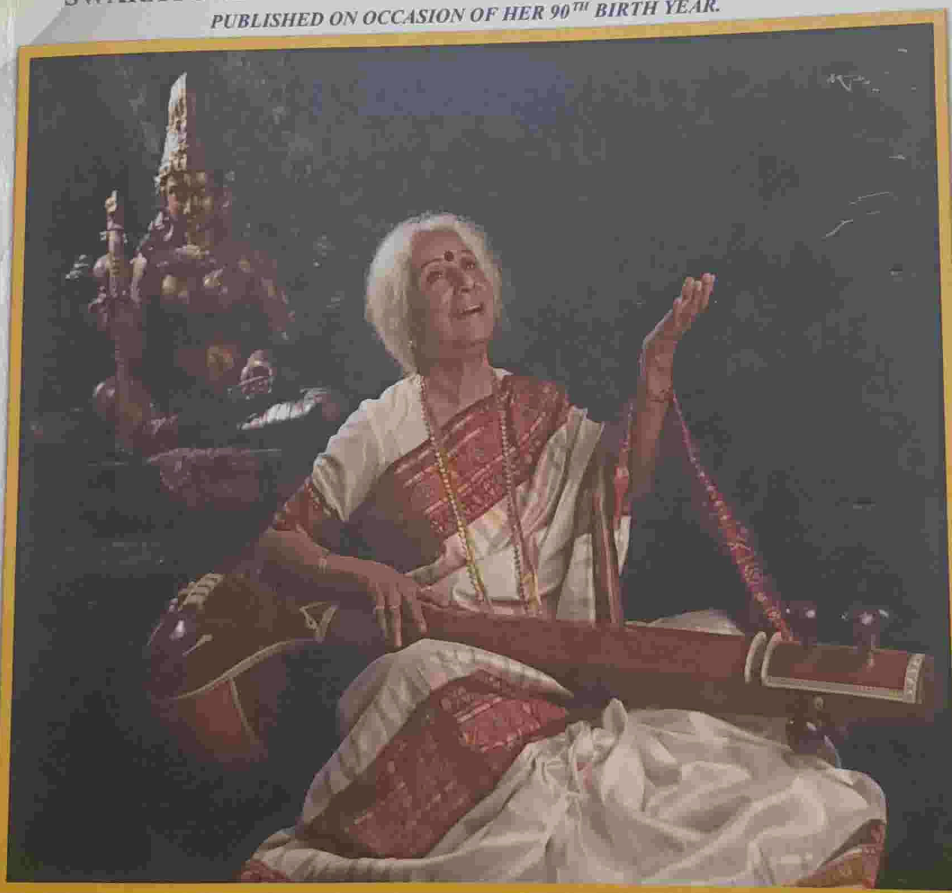
JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

NAVADASHPRABHA GAURAVANK

नवदशप्रभा गौरवांक

THE SPECIAL ISSUE ON THE WORK AND CONTRIBUTION OF
SWARAYOGINEE PADMAVIBHUSHAN DR. PRABHA ATRE
PUBLISHED ON OCCASION OF HER 90TH BIRTH YEAR.



48.	डॉ. अन्वया दस्तगी सहायक प्रो. संगीत (गायन), साहू रामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली।	'प्रभा अत्रे एवं उनका सांगीतिक इष्टिकोण'	110
49.	डॉ. मुनीम खान सहयोगी प्राध्यापक (संगीत विभाग), गुलाम नबी आज़ाद महाविद्यालय, बासिटाकली, जिला- अकोला.	विदुषी डॉ. प्रभा अत्रेजी द्वारा राग मधुवती की ताल एकताल में स्वरचित बरिदों का संश्लेषण एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन	111
50.	डॉ. मृगाल प्रभाकरराव कडू संगीत विभाग, जे.डी.पाटील सांगळदकर महाविद्यालय दर्यापूर.	स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे : बहुआयामी व्यक्तित्व	112
51.	डॉ. सुनील बाबुलालजी परते संगीत विभाग, कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.	संगीतके वैश्विक प्रसार-प्रवाह और नवनिर्मितिमें डॉ. प्रभा अत्रेजी का योगदान	113
52.	डॉ. वृकली रमेशराव देशमुख, जे. डी.पाटील सांगळदकर महाविद्यालय दर्यापूर जिल्हा अमरावती.	डॉ.प्रभा अत्रे के संगीत घाट (विधा) पर एक विचार	114
53.	डा.वदना तमुकरराव देशमुख संगीत विभाग, कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.	संगीत शिक्षण पद्धती एक विचार = डॉ. प्रभाजी अत्रे.	115
54.	डॉ. दीपली प्र.गवंडे सा. प्राध्यापक, मराठी विभाग, कला महाविद्यालय मलकापूर ,अकोला.	'अंतः स्वर' एका कलावतीचा जीवनानुभव	116
55.	Vivek Sautashao Chapke Research scholar, Shri. JJT University Jhunjhunu, Rajasthan.	Dr. Prabha Atre (A Musical Social Reformer)	117
56.	डा. डॉ. विजय आळशी सहा. प्राध्यापक, संगीत विभाग श्रीमती राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय, अकोला	गानयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे	118
57.	डा. जयश्री पुनलंबेकर - पाठे	माझ्या आदर्श आदरणीय प्रभाताई	119
58.	श्रीमती प्रभा शरद पाठे अकोला	स्वयंप्रभा	120
59.	डॉ. मोहितो उदय रावरावकर बारवाले कॉलेज, जालना.	वाग्वदना...	121
60.	Pravin P. Ugale Head, Department of English, Kala Mahavidyalaya Malkapur Akola.	Music Is the Language of Dr. Prabha Atre's Poetry- Antaswar (Inner Voice)	122
61.	डॉ. योगिनी धामकरराव शिंदेकर संगीत विभाग, स्व.छगनलाल मूलजीभाई कडी कला महाविद्यालय, अचलपूर कॅम्प, जि. अमरावती.	एक सुरेल मैफिल: स्वरयोगिनी डॉ. प्रभा अत्रे	123
62.	डॉ.अतीद भावडीकर संगीत विभाग, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.	अलख	124

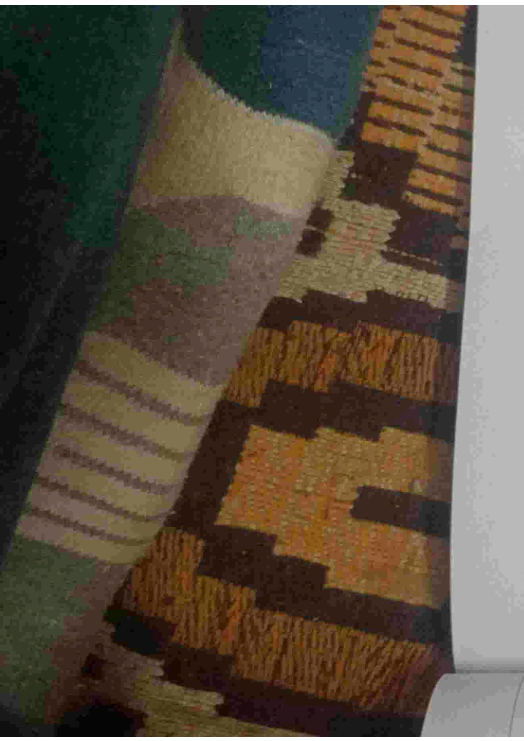
विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे. यातून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची माहिती मिळते. यावरून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे.

शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे. यातून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची माहिती मिळते. यावरून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे.

शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे. यातून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची माहिती मिळते. यावरून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे.

शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे. यातून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची माहिती मिळते. यावरून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे.

शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे. यातून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची माहिती मिळते. यावरून शिक्षकांना विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक प्रगतीची मूल्यमापने करणे ही ही एक महत्त्वाची बाब आहे.



शक्ती. व्यायामातला दुसरा प्रकार प्राणायाम म्हणजे श्वासावर नियंत्रण ठेवणारी क्रिया. स्वराभ्यास असण्याचा वेगवेगळ्या स्वरांच्या स्वरूपात उंचीप्रमाणे श्वासावर नियंत्रण ठेवणारी क्रिया उत्तम प्रकारे साध्य करून घ्याय शकतो.अशाप्रकारे शारीरिक व्यायामाचे विविध असणाऱ्या विषयांतून संगीत कलेला उपजीविकेचे माध्यम बनविताना वेळ शकते.पिनाचन शास्त्रींनी संवर्धित असणाऱ्या विविध विषयांतून संगीत कलेचा उपयोग केलेले अनेक शोध बघावयास मिळतात.

अशा सर्वच विषयांतून व्यावसायिक दृष्टिकोनातून संगीत विषयात बघितल्यास त्याची मर्यादा ही मनासहज व वैयक्तिकता न राहता एक वेगळा दृष्टिकोन अशा उपक्रमातून संगीत विषयाला मिळू शकतो. परंतु त्याकरिता आवश्यकता आहे ती संगीत सादरीकरण बदलत्या प्राथमिक ज्ञान,विश्लेषण करण्याची क्षमता,तसेच त्या त्या क्षेत्राशी संबंधित विविध प्रशिक्षणाची आवश्यकता.याही बाबी महत्त्वपूर्ण असल्याच्या डॉ. प्रभाजी आपल्या विचारातून मुचवितात.त्यांचा हा दृष्टिकोन व विचार आधुनिक विधानशैलीतील अधिक दबाव लक्षात घेता, अशाप्रकारे निरनिराळ्या व्यवसाय क्षेत्रातील संधी उपलब्ध करून दिल्या गेल्या तर संगीत हा व्यवसाय म्हणून घ्यायला प्रोत्साहन मिळू शकेल.

संगीत संबंधी विषयाची व्याप्ती ही खूप मोठी आहे.दैनंदिन जीवनातून तिला सांस्कृतिक दृष्ट्या बघितल्या जाते.त्यामध्ये संगीताचे वेगवेगळे प्रकार लोकसंगीत, सुगम संगीत, भक्ती संगीत,नाट्य संगीत, चित्रपट संगीत,हे विविध क्षेत्रातील कलावंती आवश्यकतांशी व त्यांच्या संस्कृतीशी संबंधित असते.हा ही एक खूप मोठा विचार डॉ. प्रभाजी आपल्या लेखातून मांडतात.अशा ही संगीत प्रकारांचे अभ्यासक्रमातून ज्ञान दिल्या जाऊ शकते.

निष्कर्ष :- अशाप्रकारे विविध विषयांशी संगीत कलेची सांगड घालून डॉ.प्रभाजी यांनी जे विचार आपल्या लेखातून मांडले आहे. त्या विचारांना आज अभ्यासपट्टी मध्ये घेण्याची आवश्यकता निर्माण झालेली दिसून येते.त्यांचा हा विचार गेल्या कित्येक वर्षांपूर्वी सांगल्या गेलेला आहे. यातून त्यांचा दूरदृष्टिकोन लक्षात येतो.

- संदर्भ :- 1) सुस्वराली, डॉ. प्रभाजी अत्रे, 2011
2) प्रत्यक्षा भेट व चर्चा:-डॉ. गीताली पांडे(डॉ. प्रभाजी यांच्या शिष्या)
3) शब्दिसयत :- यूट्यूव चॅनल मुलाखत
4) दुय्यम स्त्रोत:- ऑनलाइन इन्फॉर्मेशन

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021
Organized by

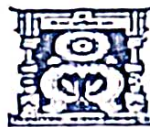


DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)
In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
DR. MANORAMA & PROF. HARIBHAU SHANKARRAO PUNDKAR ARTS,
COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

Special Issue on 30th September, 2021
www.ycjournal.net

124	MATERIAL AND LIFE VALUE MUTUAL CONTRACT	YAVANADHENDENTH191@gmail.com PROF. HEKHA DEGAMBAR ADHAV Head of Marathi Department, Shri Chhatrakor Arts College of Arts, Khadki Akolarekhadadhuve@gmail.com	Download
125	HUMANISTIC VALUES IN MARATHI POETRY	DR. CHARUSHILA RAJESHWAR RUMALI Shrimati Radhadevi Goenka Women's College, Akola	Download
126	RODALI: A POEM OF THE TRIBAL MOVEMENT	DR. RAHUL BHAGWAN CHEAVAN Head of Marathi Department, Vidya Prasarak Mandal College of Arts, Commerce and Science, Kihavali, Tal. Shahapur, District Thane.	Download
127	'PRABUDDHA BHARAT' AND THE VALUES OF LIFE IN THE SOCIETY	WANKHADE AMARDEEP SHAMRAO Research Student, Department of M.A., Communication and Journalism Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabadbantiraje0505@gmail.com	Download
128	THE SOCIAL ROLE OF THE LIBRARY	MR. KOKNE PRAKASH PANDURANG Librarian, Sri Dnyaneshwar College, Nevasa Tal. Nevasa, Dist. Ahmednagar	Download
129	THE VALUE OF LIFE IN TRIBAL CULTURE AND CONTEMPORARY SOCIETY	SHRI P.J. CHOWDHURY Raje Ramrao College, Jaljori72@gmail.com	Download
130	VALUE INCLUSION IN SCHOOL CHILDREN: VALUE ADDITION	MR. PRADIP BHIMRAO KANKAL Assistant Teacher, Zilla Parithad Primary School Godri, Tal. Bhokardan, District Jalna	Download
131	CONTEMPORARY USEFULNESS OF ANCIENT LIFE VALUES- COMPARATIVE STUDY	VIJAY D. WAKODE, Assistant Professor, Head of History Department, Shri. Gyanesh Maha Navargan, Tal. Sindewadi, Dist. Chandrapur Pin-441221, Maharashtratravwakode29@gmail.com	Download
132	GRAMGITOKTA LIFE VALUE: FORM AND RELEVANCE	SWAPNIE RAJESH INGOLE Assistant Professor, Department of Marathi, Shrimati. Radhadevi Goenka Women's College, Akola.	Download
133	DR. DAL FONDKE'S SCIENTIFIC APPROACH IN HIS SCIENCE STORIES	DR. SURESHA KHARCHI, Department of Marathi, Shri Shivaji Arts, Commerce and Science College, Akola & PROF. RUPA THAKARE, Tilak Radhriya Saraswati Mandir Junior College, Motil Umari, Akola	Download
134	ROLE OF FAMILY IN CHILD'S DEVELOPMENT	JAYSHRI CHATURKAR, (Research Scholar), & DR. SAVITA SANGWAN (Guide), Shri. J.P.Z. Tibdewal University, ZunZun, Rajasthan	Download
135	MUSICAL VALUES: REQUIREMENTS AND IMPORTANCE	DR. GELTAL S. PANDE Principal, Arts College, Malkapur, Akola	Download
136	MARATHI CHILDREN'S LITERATURE AND VALUES OF LIFE	DR. MAMTA INGOLE Guide, Associate Professor and Head of Marathi Department, Dr. H. N. Sinha College, Patur & PROF. A. B. BHAVSAR Researcher, Assistant Professor, Dr. Manorama and Prof. H. S. Fundkar College, Balapur	Download
137	THE ROLE OF MUSIC IN INCULCATING THE VALUES OF LIFE IN MARATHI CULTURE	DR. SHIRISH V. KADU Department of Music, Shivaji College, Akola & PROF. VANDANA M. DESHMUKHI Department of Music, Arts College, Malkapur	Download
138	SCIENTIFIC APPROACH: AN ESSENTIAL VALUE OF LIFE	DR. SHRADDHA D. THORAT Shri Shivaji College, Akola	Download
139	HUMAN VALUES IN DASBODHA OF SAINT RAMDAS SWAMI	DR. PRATHIBA SHANKAR GHAG- SONY Kasturi Shikshan Sanstha's, College of Arts, Commerce and Science, Pratimanagar, Shikrapur, Tal. Shirur	Download
140	SOCIAL ENLIGHTENMENT OF SAINT TUKARAM	HARIDAS AKHARE	Download
141	LIFE VALUES IN LITERATURE	DR. KESHAV GADHAIL, Head, Department of English, Smt.K.L. College, Amravati	Download
142	EFFECTS OF FUNCTIONAL TRAINING ON PERFORMANCE AMONG FEMALE HANDBALL PLAYERS	MS. RAJDEEP KAUR Research scholar Sant Baba Bhag Singh University, Jalandhar. & DR. RULWINDER PAL SINGH MAHI Assistant Professor Sant Baba Bhag Singh University Jalandhar	Download
143	PARENTING AND THE NEW AGE VALUES: COMMITMENTS AND COMPROMISES	MOLLAH MUSTAFIZUR RAHMAN TGT(English) Sainik School Purulla	Download
144	VALUE EDUCATION THROUGH LITERATURE AND SOCIETY	DR. SOMNATH J. GHOTEKAR Assistant Professor, Dept. of English MVP Samaj's Arts, Sci. and Commerce College, Ozar (Mig), Dist. Nashik M.S.	Download
145	POPULAR FICTION AND ITS POPULARITY	DR. SACHIN TELKHADE	Download
146	Guru-Shishya tradition of various places in Bihar in Indian music	Prof. Dr. Sachin Suresh Rao Bandagar Assistant Professor-Department of Music, Madhukarrao Pawar College of Arts, Muqilapur, Akola	Download
147	Loknath Yashwant's poem depicting the fall of values against the backdrop of globalization	Dr. Sagar Gawal Late. B. S. Arts, Prof. N. G. Science and A.G Commerce College Sa Kherda	Download
148	THE NEED FOR IDEAL VALUES FOR INDIAN CULTURAL DEVELOPMENT	PROF. SUEMA V. KALNE Asst. Professor Home Economics Department Vidya bha Mahavidyalaya Buldana	Download
149	MUSIC & DISEASE PREVENTION	DR. NIRNAL PRABHAKARRAO KADU J.D. Patil Sanghulkar College, Daryapur	Download
150	STRUGGLE FOR SURVIVAL IN RANPSI SIDIHWA'S PAKISTANI BRIDE	ASST. PROF. PRAVIN P. DGALE HOD, Department of English, Kala Mahavidyalaya Malkapur, Akola (M.S)	Download



डॉ. गीताली श. पांडे

प्राचार्य,

कला महाविद्यालय मलकापूर,

अकोला

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM
On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA

सांगितिक मुल्ये : आवश्यकता आणि महत्त्व

ABSTRACT

आजच्या काळात जीवनमुल्यांपेक्षा मुल्यालाच (पैसा) जास्त महत्त्व आले आहे. नाव, प्रतिष्ठा, संपत्ती, सत्ता, यश, सुख, आराम हे सर्व मूल्यांच्या (पैशाच्या) जोरावर मिळविण्याचा प्रयत्न होत आहे. अशा वातावरणात संगीतकलेचा जो हेतू 'रंजको जनचितानाम्' हा कुठे तरी दुय्यम ठरत आहे. किंवा रंजनाच्या नावाखाली काही दर्जाहीन गोष्टी संगीत क्षेत्रात होतांना दिसून येत आहे. रंजनाचा मुख्य हेतू समाधान, मन:शांती आहे. पण तो साध्य होतांना दिसत नाही आहे. म्हणून संगीताचा प्रभाव आणि परिणाम दोन्ही साधता येण्यासाठी, संगीताचा लौकीक पुनःप्राप्त करून घेण्यासाठी संगीतानुकूल मुल्यांची रुजवात होणे आवश्यक आहे त्याची चर्चा प्रस्तूत निबंधात करण्यात आली आहे.

प्रस्तावना :

जो पर्यंत पृथ्वीवर मानवी जीवन आहे तो पर्यंत ते जीवन सुरळीतपणे, समाधानाने जगण्यासाठी जीवन मूल्यांची, नीतीमुल्यांची गरज लागणारच आहे. जीवनमूल्ये म्हणजे काय? एखाद्या वस्तूचे मोल, भाव, किंवा किंमत असा मुल्याचा व्यावहारिक अर्थ आपण सर्वांना माहित आहे. एखादी वस्तू प्राप्त करायची, मिळवायची असेल तर तिचे मूल्य पैशाच्या स्वरूपात किंवा अन्य वस्तूच्या स्वरूपात द्यावे लागते आणि ते मोल दिल्यावरच आपल्याला ती वस्तू मिळू शकते. हा मूल्याचा व्यावहारिक अर्थ असला तरी जीवनमूल्ये म्हणजे काय? याचा विचार करू या.

विवेचन :

अन्न, वस्त्र, निवारा या माणसाच्या प्राथमिक गरजा आहेत. त्याच्या अस्तित्वासाठी या गरजांची पूर्तता होणे आवश्यक आहे. माणूस ज्यावेळी आदिम अवस्थेत होता तेव्हा त्याचे जीवन या गरजांची पूर्तता करणे येवढ्यापुरतेच मर्यादित होते. भूक लागली असता शिकार करणे किंवा झाडाची फळे, कंदमुळे खाणे, राहण्यासाठी आडोसा तयार करणे आणि शरीर रक्षणासाठी झाडाची साल किंवा प्राण्यांचे कातडे पांघरणे आणि स्वसंरक्षणासाठी शिकार करणे येवढ्यापुरताच त्याचा जीवनसंघर्ष मर्यादित होता. पण मानवाला बुद्धिचे वरदान इतर प्राण्यांपेक्षा अधिक मिळाले आहे. त्यामुळे त्याने बुद्धिच्या जोरावर निरनिराळे शोध लावून जीवनात प्रगती केली. त्याच्या प्राथमिक गरजांची पूर्तता झाल्यानंतर म्हणजेच गरजा पूर्ण होण्याची कायमस्वरूपी कुटूंब व्यवस्था

झाल्यानंतर त्याच्या बौद्धिक आणि मानसिक गरजांची पूर्तता होणे त्यास आवश्यक वाटू लागले. त्यातून मनाला रमवण्यासाठी, कला, क्रिडा, करमणूक इ. मनोरंजनात्मक प्रकारांची निर्मिती झाली. त्यायोगे माणसामाणसांतील व्यवहार वाढले. विचारांचे आदानप्रदान वाढले. या व्यवहारांना विश्वासाचा, सामंजस्याचा एक भक्कम आधार मिळावा अशी गरज निर्माण झाली. जसजशी मानवाची बुद्धी प्रगल्भ, पुरेशी परिपक्व झाली तसे त्याला हे कळून चुकले की जीवन सुखी समाधानी, शांत करायचे तर आपापसातील व्यवहार हा सामंजस्याचा, सौहार्दाचा होणे आवश्यक आहे आणि त्यासाठी दुसऱ्याचे अस्तित्त्व गृहीत धरून काही गोष्टींचे पालन होणे आवश्यक आहे. त्यातूनच ही जीवन मुल्यांची संकल्पना पुढे आली. यांनाच नीतीमुल्ये असेही म्हणतात. आपल्या प्राचीन वेद वाङ्मयात

ॐ सहनाववतु सहनोभुनक्तु सहवीर्यं करवावहै ।

तेजस्विनावधितमस्तु मा विद्विषावहै ॥ (तैत्तिरीय उपनिषद)

किंवा सर्वे जना सुखिनो भवन्तु ।

अशा जनकल्याणकारी प्रार्थना दिसून येतात. त्यानंतर पुराणे, पंचतंत्र, जातक कथा, भर्तृहरीची नीतीशतके इ. मधूनही या जीवनमूल्यांचाच उपदेश करण्यात आला आहे. ही नीतीमुल्ये ऐकून, माहिती असून उपयोगाचे नाही तर ती आचरणात येणे आवश्यक आहे. ती आचरणात आणल्यास जीवनावर त्यांचा काय परिणाम होतो ? तो कथांद्वारा या साहित्यातून वर्णन केल्या गेला आहे. आणि याच गोष्टी आचरणात आणल्या, त्या वापरल्या म्हणजे त्यांचे मूल्य दिले तरच जीवनात परस्पर सामंजस्य, सौहार्द

करण्यासाठी आवश्यक ती मुल्यनिष्ठा त्यांच्या जवळ होती. या सर्व कलाकारांच्या जीवनाकडे पाहिले असता असे लक्षात येते की, या सर्वांच्या जीवनात 'कला विचार' हा सर्वोच्च होता. कला शिक्षणासाठी त्यांना कितीही शारिरीक, मानसिक कष्ट झाले तरी ते त्यांच्यासाठी दुय्यम होते. तसेच संगीत कला ही मौखिक कला आहे, आणि गुरुमुखातूनच तिचे शिक्षण घ्यावे लागते. यासाठी गुरुंवर श्रद्धा असणे आवश्यक आहे. प्रत्यक्ष संगीत शिक्षण घेण्यापूर्वी, घेतांना आणि घेतल्यानंतरही गुरुंनी घेतलेल्या परिक्षेत उत्तीर्ण व्हावे लागे. गुरुंनी संमती दिल्याशिवाय शिष्याला मंच प्रदर्शन करता येत नसे. रियाजासाठी गुरुंनी सांगितलेल्या वेळा आणि पध्दती यांचे पालन करावे लागे. गुरुंची मर्जी संपादन करण्यासाठी शिष्याला त्यांची सेवा करावी लागत असे. त्यामुळे संगीताचे शिक्षण ही एक तपस्याच असून त्यासाठी संपूर्ण समर्पण, ध्येयासक्ती, एकाग्रता, कलानिष्ठा, गुरुनिष्ठा, चिकाटी, सातत्य, संगीतावर प्रेम व मानसिक धैर्य, मेहनतीची तयारी इ. मूल्यांची आवश्यकता आहे. त्या शिवाय ही कला पूर्णपणे अवगत होऊच शकत नाही. या सर्व गुणांमुळे जीवनालाही दर्जाप्राप्त होतो. तसेच सांगीतिक आविष्कार देखील प्रभावी होतो.

परंतु सध्याच्या काळात संगीत क्षेत्रातही अपप्रवृत्तींनी शिरकाव केला आहे. संगीत साधना सोडून अन्य गोष्टींना महत्त्व येत चालले आहे. गुरुंप्रति, संगीताप्रति निष्ठा, चिकाटी, संगीतावरचे प्रेम, नम्रता या गोष्टी कमी होत चालल्या आहेत. कमीत कमी प्रयत्नात लवकरात लवकर यशस्वी होण्यासाठी प्रयत्न होत आहेत. संगीत सोडून इतर गोष्टींना महत्त्व प्राप्त होऊ लागलय. स्वतःचे आत्मपरिक्षण करून चुका सुधारण्याकडे कोणाचाच कल दिसत नाही. इतरांच्या कलेविषयी आस्था, आदर तर दूरच पण एकमेकांना मागे खेचण्याची प्रवृत्तीही दिसून येऊ लागली आहे.

आणि या अपप्रवृत्तीमुळे संगीताचा प्रभावही कमी कमी होत चालला आहे. गायकांचा प्रभाव हा दिर्घकाळ टिकून रहात नाही. 10 वर्षांनंतर नविन गायक येऊन जुने गायक मागे पडत असल्याचे, विस्मृतीत गेल्याचे दृश्य दिसत आहे.

त्यामुळे संगीताचा प्रभाव, संगीताचे वैभव जर परत आणायचे असेल तर संगीत विषयक मूल्ये जाणिवपूर्वक येणाऱ्या पिढीमध्ये रुजवणे अत्यावश्यक आहे.

निष्कर्ष :-

या वरून हाच निष्कर्ष निघतो की संगीताचे व्यवस्थित शिक्षण घेण्यासाठी, त्याचे यथोचित संस्कार होण्यासाठी एक सुसंस्कृत आणि सभ्य कलाकार निर्मितीसाठी त्याग, तपस्या, शारिरीक, मानसिक कष्ट करण्याची तयारी चिकाटी, सातत्य,

एकाग्रता, सावधानता, गुरुनिष्ठा, संगीतावरील श्रद्धा, कलेविषयी आदर इ. संस्कार, मूल्ये आत्मसात करणे आवश्यक आहे. ते आत्मसात करणे यासाठी महत्वाचे आहे की त्यामुळे संगीताविष्कार प्रभावी होण्यास आणि तो प्रभाव दिर्घकाळ टिकण्यास मदतच होते. आणि खऱ्या अर्थाने 'रंजको जनचितानाम्' हा उद्देश असलेली संगीत कला श्रोत्यांना मानसिक शांती आणि समाधान देऊ शकेल.

संदर्भ ग्रंथ

- 1) अध्यात्म आणि जीवन डॉ. श्री द. देशमुख
- 2) समर्थ वाग्वैजयंती डॉ. श्री दे. देशमुख
(मनाचे श्लोक)
- 3) संगीतातील घराणी आणि चरित्रे डॉ. नारायण मंगरूळकर
- 4) अब्दुल करीमखा यांचे जीवन चरित्र बाळकृष्णवुवा कपिलेश्वरी
- 5) हमारे संगीत रत्न लक्ष्मी नारायण गर्ग
- 6) संगीत निबंधावली तुंबुरु



RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021

Organized by



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)

In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
DR. MANORAMA & PROF. HARIBHAU SHANKARRAO PUNDKAR ARTS,
COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

Special Issue on 30th September, 2021

www.ycjournal.net



डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके

सहाय्यक प्राध्यापक, संगीत
विभाग

कला महाविद्यालय

मलकापूर, अकोला, महाराष्ट्र
patake.sunil@gmail.com

One Day International E - Conference On
Covid-19 Pandemic: Challenges, Opportunities & Solutions in
Front of Higher Education

on 21st August, 2021 @

S.K. College Akola, AS College Kurha, S.K. Maha Dahihanda & PEFL, New Delhi.

भारतीय संगीताचा विविध विद्याशाखांशी सहसंबंध

ABSTRACT

संगीत कलेला काव्य, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला या ललित कलांमध्ये अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान दिल्या गेले आहे. शैक्षणिक क्षेत्रात अभ्यासासाठी असणाऱ्या विविध विद्याशाखांचा संबंध हा संगीतासोबत कोणत्या ना कोणत्या प्रकारे येतो यात शंका नाही. प्रस्तुत शोध निबंधात संगीताचा संबंध हा मानसशास्त्र, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राज्यशास्त्र, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादी विद्याशाखांसोबत कशा प्रकारे संबंध येतो याचे थोडक्यात विवेचन केले आहे. भारताची संगीत परंपरा ही विश्वातील सर्वात समृद्ध संगीत परंपरा आहे. वैदिक काळापासून ते आधुनिक काळापर्यंत संगीत हे मनोरंजनाचे साधन तसेच भक्ती आणि मुक्तीचा मार्ग म्हणून ओळखल्या जाते, तसेच उतरोत्तर समृद्ध होत-होत आजपर्यंत अस्तित्वात आहे. प्रस्तुत शोध निबंध हा "भारतीय संगीताचा विविध विद्याशाखांशी सहसंबंध" या विषयावर आधारित आहे. जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात विविध विद्याशाखांचा संबंध दिसून येतो, या दृष्टीने विचार करण्याची आज आवश्यकता आहे. यामुळेच शिक्षणक्षेत्रातील सर्वच विद्याशाखा मध्ये अभ्यासाला असलेल्या विषयांचे सांगीतिक दृष्टीने संशोधन करण्याच्या आवश्यकतेवर भर देण्यात येत आहे. आज संगीत कला ही सृजनात्मक कलेच्या कक्षेतून उठून पुढे अध्ययनाचा विषय बनली आहे. म्हणूनच इतर विविध विद्याशाखांशी संगीताचा संबंध या दृष्टीकोनातून नव्याने अभ्यास करणे महत्वाचे ठरेल.

KEY WORDS संगीत आणि विद्याशाखा, मानसशास्त्र, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राज्यशास्त्र, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र

प्रस्तावना :-

संशोधनाची आवश्यकता :-

प्रस्तुत शोध निबंध हा भारतीय संगीताचा विविध विद्याशाखांशी सहसंबंध या विषयावर आधारित आहे. संगीताचा संबंध हा मानसशास्त्र, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राज्यशास्त्र, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादी सर्वच विद्याशाखांसोबत येतो. विविध विद्याशाखांसोबत संगीत कसे संबंधित आहे. यावर नव्याने प्रकाश टाकणे किंवा संशोधन करण्याची आवश्यकता संशोधकाला वाटते. संगीत ही एक अशी सकारात्मक कला आहे की, या कलेचा संबंध प्रामुख्याने मानवी भावनेसोबत आहे. गायन करतांना भावनिक तन्मयतेमध्ये शब्दांना जास्त महत्व न देता स्वरांवर अधिक प्रमाणात लक्ष दिल्या जाते, म्हणूनच भावनेचा संबंध मानसशास्त्रा सोबत

असतो म्हणून भारतीय संगीताचा इतर विविध विद्याशाखांशी असलेल्या संबंधांचा शोध लावून नवनवीन बदलत्या दृष्टिकोनाचा उपयोग करून किंवा उपयोगात आणून नव्याने संशोधनाची आवश्यकता संशोधकाला वाटते.

संशोधन पद्धती :-

प्रस्तुत शोध निबंध हा भारतीय संगीताचा विविध विद्याशाखांशी सहसंबंध या विषयावर आधारित आहे. हा विषय सामाजिक संशोधन पद्धती आणि ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीवर आधारित आहे. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये भारतीय संगीतावर आधारित पुस्तके, विविध विद्याशाखावर आधारित पुस्तके, पत्रिका, संगीत अंक यांचा अभ्यास करून प्रस्तुत संशोधनात या सर्व बाबींचा यथोचित प्रयोग-उपयोग करण्यात आला आहे. सामाजिक, ऐतिहासिक संशोधन पद्धती सोबतच

तुलनात्मक संशोधन पद्धतीचा सुद्धा यथोचित उपयोग करण्यात आला आहे.

संगीत आणि विज्ञान :-

संगीत कलेचा संबंध विज्ञानासोबत दिसून येतो. संगीताचा मुख्य आधार हा नाद आहे. कोणत्या प्रकारचा आणि किती आंदोलन संख्या असणारा नाद संगीत उपयोगी आहे किंवा होऊ शकतो हे एकमात्र विज्ञाना मुळेच आपल्याला माहित होते. विज्ञाना अंतर्गत गणित येते, गणिताच्या आधारे मूळ नादापासून अनेक सहाय्यक किंवा स्वयंभू नाद उत्पन्न होतात. गणिताच्या आधारेच पंडित व्यंकटमुखी यांनी ७२ थाटांची रचना करत एका थाटातून गणिती पद्धतीने ४८४ रागांची उत्पत्तीचा सिद्धांत रचला आहे. हिंदुस्थानी संगीत पद्धती मध्ये गणिताच्या आधारेच ३२ थाटांची रचना केल्या गेली आहे. पंडित अहोबल, पंडित श्रीनिवास आणि पंडित विष्णुनारायण भातखंडे यांनी गणिताच्या आधारे वीणेच्या ३६ " इंच लांब तारांवर शुद्ध - विकृत स्वरांची स्थापना केली होती. स्वरांचे श्रुत्यंतर बदलल्यावर स्वरांची शुद्ध आणि विकृतावस्था यामध्ये अंतर पडते यावरून स्पष्ट सिद्ध होते कि संगीत कलेचा विज्ञाना सोबत घनिष्ठ संबंध आहे.

संगीत आणि मानसशास्त्र :-

मानसशास्त्रामध्ये मानवाच्या मनाच्या विविध अवस्थांचा अभ्यास केल्या जातो. संगीतात रसांच्या उत्पत्तीतुन क्रोध, दुःख, भय, घृणा, उत्साह, अद्भुत आणि रती इत्यादी भाव कशा प्रकारे आणि कोणत्या प्रकारे व्यक्त होतात, इत्यादी गोष्टीचे ज्ञान मानसशास्त्राच्या अभ्यासाने होते. संगीत शिक्षक विद्यार्थ्यांच्या मानसिक स्थितीचा अभ्यास करूनच संगीताची शिक्षा देण्याचा प्रयत्न करतो, याचे उदाहरण द्यायचे झाल्यास कोणत्या विद्यार्थ्यांची आवड शास्त्रीय संगीताच्या अभ्यासात आहे आणि कोणत्या विद्यार्थ्यांची आवड ही सुगम संगीताच्या अभ्यासात आहे, कोणत्या विद्यार्थ्यांची आवड धुपद किंवा धमाराच्या अभ्यासात आहे इत्यादी सर्व गोष्टीचा विचार करून विद्यार्थ्यांला त्याच्या आवडीनुसार संगीताचे धडे दिल्याने अध्ययन आणि अध्यापन यामध्ये यश प्राप्त होते. या व्यतिरिक्त संगीतकार एखाद्या संगीत चर्चासत्र, संगीत कार्यशाळा किंवा संगीत संमेलनात आपली कला सादर करीत असेल तेव्हा त्याला जर आपल्या समोर बसलेल्या श्रोत्यांच्या आवड-निवड या विषयी गायकाला माहिती असेल तर तो गायक आपल्या मंच प्रदर्शनात यशस्वी ठरतो. संगीतातील कोणता गीत प्रकार श्रोत्यांना अधिक पसंत येईल याचा अंदाज घेऊन त्यांच्या आवड-निवडीनुसार आपली गायन कला सादर करून यश प्राप्त

करून घेऊ शकतो म्हणूनच संगीतात मानसशास्त्राचे अनन्य साधारण महत्व आहे.

संगीत आणि भूगोल :-

भौगोलिक वातावरणाचा प्रभाव मानव जीवनावर नक्कीच पडतो यात शंका नाही. भौगोलिक परिस्थितीच्या विविधतेच्या कारणाने मानवाच्या रूप, रंग, शरीराची ठेवण आणि मानवाची आवड-निवड या मध्ये विविधता दिसून येते. थंड प्रदेशातील वातावरणात राहणारे लोक हे उष्ण प्रदेशात राहणाऱ्या लोकांपेक्षा अधिक परिश्रमी असतात. भौगोलिक वातावरणाच्या प्रभावामुळे शरीराची ठेवण ही सुद्धा वेग-वेगळी असल्यामुळे मानव कंठात (स्वर-यंत्रात) सुद्धा वेगळेपण दिसून येते. कंठाच्या विविधतेमुळे सर्व कंठा मधून सर्व प्रकारच्या स्वरांचे उच्चारण करण्याची क्षमता भिन्न-भिन्न असते. भौगोलिक वातावरणाच्या भिन्नतेमुळे मानवाच्या आवड-निवडीत वेगळेपण दिसून येते. आवड-निवडीच्या वेगळेपणामुळे प्रत्येक प्रदेशाची किंवा देशाची संगीत-शैली, गायन-शैली मध्ये वेगळेपण दिसून येते. भूगोल शास्त्राच्या अभ्यासाच्या माध्यमातून आपणास रात्र आणि दिवस होण्याच्या कारणांची माहिती मिळते व त्यानुसार होणारे भौगोलिक बदल याचा सुद्धा अभ्यास केला जातो, संगीतात सुद्धा गायनसमयाला अनन्य साधारण महत्व आहे. जेव्हा आपल्या भारतामध्ये दिवस असतो तेव्हा अमेरिकेत रात्र असते. ज्या वेळेस भारतातील गायक सायंकालीन राग यमन गातो तेव्हाच अमेरिकेत आपल्या गायन कलेचे सादरीकरण करणारा भारतीय गायक हा भैरवी रंगाचे गायन करत असतो. या प्रकारे आपणास दिसून येते की संगीताचा भूगोल शास्त्रासोबत घनिष्ठ संबंध आहे. आता हा वेगळा संशोधनाचा विषय आहे की विश्वात एकाच वेळेस शास्त्रीय संगीताचे गायन भौगोलिक वातावरणा नुसार रात्र व दिवस (भारत- अमेरिका) या उदाहरणा नुसार काय प्रभाव टाकू शकतो.

संगीत आणि इतिहास :-

इतिहास हा विषय कोणत्याही काळाची उत्पत्ती आणि त्या काळाचा क्रमिक विकास कश्या प्रकारे झाला त्यावर प्रकाश टाकतो. संगीतामध्ये वर्तमान काळात झालेला विकास किंवा विकसित रूप पूर्वीची व्यवस्था कशी होती याचा अभ्यास करणाऱ्या जिज्ञासू अभ्यासकांची मनाची शांती इतिहासाच्या मदतीनेच होऊ शकते, आपण वैदिक काळापासून वर्तमान काळापर्यंतची उत्पत्ती आणि त्याचा क्रमिक विकास कश्या प्रकारे झाला याचे ज्ञान प्राप्त करू शकतो, सर्वच कला मध्ये विकासाचे चढ-उतार आले आहेत, कोण-कोणत्या काळात अनुकूल आणि प्रतिकूल परिस्थितीत संगीताचा विकास (प्रगती) आणि पतन झाले हे आपणास इतिहासाच्या अभ्यासामधून लक्षात येते व

कोणता कालखंड किंवा कोणत्या शासकांच्या (राज्याच्या) काळात परिस्थिती संगीताला पूरक होती किंवा विरोधी होती हे दिसून येते. प्राचीन आणि मध्ययुगीन काळात संगीत आचार्य-गायकांच्या द्वारा निर्मित संगीताचे मूलभूत सिद्धांताचा अभ्यास इतिहासा द्वारा होतो. इतिहासाचा अभ्यास करूनच आपण वर्तमान आणि भविष्यात संगीताचा विकास कश्या प्रकारे केला जाऊ शकतो त्या प्रकारचे विकसित पाऊल उचलल्या जाऊ शकतात. या सर्व बाबीवरून हे लक्षात येते की संगीताचे इतिहासा सोबत घनिष्ठ नाते आहे.

संगीत आणि नागरिकशास्त्र :-

नागरिक शब्दाचा अर्थ म्हणजे शहरात किंवा गावात राहणारे नागरिक असा होतो. नागरिक समाजाचा एक मूलभूत घटक आहे. नागरिकांपासून समाज आणि समाजापासून नागरिक निर्माण होतो. समाजात उत्तम नागरिक असणे अत्यंत आवश्यक आहे. कलेची उपासना करण्यात किंवा उत्पत्ती करण्यास उत्तम नागरिक सहाय्य करत असतो. जो गायक कलाकार कलेची साधना करण्यात सतत मग्न असतो, तो गायक कोणाची निंदा किंवा स्तुती करण्यात आपला वेळ खर्ची घालत नाही. गायक कलाकार हा कोणत्याही जातीचा किंवा धर्माचा असो, त्याचा सन्मान, आदर सर्वत्र केल्या जातो. आपल्या देशात फय्याज खॉं, बडे गुलाम अली खॉं इत्यादी मोठे-मोठे संगीत कलाकार झाले आहेत, ज्यांचा आदर मोठे-मोठे हिंदू त्यांच्या जीवन काळात करत होते आणि आजही त्यांच्या जयंती उत्सव उत्साहात साजऱ्या केल्या जातात. बिस्मिल्ला खॉं शहनाई वाद्याचे सुप्रसिद्ध वादक मानल्या जात होते, त्यांच्या प्रति भारताची संपूर्ण जनता आदर भाव बाळगते. तात्पर्य हे आहे की संगीत कलेची साधना जात-पात, उच -नीच, अमीर-गरीब इत्यादींचा भेद-भाव दूर करून उत्तम नागरिक उत्पन्न करण्यात सहाय्यक आहे. संगीत साधने मुळे ब्रम्हचर्य, सदाचार, स्वास्थ्य आणि सदचरित्राचा विकास होतो.

संगीत आणि राज्यशास्त्र :-

प्रत्येक राष्ट्रांमध्ये सुख आणि शांती करिता सुव्यवस्था निर्माण करण्या करिता शासन आवश्यक असते, देशाची राजकीय आणि आर्थिक उन्नती करिता ज्या नीतीचे अनुसरण केल्या जाते त्याला राज्यशास्त्र म्हणतात. देशाच्या सुरक्षेबाबत सर्व निर्णय शासनाच्या सुत्रांकडूनच घेतल्या जातात. आपल्या भारत देशात प्रजेचे राज्य (प्रजासत्ताक राज्य) आहे, या मध्ये प्रजेला साहित्य आणि कला जोपासण्याची आणि निर्माण करण्याचे पूर्ण स्वतंत्र दिल्या गेले आहे. ज्या देशाची शासन व्यवस्था चांगली नसते, त्या देशात साहित्य, विज्ञान आणि कला क्षेत्राचा विकास होऊ शकत नाही. याचा अर्थ असा की

राजनीतिक व्यवस्था साहित्य, विज्ञान आणि कला क्षेत्राच्या विकासात आणि पतनास कारणीभूत असतात, ज्या देशाचे शासन किंवा सरकार कला क्षेत्राच्या प्रगतीत रस घेते त्या देशाच्या कला क्षेत्राचा विकास अवश्य होतो. आपल्या देशात संगीत कलेच्या विकासात सरकारने मोठे योगदान दिले आहे. मोठं-मोठ्या संगीत कलाकारांना भारतरत्न, पद्मश्री, पद्मभूषण इत्यादी महत्पूर्ण पारितोषिक देऊन त्यांचा सन्मान केला आहे. संगीत कलाकारांना राज्यशासन आणि केंद्रशासना कडून अनेक महत्त्वपूर्ण सन्मान देऊन त्यांना उपकृत करण्यात आले आहे. सरकारने आकाशवाणीच्या कार्यक्रमा मध्ये सुद्धा सांगीतिक कार्यक्रमांना महत्त्व पूर्ण स्थान दिले आहे. सरकार द्वारा दिलेल्या प्रोत्साहनामुळे संगीताचा विकास होत आहे. यावरून हे सिद्ध होते की राजनीतिक सुव्यवस्था ही संगीत विकासात महत्त्वपूर्ण आहे.

संगीत आणि अर्थशास्त्र :-

ज्या साधनांमुळे आपल्या देशाची आर्थिक उन्नती होते, त्या साधनांचा प्रयोग करण्याच्या पद्धतीला अर्थशास्त्र म्हणतात. अर्थशास्त्राचा संबंध संगीता सोबत महत्त्वपूर्ण आहे. संगीतापासून धर्म, अर्थ, काम आणि मोक्ष या चारही पुरुषार्थाची प्राप्ती होते, अर्थात संगीत हे भक्ती आणि मुक्ती प्राप्त करण्यास सहाय्यक आहे जो संगीत साधनेच्या जोरावर संगीतामध्ये पारंगत होतो, तो धन-धान्य आणि अनेक प्रकारच्या वैभवांचा धनी होतो. आपल्या देशातील अनेक मोठं-मोठे गायक, वादक आणि नर्तक विदेशात जाऊन सन्मान आणि धन अर्जित करतात. मोठं- मोठ्या संगीत संमेलनात, संगीत परिषद, संगीत मैफिल, संगीत चर्चासत्र, संगीत स्पर्धा मध्ये भाग घेऊन बहुमूल्य पुरस्कार प्राप्त करतात. संगीताच्या सिद्धांतावर आधारित अनेक ग्रंथांची निर्मिती करून धन प्राप्त करतात. आकाशवाणी मधील संगीत कार्यक्रमात भाग घेऊन देशातील अनेक संगीत कलाकार अर्थप्राप्ती करतात. याचा अर्थ हा की संगीत कलाकारांना कोणत्याच प्रकारची कमतरता भासत नाही. संगीत साधनेने कलाकार मनोरंजना सोबतच धनोपार्जन सुद्धा करतो. म्हणून संगीताचा अर्थशास्त्र या विषयाशी संबंध आहे.

संगीत आणि दर्शनशास्त्र :-

ब्रह्म, ईश्वर, जगत आणि माया यांच्या विषयी जे शास्त्र विचार करते त्या शास्त्राला दर्शनशास्त्र म्हणतात. पाश्चात्य दार्शनिक हे जास्तीत जास्त भौतिकवादी असतात आणि भारतातील दार्शनिक हे अधिक प्रमाणात अध्यात्मवादी असतात. भारतीय दर्शनशास्त्राचा मुख्य विषय आहे चेतन आणि अचेतन जगताचे निरूपण करणे. भारतीय दर्शनाचे न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, योग, सांख्य आणि वेदांत, हे सहा दर्शन

मुख्य मानल्या जातात. न्याय आणि वैशेषिक कार्य-कारण प्रधान शास्त्र आहे. मीमांसा मध्ये कर्मकांडाचे निरूपण केल्या जाते. योग, सांख्य आणि वेदान्तामध्ये ज्ञान-तत्त्वाचे निरूपण केल्या जाते. संगीत कलेचा संबंध सर्व भारतीय दर्शन घटकांसोबत आहे. संगीतामध्ये सर्व सहाही दर्शनांचा समन्वय आहे. न्याय आणि वैशेषिक कार्य-कारण सिद्धांत पहिल्या जातो. नादा पासून श्रुती, श्रुती पासून स्वर, स्वरा पासून सप्तक, सप्तका पासून थाट, थाटा पासून राग आणि रागापासून संगीत जगत असा प्रवास आहे. अश्या दशा मध्ये श्रुती, स्वर, सप्तक, थाट, राग आणि संगीत रूपी कार्याचे कारण क्रमशः नाद, श्रुती, स्वर, सप्तक, थाट, राग हे आहेत. संगीताच्या माध्यमातून आपण ईश्वराच्या स्तुतीचे गायन करतो धर्माचे कार्य करतो. सामगाना पासून सूरदास, तुलसीदास, कबीर, मीराबाई इत्यादींच्या भक्तिमय पदांना गात-गात संगीत साधक ईश्वराचा परम भक्त बनून जातो. याचा अर्थ असा की जो फायदा मीमांसेत होतो तोच फायदा संगीतातून होतो. योग - साधनेमुळे आपले चित शुद्ध होते संगीत साधना पण एक प्रकारची योग - साधना आहे. संगीत साधना करत-करत जेव्हा साधक स्व-माधुर्यात तल्लीन होऊन जातो, तेव्हा तो बाह्य जगाला विसरून जातो, तो आपल्या अंतःकरणात अलौकिक आनंदाचा अनुभव करायला लागतो. या प्रकारे साधकाच्या चित्तातील वृत्तीचा निरोध करण्यामध्ये जशी योग साधना सहाय्यक होते त्याच प्रकारे संगीत - साधना सुद्धा सहाय्यक आहे. सांख्य दर्शनशास्त्राचे प्रमुख प्रतिपाद्य विषय आहे ' संतकार्यवाद', याचा अर्थ आहे कारण मध्ये कार्य पहिले पासूनच वर्तमान राहतो. जेव्हा त्या कार्याला उत्पन्न करणारी सामग्री चा संयोग होतो तेव्हा कार्य उत्पन्न होऊन जाते. संगीतामध्ये ही सत्कार्यवादाचा सिद्धांत चरितार्थ होतो. उदाहरण द्यायचे झाल्यास, कोणत्या गायकाच्या, वादकांच्या आणि नर्तकाच्या अंतःकरणात गायन. वादन किंवा नर्तनाचे जन्मजात संस्कार पहिलीपासून विद्यमान नसते तर तो चांगल्यात चांगल्या गुरु पासून संगीत शिक्षा घेतली तरी त्याला संगीत येऊ शकणार नाही. यामुळे संगीत सांख्याच्या सत्कार्यवादाचे समर्थन करते. वेदांत दर्शनात ज्ञान तत्त्वाचे निरूपण केल्या गेले आहे. वेदान्ताच्या नुसार श्रवण, मनन आणि निदिध्यासनाने साधकाचे अंतःकरण पवित्र होते. अंतःकरणाच्या पवित्रतेमुळे अज्ञानाचे आवरण नष्ट होते आणि ज्ञानाचा उदय झाल्यामुळे साधक मोक्ष प्राप्त करतो. ठीक हीच दशा संगीताची असते संगीत-साधनेने साधकाचे अंतःकरण पवित्र होते, त्याचे अज्ञानाचे आवरण नष्ट होते. ज्ञानाचा उदय

झाल्यामुळे पुरुष आपल्या स्वरूपात स्थिर होऊन संसाराच्या कर्म-बंधनांपासून मुक्त होऊन मोक्ष प्राप्त करतो म्हणून संगीताचा आणि दर्शनशास्त्राचा घनिष्ठ संबंध आहे.

उपसंहार :-

भारतीय संगीत हे फक्त मनोरंजनाची वस्तू नसून दर्शनशास्त्रानुसार भक्ती आणि मोक्ष प्राप्तीचा मार्ग आहे. वैदिक काळापासून संगीत हा भारतीय जनमानसाच्या जिवाच्या आणि आध्यात्मिक जीवनासोबत जोडलेला विषय आहे. सामाजिकशास्त्राचा विचार करता कौटुंबिक जीवनात संगीताचा कोणत्या ना कोणत्या प्रकारे अंतर्भाव झालेला आहे. आधुनिक काळात सर्व विद्याशाखांचा अभ्यास करून संगीत हे सर्व विद्याशाखांशी संबंधित आहे हे सिद्ध झाले आहे याचे उदाहरण प्रस्तुत शोध निबंधात मानसशास्त्र, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, राज्यशास्त्र, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादी विविध विद्याशाखांच्या माध्यमातून देण्यात आलेले आहे.

संदर्भ ग्रंथ :-

1. शर्मा प्रो. स्वतन्त्र, 'सौन्दर्य, रस एवं संगीत' प्रकाशन - अनुभव पब्लिशिंग हाऊस - प्रथम संस्करण - 2010 - इलाहाबाद,
2. तारे डॉ. विजय, 'संगीत चिकित्सा' प्रकाशक - हिन्दू पॉकेट बुक्स, प्रकाशन वर्ष - प्रथम संस्करण - 2015 - दिल्ली.
3. ठकार डॉ. सुलभा, 'संगीत आणि सौंदर्यशास्त्र', प्रकाशन अक्षरलेखन प्रकाशन, द्वितीयावृत्ती - नोव्हेंबर 2007, सोलापूर.
4. पाठक पंडित जगदीश नारायण, 'संगीत निबन्धमाला' प्रकाशक - पाठक पब्लिशिंग, संशोधित संस्करण - 2004 - इलाहाबाद,
5. थते डॉ. अनया, 'संगीतातील संशोधन पद्धती', प्रकाशन-संस्कार प्रकाशन - प्रथमावृत्ती -मार्च २०२१, मुंबई
6. शर्मा डॉ. रामविलास, 'संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण कसी समस्याएँ', प्रकाशन - वाणी प्रकाशन - प्रथम संस्करण - 2010 - दिल्ली,

NEBULA
AN INDEXED, REFEREED &
PEER REVIEWED JOURNAL

ISSN 2411-0011



RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021

Organized by



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH

KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)

In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH

**DR. MANORAMA & PROF. HARIBHAU SHANKARRAO PUNDKAR ARTS,
COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)**

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

Special Issue on 30th September, 2021

www.ycjournal.net

dash@fakurlan





डॉ. सुनील बाबुतालजी पटके

सहाय्यक प्राध्यापक
(संगीत विभाग)

कला महाविद्यालय मलकापूर,
अकोला
patake.sunil@gmail.com

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM
On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA

शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्यांची शैली आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचे योगदान व उपयोगिता

ABSTRACT

कोणतीही कला असो किंवा शिक्षण पद्धती असो, यामध्ये नियमांचे किंवा मूल्यांचे काटेकोर पालन केल्या जाते म्हणूनच ती कला किंवा शिक्षा पद्धती उत्कृष्ट मानल्या जाते आणि तीचा सर्वोत्तम मान्यता प्राप्त करून प्रसिद्ध होते. मूल्यवैशिष्ट्यांचा सांगीतिक दृष्टिकोनातून विचार करित असतांना योग्य गुरू, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगट तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नम्रता आणि चिकाटी ह्या सर्व बाबींचा संगीताची मूल्यवैशिष्ट्ये म्हणून विचार करणे अत्यंत आवश्यक आहे. शास्त्रीय संगीतामध्ये सुद्धा हे नियम किंवा मूल्यवैशिष्ट्ये अत्यंत महत्त्वाचे आहेत. सर्वच ललित कलांमध्ये संगीताला प्रथम स्थान प्राप्त झालेले आहे, किंवा संगीत कला हि चित्रकला, नृत्यकला या पेक्षा श्रेष्ठ कला मानल्या जाते, शास्त्रीय संगीतामध्ये घराण्यांना अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे. या घराण्यांमुळे शास्त्रीय संगीत आजतागायत जिवंत राहिले आहे यात शंका नाही. म्हणून नियम किंवा मूल्यवैशिष्ट्ये यांचे शास्त्रीय संगीतात काय महत्त्व किंवा योगदान याचा सविस्तर अभ्यास प्रस्तुत शोध निबंधात करण्यात येणार आहे.

KEY WORDS: घराण्याची विशेषतः व मूल्यवैशिष्ट्ये.

संशोधनाची आवश्यकता :-

कला किंवा शास्त्राचा अभ्यास करित असतांना कलेची किंवा शास्त्राची पार्श्वभूमी अभ्यासणे खूप आवश्यक आहे. प्रस्तुत शोध निबंध हा "शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्यांची शैली आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचे योगदान व उपयोगिता" या विषयावर आधारित आहे. आजच्या आधुनिक व तंत्रज्ञानाच्या काळात शास्त्रीय संगीताला उत्तरोत्तर प्रसीध्दी पथावर पोहोचवायचे असेल तर आपल्याला शास्त्रीय संगीताच्या घराण्याचा व त्यांच्या शैली, परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचा नव्याने अभ्यास करून आजच्या आधुनिक पिढीपर्यंत पोहोचविणे अत्यंत आवश्यक आहे. घराण्यांमुळे शास्त्रीय संगीत आजपर्यंत चांगल्या स्थितीत जिवंत राहू शकले आहे यात शंका नाही. घराण्यांमुळेच नव-नवीन गायन पद्धती, नव-नवीन प्रस्तुतीकरणाच्या पद्धती जगासमोर आल्या आहेत, हे सर्व घराण्यांच्या शैली, परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये या मुळे शक्य होऊ शकले, म्हणून या सर्व बाबींचा नव्याने अभ्यास करणे संशोधनकर्त्यास आवश्यक वाटते.

संशोधनाचा उद्देश्य आणि उपयोगिता :-

प्रस्तुत शोध निबंध हा "शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्यांची शैली आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचे योगदान व उपयोगिता"

या विषयावर आधारित आहे प्रस्तुत शोध निबंधाचा उद्देश हा आहे, की कोणतीही कला सर्वोच्च स्थान प्राप्त करण्याकरिता मिळालेले स्थान टिकवून ठेवण्या करिता त्यांनी जोपासलेली विशिष्ट पद्धती किंवा शैली, परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचे काटेकोर पालन करून प्राप्त करते. भारतीय शास्त्रीय संगीताचे सुद्धा संपूर्ण विश्वामध्ये मानाचे स्थान प्राप्त केले आहे ते घराण्यांच्या शैली किंवा मूल्यवैशिष्ट्यांमुळेच, म्हणून शैली किंवा मूल्यवैशिष्ट्ये काय आहेत, त्यांची जोपासना घराण्यांमध्ये कशा प्रकारे, नियमांनी बांधून केल्या जाते, ही सर्व माहिती नवीन संगीत शिकणारे विद्यार्थी किंवा संगीताचे आवड असणारे श्रोतागण यांच्या पर्यंत पोहोचविण्याचा उद्देश्य प्रस्तुत शोध निबंधाचा आहे. या शोधात प्राप्त झालेली शोधपूर्ण माहिती ही संगीत क्षेत्रातील विद्यार्थी, श्रोता यांना उपयोगाची ठरेल यात शंका नाही, हा या प्रस्तुत शोध निबंधाचा उद्देश्य आहे आणि प्रस्तुत शोधतील अभ्यासपूर्ण माहितीचा सर्वोत्तम उपयोग होईल. संशोधन पद्धती :-

Systematized efforts to gain knowledge :-

Redman and Mory.

एखादी गोष्ट वैज्ञानिक पद्धतीने आणि वैज्ञानिक पद्धतीने आणि नियोजनबद्ध रीतीने आविष्कृत करणे म्हणजे

शोध, कोणत्याही विषयातील शोध हा न संपणारा असतो, काळाच्या पडद्याआड गेलेल्या एखाद्या मुद्याला पुन्हा प्रकाशात आणणे आणि पूर्वज्ञानाच्या शृंखलेशी त्याचा संबंध जोडणे हे शोधकर्त्यांचे प्रमुख कार्य आहे.

प्रस्तुत शोध निबंध हा "शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्यांची शैली आणि मूल्यवैशिष्ट्यांचे योगदान व उपयोगिता" वर आधारित असून या मध्ये ऐतिहासिक संशोधन पद्धती आणि तुलनात्मक संशोधन पद्धतीचा यथोचित प्रयोग करण्यात आलेला आहे. तसेच प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये भारतीय संगीतावर आधारित पुस्तके, पत्रिका, संगीत अंक आणि इंटरनेट द्वारा प्राप्त माहितीचा यथोचित प्रयोग केल्या गेला आहे.

घराण्याची निर्मिती पूर्व व तदनंतरचा काळ :-

भक्ती काळापासून संगीत कलेच्या परंपरेचे आधार 'बानी' आणि संगीत विद्येचा आधार 'मत' मानल्या जात होते. वैदिक काळात तर संगीताचे नाव हे 'मार्गीय संगीत' असे होते. याचे तात्पर्य असे की संगीत-साधना ही विशेष मार्ग-निदर्शनाच्या आधारावर केल्या जात होती, हीच संगीत साधना वर्तमान काळात शैली किंवा घराणे या नावाने ओळखल्या जाऊ लागली

प्रतिभावानं गायक कलाकार राग विस्ताराची एक वेगळी शैली किंवा गायन पद्धती निर्माण करू शकतो व ती नवनिर्मित शैली श्रोत्यांना आवडते, तेव्हा अनेक शिष्य त्या पद्धतीला ग्रहण करण्याकरिता त्याच गायक कलाकाराच्या जवळ जाऊन शास्त्रशुद्ध पद्धतीने रियाज किंवा अभ्यास करतात आणि ग्रहण केलेल्या नवीन शैलीला आपल्या शिष्यांना शिकवितात या प्रकारे जेव्हा एक नवीन शैलीची परंपरा निर्माण होते तेव्हा त्या नवीन गायन शैलीला खास घराण्याचे नाव प्राप्त होते. राग विस्ताराची नवीन पद्धती किंवा शैली आणि दीर्घ परंपरा या दोन कारणांनी संगीताच्या घराण्याची निर्मिती होते.

१६ व्या शतकाच्या पूर्व भारतीय संगीताच्या घराण्याचा कोठेच उल्लेख दिसून येत नाही. धृपद, धमार च्या उत्कर्षकाळात घराण्याचा प्रारंभ झाला, त्या काळात वेग-वेगळ्या शैलीला 'बानी' म्हटल्या जात होते. सम्राट अकबराच्या दरबारात चार सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ होते त्यांची नावे पुढीलप्रमाणे आहेत, १) मिय्या तानसेन. २) ब्रजचंद्र. (डागूर चे राहणारे) ३) श्रीचंद राजपूत. (जोहार चे राहणारे) ४) राजा संमोखन सिंह. बिनकार (खंडहार चे राहणारे). तानसेन हे गौड ब्राम्हण असल्यामुळे त्यांच्या वाणीला गौडी किंवा गोबरहार वाणी असे नाव पडले. धृपद आणि धमार या शैलीची लोकप्रियता अठराव्या शतकात समाप्त झाली आणि ख्याल गायन लोकप्रिय होऊ लागले. ख्याल गायनाच्या प्रसिद्धीच्या काळात भारतामध्ये अनेक राजनैतिक, सामाजिक आणि आर्थिक परिस्थितीत क्रांतिकारक

परिवर्तन झाले. त्याचा विपरीत परिणाम भारतातील गायक, वादक, नर्तक कलाकार झाला, त्यांनी निर्माण झालेल्या छोट्या - छोट्या राज्य (रियासत) मध्ये राजाश्रय घेण्यास सुरुवात केली. त्यामध्ये ग्वालियर, रामपूर, इंदौर, वडोदा, देवास, रेवा छोटे राज्य संगीताचे सुप्रसिद्ध मोठे केंद्र बनले. या मध्ये मुसलमान गायकांची संख्या जास्त होते हे गायक आपली कला फक्त स्वतःच्या मुलालाच शिकवीत असत त्यामुळे घराणे निर्माण होण्यास सुरुवात झाली यामध्ये हिंदू गायक सुद्धा आपले घराणे तयार करायला लागले यामुळे संगीतात वेग-वेगळे घराणे निर्माण होऊ लागले. आप-आपल्या घराण्यांची गंडाबंध तालीम किंवा नियमबद्ध, मूल्यवैशिष्ट्यांनी युक्त घराणेदार गायकीला सुरुवात झाली. आजच्या आधुनिक काळात ख्याल गायकीचे मुख्य पाच घराणे प्रचलित आहेत, या मध्ये १) ग्वालियर घराणा २) आग्रा घराणा ३) किराणा घराणा ४) जयपूर घराणा ५) पटियाला घराणा या घराण्याच्या गायकीचा मूल्यवैशिष्ट्ये युक्त प्रभाव आजच्या संगीत क्षेत्रात जास्त प्रमाणात आहे.

ग्वालियर घराण्याची परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये :-

ख्याल गायकीचे प्रथम घराणे म्हणून ग्वालियर घराणे ओळखल्या जाते. स्वर्गीय नथथन पीरबक्श या घराण्याचे जन्मदाते मानल्या जातात. यांची कादर बक्श आणि पीर बक्श ही दोन मुले होती. कादर बक्श ग्वालियर नरेश स्व. दौलतराव शिंदे यांचे आश्रित होते. कादर बक्श यांचे तीन मुले हस्सू खॉं, हददु खॉं आणि नथथू खॉं ही होती, हे सर्व गायक ग्वालियर दरबारात राजश्रयात होते. यांच्याच परंपरेत श्री. वासूदेवुवा जोशी, बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर, रहीमत खॉं, महंगद खॉं, पंडित विष्णू दिगंबर पलुस्कर आणि त्यांचे शिष्य तयार झाले. ग्वालियर घराण्याची आणखी एका शाखेमध्ये शंकरराव पंडित, कृष्णराव पंडित, निसार हुसेन खॉं, रामकृष्णबुवा वझे इत्यादी महान गायक तयार झाले.

ग्वालियर घराण्याची मूल्यवैशिष्ट्ये आणि विशेषतः :-

१) धृपद अंगाचे ख्याल गायन. २) जोरदार तथा खुली गायकी. ३) राग विस्तारामध्ये बेहलाव्याचा उपयोग. ४) गमकांचा प्रयोग. ५) सरळ आणि सपाट तणांचा प्रयोग. ६) बोलताना मध्ये लायकारीचा उपयोग. ७) प्रचलित आणि संपूर्ण जातीच्या रागांचा अधिक प्रमाणात उपयोग. ८) झुमरा, तिलवाडा, एकताल, त्रिताल, झपताल इत्यादी प्रचलित तालांचा अधिक प्रमाणात उपयोग. ९) चीजांच्या बंदिशींना अधिक महत्त्व. आग्रा घराण्याची परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये :-

आग्रा घराण्याचे ग्वालियर घराण्याशी विशेष संबंध आहे. त्यामुळे दोन्ही घराण्याच्या गायकी मध्ये खूप साम्य आहे.

या घराण्याचे संस्थापक हाजी सुजाण मानल्या जातात, पुढे चालून या घराण्याचा प्रचार आणि प्रसार घग्गे खुदा बक्श यांच्या द्वारा झाला. या घराण्यात फैयाज खॉ, शराफत हुसेन, लताफत हुसेन, विलायत हुसेन, खादिम हुसेन इत्यादी प्रसिद्ध गायक झाले. स्व. फैयाज खॉ या घराण्याचे सर्वश्रेष्ठ गायक कलाकार मानल्या जातात.

आग्रा घराण्याची मूल्यवैशिष्ट्ये आणि विशेषतः :-

१) खुला परंतु जवारीदार आवाज. २) धृपद प्रमाणे ख्यालामध्ये नोम-तोम किंवा अनिबद्ध आलापांचा प्रयोग. ३) राग विस्तार करतांना बोल अंगाची प्रधानता. ४) जबड्याचा अधिक प्रयोग. ५) बोलतांनाची विशेषतः. ६) ख्याल गायना सोबतच धृपद आणि धमार गायनामध्ये सुद्धा प्रावीण्यप्राप्त गायक. ७) बंदिशीवर अधिक लक्ष दिल्या जाते. ८) झुमरा, तिलवाडा, एकताल, त्रिताल, झपताल इत्यादी प्रचलित तालांचा अधिक प्रमाणात उपयोग, धृपद आणि धमारा करिता चौताल. धमार, आडाचौताल, सुलताल इत्यादी तालावर प्राविण्य. ९) लय-तालावर विशेष अधिकार. १०) ख्यालाच्या स्वरा मध्ये गायन.

जयपूर घराण्याची परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये :-

जयपूर घराण्याचे संस्थापक मुहंमद अली खॉ हे होते. या घराण्याच्या शिष्य परंपरेत जी. एन. गोस्वामी, मुस्ताक अली, विशेष प्रसिद्ध होते. या घराण्याची आलिया आणि फतु यांनी आणि अल्लादिया खॉ यांनी दोन विशेष शैलींना जन्म दिला आलिया आणि फतु यांच्या शैलीला पटियाला घरांना हे नाव मिळाले आणि अल्लादिया खॉ यांनी जयपूर घरांना हे नाव कायम ठेवले. परंतु घराण्याच्या गायन शैलीत खूप परिवर्तन केलेत. अल्लादिया खॉ हे इ. स. १८९१ मध्ये महाराष्ट्रात येऊन स्थिर झाले. अल्लादिया खॉ यांचे भाऊ हैदर खॉ, आणि दोन मुले मंजी खॉ, भुर्जी खॉ हे उच्च कोटीचे गायक होते. अल्लादिया खॉ यांच्या शिष्या मध्ये भाष्कर बुवा बखले, केसरवाई केरकर, मोघुवाई कुडीकर, शंकरराव सरनाईक विशेष प्रसिद्ध होते.

जयपूर घराण्याची मूल्यवैशिष्ट्ये आणि विशेषतः :-

१) गीताची संक्षिप्त बंदिश. २) बुद्धिमत्तापूर्ण आणि पेचदार गायकी. ३) बोल अंगाचा विशेष प्रयोग. ४) ताणयुक्त अंगाने रागांचा विस्तार. ५) वक्र आणि पेचदार तणांचा प्रयोग. ६) अप्रचलित रागांचे गायन करण्यात विशेष झुकाव. ७) विलंबित लय आणि विशेषतः विलंबित त्रिताल मध्ये गायन करणे अधिक प्रिय. ८) आवाज खुल्या पद्धतीने लावण्याचा प्रघात. ९) संपूर्ण गायकीवर विकट (कठीण) लायकारीचा प्रभाव. १०) शिकविण्या करिता कठीण गायकी म्हणून प्रसिद्ध.

किराणा घराण्याची परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये :-

निश्चित पणे सांगणे कठीण आहे की किराणा घराण्याची निर्मिती कोणी केली, काही तज्ञांच्या विचाराने या घराण्याचा संबंध प्रसिद्ध विनकार बन्दे अली खॉ यांच्या सोबत आहे. काही पण असो हे स्पष्ट आहे की या शैली ला स्व. अब्दुल करीम खॉ आणि स्व. अब्दुल वहीद खॉ या दोन्ही कलाकारांनी जीवदान दिले आहे. अब्दुल करीम खॉ यांना संगीताची शिक्षा त्यांचे वडील काले खॉ आणि काका अब्दुल खॉ यांच्या कडून प्राप्त झाली. अब्दुल वहीद खॉ हे सुद्धा खॉ अब्दुल करीम खॉ यांचे निकटवर्ती होते, ते मिरज मध्ये राहत होते. अब्दुल करीम खॉ साहेब यांचा आवाज अत्यंत मधुर होता. त्यांच्या शिष्य परंपरेत अनेक प्रसिद्ध गायक-गायिका झाल्यात त्यामध्ये सुरेशबाबू माने, रामभाऊ कुंदगोडकर, हिराबाई बडोदेकर, गंगुबाई हंगल, उस्ताद अमीर खॉ, रोशन आरा वेगम, वर्तमान काळात या घराण्याचे प्रसिद्ध गायक स्व. पंडित भीमसेन जोशी, माणिक वर्मा, डॉ. प्रभा अत्रे इत्यादी महान गायक प्रसिद्ध आहेत.

किराणा घराण्याची मूल्यवैशिष्ट्ये आणि विशेषतः :-

१) कृत्रिम अंगाने आवाज लावणे. २) आलाप प्रधान गायकी. ३) स्वर लावण्याचा भावपूर्ण ढंग. ४) एक-एक स्वराची बढत. ५) अति विलंबित लयीत गायन. ६) वेगवेगळ्या तालाचा कमी प्रयोग. ७) गायनात लायकारीचा अभाव. ८) ख्याला मध्ये ठुमरी अंगाचा पराभव. ९) गायनामध्ये सौंदर्य दृष्टीचा प्रभाव. पटियाला घराण्याची परंपरा आणि मूल्यवैशिष्ट्ये :-

या घराण्याची निर्मिती अलिबक्श आणि फते अली या दोन भावांनी केली, हे दोन्ही बंधू आलिया आणि फतु नावाने संगीत जगतात सुप्रसिद्ध होते. वास्तविक पाहता या दोन्ही बंधूंची संगीताची तयारी जयपूर घराण्याच्या गायन पद्धतीने झाली, काही काळा करिता त्यांनी दिल्ली घराण्याची सुद्धा गायकी आत्मसाद केली होती. परंतु आपल्या प्रतिभाशक्तीच्या जोरावर त्यांनी एका नवीन शैलीला जन्म दिला जी पुढे चालून पटियाला घरांना या नावाने प्रसिद्ध झाली. वर्तमान काळात खॉ साहेब बडे गुलाम अली खॉ या घराण्याचे सर्वश्रेष्ठ गायक मानल्या गेले त्यांनी "सदारंग" या नावाने अनेक बंदिशींची रचना केली. गुलाम अली यांचे वडील अलिबक्श आणि काका फते अली यांना बडे मियाँ कालू खॉ यांच्या कडून संगीत शिक्षा प्राप्त झाली होती. गुलाम अली खॉ यांनी आपले काका काले खॉ यांच्या कडून संगीत शिक्षा गृहण केली.

पटियाला घराण्याची मूल्यवैशिष्ट्ये आणि विशेषतः :-

१) ख्यालाची कलापूर्ण बंदिश. २) संक्षिप्त ख्याल गीत. ३) अलंकारिक, वक्र आणि फिरत युक्त तानांचा प्रयोग. ४)

विस्तारामध्ये चमत्कृती, अपेक्षाभंग, वैचित्र्य इत्यादी वैविध्यपूर्ण गोष्टींचा उपयोग. ५) ख्याला मध्ये टप्पा अंगाचा प्रयोग. ६) द्रुत आणि अतिद्रुत तानांचा कलात्मक प्रयोग. ७) पंजाबी ठुमरी, दादरा गाण्याची विशेष योग्यता. ८) कंठाची किंवा गळ्याची विशेष तयारी. ९) प्रचलित राग गाण्यामध्ये अधिक आवड.

उपसंहार :-

घराण्याचा विचार करता किराणा घरांना, जयपूर घरांना, ग्वाहलेर घरांना, अजराला घरांना, अत्रौली घरांना, दिल्ली घरांना, फरुखाबाद घरांना, भैहर घरांना, आग्रा घरांना, पतियाळा घरांना, भेंडीबाजार घरांना, मेवाती घरांना, साहसावंन घरांना, रामपूर घरांना इत्यादी गायन आणि वादनाचे घराणे आहेत प्रत्येक घराण्याचे मूल्यवैशिष्ट्ये वेग-वेगळी आहेत म्हणजे शैली, पद्धती वेगळी आहे. संगीतामध्ये प्रसिद्धी असलेली पाच घराणी ही त्यांच्या कडक नियम, शिस्त मूल्यवैशिष्ट्यां मुळेच आजच्या आधुनिक काळात सुद्धा सुप्रसिद्ध आहेत. प्रस्तुत शोध निबंधात जी घराण्याची विशेषतः, शैली परंपरा या सर्व गोष्टींचा ओहापोह केल्या गेला त्याचा महत्वाचा गाभा किंवा हया गोष्टी सत्यात उतरविण्याकरिता खालील मूल्यवैशिष्ट्ये कारणीभूत आहेत. जसे योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगत तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नम्रता आणि चिकाटी हया सर्व गोष्टी किंवा मूल्यवैशिष्ट्ये नसतील किंवा एखाद्या मूल्यांची कमी असेल तर ते सिद्ध होणार नाही आणि कालांतराने लोप पावेल म्हणून शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्याच्या शैली आणि योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगत तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नम्रता आणि चिकाटी या मूल्यवैशिष्ट्यांचे अनन्य साधारण महत्व आहे.

जसे आपल्या जीवनात मूल्यवैशिष्ट्यांचे किंवा जीवनमूल्यांचे अनन्य साधारण महत्वाचे स्थान आहे. त्या प्रमाणेच भारतीय शास्त्रीय संगीतात संगीताचे धडे गिरविण्या करिता एखादी नाविन्यपूर्ण शैली, संगीत पद्धती, परंपरा स्थापित करण्या करिता योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगत तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नम्रता आणि चिकाटी या सांगीतिक मूल्यवैशिष्ट्यांना अनन्य साधारण महत्वाचे स्थान आहे. या शिवाय एखादी शैली किंवा परंपरा सर्वोच्च स्थान प्राप्त करू शकणार नाही.

सटभे गथ :-

- १) देशपांडे पं. स. भ., 'संगीत अलंकार', प्रकाशन - अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ प्रकाशन - प्रथम संस्करण - २००७ - मिरज .
- २) पाठक पंडित जगदीश नारायण, 'संगीत निबन्धमाला' प्रकाशक - पाठक पब्लिशिंग, संशोधित संस्करण - २००४ - इलाहाबाद, .
- ३) थते डॉ. अनया , 'संगीतातील संशोधन पद्धती' , प्रकाशन- संस्कार प्रकाशन - प्रथमावृत्ती -मार्च २०२१, मुंबई
- ४) शर्मा डॉ. रामविलास, 'संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण कसी समस्याएँ'; प्रकाशन - वाणी प्रकाशन - प्रथम संस्करण - २०१० - दिल्ली,
- ५) शर्मा डॉ. प्रतिभा, 'विविध घरानो की समन्वित गायकी', प्रकाशन- संस्कार प्रकाशन, प्रथम आवृत्ती- २०१६, मुंबई
- ६) श्रीवास्तव प्रो. हरिश्चंद्र, 'संगीत निबंध संग्रह' प्रकाशन- संगीत सदन प्रकाशन, दशम आवृत्ती- २०११, इलाहाबाद

विस्तारामध्ये चमत्कृती, अपेक्षाभंग, वैचित्र्य इत्यादी वैविध्यपूर्ण गोष्टींचा उपयोग. ५) ख्याला मध्ये टप्पा अंगाचा प्रयोग. ६) द्रुत आणि अतिद्रुत तानांचा कलात्मक प्रयोग. ७) पंजाबी ठुमरी, दादरा गाण्याची विशेष योग्यता. ८) कंठाची किंवा गळ्याची विशेष तयारी. ९) प्रचलित राग गाण्यामध्ये अधिक आवड.

उपसंहार :-

घराण्याचा विचार करता किराणा घरांना, जयपूर घरांना, ग्वाहलेर घरांना, अजराला घरांना, अत्रीली घरांना, दिल्ली घरांना, फरखावाद घरांना, मैहर घरांना, आग्रा घरांना, पतियाळा घरांना, भेडीवाजार घरांना, मेवाती घरांना, साहसावंन घरांना, रामपूर घरांना इत्यादी गायन आणि वादनाचे घराणे आहेत प्रत्येक घराण्याचे मूल्यवैशिष्ट्ये वेग-वेगळी आहेत म्हणजे शैली, पद्धती वेगळी आहे. संगीतामध्ये प्रसिद्धी असलेली पाच घराणी ही त्यांच्या कडक नियम, शिस्त मूल्यवैशिष्ट्यां मुळेच आजच्या आधुनिक काळात सुद्धा सुप्रसिद्ध आहेत. प्रस्तुत शोध निबंधात जी घराण्याची विशेषतः, शैली परंपरा या सर्व गोष्टींचा ओहापोह केल्या गेला त्याचा महत्वाचा गाभा किंवा ह्या गोष्टी सत्यात उतरविण्याकरिता खालील मूल्यवैशिष्ट्ये कारणीभूत आहेत. जसे योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगट तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नमता आणि चिकाटी ह्या सर्व गोष्टी किंवा मूल्यवैशिष्ट्ये नसतील किंवा एखाद्या मूल्यांची कमी असेल तर ते सिद्ध होणार नाही आणि कालांतराने लोप पावेल म्हणून शास्त्रीय संगीताच्या विकासात घराण्याच्या शैली आणि योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगट तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नमता आणि चिकाटी या मूल्यवैशिष्ट्यांचे अनन्य साधारण महत्व आहे.

जसे आपल्या जीवनात मूल्यवैशिष्ट्यांचे किंवा जीवनमूल्यांचे अनन्य साधारण महत्वाचे स्थान आहे. त्या प्रमाणेच भारतीय शास्त्रीय संगीतात संगीताचे धडे गिरविण्या करिता एखादी नाविन्यपूर्ण शैली, संगीत पद्धती, परंपरा स्थापित करण्या करिता योग्य गुरु, पात्र शिष्य, ध्येय प्रेरित रियाज, सिद्धीशी लगट तसेच प्रसिद्धीपासून विलग, अतूट कलाश्रद्धा, गुरुश्रद्धा, आत्मपरीक्षण, आत्मविश्वासपूर्वक प्रभावी आविष्कृती, नमता आणि चिकाटी या सांगीतिक मूल्यवैशिष्ट्यांना अनन्य साधारण महत्वाचे स्थान आहे. या शिवाय एखादी शैली किंवा परंपरा सर्वोच्च स्थान प्राप्त करू शकणार नाही.

सटभे गथ :-

- १) देशपांडे पं. रा. भ., 'संगीत अलंकार', प्रकाशन - अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ प्रकाशन - प्रथम संस्करण - २००७ - मिरज .
- २) पाठक पंडित जगदीश नारायण, 'संगीत निबन्धनाला' प्रकाशक - पाठक पब्लिशिंग, संशोधित संस्करण - २००४ - इलाहाबाद,
- ३) शते डॉ. अनया , 'संगीतातील संशोधन पद्धती' , प्रकाशन- संस्कार प्रकाशन - प्रथमावृत्ती -मार्च २०२१, मुंबई
- ४) शर्मा डॉ. रामविलास, 'संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण कसी समस्याएँ', प्रकाशन - वाणी प्रकाशन - प्रथम संस्करण - २०१० - दिल्ली,
- ५) शर्मा डॉ. प्रतिभा, 'विविध घरानो की सम्न्वित गायकी', प्रकाशन- संस्कार प्रकाशन, प्रथम आवृत्ती- २०१६, मुंबई
- ६) श्रीवास्तव प्रो. हरिश्चंद्र, 'संगीत निबंध संग्रह' प्रकाशन- संगीत सदन प्रकाशन, दशम आवृत्ती- २०११, इलाहाबाद

21-22
428
ISSN 0976-0377

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

**Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble**

International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XXIV, Vol. VII
Year - 12 (Half Yearly)
(July 2021 To Dec. 2021)

Editorial Office:

'Gyandeept',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913, 09637935252,
09503814000, 07276301000

Website

www.irasg.com

E-mail:

interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com,
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher:

Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur-415331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA)

Dr. Huon Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHINA)

Dr. Omshiva V. Ugade
Head, Dept. of History,
Shivajugudi College,
Nalegaon, Dist. Latur, (M.S.)

Dr. G.V. Menkudale
Dept. of Dairy Science,
Mahatma Basवेश्वर College,
Latur, Dist. Latur, (M.S.)

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Lohavran,
PENSULVYIA (USA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad, (A.P.)

Dr. Sadanand H. Gone
Principal,
Ujwal Gramin Mahavidyalaya,
Chorsli, Dist. Latur, (M.S.)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivajugudi College,
Nalegaon, Dist. Latur, (M.S.)

DEPUTY EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nanded (M.S.)

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga, Dist. Latur, (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S.K. University
Arantpou (A.P.)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S.P. Patil College,
Smalaya (Gujrat)

CO-EDITORS

Sandipan K. Gaikhe
Dept. of Sociology,
Vasant College,
Kej, Dist. Beed (M.S.)

Ambuja N. Maikhedkar
Dept. of Hindi,
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Dr. Shivaji Vaidya
Dept. of Hindi,
B. Raghunath College,
Parohani, Dist. Parohani, (M.S.)

Dr. Shivanand M. Gird
Dept. of Marathi,
B.K. Deshmukh College,
Chakur Dist. Latur (M.S.)



RNI. MAHJUL.02005/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377
Issue: XXIV, Vol. VII, July 2021 To Dec. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	The Discourse Analysis of Mahesh Elkunchwar's Old Stone Mansion from the Perspective of Cooperative Principle R. D. Dhule	1
2	Integrating Factor - A Simple Method of Solving Differential Equations P. G. Sasane	8
3	The Challenges before National Integration Suresh R. Khiste	14
4	Studies on the Physico Chemical Params of Ule Tank Solapur (M.S.) India Dr. Snehalata Muley	24
5	महिला क्रीडा शिक्षण : महाराष्ट्राची परंपरा आणि वर्तमान प्रवाह डॉ. छत्रपती पंगरकर	27
6	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा लिंग असमानतेचा ऐतिहासिक दृष्टीकोण डॉ. धनंजय ना. मोगले	34
7	ग्रंथालय माहिती संकलनाचे तंत्र आणि साधन रिटा खोसे (कदम)	38
8	भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व मजन-कीर्तन परंपरा डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके	45
9	आंतरमहाविद्यालयीन मुलींच्या क्रीडा स्पर्धा व क्रीडा शिक्षकांची अभिवृत्ती डॉ. पी. एस. रमनाळ	53
10	महाराष्ट्रातील सत्तांतर व आघाड्यांची सरकारे डॉ. एच. पी. कदम	58
11	लोकशाही शासन पद्धतीत मतदारांची भूमिका डॉ. पी. वी. ईरलापल्ले	62

ed 'Interlink
through
or thought.
ader should

important at
in to the field
good quality
eration and

Analysis' to
cholars who

ars written in
anguage and
anagement,
Education,

Kamble
f Editor)



RNI, MAHARAJUL0280572010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
6.20

ISSN 0976-0377

Issue : XXIV, Vol.VII, July 2021 To Dec. 2021

45

भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व भजन-कीर्तन परंपरा

डॉ. सुनील वावुलालजी पटके

संगीत विभाग,
कला महाविद्यालय,
मलकापूर, जि. अकोला

8

Research Paper - Music

प्रस्तावना—

वैदिक आणि भौगोलिक युगातील प्राचीन सभ्यतेला पाहिल्यास त्या काळातील अनेक प्रसंगांमध्ये नर्त्य अविष्कार दिसून येतात. सिंधु घाटी मधील सभ्यतेचा विकास होत असतांना नर्त्य आणि गायनाचे सार्वजनिक स्वरूपात कार्यक्रमाने आयोजन करण्यास प्रारंभ झाला होता. वैदिक युगातील भक्ती मार्गात ज्ञान, कर्म, तप, व्रत इत्यादींचा सन्मान करत होते. वैदिक भक्तीचे तीन अंग होते स्तुती, प्रार्थना आणि उपासना. प्राचीन काळामध् ये संगीत हा शब्द अस्तित्वात नव्हता त्या ऐवजी “गांधर्व” शब्दाचा प्रयोग दिसून येतो. वाल्मिकीय “रामायण” मध्ये लव-कुश यांनी रामायण-गायनाकरिता “गांधर्व” शब्दाचा अर्थ प्रामुख्याने गीत, वाद्य आणि नर्त्या करिता केला होता. भक्तिपरक काळ्यांना “भजन” म्हटल्या जाते, छंद व स्वरांच्या दृष्टीने भक्तीगीतांमध्ये छंद व स्वर यांचा काही संबंध दिसून येत नाही, तरी पण हे गेय पदे स्वर, राग आणि तालाने अलंकृत करून जेव्हा प्रस्तुत केल्या जातात तेव्हा रस भावाची जी अजस्र धारा वाहते ती अवर्णनीय असते. भक्ती संगीताच्या अंतर्गत कीर्तन, संकीर्तन, भजन, हरिकथा, कालधूप इत्यादींचा अंतर्भाव होतो. भारताच्या विविध प्रादेशिक क्षेत्रात क्षेत्रीय भाषांच्या साहाय्याने यांचे गायन केल्या जाते.

मुख्य शब्द—: भक्ती संगीत परंपरा
संशोधनाची उपयोगिता व आवश्यकता —:

आजच्या मानसिक तणावाच्या काळात वृद्ध मनुष्याला मानसिक शांतता व आत्मिक मनोरंजनाची खूप आवश्यकता आहे व त्याच्या शोधात ते चिंतीत असतात. ग्रामीण पातळीवर अरण्या मनुष्यांना अत्यंत योग्य ठिकाण म्हणजे गावातील आराध्य देवतांचे मंदिर या मंदिरात हरिपाठ, कीर्तन, भजन, काकळा आरती असे अनेक धार्मिक



गायन, वादन व नरत्य पूरक कार्यक्रम तर्पणर सुरु असतात या मध्ये गाढातील सर्वत्र जाती-धर्माचे, स्त्री-पुरुष, आवाळ-वरुड लोक भाग घेतात व मनःशांती, मानसिक स्वास्थ, आत्मिक मनोरंजनाचा अनुभव करतात, ही कीर्तन-भजन परंपरा प्राचीन काळापासून अस्तित्वात आहे आणि समरुड होत-होत आजच्या आधुनिक युगापर्यंत पोहचली आहे.

भक्ती संगीत व भजन-

कीर्तन परंपरा यावर चर्चा करणे, नाव-नवीन पद्धतीने विचार करणे, आजच्या वातावरणाला ही परंपरा कशा पद्धतीने प्रेरक होईल किंवा या परंपरेला प्रेरक लोकांनी साध कऱ्या पद्धतीने मिळेल व श्रोत्यांची संख्या वाढेल याचे पर्याय शोधने, याची अत्यंत आवश्यकता आहे जेणेकरून आपली भारतीय समृद्ध भक्ती संगीत व भजन कीर्तन परंपरा आजच्या आधुनिक काळातील आवाळ-वृद्ध व मानसिक शांतता प्राप्त करण्याच्या हेतूने शोधात असणार-या व्यक्तींना मिळेल करीता या विषयाकडे संशोधनाचा विषय म्हणून बघणे नव्या पद्धतीने व नाव-नवीन मार्गाने संशोधन करण्याची आवश्यकता संशोधकाला वाढते. प्रस्तुत विषय हा "भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व भजन-कीर्तन परंपरा" या विषयावर आधारित असून या विषयावर नव्याने अभ्यासपूर्वक संशोधन करण्याची आवश्यकता संशोधकाला वाढते.

संशोधन पद्धती-:

प्रस्तुत शोध निबंधाचा विषय हा "भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व भजन-कीर्तन परंपरा" हा असून प्रस्तुत शोध निबंध हा ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीवर आधारित आहे. प्राचीन काळापासून भक्ती संगीत व भजन कीर्तन परंपरा कशा पद्धतीने समृद्ध झाली. व त्या काळात आलेल्या अर्थव्ययामधून कोणत्या पद्धतीने मार्गक्रम करत प्रसिद्धीच्या शिखरावर पोहचली या सर्व बाबींचा अभ्यास ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीत केला जातो, म्हणून प्रामुख्याने या शोध निबंधात ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीचा वापर करण्यात आला आहे. प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये भारतीय भक्तिसंगीताची पुस्तके, पत्रिका, संगीत अंक व इंटरनेट द्वारा प्राप्त माहितीचा यथोचित प्रयोग केला गेला आहे. प्रस्तुत शोध निबंधाचा विषय "भारताची समृद्ध भक्ती-संगीत व भजन-कीर्तन परंपरा" हा असून प्रस्तुत शोधात ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीचा तसेच सामाजिक संशोधन पद्धती व तुलनात्मक संशोधन पद्धतीचा यथोचित उपयोग करण्यात आला आहे.

प्राचीन काळातील संगीत -:

प्राचीन काळामध्ये संगीत हा शब्द अस्तित्वात नव्हता त्या ऐवजी "गांधर्व"



शब्दाचा प्रयोग दिसून येतो. वाल्मिकीय “रामायण” मध्ये लव-कुश यांनी रामायण-गायनाकरिता “गंधर्व” शब्दाचा अर्थ प्रामुख्याने गीत, वाद्य आणि नृत्या करिता केला होता. “नारदीय शिक्षा” या ग्रंथा मध्ये “गंधर्व” शब्दाचा अर्थ सांगितला आहे, तो पुढील प्रमाणे—:

गेती गेय विदूः प्राज्ञाभोक्तकारु प्रवादनाम ।
वेति वाद्यस्य सज्ञेन गंधर्वस्य विरिचनोमिती ॥

प्राचीन काळातील भक्ती संगीताची व्यापकता —: नारदीय शिक्षा

इश्वरप्रेम गिळविण्या करिता इश्वराच्या गुणांच्या वर्णनाचे गायन केल्याने आपल्या

मानसिक विकासामध्ये कमी प्रमाण करण्या करिता ज्या गीत किंवा वाद्याचे वादन करतात ते भक्ती-संगीत होय. वाद्य वादनाला भक्ती संगीत म्हणण्याचा अर्थ असा की, प्राकृत लोकांच्या मनोरंजनाकरिता ज्या प्रकारचे वादन केल्या जाते, त्याच प्रकारे इश्वर प्रसन्न होण्याकरिता इश्वराच्या चरणी आपली कला सादर करण्याच्या भावनेने जर वाद्य वाजविल्या गेले तर त्या वाद्य वादनाला हार्भक्ती संगीत अवरय म्हटल्या जाईल. सांसारिक राग किंवा संसाराची आसक्ती ज्या प्रकारे इश्वराच्या प्रेमाच्या रूपामध्ये परिवर्तित होऊन “भक्ती” म्हटल्या जाते, याच प्रकारे लौकिक मनोरंजनार्थ न होता, इश्वर मनोरंजनार्थ वादन असेल तर ते “भक्ती-संगीत” का न म्हटल्या जावे. याच भावाला “याज्ञवल्क्य-स्मरती” या ग्रंथा मध्ये म्हटले आहे की —:

वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजातिविशारदः ।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं नियच्छती ॥

या श्लोकाचा अर्थ असा की, विणा वादनात निष्णात असणारा, श्रुती आणि उपासनेद्वारा थोड्या परिश्रमात मोक्षमार्गाला प्राप्त होतो.
(यातिधर्म-प्रकरण, श्लोक-११५)

गीतज्ञो यदी योगे न माटनोतीपरम पवम ।
रुद्रस्यनुचरो भूत्वा ते नैवसहमोदते ॥

या श्लोकाचा अर्थ असा की, जर गीताचा ज्ञाता कोणत्याही प्रकारे योग (ध्यान) द्वारा परम तत्त्वाला प्राप्त नाही झाला तर तो पुढच्या जन्मामध्ये रुद्रचा अनुचर होऊन रुद्रासोबत क्रीडा करतो. या उदाहरणा मध्ये गीत, वाद्य आणि नृत्य या कलांना समान

मानल्या गेले आहे. “वीणा वादन” पासून वादन, “श्रुतीजाती विशारद” पासून गायन कुशल आणि “तालज्ञ” पासून नृत्यज्ञ असे अर्थ दिसून येतात. गीत असलेल्या नृत्या मध्ये गीताच्या भावना विविध मुद्रांनी आणि शरीराच्या विविध आंगिक क्रिया द्वारा अभिव्यक्त केल्या जातात. ऋग्वेदकाळात नृत्याला उच्च स्थान प्राप्त झाले होते, महिला ह्या नृत्याच्या कार्यक्रमात मोकळ्या मनाने भाग घेत होत्या व पुरुष सुद्धा नृत्य करतांना दिसून येत होते. भक्ती-भावमय पदांना किंवा गीतांना नृत्याच्या भाव-भंगिमांद्वारा अभिव्यक्त करून ईश्वर समर्पित भावनाद्वारा केल्या गेलेल्या नृत्याला भक्ती-संगीत पासून वेगळे करता येणार नाही. या दृष्टीने “संगीत रत्नाकर” मधील संगीताची व्याख्या सुद्धा येथे सार्थक सिद्ध होते. शेवटी असे म्हणता येईल की ईश्वर प्रेमाला समर्पित केल्या गेलेल्या गायन-वादन आणि नृत्याचे सर्व प्रकार भक्ती-संगीताच्या अंतर्गत येतात. भक्ती-संगीत, लोकसंगीत, नाट्यसंगीत इत्यादी कोणतेही संगीत व्यापक नाही.

भक्ती संगीताची दिव्यता व अनुभूती :-

भापे पेशा नादाचे प्रभावक्षेत्र अधिक व्यापक असल्यामुळे आणि भक्तिपरक शब्दांना सस्वर प्रस्तुत केल्याने, लहान मुलानं पासून ते वृद्ध मनुष्या पर्यंत त्या गायनाचा प्रभाव नक्कीच पडतो यात शंका नाही. मंदिरामध्ये ईश्वराची आरती करीत असतांना जेव्हा एकत्रीत पणे शंख, ढोल आणि घंटा यांचा निनाद गुंजतो तेव्हा मनुष्य प्रभावित होऊन स्वरोत्तरण करीत आपल्या आवाजाला त्या निर्माण झालेल्या दिव्य नादासोबत एकरूप किंवा त्यासमान करण्याचा प्रयत्न करतांना दिसून येतो.

“साधारणतः यह सबकी मान्यता है की गीत लोकगीत है, जो जनसाधारण द्वारा प्रयुक्त होता है और जनसाधारण की भावनाओं को व्यक्त करता है।”

—लोकधर्मी प्रदर्शनकारी कलाएँ. पृष्ठ क्र १

भक्ती-संगीत व संत परंपरा :-

जीवनात अखंड आनंदाच्या प्राप्तीकरीता मन, वचन आणि कर्माच्या संयोगाने ईश्वराची आराधना-भक्ती करणे आवश्यक आहे. ईश्वर प्राप्तीकरिता अनन्य साधारण प्रेम आणि समर्पणाची भावना म्हणजे भक्ती होय. भक्तीचे नऊ प्रकार सांगितल्या गेले आहेत, त्या पैकी ईश्वराच्या गुणांचे भक्तीभावाने गायन (कीर्तन) सहज आणि श्रेष्ठ आहे. गायन (कीर्तन) अधिक संवेदनशील झाल्यावर माधुर्य भाव किंवा सत्वाचा उद्रेक होतो. सात्विकेकाने चित्ताला शांतता मिळते आणि विरग उत्पन्न होतो. ज्या प्रकारे विरागाला अनुकूल राग पाहिजे, रागाला अनुकूल छंद पाहिजे, छंदाला अनुकूल शब्द पाहिजे आणि शब्दाला अनुकूल लय पाहिजे तरच मनाला अखंड लय (समाधित्व) प्राप्त होते. स्वर



आणि लय यांच्या आधारेने मंत्राचे शब्द किंवा चेतन-शक्ती जमगूत राहते. वल्लभ, चैतन्य, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, पुरंदरदास, त्यागराज, तुकाराम महाराज, नरसी, गोरखनाथ, हरिदास, जयदेव, विद्यापती, धर्मदास, गुरुनानकजी, मालुकदास, रविदास महाराज, पल्लूदास, दादू, सुंदरदास, चरणदास, सहजोबाई, दयाबाई इत्यादी संत भक्तांनी स्वर आणि शब्दाच्या चेतन-शक्तीने ईश्वराचे अनन्य प्रेम उपलब्ध करून दिले आणि जगाला सत्याचा संदेश दिला.

भक्ती संगीताच्या प्रचार व प्रसाराचा काळ :-

इ. स. १४ व्या शतकापासून इ. स. १९ व्या शतकापर्यंत चा काळ भक्ती-साहित्याच्या दृष्टीने अत्यंत महत्त्वपूर्ण ठरला होता, या काळात भक्ती-आंदोलन आपल्या सर्वोच्च स्थानावर होते आणि याच काळात निर्गुण, संत-भक्ती, प्रेममार्गी भक्ती, सुफी-भक्ती, प्रेमलक्षणा भक्ती, कृष्ण-भक्ती आणि मर्यादामार्गी भक्ती, राम-भक्ती या सर्व भक्ती प्रकारांच्या प्रेरणेने आणि प्रभावाने शिल्प, संगीत व अन्य ललित कलांना पूर्ण पणे विकसित होण्याचे सौभाग्य प्राप्त झाले, या काळाला भक्ती-काळ म्हटल्या गेले. या काळातील भक्त-गायकांद्वारा जीवनाचे मुल्य आणि मर्यादा प्रचारात आणल्या गेल्या. आनंद हे आत्म्याचे खरे स्वरूप आहे. जी भक्ती भक्तीच्या माध्यमाने लवकरात-लवकर साध्य केल्यास अनुभूती प्राप्त होते. हिंदी मधील संत साहित्य आणि भक्ती-साहित्या मध्ये आनंद प्राप्तीचे अखंड स्वरूप म्हणजे भक्ती-संगीत सांगितल्या गेले आहे. हा अखंड आनंद प्राप्त करण्याची उत्कट अभिलाषाच जीवनात विविध क्षेत्रामध्ये पथ-पथदर्शक बनते. या करीताच सर्व संतांनी आणि भक्तांनी भक्तीलाच मुख्य रस मानले आहे व अन्य सर्व रसांना भक्तीचे अर्वांतर रूप मानले आहे.

भक्ती संगीत व भक्ती काव्य :-

भक्ती काव्याच्या सुरुवातीला, मध्यभागी आणि शेवटी पुढील प्रकाराद्वारा गीताचे गायन होते ते म्हणजे :- सार, हरिपद, चौपाई, दोहा, सरसी, गीता, मुक्तीमणी, श्यामउल्लास, रलोक, छपक आणि शेर इत्यादी गीतांचा वापर केला जातो. भक्ती-काव्याचे काही प्रकार असेही प्रचारात आले आहेत की, ज्यांना लोक-धुनीचा आश्रय प्राप्त झाल्यामुळे ते भक्ती काव्य संवसाधारण मनुष्याच्या जीवनाचा आणि हिंदू संस्कृतीचा एक महत्त्वपूर्ण अंग बनला आहे. दैनंदिन जीवनात राग-द्वेष, हर्ष-शोक, सुख-दुःख इत्यादी भाव आपल्या जीवनात कोणत्या-ना-कोणत्या क्षणी येतच असतात. या अवस्थेपासून मुक्ती मिळविण्याचा मार्ग म्हणजे भक्ती-काव्य (गीत), भक्ती-संगीत आणि भक्ती-नृत्य होय. "द्वारिका-माहात्म्य" या ग्रंथात लिहिले आहे की, जो मनुष्य प्रसन्न चित्ताने, श्रद्धा



RNI MAHMUL02805/2010/33461

Interim Research Analysis

IMPACT FACTOR

6.20

ISSN 0976-0377

Issue : XXV, Vol.VII, July 2021 To Dec. 2021

30

पूर्वक आणि भक्तियुक्त, भावसालमक नृत्य-गायन करतात ते जन्मानंतरच्या पापा पासून मुक्त होतात. भक्ती संगीत मुक्ती प्राप्तीचा मार्ग आहे यात शंका नाही.

"The folk-song is a song i.e. a lyric poem with a melody, which originated anonymously, among unlettered folk in times past and which remained in currency for a considerable time, as a rule for centuries."

& The Science of Folk-lore Page-153

भक्ती संगीत परंपरेचे महानतम साधक व प्रचारक —:

भारतामध्ये भक्तिसंगीताचा प्रवाह सर्वच प्रदेशात प्रवाहित झालेला आहे. स्थान-भेद, भाषा-भेद, भलेही असो परंतु संगीताची मूलभूत भक्ती-भावना सर्वच क्षेत्रात व्याप्त आहे. संपूर्ण मनुष्य वर्गाला भक्ती संगीताच्या साहाय्याने एकतेच्या मूळ सूत्रात बांधून ठेवत आहे. प्राचीन काळापासून संपूर्ण देशाचा भक्ती संगीताचा प्रचारक व प्रसारक या दृष्टिकोनातून विचार केला असता, उत्तर प्रदेश मध्ये तुलसीदास, राजस्थान मध्ये मीराबाई, बंगाल मध्ये चैतन्यभट्ट, बिहार मध्ये जयदेव, महाराष्ट्रात ज्ञानेश्वर महाराज, गुजरात मध्ये नरसी, कर्नाटक मध्ये त्यागराज या प्रकारचे असंख्य गायक किंवा प्रचारक-प्रसारक प्रसिद्धी होते. वल्लभाचार्यांच्या समकालीन श्री. चैतन्य महाप्रभु (इ. स. १४८५-१५३३) यांनी आपल्या काळात रसमय कीर्तनाने संपूर्ण बंगाल प्रदेशात भक्तिमय रंगात रंगविला. संगीतामध्ये भक्ती-रसाची प्रतिष्ठापना सर्वप्रथम श्री. चैतन्य महाप्रभु यांच्या द्वाराच झाली. शृंगार रस, वीर रस, करून रस, इत्यादी नऊ-रसांच्या व्यतिरिक्त भक्तीला स्वतंत्र रसाच्या रूपाने प्रतिष्ठापित करण्याचे श्रेय सुद्धा यांचेच आहे. या भक्ती संगीत (कीर्तन) परंपरेने शेट्टचे साधक स्व. गायनाचार्य पं. विष्णू दिगंबर पलुस्कर होते, ज्यांनी संगीताचे सुरुचीर्ण काव्यासोबत एकरूप केले. मध्यकालीन दरबारी गायकाद्वारां फक्त शृंगार-

प्रधान आणि नेहमी निरर्थक गीतांचा प्रचार केल्या गेला. या निरर्थक गीतांच्या स्थानावर पंडित विष्णू दिगंबर पलुस्कर यांनी सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई इत्यादी भक्तीच्या भजनाला विविध रंगामध्ये बांधून नवीन-नवीन ख्यालांची निर्मिती केली आणि शास्त्रीय संगीताला ईश्वराच्या अखंड आणि अमूर्त भक्तिमय दिशेने मार्गक्रमित केले. पंडित पलुस्कर यांचा मुलगा स्व. पंडित डी. व्ही. पलुस्कर यांच्या "तुमक चलत रामचंद्र " इत्यादी भजनाच्या ध्वनी मुद्रित झाल्या. पंडित. विष्णू दिगंबर पलुस्कर यांच्या शिष्या मध्ये स्व. पंडित ओंकारनाथ ठाकूर यांनी आपल्या रसमय भजनांनी सर्वांना मंत्रमुग्ध करून प्रसिद्ध झाले, "जोगी मत जा" हे भैरवी रंगातील भजन कारण आणि भक्तीचे



अपूर्व संगम मिश्रित भजन होते, हे भजन किंवा संगीताची दूर-दूर पर्यंत समज नसणा-
या भक्ताला-श्रोत्यांना पण मंत्रमुग्ध-रसमुग्ध करत असे.
संगीतातील भजन-कीर्तन परंपरा -:

भक्तिपरक काव्यानाच "भजन" म्हटल्या जाते, छंद व स्वरांच्या दृष्टीने भक्तिगीतानमः
ये छंद व स्वर यांचा काही संबंध दिसून येत नाही, तरी पण हे गेय पदे स्वर, राग आणि
तालाने अलंकृत करून जेव्हा प्रस्तुत केल्या जातात तेव्हा रस भावाची जी अजस्र धारा
वाहते ती अवर्णनीय असते. भक्ती पदांमध्ये ईश्वराचे रूप आणि गुणांचे वर्णन स्वरूपी
कीर्तन असते. "कीर्तन" सगुण आणि निर्गुण या दोन उपासनांनी अलंकृत असते.
वल्लभ-संप्रदायाने भक्ती-गीतांच्या स्थानावर कीर्तनाला महत्त्वपूर्ण स्थान दिले आहे,
कारण की शिक्षित आणि अशिक्षित असो किंवा कोणत्याही जाती-जमातीचे असो
किंबहुना बहुसंख्य वक्तींच्या समुदायाला या मध्ये भाग घेता येतो. पदांचे शुद्ध उच्चारण
करणारा, राग आणि ताल इत्यादी मध्ये पारंगत असणारे कीर्तनकार असणे आवश्यक
नव्हते, तेथे सरळ स्वरोच्चार आणि समर्पणाच्या भावनेने मनुष्याला परम आनंद व शांती
मिळते कारण की त्यांचे लक्ष्य देवाच्या तद्रूप, अमूर्त आणि स्वयंभू लय-तत्वाच्या
स्मरण शक्ती या माध्यमाने किर्तनकारांचे भाव स्वतः उद्दीप्त होत असतात, परंतु भावनांच्या
विस्तारासाठी भक्तिपरक शब्दांना संगीतजीवी होणे आवश्यक आहे.

सर्वसामान्य सामाजिक जीवनातून वरच्या पातळीवर जाऊन त्यांच्या रचना शास्त्रीय
संगीत आणि भाषा-साहित्याला समृद्ध करणा-या ठरल्या. भक्ती नवविध म्हटल्या गेली
आहे ती, श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चना, वंदन, दास्य, सख्य आणि
आत्मनिवेदन यामध्ये सर्वसुलभ व सुगम मार्ग "कीर्तन" म्हटल्या गेले आहे. ईश्वराचे
नाव, गुण आणि कर्मांचा स्वर व लय सोबत उच्च स्तरात गायन करणे हे कीर्तनाच्या
माध्यमातून चांगल्या पद्धतीने केल्या जाते. वीणा, मृदंग, झांझ, टाळ हे कीर्तनाचे साथीचे
वाद्य आहेत. कीर्तन व्यक्तिगत, एका व्यक्तीने केल्या जाते आणि संकीर्तन समूहाद्वारा
केल्या जाते. कीर्तनाचे आद्य प्रवर्तक वेदव्याची नारद आहेत, जे आपल्या वीणेच्या
साहाय्याने सदैव आपल्या ईश्वराची महती त्यांच्या गुण-गाथांचे गायन करून करत
असत. संकीर्तनाचे प्रवर्तक ह्या ब्रजवासी गोपिकांना मानल्या जाते. गोपिकांनी संपूर्ण
संसारपासून निःसंग होऊन, लोक-लाज आणि कुल-मर्यादा सोडून श्रीकृष्णाच्या
नाम-संकीर्तनाचे संपूर्ण ब्रज-भूमीला श्रीकृष्णमय केले. सामूहिक गायन व सामूहिक
नृत्याचा प्रथम आदर्श गोपिकांनी प्रस्तुत केला आहे. गोपिकांचे रास-नृत्य आपल्या
विलक्षणता निर्माण करून देते आणि भारतीय नृत्याची विशिष्ट शैलीच्या रूपात प्रतिष्ठा



RNI, MAHMUL020052010133461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR

6.20

ISSN 0976-0377

Issue : XXIV, Vol.VII, July 2021 To Dec. 2021

52

प्राप्त करून नृत्याला प्रसिद्धी मिळाली आहे. “लोकसंगीत कि निष्पत्ती के लिये सांस्कृतिक सर्पण, भावात्मक उलथ-पुलथ तथा आध्यत्मिक क्रांती का वातावरण अत्यंत अनुकूल होता है।” – सामर, उनी . पृष्ठ क्र ७९-८०
उपसंहार —:

भारतीय संगीत हे फक्त मनोरंजनाची वस्तू नसून वैदिक काळापासून भक्ती संगीत, भजन कीर्तन हा भारतीय जनमानसाच्या जिवाळ्याचा आणि आध्यात्मिक व मनःशांती आत्मसाद करणारा विषय म्हणून जीवनासोबत जोडलेला आहे. भक्ती संगीताच्या विषया अंतर्गत जोडलेला आहे. भक्ती संगीताच्या विविध क्षेत्रात हरिकथा, काळोप इत्यादी कला प्रकाराचा अंतर्गत येतो. भारताच्या विविध क्षेत्रात प्रादेशिक भाषांच्या आधारित या प्रकाराचे गायन केल्या जाते. भारतीय संगीतामध्ये समरुद्ध असण्याच्या दृष्टीने विचार केल्यास भक्ती संगीत ही भारतीय संगीताची अत्यंत समरुद्ध परंपरा आहे याचे अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण म्हणजे गीत-रामायणाची रचना ही भक्ती संगीत अंतर्गत मानल्या जाऊ शकते. भक्ती संगीताचा आस्वाद घेत असतांना मनापासून आस्वाद घेतल्याने लवकरात-लवकर भाव समाधी प्राप्त होते, हा मिळणारा आनंद अवर्णनीय व अलौकिक आनंद रस प्राप्त होतो. भक्ती संगीताच्या माध्यमातून आपणास आनंद सोबत भक्ती-भावनेचा सुद्धा फायदा घेता येतो असा परमानंद व लौकिक आनंद आणि पारमार्थिक सिद्धीचे अत्यंत सुंदर उदाहरणाचा संयोग सहजच शुद्ध होऊन जातो.

संदर्भ सूची :-

- १) शुक्ल डॉ गौरव (संपादक) ‘ संगीत मंजरी ‘ श्री विनायक पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण २०२०आगरा
- २) लोकसत्ता चतुरंग चर्चा- लोकसत्ता.कॉम- जुलै ७- २०२०- youtube.com/watch?v=Buh5ukmva
- ३) विडकर डॉ. सुचेता, “संगीत शास्त्र -विज्ञान (भाग-२)” संस्कार प्रकाशन मुंबई. प्रथम संस्करण २०१३
- ४) रानडे डॉ. अशोक दामोदर, “लोकसंगीतशास्त्र”भारत मुद्रक आणि प्रकाशक लि औरंगाबाद
- ५) “संगीत कला विहार”- अ.भा.ग.म. मंडळ मिरज
- ६) गर्ग डॉ. लक्ष्मीनारायण (संपादक), “संगीत मासिक” – हाथरस

Online Education : Myths and Facts



Dr. Hemlata Ganeshrao Dhage
Mr. Sunil Rambhau Thorat
Dr. Sanjay Pandurang Kale



Online Education: Myths and Facts

First Edition

Editors

Dr. Hemlata Ganeshrao Dhage

Mr. Sunil Rambhau Thorat

Dr. Sanjay Pandurang Kale



INSC International Publishers

54. ऑनलाईन शिक्षण पध्दतीमध्ये होणारे फायदे आणि तोटे 279
-प्रा. वंदना मधुकरराव देशमुख
55. भारतीय शास्त्रीय संगीताचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण 282
पद्धती
-डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके
56. ऑनलाईन शिक्षण आणि ग्रामीण महाविद्यालयातील विद्यार्थी 292
-प्रा. डॉ. निलम एम. छंगाणी
57. संगीताच्या प्रचार, संवर्धन आणि सादरीकरणावर झालेला तंत्रज्ञानाचा 298
प्रभाव
-डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू
58. ऑनलाईन शिक्षणाचे परिणाम 302
-प्रा. डॉ. गजानन गोपाळराव हेरोळे
59. ऑनलाईन संगीत शिक्षण में पं. भातखंडे के ग्रंथ की उपयोगिता 305
-प्रा. विशाल विजय कोरडे
60. ऑनलाईन शिक्षा जरूरत और चुनौतियाँ 308
-डॉ. शाहेदा मुनाफ
61. ऑनलाईन शिक्षा के फायदे—नुकसान 312
-प्रा. डॉ. फरहाना आजमी मो सादीक शेख

भारतीय शास्त्रीय संगीताचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती

डॉ. सुनील बाबुलालजी पटके
सहाय्यक प्राध्यापक (संगीत विभाग)
कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला
patake.sunil@gmail.com

ऑनलाईन शिक्षण ही पूर्ण पणे संगणीकृत आणि इलेक्ट्रॉनिक आधारित किंवा समर्पित शिक्षण-अध्यापन पद्धती आहे. 'शिक्षण' या प्रक्रियेचा अभिप्रेत अर्थ असा की, व्यक्तीमधील नैसर्गिक शक्तीचा व जन्मप्रदत्त सुप्त गुणांचा अधिकाधिक विकास घडवून आणणे व त्यायोगे व्यक्तीचे मन, शरीर, बुद्धी आवाज सुघटित करणे होय. संगीत शिक्षणाची नेमकी व्याख्या करताना असे म्हणता येईल की, व्यक्तीला निसर्गदत्त प्राप्त झालेल्या स्वर, लय, ताल या प्रतिभासुप्त गुणांचा प्रगत संगीतशास्त्र व कला यांच्या संदर्भात योग्य तो विकास घडवून आणून तो कलात्मक पातळीवर पोहचविणे.

ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीला निर्माण झालेली पूरक परिस्थिती म्हणजे वर्तमान काळातील कोविड-१९ महामारी, या महामारीने विश्वाची घडी विस्कडीत केली, या महामारीचा प्रभाव मनुष्याच्या सर्वांगीण जीवनावर झालेला दिसून येतो. भारतीय शास्त्रीय संगीतावर सुद्धा याचा परिणाम झाला आहे. भारतीय शास्त्रीय संगीत ही गुरुमुखी शिक्षा आहे. परंतु परिस्थिती नुसार ऑनलाईन पद्धतीने संगीत शिक्षा देण्याचा पर्याय वापरण्यात येत आहे. ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीचे सुद्धा चांगले-वाईट परिणाम दिसून येत आहेत. प्रस्तुत शोध निबंध हा "भारतीय शास्त्रीय संगीतचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती" या विषयावर आधारित असून संगीतातील गायन, वादन आणि नृत्य या कलात्मक विद्यावर झालेला चांगला-वाईट परिणाम व प्रभाव आणि त्यावर मात करून माहितीतंत्रज्ञानाचा सहाय्याने ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीचा उपयोग करून सांगीतिक शिक्षण सातत्याने प्रवाहित ठेवण्याकरिता निर्माण करण्यात आलेल्या पर्यायाची माहिती व संगीताचा प्रसार-प्रचार कश्या प्रकारे होऊ शकतो, त्यामध्ये ऑनलाईन तंत्राचा, साहित्याचा व साधनांचा कशा प्रकारे उपयोग होऊ शकतो या संबंधीची संपूर्ण चर्चा "भारतीय शास्त्रीय संगीतचा प्रवास - गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धती" प्रस्तुत शोध निबंधात करण्यात आली आहे.

पारंपारिक संगीत शिक्षण पद्धती

भारतीय शैक्षणिक, सामाजिक आणि सांस्कृतिक जीवनात सर्व प्रकारच्या शिक्षणात आश्रमीय शिक्षणपद्धती प्रचारात होती. ऋषी मुनींचा स्वतःचा आश्रमातच-गुरुगृही राहून, विद्यार्थ्यांस गुरुची सेवा करून शिक्षण प्राप्त करावे लागत असे. संगीत कलेचे माध्यमच मुळात ध्वनिनाद व श्रवणविद्या म्हणून संबोधले जाई. पूर्वीच्या या गुरुकुल पद्धतीच्या शिक्षणात तात्विक चर्चावर विशेष भर दिली जाऊन, गायक-वादक कलाकार तयार करणे हेच त्या शिक्षणाच अंतिम ध्येय होते.

संगीत शिक्षण पद्धतीत सामाजिक गरजा नुसार झालेले बदल

बदलत्या सामाजिक परिस्थितीत संगीत शिक्षणाची गरज निरनिराळ्या प्रकारे वाढलेली दिसते. आज समाजाच्या सांगीतिक, वैज्ञानिक आणि सौंदर्यात्मक अभ्यासाची गरज, बदलत्या परिस्थितीत निर्माण झाली आहे. कलाकार गायक, वादक तर हवेच आहेत, त्याही बरोबर संगीत शास्त्री, संगीत समीक्षक आणि मनस्वी व मर्मज्ञ श्रोते, तसेच संगीत शिक्षक इत्यादी अनेक पातळीवर संगीताची गरज वाढू लागली. केवळ त्यामुळे, गुरुकुल पद्धती या सर्व गरजा भागवायला कुठे तरी कमी पडेल हे निश्चितच आहे. म्हणून बदलत्या काळाचे हे आव्हान स्वीकारण्यासाठी संस्थानिहाय पातळीवर, संगीताचे संवर्धन आवश्यक झाले आहे. संगीत शिक्षणाच्या अशा गुरुकुल ते ऑनलाईन शिक्षण पद्धतीमुळे त्याच्या उद्देशांमध्ये देखील लक्षणीय फरक पडणे स्वाभाविक आहे. विविध स्तरावर संगीत पोहचवायचे म्हणजे उद्देशांचा बदल सुद्धा आवश्यक ठरतो. म्हणून संस्थानिहाय, महाविद्यालयीन पातळीवर संगीत शिक्षणात समस्या आहेत की नाही किंवा अस्तित्वात असणाऱ्या समस्या सोडवण्याचा विचार होणे महत्त्वाचे ठरते.

गुरुकुल संगीत शिक्षण पद्धती

“गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्वीष्णू गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुःसाक्षात् परब्रम्ह तस्मै श्री गुरुवे नमः”॥

प्राचीन काळापासून मध्यकाळा पर्यंत संगीत ज्ञान प्राप्तीचा एकमेव मार्ग गुरुमुखी शिक्षा होती त्या काळातील ज्ञान भांडार हे वेद, शास्त्र, दर्शन आणि कला या चार प्रकारामध्ये विभाजित होते. संगीत शिक्षा प्राप्तीचा एकमात्र मार्ग 'गुरु' असल्यामुळे प्राचीन आणि मध्यकाळात गुरुजनांचे महत्त्व अनन्यसाधारण मानल्या जात होते. एक पाश्चात्य विद्वानाने म्हटले आहे की,

तिन्ही प्रकारामध्ये संगणक अत्यन्त महत्वाचे माध्यम झाले आहे. अशाप्रकारे माहिती तंत्रज्ञान आणि संगीत क्षेत्रात होणारे महत्वपूर्ण बदल यांची भूमिका स्पष्ट होते. आजच्या ज्ञानाच्या या महासागरात गुणवत्तापूर्ण संगीत विद्या घेण्यासाठी माहिती तंत्रज्ञानाचा प्रचार-प्रसार व त्याबद्दल सकारात्मक दृष्टिकोन निर्माण करणे आवश्यक आहे आणि जर सकारात्मक दृष्टिकोन असेल तरच गुणवत्तापूर्ण संगीत निर्माण झाल्याशिवाय राहणार नाही.

संगीत क्षेत्रासोबतच इतर क्षेत्रामध्ये उपाययोजना करून ऑनलाईन पर्यायी मार्ग काढण्यात आले याच प्रकारे भविष्यात पण तत्कालीन परिस्थिती नुसार यापेक्षा उत्तम उपाय योजना केल्या जाऊ शकतील. आधुनिक काळात संगीतक्षेत्रात ऑनलाईन पद्धतीने निर्माण झालेले अनेक पर्याय जसे सॉफ्टवेअर, अप्लिकेशन ॲप्स भारतीय संगीताची अविरत समृद्ध असलेली परंपरा वृद्धिगत करण्यात मदत करीत आहे. अशाप्रकारे भारतीय संगीतातील गायन, वादन आणि नृत्य या तिन्ही कला प्रकारामध्ये नवनवीन दृष्टिकोनातून नवनवीन अत्याधुनिक अप्लिकेशन ॲप्स, सॉफ्टवेअर, ऑनलाईन पर्यायांच्या माध्यमातून संगीत क्षेत्रात नवनवीन प्रकारचे बदल समोर येत आहेत यामुळे भविष्यात येणाऱ्या कोणत्याही महामारी किंवा संकटाच्या काळात संगीताचा प्रचार-प्रसार होण्यास अडचण निर्माण होणार नाही. येणाऱ्या काळात गुरुकुल पासून ऑनलाईन पर्यंत भारतीय शास्त्रीय संगीताने केलेला प्रवास येत्या काही दशकात आणखी कोणत्या तरी शिक्षा पद्धतीत रूपांतरित किंवा परिवर्तित होऊन याच प्रकारे भारतीय शास्त्रीय संगीताची उत्तरोत्तर प्रसिद्धी, प्रगती आणि प्रचार होईल यात शंका नाही.

संदर्भ ग्रंथ

- [1] देशपांडे पं. स. भ., 'संगीत अलंकार', प्रकाशन - अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडळ प्रकाशन - प्रथम संस्करण - २००७ - मिरज.
- [2] शुक्ल डॉ गौरव (संपादक) ' संगीत मंजरी ' श्री विनायक पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण -२०२० आगरा
- [3] विडकर डॉ सुचेता, ' संगीत शास्त्र विज्ञान भाग-२ ' संस्कार प्रकाशन, प्रथम संस्करण २०१३, मुंबई.
- [4] संगीत कला विहार - अ.भा.गा.म. मंडळ मिरज
- [5] संगीत मासिक - हाथरस, - संपादक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
- [6] ह. ना. जगताप 'प्रगत शैक्षणिक तंत्रविज्ञान आणि माहिती तंत्रविज्ञान " नित्यनूतन प्रकाशन, (2007) पुणे.
- [7] <http://ignca.gov.in/divisionss/kaldarsana/seminars-conferences-workshops/>
- [8] <http://www.iksv.ac.in/indian-music-and-spiritualism>



NEBULA
AN INDEXED, REFEREED &
PEER REVIEWED JOURNAL



ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021

Organized by



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)

In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
DR. MANORAMA & PROF. HARIBHAU SHANKARRAO PUNDKAR
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

Special Issue on 30th September, 2021

www.ycjournal.net



63. **MAIDAM. CHAITHANYA BHIAGATH**
Full Time Ph.D. Research Scholar,
Alagappa University,
DR.R. SENTHIL KUMARAN
Director, Directorate of Physical Education
Alagappa University
EFFECT OF YOGIC PRACTICES ON HUMAN VALUES OF YOUNG YOUTH 230
64. **DIANESH RAM SINHA**
Research Scholar, Dr.C.V. Raman University
Kota Bilaspur Chhattisgarh
sinhadhanesh32@gmail.com
VALUES OF LIFE IN THE NOVELS OF AMITAV GHOSH 233
65. **DR. SEEMA MADHUKAR KALE**
Arts College Malkapur, Akola
kaleseema092@gmail.com
ROLE OF INFORMATION COMMUNICATION TECHNOLOGY IN LIBRARARY 236
66. **DR. SWATI S. SHAMBHARKAR (TUNKI)**
Librarian, Dr. L D Balkhande College of Arts & Commerce, Pauni, Dist- Bhandara
USE OF INTERNET FOR VARIOUS LIBRARY OPERATIONS AND SERVICES 238
67. **DR.A. HAZEL VERBINA**
Assistant professor of English, Dr.G.R. Damodaran College of Science, Coimbatore
verbinahazel@gmail.com
HUMAN VALUES AND ITS ROLE IN AFRICAN LITERATURE 241
68. **DR. AJAY G. MURKUTE**
Assistant Professor, & HOD in English
R.D. Arts & Comm. College Mulchera Dist Gadchiroli
ajaygajananmurkute@gmail.com
TEACHING AND LEARNING ENGLISH AS A SECOND LANGUAGE 244
69. **DR. AMANPREET KAUR KANG**
Assitant Professor Music (vocal)
G.G.S Khalsa College for women jhar Sahib Ludhiana
ENHANCEMENT OF MORAL VALUES THRU BOLLYWOOD MUSIC 247
70. **DR. ANJALI R. WATH**
Takshashila Mahavidyalya, Amravati
ROLE OF LIFE VALUES IN CHANGING SOCIETY AND ITS RELEVANCE OF TODAY 250
71. **DR. D.B. INGOLE**
Assistant Prof. Govt. College of Education, Bhandara
SOCIAL INCLUSION EFFORTS IN INDIAN SOCIETY, CHALLENGES AND VALUES 253
72. **DR. ELISHA KOLLURI**
Assistant Professor, NSR College of Education, Jambagh, Hyderabad, Telangana State.
elishakolluri.hyd@gmail.com
IMBIBING VALUES OF TEACHING – LEARNING PEDAGOGY OF SOCIAL SCIENCES 257
73. **DR. JAWALE DNYANESHWAR VINAYAKRAO**
Assistant Professor, Department of Commerce
Deogiri College, Aurangabad
dnyaneshwar.jawale289@gmail.com
PROF.JAWALE VARSHA VINAYAKRAO
Research Student, Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded
varsha.jawale123@gmail.com
NEED AND IMPORTANCE OF HUMAN VALUES IN TODAY'S SOCIETY 261
74. **DR. MONALI MASIH**
Assist. Professor, Dayanand Arya KanyaMahavidyalaya, Jaripatka, Nagpur
monalimasih@gmail.com
BENEFITS OF HUMAN VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM 264

Dr. Sanjay Vitte
Dr. Ganesh Khandare
Asst. Prof. Rajiv Tayade
Asst. Prof. Dnyaneshwar Gatkar
Asst. Prof. Shrikant Khadase
Asst. Prof. Piyush Dhale
Asst. Prof. Ganesh Surjuse
Asst. Prof. Revan Hololi
Asst. Prof. Vilas Pundkar
Asst. Prof. Gajanan Tayade
Asst. Prof. Meghraj Gadge
Asst. Prof. Rahul Ghuge
Asst. Prof. Sachin Telkhade

CO-ORDINATION & PUBLICITY COMMITTEE

Asst. Prof. Alhad Bhawsar
Dr. Sunil Patake
Asst. Prof. Purushottam Bathe
Dr. Seema Kale
Dr. Dilip Suryavanshi
Dr. Anuprita Mapari
Asst. Prof. Vandana Deshmukh
Jayshri Chaturkar
Dr. Pradip Taktode



DR. SEEMA MADHUKAR
KALE

Arts College Malkapur,
Akola
kaleseema092@gmail.co
m

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM
On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA
ROLE OF INFORMATION COMMUNICATION TECHNOLOGY IN LIBRARAY

ABSTRACT

Information communication technology is the combination of science & technology & practice of transmitting information. In a specific sense ICT means communication of information through technology, in which information is transmitted through electronic gadgets & signals. In this process, the information such as spoken word, photographs, live sense & sounds is first converted into signals & then transmitted through electronic links. The library adopted technological change into three stages. In the stage, technology is used to do the something, but more quickly than before i.e. automated housekeeping operation. In the second stage, technology used for new application & to do new thing e.g. online catalogues networking etc. The worldwide libraries made their catalogues available online which have online public access catalogues generally available free of cost are useful for finding books not available locally to identify & select books for local acquisition, bibliographic data verification & to search holding of periodical & monographs. Information and communication technology (ICT) play an important role in enhancing efficiency in development of library service. ICT is changing the work of libraries and information centers. More than over the libraries of India need this technology. An increased number of users a greater demand for library materials an increased amount of material being published new electronic formats and sources and the development of new and cheaper computers are some of the reasons for the growing need for ICT in India. Librarians, library patrons and supporters, and above all must help develop ICT based libraries to meet the changing demands of the users.

Introduction :

Information communication technology is the combination of science & technology & Practice of transmitting information. In a specific sense, ICT means communication of information through technology, in which information is transmitted through electronic gadgets & signals. In this process, the information such as spoken word, photographs, live sense & sounds is first converted into signals & then transmitted through electronic links. The processing of ICT involves sending receiving & processing information in electronic form. ICT permits the library environment, it underpins the success of modern era & it provide college with efficient infrastructure libraries must be able to benefit from technological development to be able to be able to do so, librarian have to be educated with hand with ICT background, ICT development lead to change in library works ICT plays an important role as link between uses & librarian ICT contributes to

sustainable growth of library & their role in the shift toward knowledge based societies.

Role of ICT In Library :

New technology have always been of interest for libraries, both for the potential of increasing the quality of service & for improving efficiency of operations. Libraries are the depositors of diverse forms of knowledge.

The library adopted technological change into three stages. In the stage, technology is used to do the something, but more quickly than before i.e. automated housekeeping operation. In the second stage, technology used for new application & to do new thing e.g. online catalogues networking etc. In the stage three, technology is used in ways that careates fundamental changes within libraries. Now, libraries are moving towards this stage which pictures are virtual end of the library where user's information need are satisfied entirely by electronic information available in homes of offices.

Advantages of ICT for Libraries :

The worldwide libraries made their catalogues available online which have online public access catalogues generally available free of cost are useful for finding books not available locally to identify & select books for local acquisition, bibliographic data verification & to search holding of periodical & monographs. These can be accessed through telnet, gopher & the worldwide web. Many OPACs have full text databases, libraries can use these databases to queries form patrons with the emergence of ICT the areas library are expanded world. The available information present in the library can be feed to homepage & made available to users anywhere.

ICT has provided new modes of storing & communicating information. ICT brought many services to library to speed up their activities. It helps to remove barriers of communication, distance & time. The advances in technology will continue to improve the effectiveness of libraries. It help to transfer data through communication network like internet anywhere.

Library Services Through ICT :

1) CD ROM Searching :

The CD-ROMs coming along with books are assigned accession numbers and are kept at the computer section to be issued to the users to get information whenever needed. Library has also subscribed to CD-ROM database provides for online access.

2) Internet Access :

The use of the internet around the world has been growing rapidly over the last decade. Libraries provide free or controlled access to internet and email. Depending upon the availability users can be terminal are provided in the library that can be used for internet access and email etc.

3) On-Line Information Service :

Online information services are anticipatory or responsive. Both these services promote the use of library materials, make available library materials, make available materials to users and thus meet user requirements. The various devices include Newspaper Clippings, Abstracting/Indexing Services, Current awareness services, translation services, referral services, photocopying services and computerized services.

4) On-Line Networking :

Networking is one of the most effective ways of servicing users needs comprehensively. Networked access to databases would help to get newly published information to library users.

5) Photocopying :

The technology of reprography made a big impact on the document delivery system. Most of the research libraries have reprographic machines and provide photocopy of any document on demand.

6) News Clipping Scanning Services :

Newspaper constitute an important source of information as they contain the latest information in the form of news with, often daily, updating, print media is useful for research needs but many organization and individuals are turning to ware as online newspaper clipping services and some are organization do this by their library.

7) On-Line Reservation Service :

The online reservation allows you to reserve books and journals which are on order, being processed by the library or on loan to another reader. User can place a reservation at the issue or information support dest using the request option on the on-line catalogue.

8) Database Searching Service :

Through this service, we regularly provide the users with the exact information they need, depending on their interest profile, from our collection of major national and international databases (retrospective and current)

Conclusion :

Information and communication technology (ICT) play an important role in enhancing efficiency in development of library service. ICT is changing the work of libraries and information centers. More than over the libraries of India need this technology. An increased number of users a greater demand for library materials an increased amount of material being published new electronic formats and sources and the development of new and cheaper computers are some of the reasons for the growing need for ICT in India. Librarians, library patrons and supporters, and above all, must help develop ICT based libraries to meet the changing demands of the users.

References :

1. Gopal Krishna, 2003, Technological future of library and information science, Delhi.
2. Deshmukh, Shrikant, 2008, impact of ICT on library services, III conference of VLA state level seminar on LIBRARIAN & ICT, Shegaon.
3. Das, S. R. Manual of library & information, New Delhi 2004.
4. Vinitha, K., 2006, impact of ICT on library and its services, DRTC-ICT conference on Digital learning environment.
5. Kour, Shamdip, 2010, Users training in ICT based services, Indian journal of information library and society, vol. 23.

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183 JOURNAL DOI 10.22183/RN IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021
Organized by



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)

In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
DR. MANORAMA & PROF. HARI BHAU SHANKARRAO PUNDKAR
ARTS, COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

Special Issue on 30th September, 2021
www.ycjournal.net

63. MAIDAM. CHAITHANYA BHAGATH
Full Time Ph.D. Research Scholar,
Alagappa University,
DR.R. SENTHIL KUMARAN
Director, Directorate of Physical Education
Alagappa University
64. DHANESHI RAM SINHA
Research Scholar, Dr.C.V. Raman University
Kota Bilaspur Chhattisgarh
sinhadhanesh32@gmail.com
65. DR. SEEMA MADHUKAR KALE
Arts College Malkapur, Akola
kaleseema092@gmail.com
66. DR. SWATI S. SHAMBHARKAR
(TUNKI)
Librarian, Dr. L D Balkhande College of Arts &
Commerce, Pauni, Dist- Bhandara
67. DR.A. HAZEL VERBINA
Assistant professor of English, Dr.G.R.
Damodaran College of Science, Coimbatore
verbinahazel@gmail.com
68. DR. AJAY G. MURKUTE
Assistant Professor, & HOD in English
R.D. Arts & Comm. College Mulchera Dist
Gadchiroli
ajaygajananmurkute@gmail.com
69. DR. AMANPREET KAUR KANG
Assitant Professor Music (vocal)
G.G.S Khalsa College for women jhar Sahib
Ludhiana
70. DR. ANJALI R. WATH
Takshashila Mahavidyalya, Amravati
71. DR. D.B. INGOLE
Assistant Prof. Govt: College of Education,
Bhandara
72. DR. ELISHA KOLLURI
Assistant Professor, NSR College of Education,
Jambagh, Hyderabad, Telangana State.
elishakolluri.hyd@gmail.com
73. DR. JAWALE DNYANESHWAR VINAYAKRAO
Assistant Professor, Department of Commerce
Deogiri College, Aurangabad
dnyaneshwar.jawale289@gmail.com
PROF.JAWALE VARSHA VINAYAKRAO
Research Student, Swami Ramanand Teerth
Marathwada University, Nanded
varsha.jawale123@gmail.com
74. DR. MONALI MASIII
Assist. Professor, Dayanand Arya
KanyaMahavidyalaya, Jaripatka, Nagpur
monalimash@gmail.com
- EFFECT OF YOGIC PRACTICES ON
HUMAN VALUES OF YOUNG YOUTH 230
- VALUES OF LIFE IN THE NOVELS OF
AMITAV GHOSH 233
- ROLE OF INFORMATION
COMMUNICATION TECHNOLOGY IN
LIBRARY 236
- USE OF INTERNET FOR VARIOUS
LIBRARY OPERATIONS AND SERVICES 238
- HUMAN VALUES AND ITS ROLE IN
AFRICAN LITERATURE 241
- TEACHING AND LEARNING ENGLISH
AS A SECOND LANGUAGE 244
- ENHANCEMENT OF MORAL VALUES
THRU BOLLYWOOD MUSIC 247
- ROLE OF LIFE VALUES IN CHANGING
SOCIETY AND ITS RELEVANCE OF
TODAY 250
- SOCIAL INCLUSION EFFORTS IN
INDIAN SOCIETY, CHALLENGES AND
VALUES 253
- IMBIBING VALUES OF TEACHING -
LEARNING PEDAGOGY OF SOCIAL
SCIENCES 257
- NEED AND IMPORTANCE OF HUMAN
VALUES IN TODAY'S SOCIETY 261
- BENEFITS OF HUMAN VALUES IN
CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM 264



DR. SEEMA MADHUKAR
KALE

Arts College Malkapur,
Akola
kaleseema092@gmail.com

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA
ROLE OF INFORMATION COMMUNICATION TECHNOLOGY IN LIBRARAY

ABSTRACT

Information communication technology is the combination of science & technology & practice of transmitting information. In a specific sense ICT means communication of information through technology, in which information is transmitted through electronic gadgets & signals. In this process, the information such as spoken word, photographs, live sense & sounds is first converted into signals & then transmitted through electronic links. The library adopted technological change into three stages. In the stage, technology is used to do the something, but more quickly than before i.e. automated housekeeping operation. In the second stage, technology used for new application & to do new thing e.g. online catalogues networking etc. The worldwide libraries made their catalogues available online which have online public access catalogues generally available free of cost are useful for finding books not available locally to identify & select books for local acquisition, bibliographic data verification & to search holding of periodical & monographs. Information and communication technology (ICT) play an important role in enhancing efficiency in development of library service. ICT is changing the work of libraries and information centers. More than over the libraries of India need this technology. An increased number of users a greater demand for library materials an increased amount of material being published new electronic formats and sources and the development of new and cheaper computers are some of the reasons for the growing need for ICT in India. Librarians, library patrons and supporters, and above all must help develop ICT based libraries to meet the changing demands of the users.

Introduction :

Information communication technology is the combination of science & technology & Practice of transmitting information. In a specific sense, ICT means communication of information through technology, in which information is transmitted through electronic gadgets & signals. In this process, the information such as spoken word, photographs, live sense & sounds is first converted into signals & then transmitted through electronic links. The processing of ICT involves sending receiving & processing information in electronic form. ICT permits the library environment, it underpins the success of modern era & it provide college with efficient infrastructure libraries must be able to benefit from technological development to be able to be able to do so, librarian have to be educated with hand with ICT background, ICT development lead to change in library works ICT plays an important role as link between uses & librarian ICT contributes to

sustainable growth of library & their role in the shift toward knowledge based societies.

Role of ICT In Library :

New technology have always been of interest for libraries, both for the potential of increasing the quality of service & for improving efficiency of operations. Libraries are the depositors of diverse forms of knowledge.

The library adopted technological change into three stages. In the stage, technology is used to do the something, but more quickly than before i.e. automated housekeeping operation. In the second stage, technology used for new application & to do new thing e.g. online catalogues networking etc. In the stage three, technology is used in ways that careates fundamental changes within libraries. Now, libraries are moving towards this stage which pictures are virtual end of the library where user's information need are satisfied entirely by electronic information available in homes of offices.

Advantages of ICT for Libraries :

The worldwide libraries made their catalogues available online which have online public access catalogues generally available free of cost are useful for finding books not available locally to identify & select books for local acquisition, bibliographic data verification & to search holding of periodical & monographs. These can be accessed through telnet, gopher & the worldwide web. Many OPACs have full text databases, libraries can use these databases to queries form patrons with the emergence of ICT the areas library are expanded world. The available information present in the library can be feed to homepage & made available to users anywhere.

ICT has provided new modes of storing & communicating information. ICT brought many services to library to speed up their activities. It helps to remove barriers of communication, distance & time. The advances in technology will continue to improve the effectiveness of libraries. It help to transfer data through communication network like internet anywhere.

Library Services Through ICT :

1) CD ROM Searching :

The CD-ROMs coming along with books are assigned accession numbers and are kept at the computer section to be issued to the users to get information whenever needed. Library has also subscribed to CD-ROM database provides for online access.

2) Internet Access :

The use of the internet around the world has been growing rapidly over the last decade. Libraries provide free or controlled access to internet and email. Depending upon the availability users can be terminal are provided in the library that can be used for internet access and email etc.

3) On-Line Information Service :

Online information services are anticipatory or responsive. Both these services promote the use of library materials, make available library materials, make available materials to users and thus meet user requirements. The various devices include Newspaper Clippings, Abstracting/Indexing Services, Current awareness services, translation services, referral services, photocopying services and computerized services.

4) On-Line Networking :

Networking is one of the most effective ways of servicing users needs comprehensively. Networked access to databases would help to get newly published information to library users.

5) Photocopying :

The technology of reprography made a big imp the document delivery system. Most of the re libraries have reprographic machines and p photocopy of any document on demand.

6) News Clipping Scanning Services :

Newspaper constitute an important sour information as they contain the latest informat the form of news with, often daily, updating, media is useful for research needs but organization and individuals are turning to w online newspaper clipping services and som organization do this by their library.

7) On-Line Reservation Service :

The online reservation allows you to reserve l and journals which are on order, being process the library or on loan to another reader. User can a reservation at the issue or information support using the request option on the on-line catalogue.

8) Database Searching Service :

Through this service, we regularly provide the t with the exact information they need, dependin their interest profile, from our collection of n national and international databases (retrospe and current)

Conclusion :

Information and communication technology (I play an important role in enhancing efficien development of library service. ICT is changin work of libraries and information centers. More t over the libraries of India need this technology. increased number of users a greater demand for libr materials an increased amount of material be published new electronic formats and sources and development of new and cheaper computers are sc of the reasons for the growing need for ICT in In Librarians, library patrons and supporters, and ab all, must help develop ICT based libraries to meet changing demands of the users.

References :

1. Gopal Krishna, 2003, Technological future library and information science, Delhi.
2. Deshmukh, Shrikant, 2008, impact of ICT library services, III conference of VLA state le seminar on LIBRARIAN & ICT, Shegaon.
3. Das, S. R. Manual of library & information, Ne Delhi 2004.
4. Vinitha, K., 2006, impact of ICT on library and services, DRTC-ICT conference on Digital learni environment.
5. Kour, Shamdip, 2010, Users training in ICT basi services, Indian journal of information library ar society, vol. 23.

Kala 21-22



North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

ISSN: 2454-9827

Vol. 7, Issue-9

September -2021

IRJIF I.F. : 5.010

Index Copernicus Value: 57.07

DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2021.00009.9

Thomson Reuters ID: S-8304-2016

A Peer Reviewed Refereed Journal

A STUDY OF STUDENTS SATISFACTION IN LIBRARY RESOURCES AND SERVICES: SPECIAL REFERENCE TO WESTERN VIDARBHA IN THE STATE OF MAHARASHTRA

*DR. SEEMA M. KALE

**Librarian Arts College Malkapur, Akola MS*

ABSTRACT

This research was carried out to examine the satisfaction of college students on available library resources and services in the college libraries of western vidarbha in the state of Maharashtra. The other objectives are to identify the frequency of usage of the library by college students, types of resources and services that they use mostly and their requirements and suggestions to overcome the hindrances while using library resources and services. The sample of the study consisted 200 of college students. 200 Questionnaires were distributed using stratified random sampling method. Data were analyzed using Statistical Package of Social sciences. Percentages and frequencies were used for interpreting data. Findings revealed that most of the students were satisfied with the available library sources and services. The respondents recommended enhancement the opportunity for remote access of available electronic resources subscribed by the college libraries. Furthermore, they suggested that the amount of books that can be borrowed by the students should be increased.

KEY-WORDS :- Satisfaction, Library Resources, Services

INTRODUCTION:

Affiliated colleges have become complex organizations in the field of higher education in the modern world. Therefore, higher education is one of the critical components of human development. College libraries are playing

a vital role in the research and development process. As the College library is the heart of the institution, there are three major user groups who use the library. They are undergraduate students, postgraduate students and university staff. Among them postgraduate students are a very important user group when compared with other types of users. A large amount of library resources and services are offered to postgraduate users by the libraries. Institutional libraries invest a large sum of money every fiscal year on the purchasing, subscription, processing and storage of information resources and services for the fulfillment of user needs. These services and sources are allowed to be used by the institution also. But institution libraries should make sure that their information sources and services are well utilized for the educational achievements of the postgraduates as well as undergraduates and university staff members. Furthermore, staff of the institution libraries should have a clear idea about the satisfaction of the services and sources offered for the college students. Although a number of studies have been conducted to find out the satisfaction of institutional library services and sources no adequate studies have been conducted on college satisfaction of the library services and sources. Therefore, this research was focused on finding out the College students satisfaction of library resources and services in respective area.

OBJECTIVES

1. To find out the college students satisfaction of the available resources and services in the institutional libraries in western vidarbha in the state of Maharashtra.
2. To determine the extent to which college students use the libraries.
3. To find out what kind of resources and services they use mostly.
4. To find out the requirements and make suggestions to overcome the hindrances in the using library resources and services by the college students.

METHODOLOGY:

To find out the satisfaction of available resources and services in college students for the western vidarbha affiliated college libraries, a paper based questionnaire was designed. Select the 200 college students for this study for the simple random sampling technique. The final questionnaire was designed and collect the respective data for the college students in respective geographical area. The descriptive research approach was used for the study. Out of 200 copies of the questionnaire sent out 200 were filled and returned successfully. The response rate was 100%.

LITERATURE REVIEW

Padmavathi, N., Ningaiah A. & KavitaBiradar have conducted a study on the use and user satisfaction of library resources and services by PG students and research scholars in Bangalore University library. According to the

results revealed by the study most of the respondents are highly satisfied with the availability of information sources and services offered by the library.

Jessica, Kayongo and Clarene Helm have conducted a survey on the usage of library services and sources of the graduate students. Results have revealed that students are highly satisfied with the interlibrary loan service, electronic resources and library opening hours.

Aamir, Rasul and Diljit Singh have conducted a study on the role of academic libraries in facilitating postgraduate students' research. Results of the study reveals that, majority of the respondents are highly satisfied with the available Wi-Fi facility and its speed. But respondents are not satisfied mostly with the document delivery service.

Omontunde, Oluwatobi, Maria, Ehioghae, Aluko-Arowolo TK and Agoola Olusegun Onasote According to the results, majority of the respondent's level of satisfaction with the use of library information sources is below average. It reveals that, most of the respondents are not satisfied with the available library resources for their usage.

Colm, Beard and David, Bawden carried out a study to examine the library information issues affecting graduate students. Students have strong requirements for silent study space, digital resources and IT support etc.

Onuoha, U. D. Ikonne, C. N. and Madukoma, E. have conducted a study on perceived impact of library use on the research productivity of postgraduate students at Babcock University, Nigeria. The results showed that library services are of utmost importance to the research productivity of postgraduate students as all the respondents were able to have at least one publication within the two years were using the library. Printed books were ranked as the most important library resources for the research.

Williams E. Nwagwu and Judd-Leonard Okafor have done a survey on diffusion of eBooks among postgraduate students of the University of Ibadan, Nigeria. They have conducted the survey based on the Arts and Technology faculties. According to the results, there are significant differences between Arts and Technology students' use of eBooks with respect to cost, ease of use and other aspects.

Muhammad Waqas Javed and Rubina Bhatti have done a research to find out the information usage pattern of postgraduate students using in Nishter Medical College in Pakistan. The findings show that the majority of postgraduate students always use general books and were strongly satisfied with the available resources. Furthermore, knowledge of the different databases supplied by the library and the usage of those databases was unsatisfactory.

descriptive statistics was employed to analyze the data using the Statistical Package for Social Sciences.

Table No. 1.1 Reason of Using Books for students

Reason	Very Useful	Some useful	Not Useful	Title
%	61.00%	22.00%	17.00%	100%

Table No. 1.2 Usefulness of Print Journal

Usefulness	Very Useful	Some useful	Not Useful	Title
%	32.00	40.00	22.00	100

Table no. 1.3 Using Electronic Resources

Using	Very Useful	Some useful	Not Useful	Title
%	64.00	26.00	00	100%

Table no. 1.4 Reason of Coming in Library

Reason	Very Important	Important	Not Important	Title
To borrow Books	55.00%	30.00%	04.00%	100%
To read my own notes	24.00%	70.00%	06.00%	100%
To refer Thesis	37.00%	60.00%	03.00%	100%
To use wi-fi Facilities	13.00%	80.00%	07.00%	100%
To use library Resources	23.00%	70.00%	07.00%	100%
To use computer Lab	8.00%	90.00%	02.00%	100%
To discuss with colleagues	10.00%	85.00%	05.00%	100%

FINDINGS

- According to the results respondents use more books than any other library resources. 61% of respondents accepted that books are very useful while 22% respondents say it is somewhat useful for information fulfillments. The overall results of the usefulness of books represented 83% of the responses.
- Out of the total respondents 32% students accept that print journals are very useful and only respondents say that print journals are not so much important for the fulfillment of their information.
- 64% respondents say that they prefer to use electronic resources and most of the respondents mentioned that they do not have remote access facility to access available library electronic resources.

Therefore, they have no opportunities to access electronic resources adequately, 26% of the post graduate students are coming to the library for the purpose of referring theses collection.

- According to overall results majority of the respondents come to the library to refer books, print journals and theses collection available in the library. Furthermore, the analyzed data revealed that printed books are still important to the university community even in the face of electronic resources

CONCLUSION:

Most of the respondents come to the library to refer books, print journals and theses collection. The most important reason for coming to the library is to borrow books. Users are highly satisfied with the infrastructure facilities available in their institutional libraries. Most of the respondents are not satisfied with opportunities for remote access for the available electronic resources, the conduct of library orientation programs, responses user queries, OPAC and Web OPAC services, scanning services, displaying new arrivals, amounts of books that can be borrowed etc. But, as for the overall result, the users are satisfied with the available resources and services provided by their libraries. Findings of the study shows that the academic libraries still need to improve their services in order to fully satisfy their students. Furthermore, if the library wants to retain the institutional students as an integral part of their user community the resources and services should be developed further.

BIBLIOGRAPHY:

1. Aamir, R., & Singh, D. (2010). The role of academic libraries in facilitating postgraduate students' research. *Malaysian Journal of Library & Information Science*.
2. <http://umepublication.um.edu.my/filebank/articles/2774/no.5.pdf>
3. Jessica, K., & Clarence, H. (2010). Graduate Students and the Library: A Survey of Research Practices and Library Use at the University of Notre Dame. *Reference & User Services Quarterly*.
4. https://www.jstor.org/stable/20865295?seq=1#page_scan_tab_content
5. Omotunde O, Maria E., Aluko-Arowolo T. K & Ayoola O. O., (2014). Utilization of library resources for effective research output among post graduate students in Adventist University of Africa. *Global Advanced Research Journal of Social Science*.
<http://garj.org/garjss/index.htm>
6. Muhammad W. J., & Rubina B. (2013). Information usage patterns of postgraduate students using in Nishtar Medical College in Pakistan. *Journal of Hospital Librarianship*.

ycjals sep 21-22



RESEARCH NEBULA
AN INDEXED, REFEREED &
PEER REVIEWED JOURNAL



ISSN 2277-8071

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

IMPACT FACTOR 7.399

ONE DAY

INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY E-CONFERENCE

On

BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM

30th September, 2021

Organized by



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA. (M.S.)

In Collaboration with



DEPARTMENT OF MARATHI & ENGLISH
DR. MANORAMA & PROF. HARIBHAU SHANKARRAO PUNDKAR ARTS,
COMMERCE & SCIENCE COLLEGE, BALAPUR, AKOLA (M.S.)

&



VIDARBHA SAHITYA SANGH, BRANCH AKOLA (M.S.)

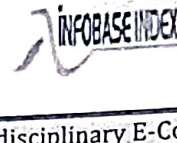
Special Issue on 30th September, 2021

www.ycjournal.net

unplash@fakurlan



	प्रा. ए. बी. भावसार संशोधक, साहाय्यक प्राध्यापक, डॉ. मनोरमा व प्रा. ह. शं. पुंडकर महाविद्यालय, बाळापूर		
135.	डॉ. शिरीष व्ही. कडु संगीत विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, अकोला प्रा. वंदना म. देशमुख संगीत विभाग कला महाविद्यालय, मलकापूर अकोला	मराठी संस्कृतीतील जीवनमूल्य रूजविण्यामध्ये संगीताची भूमिका	468
136.	DR SHRADDHA D. THORAT Shri Shivaji College, Akola	विज्ञाननिष्ठ दृष्टिकोन : एक अत्यावश्यक जीवनमूल्य	471
137.	प्रा. डॉ. प्रतिभा शंकर घाग- सोनी कस्तुरी शिक्षण संस्थेचे, कला वाणिज्य आणि विज्ञान महाविद्यालय, प्रतिमानगर, शिक्रापूर ता. शिरूर	संत रामदास स्वामी यांच्या दासबोधातील मानवीमूल्ये	475
138.	HARIDAS AKHARE	संत तुकारामांचे समाजप्रबोधन	479
139.	डॉ. केशव के. गाडबैल मराठी विभागप्रमुखए श्रीमती केशरबाई लाहोटी महाविद्यालय, अमरावती.	साहित्यातील जीवनमूल्ये	481
140.	MS. RAJDEEP KAUR Research scholar Sant Baba Bhag Singh University, Jalandhar. DR. KULWINDER PAL SINGH MAHI Assistant Professor Sant Baba Bhag Singh University Jalandhar	EFFECTS OF FUNCTIONAL TRAINING ON PERFORMANCE AMONG FEMALE HANDBALL PLAYERS	483
141.	MOLLAH MUSTAFIZUR RAHMAN TGT(English) Sainik School Purulia	PARENTING AND THE NEW AGE VALUES: COMMITMENTS AND COMPROMISES	488
142.	DR. SOMNATH J. GHOTEKAR Assistant Professor, Dept. of English MVP Samaj's Arts, Sci. and Commerce College, Ozar (Mig), Dist. Nashik M.S.	VALUE EDUCATION THROUGH LITERATURE AND SOCIETY	490
143.	DR. SACHIN TELKHADE	POPULAR FICTION AND ITS POPULARITY	493
144.	प्रा.डॉ.सचिन सुरेशराव बंडगर सहा.प्राध्यापक-संगीत विभाग, मधुकरराव पवार कला महाविद्यालय मुर्तीजापुर जि.अकोला	भारतीय संगीत मे बिहार के विभिन्न स्थानों की गुरु-शिष्य परम्परा	496
145.	डॉ. सागर गवई स्व. भा. शि. कला, प्रा. ना. गा. विज्ञान व आ. गा. वाणिज्य महाविद्यालय सा. खेई	जागतिकीकरणाच्या पार्श्वभूमीवर मूल्यांची पडझड चित्रित करणारी लोकनाथ यशवंत यांची कविता	498
146.	PROF. SEEMA V. KALNE Asst. Proffesor Home Economics Department Vidarbha Mahavidyalaya Buldana	भारतीय सांस्कृतिक विकासाकरिता आदर्श जीवनमूल्यांची आवश्यकता	500
147.	डॉ. मृणाल प्रभाकरराव कडू जे.डी. पाटील सांगळुदकर महाविद्यालय, दर्यापूर	संगीत और रोग निवारण	503
148.	ASST. PROF.PRAVIN P. UGALE HOD, Department of English, Kala Mahavidyalaya Malkapur, Akola (M.S)	STRUGGLE FOR SURVIVAL IN BAPSI SIDHWA'S PAKISTANI BRIDE	505



ASST. PROF. PRAVIN P.
UGALE
HOD, Department of
English & Kala
Mahavidyalaya
Malkapur, Akola (M.S)

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM
On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA

STRUGGLE FOR SURVIVAL IN BAPSI SIDHWA'S PAKISTANI BRIDE

ABSTRACT

This paper focuses on the struggle of Zaitoon for survival and atrocities committed by patriarchian society. In the wake of Indian partition Zaitoon was saved by her adopted father Qusim and latter force to marry tribal and batter by her husband when she was pregnant. At last she decided to run away from her husband house. In her journey she was saved herself from vulture and tiger but raped by two men near river bridge. But hope for survival compelled her to fight with circumstances. It is the story of survival and struggle.

Keywords: Partition, Honour, Survival, Struggle, Human Values

The Present Paper is an attempt to present various aspect of Human Values in Novel 'Pakistani Bride'. Human Values are the pillars of society in which our moral behavior is dependent. Bapsi Sidhwa is an important writer in the literary word of Pakistan. She was voracious reader in her early life. In her interview to Jussawalla she says-
"From the age of eleven to eighteen, I read non-stop because I did not go to school, I had nothing else to do, no other form of entertainment to fill my life with, and a big slack was taken up by reading this did turn me, I now realize, into a writer..."

(Dawan page no. 11)

Her writing career began with writing of 'Pakistani Bride'. When she and her husband were in Northern Pakistan for honeymoon. There she heard the real-tragic story of a young Punjabi girl who was taken across the river Indus into totally brutal tribal region to be married to a Kohistani tribal. But girl ran away from her husband house. Her husband and his clansmen hunted her down and murdered her for the false honour of their tribal pride. After heard this horrified story, Sidhwa felt compelled to tell this story. First she thought of writing a short story but the nature of her experience was very intense and compelling her to produce a larger form of narrative and gres into her first novel 'The Bride' or 'The Pakistani Bride'. After writing this novel, the creative muse was aroused in Bapsi Sidhwa and she was not looking back. In 1970, Sidhwa received rejection from the publishers to publish her first novel "The Bride". She tried for seven years to published it. She wrote 'The Bride' first but due to rejection by publishers, she published "The Crow Eater" which is consider her first novel but she wrote

'The Bride' first and published after seven years persuasion.

Sidhwa wrote her first novel 'The Bride' which is based on a true story, narrated to her when she and her husband camped in the remotest regions of the Karakoram Mountains. They stayed at an Army camp where the colonel in charge, doctors and engineers narrated the story of a girl who was lived in a plains but taken across the Indus river to marry her nephew. After a month, the girl run away from the home to the remote area of the Karakoram, the world's most rugged mountains where girl survived for fourteen days. She instinctively found her way to Indus. But the who tribal clans and her husband hunting for her. It is intolerable insult for them to runaway one of the tribal's wife. The husband caught her near the river bridge. They cut her head and threw her into the Indus river. When Sidhwa heard this horrified story, she was not give it voice. First she thought to write short-story but the effect of this painful story compelled her to write novel. In the interview to Feroza Jussqawall Sidhwa explain that how the story of this unfortunate girl hunted her and compelled her to write.

"When I come back to Lohore, I felt I had to tell her story. I had not written before..... I had a compulsive to write the girl's story and the story of the tribal hidden away in this beautiful part of the world. I started writing short-story about this girl, without my real being aware of it, it was developing into long story. It was an obsession."

Bapsi Sidhwa fictionalized this story with her imaginative gift and made it more complex. She threw light on the tribal code of honour, harrassment of the

daily existence which made them so cruel and revengeful, struggle for existence, their brutality etc.

In this novel, Qasim goes to Jullundar, get a job as watchman at a bank and lives there happily for three years but the epidemic of small pox killed his daughter. In the wake of Partition violence, he killed one person and boards a train to Pakistan. Thousand of people sitting on the roof of the train, Sikandar and his wife Zohara with a baby on her lap and their little daughter Munni. The Train is ambushed near the border, Zohara and Sikandar were killed among thousand. Few of the lucky survivors were Qasim and Munni. Munni clings to his legs and said, "Abba, Abba, My Abba!" when Qasim heard such sound he lost his wit. Munni's appearance and sobs remind his of his own daughter Zaitoon who was lost long ago in small pox epidemic. But he suppressed his nostalgia and ready to kill her. He takes out his knife to cut her throat but she presses herself to him for protection. He looks at her as he finds his own daughter. He closes his knife. So he adopted her as his own daughter and says

"Munni, you are like the smooth, dark olive, the Zaitoon, that grows near our hills..... the name suits you.....I shall call you Zaitoon."

In Lahore, at a refugee camp Qasim makes friendship with Nikka Pehelwan who has come from Pannapur in Amritsar. Nikka's childless wife Miriam treats Zaitoon like a daughter. Where she passed class III but when she was eleven years old, Qasim stopped sending her to school. When Zaitoon was now sixteen years old and her father nearing fifty. He often talks about his past life in Kohistan. One day Qasim's cousin, Misri Khan visits him and agrees to his offer of Zaitoon's marriage to his tribal son Sakhi. Miriam makes objection that Qasim is selling Zaitoon for five hundred rupees, some measly maize and few goats. Miriam asks Qasim to marry his daughter to her husband Nikka if he sells daughter for rupees but Qasim replied

"Sister Miriam, it is not for the goats and maize, please believe me. It is my words- the words of Kohistani!"

These words sealed Zaitoon's fate. To see Zaitoon off, Nikka, Miriam and few neighbours go to the railway station where Miriam makes her last effort to stop Zaitoon

"You are ours. We'll marry you to a decent Punjabi who will understand your ways. Tell your father you don't want to marry a tribal. We'll help you."

But Zaitoon fascinated about Kohistani stories which she heard from childhood. She shyly says "I can not cross my father". Miriam's effort goes worthless. As soon as Qasim enters through the mountain, he feels very proud about his youthful days and in excitement he fires at an army truck. The driver and young mechanic Ashit Hussain release a spray of bullets to

fearing tribal attack. Zaitoon anyhow saves situation. They not only forgive them but also give a ride. When Ashiq sees Zaitoon he falls in love at first sight. When they meet major Mushtaq and his wife. They think "This girl had no more control over her destiny than a caged animal....."

Next morning Ashiq tries to convey her that the life of tribal community is not suited to her but the situation is going out of control. When Zaitoon reaches the mountain she sees there are only flat mud and she hits finally when she reaches her would-be husband's house, she sees children with red cheeks, not running and hair matted with dust. For dinner she gets flat maize bread and plain water. A cave is the place for their stay. At night she wakes up abruptly. Her sleep is disturbed by a nightmare and she hears the piercing wailing of jackals and the barking of the village dogs. She looks at her father with terror

"Abba, take me to the plains when you go. Please, don't leave me here. Take me with you".

Here Zaitoon wakes up from the fascinations of the Kohistani mountains which are spread in her heart from her father in her childhood. She doesn't want to marry a tribal man and can't live on dirty maize bread and water. She requests her father

"If I must marry, marry me to someone from the plains. That Javan at the camp, Abba. I think he likes me. I will die rather than live here."

But for the false pride of her father she has no option. On the wedding night her husband treats her as a slave or animal.

After marriage her husband heats her on the slightest pretext but she bears him like a beast of burden. Her husband Sakhi hits her on the shoulder and the face and shouting

"You are my women! I will teach you to obey me!"

She thinks that her father will take her to Lahore for her first childbirth.

One day when she was pregnant, she goes to the river and gives smiles and waves her hand towards the Army jeep. Sakhi hits hard on her spine and head and abuses her

"You whore, you dirty, black little bitch, waving at the pigs. Waving at that shit-eating swine. You wanted to stop and -----you, didn't you!"

Zaitoon cries for forgiveness, but he hits her brutally. Zaitoon is pregnant but her husband kicks her between the legs repeatedly until she faints and he himself gets exhausted. He lifts her body across his shoulders and carries her to home. This incident compelled Zaitoon to run away from her house for the hope of survival. For two days she stays safely to give herself a chance to heal. The news is spread among

tribal man. The honour of the whole clan is at stake. She must be found and killed for the honour of whole clan. She has picked the most difficult rout because she knows the easier passages will be the first to searched by the tribal. On the eighth day in the morning a vultures tries to attack her but she fortunately she saves herself. In the afternoon she comes near the snow leopard but luckily it is shot down by the hunter. On the nineth day she reaches the beach of the river where she is raped by two tribal for two hours. When she regains consciousness , she has no power in her body but she forces herself to move forward until she reaches the bridge in the evening. Her husband's brother Yunus receives information about her presence and he, Sakhi and their clan rush toward the area where Zaitoon is struggling for her life. Next morning they reach that place but Mahor Mushtaq disgust that Zaitoon is dead.

Thus Sidhwa presents the story of atrocities on women and struggle for survival.

Bibliography:

Primary Sources:

1. Sidhwa, Bapsi, "Pakistani Bride", India: Penguin Books Ltd.

Secondary Sources:

2. Shaikh Firoz A., "Partition A Human Tragedy: A Critical study of Novels on Partition of Indian Subcontinent
3. Ahmad, I. (2013). The Conquered Land: A Feministic Reading of Bapsi Sidhwa's The Pakistani Bride. The Criterion- An International Journal in English. Vol 4(3)
4. Dhawan, R. K.(Ed.) (1987). Commonwealth Fiction. New Delhi: Classical

	मलकापूर, अकोला.		
102.	प्रा.डॉ. प्रिती मंगेश कुलकर्णी श्रीमती सु.रा. मोहता महिला महाविद्यालय खामगाव जि बुलडाणा महाराष्ट्र	वसुधैव कुटुम्बकम्	350
103.	डॉ. दीपाली प्रल्हादराव गावंडे सा. प्राध्यापक, कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला dipali.nagpure1976@gmail.com	तुकाराम महाराज अभंग व जीवनमूल्ये	355
104.	डॉ.कविता मुरारीलाल राजाभोज मराठी विभाग प्रमुख, एस.एस.ग्लर्स कॉलेज, गोंदिया (महाराष्ट्र)अंसारी वार्ड, विठ्ठल नगर, गोंदिया	समकालीन मुस्लिम मराठी काव्यातील जीवनमूल्य	358
105.	डॉ. बाळकृष्ण लळीत मराठी विभाग, चां.ता. बोरा महाविद्यालय, शिरूर जि. पुणे.	लोकजीवनातील सांस्कृतिक जीवनमूल्ये व साहित्य-एक अनुबंध	362
106.	डॉ.भागवत लहुबुवा ढोले डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ औरंगाबाद	महाराष्ट्रातील वारकरी भजन परंपरा	369
107.	डॉ. योगिता भगीरथ बारी सहाय्यक प्राध्यापक, बापूसाहेब डी डी विसपुते शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय धुळे	समकालीन समाजव्यवस्थेत राज्यघटनेतील मूल्यांची उपयोगिता	372
108.	डॉ. राजेश सधाकर डोंगरे	सामाजिक विकास में जीवनमूल्यो कि	374



डॉ. दीपाली प्रल्हादराव गावंडे

सा. प्राध्यापक
कला महाविद्यालय
मलकापूर, अकोला
dpali.nagpure1976@gmail.com

One Day International Interdisciplinary E-Conference On
BENEFITS OF LIFE VALUES IN CONTEMPORARY SOCIAL SYSTEM
On 30th September, 2021 @

K.M. MALKAPUR, D.M & P.H.S. P. COLLEGE, BALAPUR, & V. S. S., BRANCH AKOLA

तुकाराम महाराज अभंग व जीवनमूल्ये

ABSTRACT

मानव जन्म हा खूप प्रयत्नांनी मिळतो. असे म्हटले जाते. तसेच मानवाला निसर्गाने एक खूप मोठे व महत्वाचे वरदान दिले आहे. ते म्हणजे बुद्धी, बुद्धीच्या आधारे माणूस विचार करू शकतो. या विचार करण्याच्या प्रक्रियेमुळे त्याला काय चांगले काय वाईट यातील फरक समजू शकतो. आणि त्यामुळेच मानवाकडून चांगल्या कामाची अपेक्षा केली जाते. त्याने मनुष्यधर्म सार्थकी लावावा असे म्हटले जाते. त्यासाठी त्याने आपल्या जीवनाची काही जीवनमूल्ये लक्षात घ्यायला हवीत. जीवनमूल्ये त्यांनी अंगीकारली पाहिजे आणि कुठल्याही परिस्थितीमध्ये या जीवन मूल्यांशी तडजोड करता कामा नये. जसे जीवनाचे ध्येय असते तसेच मूल्यही आहे. असे काहीतरी मुले घेऊन माणूस जगतो त्यासाठी सदैव धडपडत असतो व काही झाले तरी तो आपल्या जीवनमूल्यां पासून लांब जात नाही. ही जीवनमूल्ये व्यक्तीगणिक वेगवेगळी असतात. व्यक्तीच्या प्रकृतीनुसार, गुणधर्मानुसार व स्वभावानुसार परिस्थितीनुसार जीवनमूल्ये ही वेगवेगळी असतात. असे असले तरीही काही जीवनमूल्ये ही मानव धर्मासाठी शाश्वत आहे, म्हणजे माणूस म्हटला की त्याच्या ठिकाणी ती मुले असतेच. जसे प्रेम, आनंद, दया, समाधान, शांती व विवेक इत्यादी ही होय. संत तुकाराम महाराज आपल्या अभंगगाथेत अशा कितीतरी जीवनमूल्यांचा विचार करतात. नव्हे त्यांच्या अभंग गाथेचा आधारच जीवनमूल्ये आहेत. माणसाने कोणत्या गोष्टीचा त्याग करावा, कोणती जीवनमूल्ये अंगी बाणावित याचा सतत अभ्यास ते आपल्या प्रत्येक अभंगात करतात. आई-वडिलांचा आदर करणे, चित्त शुद्ध प्रसन्न ठेवणे, प्रयत्न करणे अभ्यास करणे, त्यात सातत्य ठेवणे, मेहनत करणे, नैतिक मार्गाने धन जोडावे, देश, अहंकार, लोभ, मद, मत्सर यासारख्या गोष्टी दूर साराव्या, पवित्र निर्मळ प्रेम करावे, त्याग करावा, गरजूंना मदत करणे म्हणजेच स्वतःच्या ठिकाणी भूतदया दृष्टीकोन ठेवणे अशा कितीतरी जीवनमूल्यांचा विवेचन अतिशय मार्मिक, दैनंदिन जीवनातील उदाहरणे देऊन ते करतात तुकाराम महाराजांचा सांगितलेल्या या जीवनमूल्यांमुळेच चांगले मानवी जीवन, चांगले कौटुंबिक जीवन, चांगला समाज व शेवटी चांगले राष्ट्र निर्माण झाल्याशिवाय राहणार नाही. आणि याचाच पाठपुरावा संत तुकाराम आपल्या अभंगगाथेत करतात.

तावना:-

मानव जन्म हा खूप प्रयत्नांनी मिळतो. असे म्हटले जाते. तसेच मानवाला निसर्गाने एक खूप मोठे व महत्वाचे वरदान दिले आहे. ते म्हणजे बुद्धी, बुद्धीच्या आधारे माणूस विचार करू शकतो. या विचार करण्याच्या प्रक्रियेमुळे त्याला काय चांगले काय वाईट यातील फरक समजू शकतो. आणि त्यामुळेच मानवाकडून चांगल्या कामाची अपेक्षा केली जाते. त्याने मनुष्यधर्म सार्थकी लावावा असे म्हटले जाते. त्यासाठी त्याने आपल्या जीवनाची काही जीवनमूल्ये लक्षात घ्यायला हवीत.

जीवनमूल्ये त्यांनी अंगीकारली पाहिजे आणि कुठल्या परिस्थितीमध्ये या जीवन मूल्यांशी तडजोड करता कामा नये. जसे जीवनाचे ध्येय असते तसेच मूल्यही आहे. असे काहीतरी मुले घेऊन माणूस जगतो त्यासाठी सदैव धडपडत असतो व काही झाले तरी तो आपल्या जीवनमूल्यां पासून लांब जात नाही. ही जीवनमूल्ये व्यक्तीगणिक वेगवेगळी असतात. व्यक्तीच्या प्रकृतीनुसार, गुणधर्मानुसार व स्वभावानुसार परिस्थितीनुसार जीवनमूल्ये ही वेगवेगळी असतात. असे असले तरीही व जीवनमूल्ये ही मानव धर्मासाठी शाश्वत आहे, म्हणजे मा

म्हटला की त्याच्या ठिकाणी ती गुले असतेच. जसे प्रेम,आनंद,दया,समाधान,शांती व विवेक इत्यादी ही होय.

विवेचन :-

जीवनमूल्ये मानवाच्या ठिकाणी असावीच लागतात. तसेच काही जीवनमूल्ये त्यांच्या कामाच्या स्वरूपावर परिस्थितीवर अवलंबून असतात. उदाहरणार्थ शिक्षक म्हटले की त्याने विद्यार्थ्यांना रोजच शिकवणे हे जीवनमूल्ये त्याच्या ठिकाणी आवश्यक आहे, किंवा डॉक्टर म्हटले की निस्वार्थ सेवा हे मूल्य असलेच पाहिजे. म्हणजेच मानवाला आपला विकास प्रगती व शेवटच्या जीवनाच्या टप्प्यात समाधान हवे असे तर मनुष्याने चांगली मूलभूत जीवनमूल्ये व कामाच्या नुसार चांगली जीवनमूल्ये स्वतःच्या ठिकाणी रुजवली पाहिजे. म्हणूनच ज्या संतांनी मानव कल्याणासाठी आपले हित न पाहता आपला सर्व जन्म सार्थकी लावला त्या संतांनीही आपल्या साहित्यामध्ये जीवनमूल्यांचे महत्व ठीक ठीक ठिकाणी विशद केलेले आपल्याला दिसून येते.केवळ महत्त्वच सांगितले नाही तर चांगले जीवनमूल्ये मानवाने अंगीकारावी म्हणून कळकळीची विनवणी सुद्धा केली आहे. आवाहन केले आहे. त्यासाठी अनेक पाने खर्ची घातली आहे. तुकाराम महाराज यासाठी मानव समूहाला आवाहन करतात की,

आता कुठे हाचि उपदेश

नका करू नाश आयुष्याचा ॥

सगळ्यांच्या पाया माझे दंडवत

आपले चित्त शुद्ध करा ॥

प्रस्तुत अभंगांमध्ये संत तुकाराम महाराज दंडवत करून कळकळीची विनवणी करतात की, तुम्ही तुमचे चित्त शुद्ध ठेवा. चित्त म्हणजे मन बुद्धी होय. मानव जो आपल्या कृतीतून आविष्कार करतो त्या सर्व कृतीचे मूळ चित्त म्हणजे मन आहे. मनात ज्याचे चिंतन चालू असते तेच कृतीतून घडत असते. म्हणून मानवाने आपले चित्त मन शुद्ध ठेवले की त्यांच्या मनात षडरिपू म्हणजेच काम, क्रोध ,मद ,मत्सर, वासना ,लोभ वास करत नाही.त्यांच्या ठिकाणी प्रेमळ वृत्ती राहते. तो कोणाशी संघर्ष, द्वेष करत नाही .तर आणखी एका अभंगात तुकाराम महाराज म्हणतात,

चित्त शुद्ध तरी शत्रू मित्र हो ती

व्याघ्र हे न खाती सर्प तया॥१॥

आपले चित्त शुद्ध असेल, तर निर्मळ मन राहिले तर शत्रू देखील आपले मित्र होतात. एवढेच नाही तर क्रूर प्राण्यासारखी हिंसक वृत्ती असलेली माणसे ही आपल्या वागण्यामुळे शांत होतात.

त्याग तरी ऐसा करा | अहंकार दवडावे ॥१॥

मग जैसा तैसा राहो | काय पाहो उरले ते ॥२॥

तुका म्हणे शुद्ध मन | समाधान पाहिजे॥४॥

सदर अभंगात त्याग, समाधान, शुद्ध मन याविषयी स तुकाराम महाराज म्हणतात, त्याग करा अवश्य करा । करत असताना त्या त्यागत मीपणा, अहंकार नसावा. वागण्या-बोलण्यात,चालल्यात, व्यक्तिमत्वातून अहं तिलांजली दिली पाहिजे. एकदा का या अहंकाराला मनातून टाकले की मग मन आनंदी प्रसन्न निर्मळ शांत चित्त व चित्त होऊन उच्च कोटीचा आनंद आणि स्वानंद होईल, घेईल आणि हेच मानवी जीवनाचे अंतिम मूल्य आहे .मग ठेवणे, मनातली सगळी हाव ,सगळा स्वार्थ दूर करून समाधानी बनवणे हाच आनंदी व यशस्वी जीवनाचा खर होय. मनाच्या शुद्धते सोबतच मनाच्या प्रसन्नतेचे तुकाराम महाराज अधोरेखित करतात.

मन करा रे प्रसन्न सर्व सिद्धीचे

मोक्ष अथवा बंधन | सुख समाधान इच्छा ते |

साधक वाचक पंडित | श्रोते वक्ते एका मात |

नाही नाही आन दैवत | तुका म्हणे दुसरे |

तुमच्या चांगल्या समाधानी व यशस्वी जीवनासाठी प्रसन्नता कशी आवश्यक आहे. याचे नितांत सुंदर वर्णन वरील अभंगात करतात. जीवन निर्मळ सुंदर स्वच्छ सम महत्वाचे म्हणजे यशस्वी करायचे असेल तर तुम्हाला तु प्रसन्न करावेच लागेल .तुम्हाला जीवनात जे काही पाहिजे काही तुमच्या इच्छा आहे, त्या परिपूर्ण करण्यासाठी तु प्रसन्न करा. एकदा का तुम्ही तुमचे मन प्रसन्न केले सिद्धी तुमच्या समोर हात जोडून उभ्या राहतील. येथे म्हणजे पुराण कथा सांगितलेल्या आठ सिद्धी नाही त सर्व उद्दिष्टे ध्येय पूर्ण होऊ शकतात. "आपल्या तत्वज्ञानाच्या अथवा पुराणकथांच्या क्षेत्रात आणिमा, यासारख्या आठ सिद्धी मानण्यात आल्या आहेत. अग सूक्ष्म रूप प्राप्त करणे,कापसासारखे हलके होता येणे,स पूर्ण करून घेता येणे या प्रकारच्या या सिद्धी होत. महाराज यांना मात्र इथे या सिद्धी अभिप्रेत नाहीत .ये वगैरे करून अशा प्रकारच्या सिद्धी प्राप्त करण्याव विश्वास नव्हता. त्यांना इथे इतकेच म्हणायचे आहे की म जीवनात सर्व यशाचे, सर्व फळांचे, सर्व पुरुषार्थांचे मूळ प्रसन्नतेत आहे" आपल्या वाट्याला येणारे सुख दुःख समाधान ,कोणाला श्रद्धास्थान बनवावे त्यासाठी स्वतः शिष्य बनवावे व गुरु बनावे. माणूस स्वतःच स्वतःच्या ज पेल् लागला. स्वतःची कर्तव्य ओळखू लागला तर नक्की जीवन प्रवास यशस्वी जीवनाच्या दिशेने चालू होतो तुकाराम महाराज आग्रहाने सांगतात की मना सारखे नाही .त्यासाठी सतत मनाला प्रसन्न ठेवा.मनाला

ठेवण्याचा सोबतच तुकाराम महाराज प्रयत्न, कर्म, मेहनत करणे, अभ्यास, त्यामधील सातत्य इत्यादी यासारख्या जीवनमूल्यांचा आग्रह करतात. तुकारामांना त्यांच्या जीवनात आलेल्या दाहक अनुभव व सूक्ष्म निरीक्षण शक्ती याद्वारे व्यवहाराचे दाखले देऊन ते सामान्य जनांना चांगल्या गोष्टी, चांगली जीवनमूल्य अंगीकारण्याचा आग्रह करतात.

मुंगीचीया घरा कोण जाय मूळ? देखोनिया गुळ धाव घाली॥१॥

या अभंगाद्वारे ते दैनंदिन जीवनातील अनेक उदाहरणे देऊन माणसाने स्वतःमधील आळस व निष्क्रियता स्थूलता घालून यासाठी स्वतः प्रयत्न करण्याची प्रेरणा दिली आहे. प्रयत्न सोबतच त्या प्रयत्नातील सातत्य अभ्यास यालाही महत्त्व देताना ते म्हणतात,

ओले मूळ भेदी खडकाचे अंग ।
अभ्यासाची सांग कार्यसिद्धी॥१॥
नव्हे ऐसे काही नाही अवघड ।
नाही कईवाड तोच वरि ॥२॥

अभ्यास आणि तोही सतत चा अभ्यास हे जीवनमूल्य अंगी बाळगूले कि मनुष्याचे हित निश्चितच आहे. असा विश्वास तुकाराम महाराज अभंगतून देतात. झाडाचे ओले मूळ आपले जीवन अधिक प्रसन्न करण्यासाठी, फुलवण्यासाठी नेटाने प्रयत्न करतो, मग अशावेळी खडक जरी मध्ये आला तरी त्या खडकाला भेदून जाण्याचे सामर्थ्य सततच्या अभ्यासाने, प्रयत्नाने आपल्या मनात निर्माण करतो. आणि त्याचा या सामर्थ्याला यश सुद्धा मिळते मग कितीही कठीण दगड असला तरी तो त्याला भेदून जातो

जोडोनिया धन उत्तम वेव्हारे । उदास विचारें
वेच करी॥१॥

या अभंगात व्यवहारात राहतांना कसे राहावे, कसे वागावे याचे अतिशय चांगले विवेचन तुकाराम महाराज करतात. माणसाने नैतिक मार्गाने पैसा धन जोडावा. दुसऱ्याच्या कष्टांवर आपण मजा करू नये. म्हणजेच माणसाने स्वतः मेहनत करावी. घाम गाळावा. स्वार्थ दूर ठेवून स्वतःच्या बळावर आपली चांगली श्रीमंती तयार करावी. "वर्तनाचे आणखीही काही नियम तुकारामांनी सांगितले आहेत. माणसाने दुसऱ्यावर उपकार करावा. अडीअडचणीत असलेल्या, गोरगरीब, दुःखीकष्टी माणसांना मदत करावी. या

उपदेशानुसार वागणारा हा मनुष्य दुसऱ्याची निंदाही करित नाही. याचा अर्थ दुसऱ्याचा मत्सर करण्याची, देष करण्याची त्याची वृत्त नसते. परस्त्रियांना तो मायबहिणीप्रमाणे मानतो..... त्याच अंगी भूतदया असते. प्राणिमात्रांविषयी कणव असते.... रानावनात कोणी तहानलेला असेल तर त्याला पाणी देतो. याच अर्थ कोणी संकटात असला तर त्याला मदतीचा हात देतो." अशाप्रकारे व्यवहारात वर्तन करतांना माणसाने कसे वागावे याचे अप्रत्यक्ष नियमच तुकाराम महाराज सांगतात. तुकाराम महाराजांच्या याच नियमांचा पाठपुरावा संत गाडगेबाबा आपल्या दशसुत्रीमध्ये करतात. तर संत रामदास स्वामी मनाचे श्लोक या ग्रंथात करतात. माणसाला आपले चांगले जीवन, आदर्श जीवन यशस्वी जीवन व्यवहारात घालवायचे असेल, निर्माण करायचे असेल तर त्याने उपरोक्त तुकाराम महाराजांनी सांगितलेले जीवनमूल्ये, चांगल्या गोष्टी स्वतःमध्ये निर्माण करणे, रूजवणे आवश्यकच नाही तर ते मानव जन्माचे कर्तव्यच आहे. यातून चांगले मानव जीवन, चांगले कौटुंबिक जीवन, चांगला समाज शिवटी चांगले राष्ट्र निर्माण झाल्याशिवाय राहणार नाही. आणि हेच मानव जन्माचे इतिकर्तव्य आहे. आणि त्याचाच पाठपुरावा संत तुकाराम महाराज आपल्या अभंगगाथेत करतात. त्याला कल्पनेची नाही तर तावून सुलाखून निघालेल्या वास्तवतेची जोड आहे..

निष्कर्ष:-

- मानवाकडून चांगल्या कर्माची अपेक्षा केली जाते व ती योग्य आहे.
- चांगले कर्म करण्यासाठी माणसाने स्वतःमध्ये चांगले जीवनमूल्ये रूजवली पाहिजे
- जीवनमूल्ये ही व्यक्तिगणिक, स्वभाव धर्मानुसार कार्यानुसार वेगवेगळी असतात.
- जीवनमूल्ये कोणतेही असो मात्र त्यामधून मानवाचा नैतिक विकास होणे आवश्यक आहे.
- मानवाचा नैतिक विकास व्हावा यासाठीच तुकारामांनी आपल्या संपूर्ण अभंगगाथेत जीवनमूल्ये चांगल्या गोष्टी ठिकाणी पेरलेल्या आपल्याला दिसतात.

संदर्भ ग्रंथ :-

1. अभंग गाथा - तुकाराम
2. संत तुकारामांचे निवडक अभंग - डॉ. आ. ह. साळुंखे
3. विद्रोही तुकाराम - डॉ. मनोज तायडे.
4. संत तुकारामांचे अभंग शतक



Indian Social & Research Foundation, Akola
KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA

(The accredited by NISHL with "B" Grade)

In Collaboration with Dr. Manorama and Prof. Haribhau Shankarrao Pundkar Arts, Commerce and Science College, Balapur (M.S.) & Vidarbha Sahitya Sangh, Akola. Department of Marathi, English & I.Q.A.C

Organized One Day International Interdisciplinary E-Conference
CERTIFICATE OF PARTICIPATION

This is to certify that **डॉ. दीपाली प्रल्हादराव गावंडे** has participated in the One Day International Interdisciplinary E-Conference On "Benefits of Life Values In Contemporary Social System" held on Thursday 30th September 2021 on Online platform. An International, Online Peer Reviewed, J-Indexed Research Journal "Research Nebula" for Interdisciplinary Studies, ISSN 2277-8071, J-GATE INDEXED and Impact Factor 7.399. He / She / Presented / Published a paper entitled

तुकाराम महाराज अभंग व जीवनमूल्ये

Hon. Dr. D.H. Pundkar
President
I. S. & R. F., Akola Principal Dr.
M. and Prof. H. S. Pundkar A.
C. S. College, Balapur (M.S.)

Dr. Prakash Wankhade
HOD Marathi
Manorama & Prof.
Pundkar A.C.S.
College, Balapur Akola

Dr. Rajesh Ghatge
HOD English
Manorama & Prof.
Pundkar A.C.S.
College, Balapur Akola

Seema Rothe
Executive Chairman
Vidarbha Sahitya
Sangh, Akola

Dr. Dipal Gawande
HOD Marathi
Kala Mahavidyalaya
Malkapur Akola

Asst. Prof. Pravin Ugare
HOD English
IQAC Coordinator Kala
Mahavidyalaya, Malkapur,
Akola

Dr. Gital S. Parde
Principal & Convener
Kala Mahavidyalaya,
Malkapur Akola



Indian Social & Research Foundation, Akola

KALA MAHAVIDYALAYA MALKAPUR, AKOLA

(Accredited by NRIHC with "B" Grade)

Collaboration with Dr. Manorama and Prof. Haribhau Shankarrao Pundkar Arts, Commerce and Science College, Balapur (M.S.) & Vidarbha Sahitya Sangh, Akola. Department of Marathi, English & I.Q.A.C Organized One Day International Interdisciplinary E-Conference

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

डॉ. दीपाली प्रल्हादराव गावंडे

is to certify that **डॉ. दीपाली प्रल्हादराव गावंडे** has participated in the One Day International Interdisciplinary E-Conference On "Benefits of Life Values in Contemporary Social System" held on Thursday 30th September 2021 on Online platform. An International Peer Reviewed, J-Indexed Research Journal "Research Nebula" for Interdisciplinary Studies (ISSN: 2277-8071, J-GATE INDEXED and Impact Factor 7.399. He / She / Presented / Published / entitled

तुकाराम महाराज अमंग व जीवनमूल्ये

(Signature)

Hon. Dr. D.H. Pundkar
President

U.S. & R. F. Akola Principal Dr.
M. and Prof. H. S. Pundkar A.
C. S. College, Balapur (M.S.)

(Signature)

Dr. Prakash Vankhade

HOD Marathi
Manorama & Prof.
Pundkar A.C.S.
College, Balapur, Akola

(Signature)

Dr. Rajesh Orambe

HOD English
Manorama & Prof.
Pundkar A.C.S.
College, Balapur, Akola

(Signature)

Seema Rothe

Executive Chairman
Vidarbha Sahitya
Sangh, Akola

(Signature)

Dr. Dipak Gawande

HOD Marathi
Kala Mahavidyalaya,
Malkapur, Akola

(Signature)

Asst. Prof. Pravin Ugure

HOD English
IOAC-Coordinator Kala
Mahavidyalaya, Malkapur,
Akola

(Signature)

Dr. Gopal S. Patil

Principal & Convener
Kala Mahavidyalaya,
Malkapur, Akola

Impact Factor - 8.572 (SJIF)
ISSN - 2278 -9308

MARCH 2022
ISSUE NO. (CCCXXXVI) 336

B.Aadhar

Peer - Reviewed & Refereed Indexed

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

SOCIAL JUSTICE AND COMMUNAL HARMONY IN SOUTH ASIA DURING THE LAST FIVE DECADES

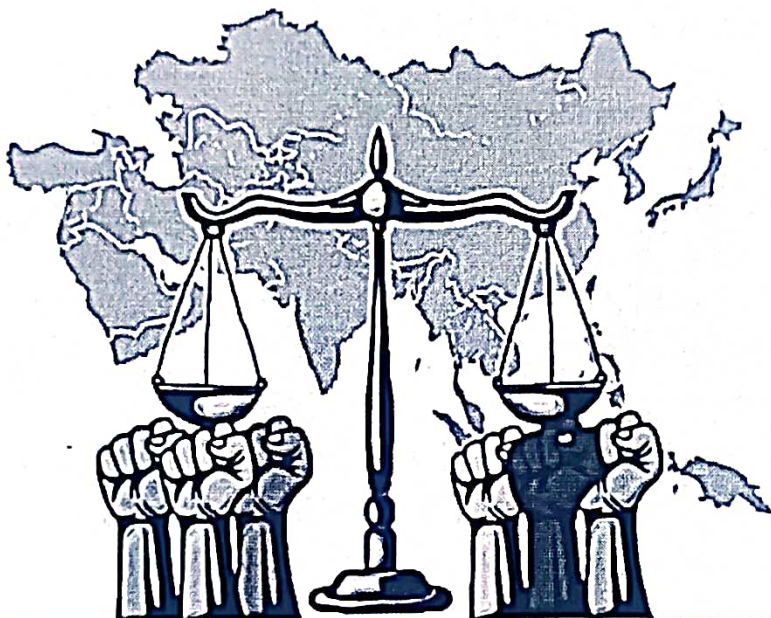
Editors

Dr. Nilima Sarap

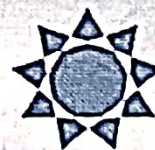
Dr. Arun Shelke

Dr. Piyush Nalhe

Asst. Prof. Dimple Mapari



This Journal is Indexed in
Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
Cosmos Impact Factor (CIF)
International Impact Factor Services (IIFS)



For Details Visit to : www.aadharsocial.com

Aadhar PUBLICATIONS

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refereed Indexed
Multidisciplinary International Research Journal

March-2022

ISSUE No- (CCCXXXVI) 336

**Social Justice and Communal Harmony
in South Asia During the Last Five Decades**

Prof. Virag.S.Gawande
Chief Editor

Director

Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Editor

Dr.Nilima Sarap

Dr.Piyush Nalhe

Dr.Arun Shelke

Asst.Prof.Dimple Mapari

SHANKARLAL KHANDELWAL ARTS, SCIENCE AND COMMERCE COLLEGE,
AKOLA (MS)

Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

© All rights reserved with the authors & publisher



40	भारतीय संविधानातील कलम-370-एक दृष्टिक्षेप	प्रा. अमोल भाऊरावजी वंड	153
41	धार्मिक असहिष्णुतेचे कारणे व परिणाम	प्रा.अभय डी. जायभाये	157
42	महिलांचे शोषण व मानवी अधिकार	प्रा.डॉ. संतोष सदाशिव मिसाळ	160
43	सामाजिक असहिष्णुतेचे अध्ययनाचे दृष्टिकोन	प्रा.डॉ.मेघराज रा.शिंदे	162
44	मुस्लीम स्त्रीप्रश्नाच्या आकलनाची दिशा	प्रा.संजयकुमार कांवळे	166
45	अर्थशास्त्र आणि सामाजिक न्याय	प्रा. जया जोशी (सहस्रबुद्धे)	175
46	अर्थशास्त्र व सामाजिक न्याय	संदेश सूर्यभान गवारगुरू	183
47	महिला : प्रजनन आरोग्य आणि आरोग्यसेवा मिळण्यातील आढतळे झुंजरटे	श्रेहा	187
48	महिला सक्षमीकरणाच्या विविध शासकीय योजना—एक दृष्टिक्षेप	डॉ. बळीराम परशराम अवचार	192
49	महिला सक्षमीकरण एक दृष्टिक्षेप	डॉ. गणेश ए. पोटे	197
50	लैंगिक असमानता और सामाजिक विक्षोभ भारत	एस. हरियाले	201
51	अकोला जिल्ह्यातील पर्यटन : एक भौगोलिक अभ्यास	प्रा. अभिजीत प्र. दोड	206
52	भारतीय संविधान व मानवाधिकार	प्रा. निता पांडे (पाठक)	212
53	मानवाधिकार व भारतीय संविधान या मधील संबध एक चिकीत्सक अध्ययन	प्रा.डॉ.प्रशांत वामनराव खेडकर	215
54	जातीय असहनशिलतेच्या संकल्पणेचे समाजशास्त्रीय अध्ययन	डॉ.पुरुषोत्तम आर.वांडे	221
55	भारतीय संविधान और मानवाधिकार	सौ. रूपाली अग्रवाल	226
56	महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळातील महिला वाहकांच्या समस्या	कु.वर्षा काशीराम रोडे	231
57	भटक्या विमुक्त वासुदेव जमातीचे धार्मिक सद्भाव	डॉ. श्रीकृष्ण काकडे ,उज्वला समाधान डांगे	236
58	शंकरलालजी (काकाजी) खंडेलवाल का सामाजिक कल्याण कार्यों का अध्ययन	निशीकांत दत्तात्रय देशपांडे	241
59	भारतीय संविधान आणि मानवाधिकार	प्रा .डॉ. दिलीप ह. सूर्यवंशी	245
60	स्त्री पुरुष समानतेचे बदलते आयाम : चिकित्सक विश्लेषण		248



भारतीय संविधान आणि मानवाधिकार

प्रा .डॉ. दिलीप ह. सूर्यवंशी

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख, कला महाविद्यालय, मलकापूर, ता. जि. अकोला, dsuryawanshi614@gmail.com
प्रस्तावना

1950 मध्ये भारतीय राजकीय व्यवस्थेने लोकशाही संविधानाचा स्विकार केलेला आहे. त्याच्या मुख्य बाब्यात कोणताही बदल न करता सलग 70 वर्षे आपण हे लोकशाही संविधान राबविण्यात यशस्वी झालेले आहेत असे म्हणायला हरकत नाही. 'शान्तनाचा एक प्रकार' किंवा 'राजकारण संघटित करण्याची एक चौकट' अशी लोकशाहीची विवादीत संकल्पना दिसून येत असली तरी ही गेल्या पाऊन शतक भारतीय व्यवस्थेने तीचा स्विकार केलेला आहे, त्याची चारणमिमांसा होणे गरजेचे ठरते.

गांधींच्या गते लोकशाहीचे खरे ध्येय म्हणजे, बलवानाएवढीच संधी कमजुबत असणा-यांनाही उपलब्ध करून देणे हे असते. तर डॉ. आंबेडकर राजकीय लोकशाहीचा पाया हा अधिक लोकशाही आणि सामाजिक लोकशाही वर टिकलेला असतो असे मानतात. लोकशाही हा केवळ एक राजतंत्राचा भाग नसून स्वातंत्र्य समता व बहुता या तीन जीवनमुल्यांचा संयोग आहे असे विचार त्यांनी मांडलेला आहे. भारतामध्ये लोकशाही संकल्पना ही एका सटक्यात रुजली असे म्हणता येत नाही, निश्चित यामुळे मानवी जीवनातील प्रेरणा, मुलभूत गरजा, जाणीव, भावना याचा पुर्तितहास असला पाहिजे. व्यक्तिच्या प्रतिष्ठेविषयी आदर वाळणजे आणि समाजात शांतता व सुसंवाद प्रस्थापित करण्याकरिता प्रयत्न करणे हा भारतीय संस्कृतीतील कायम घटक राहिला आहे.

आज मानवाधिकार संकल्पनेत जे न्याय व मानवी प्रतिष्ठेचे ताल दिसून येते त्यांचा उगम हा नैसर्गिक कायद्यात झालेला असून अठराव्या शतकाच्या शेवटी मानवाधिकाराचे कडे लक्ष देणा-या संस्था, संघटना आणि राष्ट्रीय अथवा आंतरराष्ट्रीय व्यवस्थेमध्ये घटनात्मक दस्तऐवजाच्या ध्वारा निर्माण केले आहे.

भारतीय घटनेत आज जसे मुलभूत अधिकार लिहिलेले आढळतात तसे ते अठराव्या शतकात मानवाधिकाराच्या पहिल्या प्रथम यादीत समाविष्ट करण्यात आले. अशा प्रकारची पहिली कायदेशीर वृत्ती बिला योग्य प्रसिध्दी मिळाली ती म्हणजे व्हर्जीनिया बिल ऑफ राईट्स 1776, जो एक अधिकारांचा जाहिरनामा होता. नंतरचा काळात नैसर्गिक अधिकार म्हणजे मानवाधिकार आणि कायद्याने दिलेले, अधिकार म्हणजे नागरिकांचे अधिकार असा स्पष्ट फरक करण्यात आला आहे.

या दिशेने 1948 साली मानवाधिकाराचा जागतिक जाहिरनामा स्विकृत करण्यात आला. याला मार्गदर्शक म्हणून अनेक शासनसंस्थानी आपल्या राज्यघटनेत यांचा बहुतांश समावेश केलेला आढळून येतो. भारतीय घटनेने देखील या मानवाधिकारांना डोळ्यांपुढे ठेऊन आपल्या भारतीय शासन व्यवस्थेची चौबट उभी केलेली दिसून येते. त्यामुळेच भारतीय लोकशाही आणि मानवाधिकार यांचा अभ्यास करणे गरजेचे ठरते.

शोधनिबंधाचा गृहितक

भारतीय लोकशाही वळकट करण्यास मानवाधिकाराचे योगदान महत्वाचे ठरते.

अभ्यासाचा उद्देश

1. भारतीय संविधानात मानवाधिकारांचा सहभाग झालेला आहे याचा अभ्यास करणे

भारतीय लोकशाही आजपर्यंत टिकून आहेत त्यांची मुळे मानवाधिकार संकल्पनेत दिसून येते, त्यांचा अभ्यास करणे

**संशोधन पध्दती****ग्रंथालयीन आणि सर्व्हेक्षण निरीक्षण पध्दती****विषय प्रवेश**

मानवाधिकारचे मुख्य तत्व मानवी प्रतिष्ठा आणि विश्वबंधुता यावर आधारीत आहे. मानवाधिकार संकल्पनेचा उद्देश मुळी गुलामगिरीच्या प्रभावर चर्चा करण्यापासून झाला आहे. दुसरा विकास हा व्यक्तीचा नैसर्गिक अधिकारांविषयी, अल्पसंख्यकांच्या संरक्षणाविषयी संबंधित होता. भारतीय संविधानाची चौखट किंवा लोकशाही संकल्पना ही फार जुनी आहे. भारतीय विधिमंडळ कायदा 1835 ते भारत सरकार कायदा 1935 असा जवळपास 70 वर्षांचा कालावधि हा प्रतिनिधिक संस्थांचा विकास होण्यास लागला. 1909, 1919 व 1935 या कालावधित क्रिप्स, कॅबिनेट, औवेल इ. कायद्यांच्या माध्यमातून भारतीय संविधानाची लोकशाही चौकट बळकट बनली. या कायद्यांनी प्रतिनिधिक व संघराज्य शासनाकडे वाटचाल खुली केली. या कायद्याने प्रांतिक स्वायत्तता दिल्याने प्रांतिक कायदेमंडळाच्या निवडणुकांना लोकशाहीची खरी चव कळली. असा प्रकारे सरकारी कायदे व सुधारणांनी प्रतिनिधित्वासाठी औपचारीक संरचना आणि लोकशाही प्रक्रीयेचे संस्थीकरण भारतात 1950 मधील लोकशाही संविधानाच्या स्विकृतीपूर्वी अस्तित्वात होते असे दिसून येते. मानवांच्या गुलामगिरीतून मुक्त करणे, त्यांना जीवन जगण्याचा मार्ग खुला करणे, त्यांचा भावना, प्रतिष्ठा, यांचा आदर करणे, जात - धर्म- वंश यांच्या पलिकडे जाऊन त्यांना स्वातंत्रता बंधुता न्याय प्रदान करणे व विश्वबंधुत्वाचा चौखटीवर सखल मानव समाजाची उभारणी करण्यासाठी लोकशाही व्यवस्थेतून परिहार्यता निर्माण करणे याला भारतीय संविधानाने प्राधान्य दिलेले दिसून येते. त्यामुळे भारतीय संविधानात मानवाधिकार संकल्पनेतील अनेक तत्वांचा स्विकार केलेला दिसून येतो. त्यांचा आढावा पुढील प्रमाणे घेता येईल.

1. भारतीय संविधानात मुलभूत अधिकारांचा समावेश

मानवी हक्क आयोगाची स्थापना झाल्यानंतर मानवी अधिकारांचा जाहिरनामा तयार करून, संयुक्त राष्ट्रसंघाने तो स्विकृत करून 10 डिसेंबर 1948 रोजी प्रसिध्द केला. जाहिरनाम्याच्या प्रारंभी असे म्हटले आहे की, सर्व व्यक्तींना समान हक्क मिळणे आणि त्यांच्या प्रतिष्ठेचे रक्षण होणे, हा जगातील स्वातंत्र्य, न्याय व शांतता यांचा पाया आहे. त्याच पार्श्वभूमीवर भारतीय संविधानाने लोकशाही शासन व्यवस्था अधिक बलकट करण्यासाठी पुर्ण विचारांती भारतीय राज्यघटनेत मुलभूत अधिकारांचा समावेश केला आहे. अगदी उद्देश पत्रिकेच्या सुरवातीच्या कालखंडात न्याय, स्वातंत्र्य, समता व बंधुता हि तत्वे राज्यघटनेने स्पष्ट करून नागरिकांना नैसर्गिक जगण्याची संधी उपलब्ध करून दिलेली आहे.

या मुलभूत अधिकारांमुळे व्यक्तीच्या जीविताने संरक्षण तर झालेच पण तिच्या प्रतिष्ठेची देखील हमी राज्य घटनेने घेतली आहे. याशिवाय सामुहिक लोकशाही बळकट होण्यास मदत झाली आहे. कारण या मुलभूत अधिकारांमुळे कोणत्याही बहुमत प्राप्त राजकीय पक्षाची हुकूमशाही निर्माण होत नाही. कारण त्याला न्यायालयीन संरक्षण आहे. मानवाधिकार संकल्पनेप्रमाणे भारतीय लोकशाहीत जनतेचे कल्याण करणे, संवर्धन करणे, यांची हमी भारतीय संविधानाने घेतली आहे.

2. शोषण व पिळवणुकीपासून मुक्तता

प्रारंभीच्या काळात मानवाधिकार ही संकल्पना नैसर्गिक जगण्याला प्राधान्य देऊन गुलामगिरीच्या प्रथेला विरोध करते. अगदी त्याच आधारावर भारतीय राज्य घटनेने लोकशाहीत व्यक्तीच्या क्रय-विक्रय याला बंधन घातले असून शोषण व पिळवणुक यांच्या विरोधात न्यायालयात दाद मागण्याचा अधिकार दिलेला आहे. त्यामुळे लोकशाही वरील विश्वास दृढ होण्यास मदत झालेली आहे.



3. मानवाधिकार प्रमाणेच व्यक्तीचा दर्जा व संधीची समानता

भारतीय राज्यघटनेत नैसर्गिक हक्क व नैसर्गिक जगण्याचा अधिकार भारतीय लोकशाही मार्गाने देण्यात आलेला आहे. राज्य घटनेच्या कलम 39 मध्ये स्त्री-पुरुष समानता, समान वेतन, समान संधी यांना प्राधान्य देण्यात आलेले आहे. कलम 41 मध्ये काम, शिक्षण, रोजगार, आरोग्य व स्वास्थ्य, कलम 43 मध्ये निर्वाह वेतन, उद्योगांच्या व्यवस्थापनात कामगारांचा सहभाग, कलम 45 मध्ये बालकांना मोफत व सक्तीच्या शिक्षणाची व्यवस्था करण्यात आलेली आहे. कलम 46 मध्ये अनुसूचित जाती-जमाती व दुर्बल घटक यांच्या विकासाला प्राधान्य, तर कलम 47 मध्ये राहणीमानाचा दर्जा, पोषणमान, राज्याचे कर्तव्य यांना प्राधान्य देऊन भारतीय लोकशाहीने मानवाधिकार संकल्पनेला हातभार लावलेला आहे.

4. भारतीय संविधानात मानवाधिकारांच्या धर्तीवर नैसर्गिक संरक्षण

भारतीय राज्यघटनेत लोकशाही व्यवस्था आणि मानवाधिकार यांची सांगड घालतांना 'नैसर्गिक अधिकारांना कायद्याचे संरक्षण' या आधारावर संरक्षणासाठी अनेक उपाय योजना करण्यात आलेल्या आहेत. प्रत्येकाला आपल्या व्यक्तीमत्वाचा विकास करण्यासाठी अधिकार आवश्यक असून त्यांना संरक्षण महत्वाचे असते. हे अधिकार त्यांच्या पासून कोणतीही शासन व्यवस्था हिरावून घेऊ शकत नाही. भारतीय राज्य घटनेत नागरीकांना आपल्या अधिकारांवर आक्रमण झाल्यास न्यायालयात दाद मागता येते. पुढील पाच प्रकारे संरक्षण राज्यघटनेद्वारे व्यक्तीला प्राप्त झालेले आहे.

1) बंदी प्रत्यक्षिकरण, 2) परमादेश, 3) प्रतिषेध, 4) उत्प्रेषण आणि 5) अधिकार पृच्छा

हे अधिकार नागरीकांना वहाल केल्यामुळे भारतीय लोकशाही ही मानवाधिकारांच्या संकल्पनेवर पाऊल ठेऊन पुढे जात आहे हे स्पष्ट होते. त्यामुळे भारतीय लोकशाही वरील विश्वास दिवसेंदिवस जनमानसात रुजलेला दिसून येतो.

निष्कर्ष

मानवाधिकारीची निर्माती ज्या उद्देशाने जागतिक पातळीवर झालेली आहे, त्यातील जवळजवळ सर्वच तत्वांवर भारतीय राज्यघटना व त्यातील लोकशाही उभी असलेली दिसून येते. त्यामुळे मानवाधिकारांच्या समाविष्टतेमुळे भारतीय राज्यघटनेतील भारतीय लोकशाही एक प्रकारे बलकट झालेली आहे, असे म्हणण्यास हरकत नाही.

संदर्भग्रंथ

1. मुलभूत मानवाधिकारांची अंमलबजावणी, डॉ. व्ही.एम. पेशवे, प्रा. सौ. मंदाकिनी पेशवे, प्रथम आवृत्ती - 2014, मानक प्रकाशन, दिल्ली
2. भारतीय लोकशाही : अर्थ आणि व्यवहार, सं. राजेद्र व्होरा आणि सुहास पळशीकर, अनुवाद चित्रा लेले, प्रथम आवृत्ती 2010, डायमंड प्रकाशन, पुणे
3. एच. ओ. अग्रवाल, इम्पीलीमेंटेशन् ऑफ ह्युमन राईट्स् कोन्व्हेन्ट्स् वुईथ स्पेशल रेफरंस टु इंडिया, अलाहाबाद, 1986
4. सुभाष मिश्र, मानवाधिकार का मानवीय चेहार, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली 2010
5. डॉ. रविंद्र भनगे, समकालीन राजकीय मुद्दे, प्रशांत प्रकाशन, जळगाव, 2012

Assist. Prof. Dimple Kapari
Organizing Secretary

Dr. Milima Sarad
Commerce

Dr. Milind V. Shirkhale
Coordinator, IQAC.

Dr. J.M. Saboo
Principal

CERTIFICATE

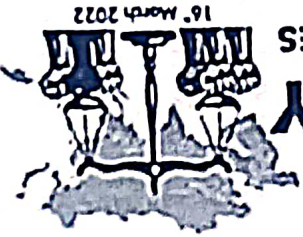
This is to certify that, श्री श्री दिवीय रू संदेशी of Arts College Malkapur, Akola, has presented a paper entitled: शारीर सौंदर्य आणि सामाजिक in the International Interdisciplinary Virtual Conference on "Social Justice and Communal Harmony in South Asia During the Last Five Decade", organised by Department of Sociology and IQAC, Shankaral Khandelwal Arts, Science & Commerce College, Akola (Maharashtra, India) on 16th March, 2022.

SOCIAL JUSTICE AND COMMUNAL HARMONY IN SOUTH ASIA DURING THE LAST FIVE DECADES

International Interdisciplinary Virtual Conference on

Affiliated to Sant Gadge Baba Amravati University, Amravati
Instituted by MUC, Collar Road, (CA) 431 001

SHANIKARLAL KHANDLWAL
ARTS, SCIENCE & COMMERCE COLLEGE, AKOLA (MS) INDIA



16 March 2022



IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 Online ISSN 2278-8808
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL - JUNE, 2021, VOL - 10, ISSUE-47



Indian Social & Research Foundation Akola ,
ARTS COLLEGE MALKAPUR, AKOLA

(Accredited By NAAC With "B" Grade)
Department of Music & IQAC Organizing



In Collaboration with
Sharda Sangeet - Kala Academy Indore (M.P.)

One Day National E- Conference

**Contribution of Modern Technology in Globalization
& Development of Music & All Interdisciplinary
Subjects**

Editor-In-Chief

Asso. Prof. Dr. Yashpal D. Netragaonkar

*MIT World Peace-University School of Education,
Kothrud, Pune*

Editor

Dr. Gitali S. Pande

*Principal , Head of Music Department,
Arts College Malkapur, Akola (M.S.)*

Co-Editor

Dr. Sunil B. Patake

*Department of Music Arts College
Malkapur, Akola (M.S.)*

SCHOLARLY RESEARCH JOURNALS

*S. No. 5+4/5+4, TCG'S, Saidatta Niwas, D-wing, Ph- II, 2nd Floor,
F. No. 104, Nr. Telco Colony & Blue Spring Society,
Dattanagar, Jambhulwadi Road, Ambegaon (BK), Pune - 411046,
Website: www.srjis.com*

संगीत शिक्षणाचे बदलते स्वरूप व तंत्रज्ञान

डॉ. गीताली पांडे

प्राचार्या, कला महाविद्यालय, मलकापूर, अकोला, मो. : ९९२२६३६५६४

Abstract

आपणा सर्वांना हा अनुभव आहे की मानवी जीवन हे परिवर्तनशील आहे. परिवर्तन किंवा बदल, ही मानवी जीवनाची वास्तविकता आहे. हा बदल जीवनाच्या प्रत्येक टप्प्यावर आणि प्रत्येक क्षेत्रामध्ये दिसून येतो, तर संगीत क्षेत्र यातून कसे सुटणार? परिवर्तनाचे एक रूप विकास आहे. आणि या विकासाला रूप देणारे, गती देणारे तंत्रज्ञान आहे. तंत्रज्ञानात दररोज होत जाणाऱ्या बदलांमुळे संपूर्ण विश्व आज एकत्रित जोडल्या जाऊ शकतं. इतकी प्रगती आज तंत्रज्ञानाने केली आहे. संगीत क्षेत्रामध्ये या तंत्रज्ञानाच्या प्रगतीने आलेले बदल संगीताचे शिक्षण या दृष्टिकोनातून बघण्याचा प्रयत्न या लेखातून केला आहे.



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjls.com

संगीत शिक्षण :

संगीत ही एक प्रादेशिक कला होय. संगीताचा कलाकार श्रोत्यांसमोर आपली कला प्रदर्शित करतो. संगीत ही मनाला शांत करणारी, मनाचे रजन करणारी कला आहे. संगीत कलेचे उगमस्थान प्रणव म्हणजे ओंकार नाद मानले तरी सामवेदापासून तिची परंपरा आढळून येते. तसेच भरताचे नादयशास्त्रादि ग्रंथ, संगीत कलानिधी इत्यादी ग्रंथांमधून संगीत कलेविषयी, शास्त्राविषयी माहिती मिळते परंतु संगीताच्या शिक्षणाविषयीची माहिती, शिक्षण पद्धती विषयीची माहिती मात्र संगीत कलाकारांच्या जीवन ग्रंथांवरूनच मिळते. म्हणजे ज्या काळात गायकीच्या घराण्यांचा उदय झाला त्या काळापासून साधारणतः संगीत शिक्षण पद्धतीची माहिती मिळते. या शिक्षण पद्धतीत गुरुंच्या स्वभावाप्रमाणे, दृष्टीकोनाप्रमाणे, गायनाच्या शैलीप्रमाणे, परंपरे प्रमाणे थोडा फार फरक असला तरी साधारणतः संगीत शिक्षणाचे स्वरूप असे होते. एका वेळेस एकाच शिष्याला शिकवित असत. हे शिक्षण गुरुंच्या नजरे खाली, शिष्याला समोर बसवून दिल्या जाई. आणि मुख्य म्हणजे हे शिक्षण बहुधा गुरुगृहीच चाले. त्यामुळे शिष्याच्या रियाजापासून, त्याच्या मेहनतीवर गुरुंचे लक्ष राहिले. आणि शिष्याला देखील गुरुंचा रियाज, त्यांची मेहनत, त्यांचे संगीताचे सादरीकरण इत्यादी विषयी अवगत होता येई. गुरुगृही राहल्यामुळे एकच शैली सतत कानावर पडत राहल्यामुळे गायकी विषयक पाया भक्कम होण्यास मदत होई. संगीतास पूरक वातावरण मिळाल्यामुळे संगीताचे आकलन सुलभतेने होत असे. संगीताचे शिक्षण म्हणजे प्रामुख्याने बंदिशीचे शिक्षण म्हणजे बडाख्याल, छोटाख्याल इत्यादी. या बंदिशी शिष्याला मुखोद्गत असणे आवश्यक असे. कारण बंदिशीच्या आदान प्रदानाला दुसरे कुठले साधन उपलब्ध नव्हते. त्यामुळे मौखिक स्वरूपातच बंदिशीचे आदान-प्रदान होई. त्याकाळी ज्या कलाकारांजवळ जितक्या जास्त बंदिशी असत तितका तो श्रीमंत मानला जाई. प्रत्येक घराणेदार गायक/कलावंत 'पूर्वजांची किंवा वडीलोपार्जित संपत्ती' या दृष्टीने या बंदिशीकडे बघत असत. त्यामुळे बहुतेक वेळा या घराणेदार बंदिशी गुरु आपल्या शिष्यांना शिकवित नसत

अशावेळी बंदिशी जमा करण्यासाठी शिष्यांना, नवोदीत कलाकारांना बरेच परिश्रम करावे लागत असत. तसेच गुरुमुखी आणि गुरुगृही राहून विद्या संपादन करावी लागत असल्यामुळे गुरुंची गर्जी संपादन करणे आणि त्यासाठी लागणारा संयम, तिकाटी, गाण्यावरील प्रेम, नम्रता, पडेल ते काम करण्याची तयारी व धैर्य इत्यादी गुण शिष्यांजवळ असणे ही त्याकाळाची गरज होती.

ही परिस्थिती हळुहळु बदलली परिवहनाची साधने विकसित झाल्यामुळे गुरु शिष्यांकडे जावूनही शिक्षण देऊ लागले. बडोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड यांनी बडोदा येथे गायन शाळेची स्थापना केली. बडोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड यांच्या दरबारातील प्रसिद्ध गायक कलावंत मौलायकश यांची त्या गायन शाळेच्या प्रमुखपदी नियुक्ती केली. फारचात्य ऑर्केस्ट्रात ज्याप्रमाणे स्फाफ नोटेशन द्वारा स्वरावली समोर ठेवून वाजविल्या जाते त्याप्रमाणे त्यांनीही काही स्वरावली तयार केल्या परंतु पंडीत विष्णु दिगंबर पलुसकर आणि विष्णु नारायण भातखंडे यांनी स्वर्गलिपीचे निर्माण केले. तसेच संगीत शिक्षणासाठी गांधर्व महाविद्यालयाची स्थापना केली. या महाविद्यालयातून अभ्यासक्रमाची पुस्तके विद्यार्थ्यांना मिळू लागली. मुद्रणाच्या तंत्रज्ञानाच्या साहाय्याने व स्वर्गलिपीच्या आधारे संगीत कला आणि शास्त्र लिखित स्वरूपात उपलब्ध होवू लागले. संगीत महाविद्यालयात एका वेळेस अनेक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करू शकत होते. तसेच लिखित साहित्य उपलब्ध झाल्यामुळे विद्यार्थी काही प्रमाणात स्वयं अध्ययन करू शकत होते. रागगायनासाठी आवश्यक असलेले आलाप तान इत्यादि लिखित स्वरूपात उपलब्ध होवू लागले. तसेच गायनाच्या प्रारंभिक ते अलंकार अशा परिध्याही तयार करण्यात आल्या. अशा प्रकारे पलुसकरांच्या गांधर्व महाविद्यालयाच्या स्थापनेमुळे संगीत शिक्षणाच्या स्वरूपात फार मोठा बदल झाला. पुढे बनारस, अलाहाबाद, मिरज इत्यादी शहरांतही गायन शाळा सुरु झाल्या.

ध्वनिमुद्रण, आकाशवाणी इत्यादी शोधांमुळेही संगीताच्या शिक्षण पद्धतीत/स्वरूपात बदल झाला. अशा प्रकारे संगीताच्या प्रचार प्रसारास हे तंत्रज्ञान सहाय्यक ठरले. ध्वनिमुद्रणाच्या तंत्रज्ञानामुळे गायकाचे गाणे त्याच्या गायकीसह ध्वनिमुद्रित करता येवू लागले. या ध्वनिमुद्रिका सतत ऐकून पं. कुमार गंधर्वा सारखे बाल बलाकार उदयास आले. म्हणजे मुद्रणाच्या तसेच ध्वनिमुद्रणाच्या तंत्रज्ञानातील विकासांमुळे संगीताच्या प्रेमींना किंवा संगीत साधकांना बंदिशी तसेच मोठमोठ्या कलाकारांची गायकी आता सहजतेने ऐकायला मिळू लागली. संस्थागत शिक्षण सुरु झाले त्यात संगीत विषय सामान्य लोकांना सहजा सहजी शिकता येवू लागला. त्यानंतर महाविद्यालयामधूनही इतर विषयांप्रमाणेच संगीताचेही शिक्षण मिळू लागले. दरम्यानच्या काळात ध्वनिमुद्रिका, ध्वनिफित, सी.डी., पेन ड्राईव्ह, मोबाईल, म्युझिक अॅप्स इत्यादी तंत्रज्ञानातील प्रगतीमुळे इतरही क्षेत्रांप्रमाणेच संगीत शिक्षणावर त्याचा मोठा परिणाम झाला. टेप रेकॉर्डरच्या शोधामुळे गायकांची गायन त्यांच्यावर ऐकता तर येवू लागलेच पण त्याचवेळी जे साधक मोठमोठ्या कलाकारांकडे खाजगी शिक्षण घेवू लागले त्यांना आपल्या गुरुचे गाणे टेप करून घेता येवू लागल्यामुळे संगीत शिक्षणातील स्वयंपूर्णता वाढली. तसेच दूरध्वनी, आकाशवाणी व दूरदर्शन इत्यादी मुळे भारताबाहेरील कलाकारांचे कला प्रदर्शन भारतीय कलाकारांना ऐकायला मिळू लागले. त्यांच्याशी संवाद साधता येवू लागला, कलेचे आदान-प्रदान सुलभतेने होवू लागले. त्यामुळे संगीताच्या वैश्विकीकरणाला चालना मिळाली. रविशंकर, झाकीर हुसेन यांच्या सारखे काही कलाकार तर विदेशातच स्थायिक झाले. त्यामुळे भारतीय संगीत जगभर पोचले आणि अनेक विदेशी संगीत भारतीय संगीताकडे आकृष्ट होवून ते शिकण्यास प्रवृत्त होवू लागले.

संगीताचे शिक्षण आता महाविद्यालयीन स्तरावर तसेच खाजगी शिकवणी असे दोन्ही स्तरावर सुरु आहे. परंतु विमानाच्या शोषणामुळे देशांत तसेच देशाबाहेरील प्रवास सुकर झाला. कलाकारांना संगीत सादरीकरणासाठी देशात तसेच देशाबाहेर जाणे सोयीस्कर झाले. तसेच त्यामुळे संगीत साधकांनाही आपल्या आवडत्या कलाकारांकडे संगीत शिक्षणासाठी जाता येवू लागले. त्यामुळे कमी वेळेत संगीत साधकांना भरपूर विद्या मिळू लागली. महाविद्यालयीन स्तरावर विद्यार्थ्यांना शिकवण्यासाठी, त्यांना वृद्धी करण्यासाठी महाविद्यालयांच्या ग्रंथालयांमध्ये अनेक नामकीत कलाकारांच्या ध्वनिपिठा, ध्वनिचित्रफित संग्रहित करू लागल्यामुळे तिथे विद्यार्थ्यांना वेगवेगळे गायक, वादक तसेच कलाकारांचे विचार ऐकण्यास मिळू लागले. महाविद्यालयामधून डिजिटल बोर्डची सुविधा करण्यात येवू लागल्यामुळे अनेक संगीत विषयक व्हिडिओ, माहिती पी.पी.टी. द्वारे प्रत्यक्ष अध्यापन करणे सुरु झाले. त्यामुळे शिक्षकांना शिकवण्याचा ताण कमी झाला. पण तंत्रज्ञानाने याहीपुढे शिक्षकांना शिकवणे सुलभ झाले. महाविद्यालयांमधून शिक्षक व्हिडीओ, पी.डी.एफ.ऑडिओ क्लिप इत्यादी द्वारे संबंधित विषयांनी माहिती व्हाट्सअप, ई-मेल इत्यादी द्वारे विद्यार्थ्यांचेच पोचवू लागले. सध्याच्या कोरोनाप्रस्त काळात, जिये सोशल डिस्टेंसिंग, कॉरंट्रीन गारख्या परिस्थितीमुळे विद्यार्थी आणि शिक्षक यांना एकत्र येणे अशक्य झाले. अशा वेळेस ऑनलाईन टिचिंग या संकल्पनेची मदत झाली. कारण ऑनलाईन टिचिंगमध्ये विद्यार्थी आणि शिक्षक हे आपापल्या जागेवरून संगीताचे शिक्षण देवू/घेवू शकतात. तसेच विद्यार्थी परिष्ठा देवू शकतात. एवढेच नाही तर घरी बसल्या-बसल्या तुम्ही परदेशातल्या, दूरच्या राज्यामधील महाविद्यालये, विद्यापीठे यामध्ये प्रवेशित होवून संगीताचे शिक्षण घेवू शकता, अभ्यासक्रम पूर्ण करू शकता आणि पदवी, पदविका प्राप्त करू शकता.

निष्कर्ष :

अशा प्रकारे संगीताचे शिक्षण, जे अपार कष्ट घेऊन गुरुगृही राहून, गुरु सान्निध्यात राहूनच मिळत होते, ते संगीत शिक्षण आज तंत्रज्ञानातील प्रगतीमुळे सातासमुद्रा पलिकडे गेले. आज आपणही घरबसल्या संगीत शिक्षण घेऊ शकतो. कलाकारांना, गुरूंना वधू शकतो, त्यांच्याशी प्रत्यक्ष संवाद साधू शकतो.

संदर्भ ग्रंथ :

संगीतातील घराणी आणि चरित्रे - डॉ. नारायण मंगरुळकर

संगीत अलंकार - स.भ. देशपांडे

गानयोगी शिवपुत्र - पंढरीनाथ कोल्हापूर

स्वरमयी - डॉ. प्रभा अणे

स्वरांगिनी - डॉ. प्रभा अणे

संगीत रत्न म. अब्दुल करीम खान यांचे जीवन चरित्र - बाळकृष्ण बुवा कपिलेश्वरी

70	कोविड १९ आणि संगीत शिक्षण : एक दृष्टिकोप डॉ. गीताली पांडे	260-261
71	IMPACT OF COVID-19 ON SMALL SCALE INDUSTRY Sonam Rahul Patwa	262-266
72	जलसिंचनामुळे कृषि विकासात झालेली वाढ व कोविड - १९ मुळे त्यावर झालेला परिणाम यांचे चिकीत्सक अध्ययन डॉ. प्रा अकोशगीर दत्तुगिर गोस्वामी & अर्चना ज्ञानेश्वर पाटील	267-270

कोविड १९ आणि संगीत शिक्षण : एक दृष्टिकोप

डॉ. गीताली पांडे

प्राचार्य, कला महाविद्यालय मलकापूर अकोला

सन 2020 पासून कोविडने भारतात प्रवेश केला आणि हळू हळू त्याने माणसाचे जीवन शारिरीक, आर्थिक, मानसिक, व्यावहारिक आणि शैक्षणिक या सर्व स्तरावर व्यापून टाकले. जणू काही समुद्राची एक जोरदार लाट किनाऱ्यावर येऊन आदळावी आणि किनाऱ्यावरची सर्व परिस्थिती बदलून जावी असेच काहीसं या कोविडच्या लाटेमुळे आपण सर्वजण अनुभवत आहोत. प्रत्यक्ष कोविडने जितके नुकसान झालं त्याच्यापेक्षा कितीतरी पटीने कोविडच्या भितीमुळे उदभवलेल्या परिस्थितीमुळे माणसांचे नुकसान झालेय. कोविडच्या निमित्ताने संपूर्ण जग एक मोठ्या बदलाला सामोरे जात आहे. कारण कोविडच्या परिणाम हा दृश्य, अदृश्य रूपात जीवनाच्या सर्वच बाजूंवर झाला आहे. वर्क फॉर्म होम कल्चर, स्वच्छतेचे नियम, सार्वजनिक ठिकाणी वावरतांना पाळावयाचे नियम, कॉरंटार्ईन पिरेडचे नियम हे अपरिहार्यपणे आपल्यावर लादल्या गेले, त्यामुळे सर्वच बाजूंचा नव्याने विचार करणे आवश्यक झाले आहे. प्रत्येक बदल हा आपल्या सोबत चांगल्या व वाईट या दोन्ही परिस्थितीचा संगीत शिक्षणांच्या दृष्टीने, संगीत शिक्षणावर काय परिणाम झाला हे पाहणे हा या लेखाचा उद्देश आहे.

संगीत शिक्षणाचा इतिहास पाहू जाता असे दिसून येते की प्राचीन काळी संगीताचे शिक्षण हे गुरूगृही आणि गुरूमुखातून घेतल्या जाई. याचा मोठा फायदा विद्यार्थी २४ तास आपल्याला जी कला साध्य करायची त्या त्या कलेला पूरक वातावरणात आणि विचारांमध्ये राहायचा त्यामुळे त्याचे लक्ष केलेल्या विचारांवरून भटकटत नसे आणि त्यामुळे एकाप्रतने कला साध्य करू शकत असे. आणि गुरूलाही आवश्यक ती साधना शिष्या कडून करून घेता येत असे. कालांतराने गुरूगृही जाणे थांबले तरी गुरूमुखातून विद्यार्थी शिक्षण घेत असत. या शिक्षणाला वेळेचे बंधन नसे तसेच काळाचेही बंधन नसे म्हणजेच इतक्या दिवसांत इतके राग झालेच पाहिजेत याची सक्ती नव्हती. कालांतराने ही पण परिस्थिती बदलली. महाविद्यालयातून संगीताचे शिखण सुरू झाले. त्यामुळे संगीत शिक्षणाला काळ आणि वेळेचे बंधन आले. तसेच इतर विषयांप्रमाणे संगीताकडेही एक विषय म्हणून पाहण्यात येऊ लागले जी की मुळात एक कला आहे. आणि त्यामुळे संगीत शिक्षणाला काळ आणि वेळेचे बंधन आले. तसेच इतर विषयांप्रमाणे संगीताकडेही एक विषय म्हणून पाहण्यात येऊनलागले जी की मुळात एक कला आहे. आणि त्यामुळे विद्यार्थी आणि शिक्षक यांचाही तिच्याकडे बघण्याचा दृष्टिकोन बदलला. तंत्रज्ञानातील प्रगतीन ही जीवनातील सर्वच अंगांसोबत संगीताच्याही परिस्थितीत आणि शिक्षणपध्दतीत बदल घडवून आणले. ग्रामोफोन, रेकॉर्डर्स, कॅसेट्स सिडीस, आणि आता मोबाईल, पेन ड्रायव्ह, यावर गाणे ध्वनिमुद्रित होऊन ते परत परत एकेण्याची सुविधा निर्माण झाल्यामुळे विद्यार्थ्यांना तसेच कलाकारांनाही त्याचा लाभ झाला. परंतु त्यामुळे विद्यार्थ्यांची एकाप्रतने विद्यार्जन करण्याची क्षमता कमी होऊ लागली हे ही नाकारून चालणार नाही.

इलेक्ट्रॉनिक्स बो, तानपुरा, तसेच करावके सारखे रेकॉर्डिंग ट्रॅक्स सुविधांमुळे सादरीकरणातील जीवंतपणा ही कमी झाल्या सारखा वाटतो. आणि सर्व बदलांना सामोरे जात असतांनाच कोविड - 19 च्या रूपाने जीवनाचा सर्वच स्तरावर चेहरा मोहराच बदलून जाण्याची चिन्हे दिसू लागली आहेत. कोविड काळाचा सर्वात मोठा दुष्परिणाम म्हणजेच लॉक-डाऊन । यामुळे सर्व जनजीवन सिमीत, बंदिस्त आणि विस्कळीत झाले. लोकांमधील परस्पर व्यवहार आणि वैचारिक आदान - प्रदा ठप्प आले. परंतु मानव हा समाजशील प्राणी आहे. त्यामुळे आपापसातील सामाजिक संवाद पुनर्स्थापित करण्यासाठी मनुष्याला तंत्रज्ञानाची फार मोठी मदत झाली. तशीच ती सांगितीक शिक्षण आणि प्रदर्शन या दोन्हीसाठी झाली.

चांगल्या परिस्थितीचा विचार करायचा झाल्यास कोविड - 19 चा कोणताही धोका न पत्करता विद्यार्थी व शिक्षण ऑन लाईन संवाद साधू लागले. तंत्रज्ञानामुळे विद्यार्थ्यांचे सांगितीक शिक्षण क्लास रूम, गुगल मिट, रूम, वॉट्सअप च्या साहाय्याने सुरू राहिले. विविध संगीत विषयांवरील चर्चासाठी ऑन लाईन कॉन्फरन्सेस, वेबीनार्स, सेमीनार्स, ऑनलाईन क्लासेस तसेच फेसबुक लाईव्ह इ. चे आयोजन करण्यात आले. विद्यार्थ्यांच्या गीतगायन स्पर्धाही म्यूझिकल ट्रॅक्सचा उपलब्धतेमुळे घेता आल्या आणि त्या व्यवस्थित पारही पाडता आल्या. म्यूझिकल ट्रॅक्स, रेकॉर्डिंग तसेच साथसंगत संबंधित अॅपसमुळे कलाकार कला प्रदर्शनासंबंधी बऱ्याच प्रमाणात स्वयंपूर्ण बनला. क्रिझ, (प्रश.नमंजुषा) च्या उपलब्धतेमुळे विद्यार्थ्यांना परिक्षा देणे, तसेच शिक्षकांना परिक्षा घेणे व प्रमाणपत्राचे वाटप करणे सोयीस्कर झाले.

मोठ-मोठ्या नामवंत कलाकारांना तसेच नामवंत संस्थांचे कार्यक्रम हे घरबसल्या, विनामुल्य पाहायला व एकायला मिळाले. क्वचित त्यांच्याशी संवाद ही शक्यता आले. शहरात मिळणारे दर्जेदार शिक्षकांचे उत्तर शिक्षण ग्रामीण भागातील मुलांना पण मिळू लागले आहे. तंत्रज्ञानामुळे अनेक स्थानिक पातळीवरील कलाकारांना आपली कला विनासायस आपल्या परिघाबाहेर पोहचवता आली, प्रदर्शित करता आली. तसेच अनेक जणांना आपल्यातील छुप्या कलाकाराला व्यक्त करण्यासाठी तंत्रज्ञानाने विनामुल्य व्यासपिठही मिळवून दिले. नवनविन अॅपच्या स्वरूपात नवनवीन तंत्रज्ञानाची विद्यार्थी, शिक्षण व कलाकार यांना ओळख झाली. ते कसे वापरावे याचा सरावही झाला. शिक्षण, विद्यार्थी खऱ्या अर्थाने टेक्नो सॉल्यूटि झाले. तसेच या सर्व आयोजनसाठी लागणारी जागा, वेळ, श्रम आणि पैसा याची फार मोठी बचत झाली. या सर्व सकारात्मक गोष्टी असल्यातरी काही नकारात्मक बाजू पण या परिस्थितीला नक्कीच आहे. कुठल्याही शिक्षणाचा हेतू हा विद्यार्थ्यांचा सर्वांगीण विकास म्हणजेच शारिरीक, बौद्धिक व मानसिक विकास होणे हाच असतो या बदल कोणचे दुमत असेणे शक्य नाही. आणि तो तसा व्हावा याकडे एक शिक्षण, पालक व नागरिक या नात्याने आपण जागरूकतेने पाहणे आवश्यक आहे. ते आपले कर्तव्यच आहे. आणि त्याठी विद्यार्थी आणि शिक्षक यांच्यात आत्मीयता, भावनिक संबंध निर्माण होणे आवश्यक आहे. ते आपले कर्तव्यच आहे. जो पर्यंत विद्यार्थ्यांना प्रत्यक्षात समोर बघून शिकवत नाही तो पर्यंत अध्ययन व अध्यापनाच्या प्रक्रियेत सजीवता निर्माण होत नाही. प्रत्यक्ष अध्यापनामुळे विद्यार्थी व शिक्षण साधला जाणारा भावनिक संवाद हा एक महत्वाचा भाग असतो. तो दुर्लक्षित करून चालणार नाही. शिक्षक व विद्यार्थी व शिक्षक साधला जाणारा भावनिक संवाद हा एक महत्वाचा भाग असतो. तो दुर्लक्षित करून चालणार नाही. शिक्षक व विद्यार्थ्यांच्यामध्ये होणाऱ्या प्रत्यक्ष आंतरक्रिये शिवाय अभ्यासातील अडचणी, समस्या सोडवता येणे शक्य नाही. तसेच विद्यार्थी 90% त्याच्या अनुभवातून शिकत असतो. पण ऑनलाईन पध्दतीत विद्यार्थ्यांच्या अनुभवाच्या कक्षांचाच संकोच होतो. प्रत्यक्ष संवाद नसल्याने शिक्षकांनी केलेले अध्यापन विद्यार्थ्यांना समजले की नाही याचा उलगाडा होत नाही. तसेच शिक्षकांना शिकवण्याचे समाधान मिळत नाही.

शिक्षणास लागणारे मोबाईल, संगणक इ. साधने गरीब विद्यार्थ्यांना सहजा सहजी उपलब्ध होऊ शकत नाही. त्यामुळे त्यांच्यात न्यूनगंड निर्माण होण्याची शक्यता असते. तसेच वीज पुरवठा, नेट, रेंज इ. च्या उपलब्धतेत ग्रामीण भागातील अडचणी निर्माण होतात. त्यामुळे विद्यार्थी शिक्षणपासून वंचित राहतात कारण व्हिडिओ डाऊन लोड करणे, लिंक ओपन न होणे, मिट सुरू असतांना मध्येच संपर्क तुटणे इ. समस्या उद्भवतात. तसेच या शिक्षणाचे इतरही दुष्परीणाम आहेत जसे.....

- डोव्यांचे, कानांचे विकास तसेच पाठदुखीअसे आजार उदभवू शकतात.
- व्हिडिओ मुळ शिक्षक काटेकोर पण विषयावरच बोलतात त्यामुळे रटाळपणा वाढला.
- विद्यार्थी अधिक काळ ऑनलाईन असल्यामुळे अध्ययनाव्यतिरिक्त इतर आक्षेपार्ह विंडोज उघडली जाण्याची शक्यता वाढली आहे.
- विद्यार्थी खरोखरच अध्ययन करतो आहे की नाही, हे समजू शकत नाही.
- ऑनलाईन टिचिंग मुळे विद्यार्थ्यांत स्वमग्नता येण्याची शक्यता असते. असे मत मानसशास्त्रज्ञांनी देखित मांडले आहे.

असे संगीत शिक्षणाचे एकंदरीत स्वरूप असले तरी काही काळात जाता परिस्थिती सामान्य झाल्यानंतर प्राप्त संसाधनासह मनुष्य आहे त्या परिस्थितीवर मात करण्यासाठी काहीतरी उपाय योजना नक्कीच शोधून काढेल या बदल आपण सर्वांनी आशावादी राहूया.

Real 20-21



SRJIS
www.srjis.com

IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 Online ISSN 2278-8808
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL - JUNE, 2021, VOL - 10, ISSUE-47



Indian Social & Research Foundation Akola .

ARTS COLLEGE MALKAPUR, AKOLA

(Accredited By NAAC With "B" Grade)
Department of Music & IQAC Organizing



In Collaboration with

Sharda Sangeet - Kala Academy Indore (M.P.)

One Day National E- Conference

**Contribution of Modern Technology in Globalization
& Development of Music & All Interdisciplinary
Subjects**

Editor-In-Chief

Asso. Prof. Dr. Yashpal D. Netragaonkar

MIT World Peace University School of Education,
Kothrud, Pune

Editor

Dr. Gitali S. Pande

Principal, Head of Music Department,
Arts College Malkapur, Akola (M.S.)

Co-Editor

Dr. Sunil B. Patake

Department of Music Arts College
Malkapur, Akola (M.S.)

SCHOLARLY RESEARCH JOURNALS

S. No. 5 + 4/5 + 4, TCG'S, Saidatta Nivas, D-wing, Ph- II, 2nd Floor,
F. No. 104, Nr. Telco Colony & Blue Spring Society,
Dattanagar, Jambhulwadi Road, Ambegaon (BK), Pune - 411046,
Website: www.srjis.com

Editorial Board

Editor-In-Chief

Dr. Yashpal D. Netragaonkar
*Associate Professor, MIT World Peace
University,
School of Education, Kothrud, Pune.*

Editor

Dr. Gitali S. Pande
*Principal
Head of Music Department,
Arts College Malkapur, Akola (M.S.)*

Co-Editor

Dr. Sunil B. Patake
*Department of Music
Arts College Malkapur, Akola (M.S.)*

Review Committee

Dr. Gitali S. Pande
Asst. Prof. Vandana M. Deshmukh
Dr. Sunil B. Patake
Dr. Dilip Surywanshi
Dr. Dipali Gawande

Dr. Pradip Taktode
Asst. Prof. Pravin Ugale
Dr. Seema Kale
Dr. Anuprita Mapari
Asst. Prof. Jayshri Chaturkar

Advisory Board

Dr. Bhojraj Choudhari
Dr. Kaumudi Barde
Dr. Kishor Deshmukh
Dr. Shirish Kadu
Asst. Prof. H. K. Mankar
Dr. Sopan Watare
Dr. Vanita Bhopat
Asst. Prof. V. Korde
Dr. Varsha Kulkarni
Dr. Snehal Dahale
Dr. Prashant Bagade
Dr. Netra Telharkar
Dr. Vrushali Deshmukh
Dr. Mrunal Kadu
Dr. Rajesh Umale

Dr. KamalTai Bhonde
Dr. Bageshri Joshi
Dr. Minal Thakare
Dr. Snehal Shembekar
Dr. Umesh Chapke
Asst. Prof. N. Bhadke
Dr. Ajay Solanke
Asst. Prof. A. Gawande
Asst. Prof. M. D. Baswant
Dr. Gajanan Lohate
Asst. Prof. Uttara Tadawi
Asso. Prof. Aruna Harley
Asst. Prof. S. Khandare
Dr. Sachin Bandgar
Asst. Prof. Vidya Gawande

Dr. Rajendra Deshmukh
Dr. Chandrakiran Ghate
Dr. Snehashish Das
Dr. Archana Ambhore
Dr. Dhanashri Pande
Asst. Prof. Vivek Chapke
Asst. Prof. Sumedh Sagne
Asst. Prof. Anil Nimbalkar
Dr. Sadhana Mohod
Dr. Jayshri Kulkarni
Dr. Yogini Sontakke
Dr. Prasad Madawi
Asst. Prof. Sonali Asarkar
Asst. Prof. S. Manwar
Asst. Prof. S. Wawarkar

Dr. Abhay Gadre
Asst. Prof. Pravin Alashi
Asst. Prof. C. Mendole
Dr. Priti Kulkarni
Asst. Prof. D. Bompilwar
Dr. Pournima Diwase
Dr. Mukta Mahalle
Dr. Sunil Kolhe
Asst. Prof. R. Sarkate
Dr. Rajiv Borkar
Dr. Ankush Giri
Dr. Sharmila Deshmukh
Dr. Prachi Halgawkar
Asst. Prof. S. Jamdade
Asst. Prof. S. Dhandare

9. SAMA AND PRAMA- AN INDIAN CLASSICAL MUSIC PERSPECTIVE <i>Dr. Neha Joshi</i>	51-58
10. GLOBAL PERSPECTIVES OF LAYA: TALA AND RHYTHM <i>Miss Sanjana Kaushik</i>	60-67
11. AN ECO-CRITICAL ANALYSIS OF CLIMATE CHANGE IN AMITAV GHOSH'S FICTION <i>Sushma Mahato & Dr. Omprakash Tiwari</i>	68-77
12. MODERN TECHNOLOGY IN GLOBALIZATION & INDIAN AGRICULTURE SECTOR <i>Prof. Swapnil Fokmare</i>	78-81
13. THREAT PERCEPTION TO CIVIL AVIATION <i>Gireeshan. P & Dr. Beulah Shekhar</i>	82-92
14. TQM and Quality circle in college libraries <i>Dr. Seema Madhukar Kale</i>	93-96
15. DIGITAL ARCHIVES FOR PRESERVATION OF INDIAN CLASSICAL MUSIC <i>Debverna Karmakar</i>	97-105
16. EFFECT OF FRESH WATER ALGAE EXTRACT ON GROWTH OF LEAFY VEGETABLE SAFFLOWER-CARTHAMUS TINCTORIUSL <i>D. N. Gholap, B. K. Auti & A. S. Wabale</i>	106-111
17. SOCIAL ISSUES AND HUMAN RIGHTS <i>Dr. Chandrakant D. Kamble</i>	112-116
18. CURRENTLY TECHNICAL EDUCATION SYSTEM IN INDIAN MUSIC <i>Dr. Umesh Santoshrao Chapke</i>	117-123



TQM AND QUALITY CIRCLE IN COLLEGE LIBRARIES

Seema Madhukar Kale, Ph.D.

Arts College, Malkapur Akola

Abstract

This paper discusses application of management techniques in library operations. Principles of Total Quality Management have been discussed. The concept of quality circle has been discussed which has stressed on the concept of the self - control for quality library services. The success of quality circle is specific form of small group, which meet together on the regular basis for the purpose of identifying, selecting, analyzing and solving problems, productivity and cost reduction in services and user satisfaction. It aims continuous improvement in the work effectiveness and enrichment of knowledge of people working in library.



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

Introduction :

Application of management principles and techniques in every sphere of activity has got importance in the information age. The ideas behind quality management are essentially every day concepts applied common sense and every day actions help to illustrate the key ideas behind the work. Total Quality Management is the outcome of the any management activity.

According to Jurow & Barnard (1993) TQM is a system of continuous improvement employing participative management and centered on the needs of customers.

Mr. Tann suggests in a paper concern with the application of ISO 9000 - 9004 quality assurance standard to libraries that fitness for purpose would include:

- Knowledge the users needs stated.
- Good Housekeeping.
- Reliable equipment.
- Efficient administration.
- Helpful staff.
- Efficient backup services.
- Monitoring and evaluation including users* expectations] complaints,

recommendations for improvement.

A quality manual containing the organizations quality policy and objectives together with statements of who is responsible for what within the quality systems including organization charts and a description of quality system itself. This is usually a quite short document but

crucially it demonstrates in writing, management commitment to the quality system. It also indicates the scope of the application; it is perfectly possible to seek certification to the standard for any one or more parts of the organization activities.

The total quality management has been appropriate by so many different vested interest that it has become difficult to identify precisely what it means. The British standard - 7850 has define

Total quality management: Management philosophy and company practices that aim to harness the human and material resources of an organization in the most effective way to achieve the objectives of the organization.

Objectives, Principles:

According to Tanner and Deter, the TQM is biased on:

- One objective continuous improvement.
- Three principles:-Customer focus, process improvement and total involvement
- Six supporting elements: leadership, education and training, a supportive structure communications, rewards and recognition and measurement.

The progress and development of any organization including library can Judged by measuring the achievement through the objectives set up for the Library, therefore one must be clear in his mind the basic objectives of the College library.

Objectives of Library:

(1) To make selection, acquisition and provision of all records, live and growing collection of all information sources. To meet curricular needs and requirements of users for study and research by way conventional and non- conventional methods such as resource sharing and networking. To provide information for courses conducted in colleges and provide information to faculty members to help them to update in their subject.

(2) To stimulate awareness of library facilities by providing current awareness Service to faculty members and by providing user education persuading Students from potential to actual users for effective use of library resources, services and ultimately optimum use of library collection.

(3) To anticipate demanded and acquire reading material in subjects to be introduced in college in the due course of time.

(4) To provide information about recent advancements in the different subjects in order to develop the career of students for job opportunities and self- education

on the principle of self control by a group of people. It's aim is to provide all the means by which employees can control their own performance both individually and in group based activities.

Conclusion

Quality circle has to seen a management philosophy stating the purpose. Establishing the goals and formulating the policies which are concerned to library management.

Quality circle essentially a participatory management process . The quality circle is a specific form of small group activity.

In quality circle brainstorming is most important tool. Which can successfully assist in process of quality circle operation. Brain storming technique is use for problem identification. This concept will be very effective in modern libraries.

References:

Barnard, Susan B. *Total quality management In : encyclopedia of library & Information sci.*
1998, p.p.312

lyngar.sj *What is quality? personnel today (India). 4 (3) 1983PP13-14*

Saxena. A. N. *Quality circle - key to new culture Quality circles India 5 (2) Apr June. 1987.*
PP17-20

Web used www.encyclopaedia.com

Referred web www.amazon.com

Kale 20-21

WWW.VIJR.ORG



ISSN 2319-4979

Online & Open Access

VIDYABHARATI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

- Home
- About Us
- Editorial Board
- Authors Guidelines
- Indexing of Journal
- Submit Your Articles
- Current Issue
- Copyright Form
- Special Issue

Archives:

- June 2012
- Dec 2012
- June 2013
- Dec 2013
- June 2014
- Dec 2014
- June 2015
- Dec 2015
- June 2016
- Dec 2016
- June 2017
- Dec. 2019
- March 2020
- June 2020
- Sept 2020

www.vijr.com

Volume 12 Issue 04
September 2020

A JOURNAL OF

- SCIENCE
- ENGINEERING & TECHNOLOGY
- ARTS & HUMANITIES
- COMMERCE & MANAGEMENT

www.vijr.org

Web Designed by Dr. Navin Jambhekar

04 International

Impact Factor.

CONTENTS

INDIA'S ENERGY DIPLOMACY IN CENTRAL ASIA: CHALLENGES AND OPPORTUNITIES

A.L. Kurian

A COMPREHENSIVE REVIEW OF PROPELLANTS USED IN CRYOGENIC ROCKET ENGINE

J. Verma, A.P. Singh and D. Sharma

IMPACT OF INDUSTRIAL WASTE ON WATER QUALITY AROUND MAHAD MIDC AREA DISTRICT RAIGAD MAHARASHTRA

S.S. Kulkarni and R.P. Chavan

ECONOMIC SLOWDOWN, PANDEMIC AND UNCERTAINTY: CHALLENGES OF INDIA

D. Ashraf and B.P. Sahoo

ANALYSIS OF COMPARATIVE PERFORMANCE OF CHANNEL ESTIMATION IN LTE+ SYSTEMS

A.D. Redaga and R. Kumar

MORPHOLOGICAL, ANATOMICAL AND ECOLOGICAL STUDIES OF SELECTED MANGROVES OF PADNOKAT AREA, KERALA

P.K. Prajith and A.R. Anil

RISK MANAGEMENT PRACTICES IN CONSTRUCTION INDUSTRY IN NIGERIA

G. A. Shamsi and W. Wang

SOUTH AFRICA -USA COOPERATION TO COMBAT HIV/AIDS, (1994-2018)

Savita

A BLIND HITTING NAIL: A REVIEW ON GENOMIC MEDICINE

S.S. Shukla, A.A. Jha, V.V. Pathaniker, T.A. Nishankar

TO STUDY AN AWARENESS, EFFECTIVENESS AND PREFERENCE OF CONSUMERS TOWARD VARIOUS TYPES OF HAND SANITIZER USED DURING COVID-19

N.R. Joshi and K. Parmer

HUMAN IMPACT ON WETLAND-A CASE STUDY OF HIMALABEEL, NAGAOIN DISTRICT, ASSAM

S.S. Hazarika and B. Singh

ANALYSIS OF TRUTH, CAUSALITY AND MARGINALIZATION OF WOMEN IN THE CONTEXT OF AN ASIAN MOVIE

M. Das

A COMPARISON OF FEATURES FOR VOICE ACTIVITY DETECTION - A REVIEW AND SOME EXPERIMENTAL RESULTS

J. Homatheppanavar and B.G. Nagaraja

ALIENATION AMONG ADOLESCENTS IN RELATION TO FAMILY ENVIRONMENT

S. Thakur and K.K. Ghosal

ALLEVATION OF RURAL POVERTY - A NEED TO BOOST ECONOMIC DEVELOPMENT

S.S. Datta

CHALLENGES AND OPPORTUNITIES IN HIGHER EDUCATION DURING PANDEMIC AND POST PANDEMIC INDIA

S.P. Prasad and R. Jaisankar

AN ASSESSMENT OF FINE HAND COORDINATION OF SCHOOL GOING CHILDREN IN INDIA

Padmakar and S. Madhurya

THE EFFECT OF SCIENTIFIC TRAINING PROGRAM ON SELECTED VARIABLES OF FEMALE STUDENTS

S. Prithvi, K. Poornima and V. Pawan

ESSENTIAL HEALTHCARE POLICIES AND NURSING AWARENESS

S. Jyoti, S. Singh and A. Singh

RAYBHAN JADHAB: A DYNAMIC ACTIVIST IN A SHREYANITE MOVEMENT

S. Mahesh and A. D. Fulzakar

STUDY OF PERCENTAGE OF OBSE PEOPLE IN LOCALITY OF WAN - YANATMAL DISTRICT, M.S.

R.R. Kamde, T.A. Dhadke, H.B. Pardole and P.K. Amarnath

COTTON CULTIVATION AND TRADE IN VIDARSHA UP TO 1947

S. Mahesh and A.D. Fulzakar

UNDERSTANDING THE SIGNIFICANCE OF PLYOMETRIC TRAINING IN ENHANCEMENT OF SPORTS PERFORMANCE: A

SYSTEMATIC REVIEW

V.S. Galoty, R. Poornima and M. Singh

RELATIONSHIP BETWEEN FOREIGN DIRECT INVESTMENT AND ECONOMIC GROWTH: A COMPREHENSIVE REVIEW OF

LITERATURE

B.A. Joo and S. Shawl

PERCEPTION OF PHYSIOTHERAPISTS OF ASSAM, INDIA TOWARDS THE DELIVERY OF COMBINED KINETIC CHAIN

EXERCISES VIA TELEHEALTH ABILITATION IN KNEE JOINT OSTEOARTHRITIS

M. Koch and P.C. Sarma

AN ANALYSIS OF FOREIGN DIRECT INVESTMENT IN INDIA: POST LIBERALIZATION ERA

A. Uppal

RESILIENCE IN THE TIMES OF CRISIS BY RETAIL SECTOR LEVERAGING DIGITAL TECHNOLOGIES: A LITERATURE REVIEW

S.M. Khadikar

PROBLEMS AND PROSPECTS FOR REAL ESTATE INDUSTRY IN INDIA POST RERA

S.A. Tapaswari and B.M. Khadikar

A STUDY OF THE IMPORTANCE OF BRAND SUSTAINABILITY FOR ORGANIZATIONS WHO ARE DECLINING IN MARKET SHARE

AND GROWTH

P. Kumar and B.M. Khadikar

REAL ESTATE REGULATION ACT (RERA), 2016: COMPENDIUM OF INSTANT REACTIONS IN LITERATURE AND MEDIA

S.A. Tapaswari and B.M. Khadikar

USE OF LIBRARY BY AGRICULTURAL RESEARCHERS

S.M. Kalo

USE OF LIBRARY BY AGRICULTURAL RESEARCHERS

S.M. Kale

Arts College Malkapur, Akola MS, India
Kalesecma092@gmail.com

ABSTRACT

This study examines the use of library by Agricultural Researchers in Dr. Punjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth, Akola. This study analyses a sample of 145 Agricultural Researchers out of which 25 are female and 120 are male. The data reveals that Agricultural Researchers are mostly dependent on online group membership, use of reading room, information centre, and use of internet. The results also indicate that the major source of information for Agricultural Researchers are E - Sources with internet as the predominant media for seeking information.

Keywords: *Agricultural Researchers, use of information, information seeking.*

In the era of information technology information either evaluative quantitative, descriptive is at the tip of fingers for users. It has very much benefitted to the Researchers as any Research published, unpublished is available for reference. It has brought knowledge and information closer hence these words have become synonymous. Knowledge benefits donor as well as receiver as it doubles. Knowledge importing saves time. Information technology has positive impact on. Library and Library science; as concepts of information have changed as e-books, e-library.

Information Sharing's continuous process and as such doors of Library are opened 24 hours for information seeking. Libraries and librarians are playing major role as information provider as user is at the end of this link.

Presently e-libraries are not only used for research but also for business purchase social workers are seeking information as per their need. However, Researchers needs are changing as per his / her Research area. Researchers are critical users of information.

Research broadly classified as Basic research and Applied Research. Basic Research is relatively less then applied hence the focus on availability of fundamentals for its applicability as per space and time proves and confirms utility.

Informally information is circulated through news, letters, E- mails, Seminars, Workshops, Group meetings. Such groups are known as invisible colleges. These Colleges are the sources of recent techniques methods and research for information libraries should help

in providing information gathered in invisible colleges for researchers.

Dr. Rangnathan very rightly pointed out that Libraries should be aware of researchers mental ability and requirement it will help in strengthening Library facilities to meet the users requirement.

Present study is an attempt to study the information seeking behavior of Agricultural Researchers with following objectives: -

Objective

- 1) To study the information seeking behavior of Agricultural Researchers.
- 2) To know the utility of E - Sources for Agricultural Researchers.

Hypothesis

- 1) Agricultural Researchers still rely on traditional methods of information seeking
- 2) Agricultural Researchers are aware about E - Sources Utility.

Review of Literature

Premmit (1990) Studied the use of information by medical students in Thailand. Medical students are in need of latest information in their field for further Research. As such Researchers prefer to refer latest magazines, Journals for seeking information.

Makanzgier (1995) Studied the information seeking behavior of International students in cent state university. Students in the age group of 25 - 30 years was targeted mob about 79% students used information available in university library.

Dull (2001) Conducted study in Tanzania on information seeking behavior of Agricultural Researchers. The study concluded that information stored in the Libraries could not meet. The requirement of Agricultural Researchers. Researchers feel Librarians should update their Libraries as per the need of Researchers.

Abim bola Abi Farin (1994): Studied Demand of Agricultural students in Nigeria. Students from five universities were selected for the study. The study concluded that students are least interested in using information available with Libraries. Library staff failed in providing available information as it was not cataloged systematically.

Methodology

Present study is conducted in Dr. Panjabrao Deshmukh Krishi Vidyapeeth, Akola A Sample of 145 Agricultural Researchers 25 Female and 120 male was selected for the study From Akola, Amravati, Nagpur and Solapur. Information on need use and information seeking behavior was connected personally with the help of pre tested questionnaire.

Results and Discussion

Agricultural Researchers are fully aware about on line information and on line information groups such membership helps in imparting / sharing information.

Table 1: Members of on Line Group

Sr. No	Particulars	Frequency	Percent
1	Yes	93	64.13
2	No	40	27.58
3	No Response	12	8.29

The table concludes that about 2/3 rd of respondent researchers are members on line group.

Table 2: Reading room use by Agricultural Researchers.

Sr. No	Response	Frequency	Percent
1	Yes	97	66.90
2	No	48	33.10

Reading Room facilities are availed regularly by about 67 percent of Agricultural Researchers.

Table 3: Preference given by Researchers in information seeking ANOVA

Source	D. F.	S. S.	M. S. S.	F Value
Between Group	5	176.91	35.38	12.95
Within Group	864	2360.59	2.73	

The Significance of ANODA concludes that place of researcher have Significant impact on information Seeking. Researchers at Dr. PDKV Akola Campus have wider preferences than other Researchers.

Table 4: Information Seeking Preferences by Researchers.

Sr No	Particulars	Mean	S. D.	T Value
1	Self Library	3.16	1.73.	1.39 NS
2	Information Centre	3.44	1.63	3.85 **
3	Library	3.85	1.42	0.73 N. S.
4	Internet	3.99	1.73	6.55 **
5	Catalogue	3.83	1.76	0.77 NS
6	Other	2.71	1.58	0.92 NS

Researchers have highest preference in information seeking followed internet centre.

Conclusions

1. Agricultural Researchers are mostly dependent online group membership, use of Reading room, information centre and use of internet.
2. The major source of information for Agricultural Researchers are E- Sources with internet as Media of information used predominantly.

References

1. Bola A. & Farim A. (1994). Information seeking behavior of agricultural students in selected Nigerian universities journal Of Library and information science 19 (2)
2. Dull (2001). Research Perspective on agricultural Libraries as information sources in Tanzania, Library review 50 (3-4) 187 - 92
3. Mackenzie (1995). Survey of Library and information needs of the international students and Kent state university, masters research paper, Kent university ERIC, Accession no Ed 309410.
4. Premssmit P. (1990). Information needs of academic medical scientists at chulalong korn university bulletin of Medical library association 78, (4) 383 – 387.

डॉ. दीपाली प्र. गांवडे (मराठी)

गांवडे मंत्र 20-21

12. आधुनिक तंत्रज्ञान व शास्त्रीय संगीत... प्रा. डॉ. राहुल काशिनाथराव एकबोटे	546-548
13. जागतिकीकरण आणि संगीताच्या विकासात आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान जानेश्वर बांपोलवार	549-552
14. संगीताचे जागतिकीकरण व विकास यामध्ये आधुनिक तंत्रशास्त्राचे योगदान डॉ. रश्मि शैलेश देशपांडे	553-558
15. संगीताच्या विकासात आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान प्रा. चंद्रशेखर हि. मेंडोले	559-562
16. विदर्भातील दलितरत्न : श्री. किसन फागुजी बन्सोड प्रा. डॉ. अरुण एन. फरपट	563-568
17. सांगीतिक वाद्य व मानवी जिवन प्रा. संतोष मुकिंदा धंदरे	569-572
18. वाचनसंस्कृती वाढीसाठी ग्रंथालयातील उपक्रम आणि योगदान प्रा. मंगेश वामनराव वागडे	573-577
19. आधुनिक तंत्रज्ञाना अंतर्गत समाजाचा विकास - एक आढावा Ku. Snehal Rameshwar Khandare	578-583
20. जागतिकीकरण आणि कृषी क्षेत्रातील बदल प्रा. नंदकिशोर प्रेमचंद सिंगाडे	584-589
21. ध्वनी प्रदुषणाचे पर्यावरणावर संगीतावर होणारे परिणाम व उपाययोजना डॉ. वैशाली सदाशिवराव चौरपगार	590-592
22. मराठी साहित्य आणि जागतिकीकरण प्रा. ए. बी. भावसार	593-599
23. मराठी कादंबरी स्वरूप आणि वैशिष्ट्ये डॉ. दीपाली प्र. गांवडे	600-605

मराठी कादंबरी स्वरूप आणि वैशिष्ट्ये

डॉ. दीपाली प्र. गांवडे

सा. प्राध्यापक, विषय मराठी, कला महाविद्यालय, मलकापूर, अकोला, जि. अकोला

Email: dipali.nagpure1976@gmail.com

Abstract

कादंबरी हा अतिशय लोकप्रिय व प्रतिष्ठित असा साहित्य प्रकार आहे. का.बा. मराठे यांनी कादंबरीला मराठीत नावल हा शब्द सूचविला आहे. तसेच इतर मान्यवरांनीही कादंबरीला अनेक पर्यायी शब्द सुचविले आहेत. १९ व्या शतकात उदयास आलेला हा साहित्य प्रकार इंग्रजी राजवटीने आणलेल्या मुद्रण कलेने अधिकाधिक विकसित होऊ लागला. कादंबरी हा कथानकप्रधान वाङ्मय प्रकार असून घटना, पात्रे, भाषा व सैली वातावरण व निवेदन हे कादंबरीचे प्रमुख होत. कादंबरीमध्ये लेखकाच्या कल्पनेला व अद्भूततेला अतिशय वाव असतो. मानवी जीवनाला कल्पनेची किनार देऊन कलात्मक रीतीने मांडण्याचे काम कादंबरी करते. कादंबरीतील कथानक हे गोष्टीतूनच घडत असलेले असले तरी कथानकातील गोष्ट व गोष्ट यात फरक असतो. गोष्ट ही कालप्रमाणे फक्त सांगितलेली असते तर कथानकातील गोष्ट ही कालक्रमाने सांगितलेली असतेच पण सोबतच त्यामागील कारणनिमांसाही दिलेली असते. म्हणजेच येथे तार्किक बांधणी अपेक्षित असते. कादंबरीतील कथानकाला एक संरचना असल्यामुळे त्याला निश्चित असा आदि-मध्य व अंत असतो. कथानकांसोबत वातावरण व भाषा या घटकांनी कादंबरीत महत्त्वाचे स्थान आहे. विशेषतः प्रादेशिक कादंबरीत निवेदन हा तर कादंबरीचा आधारभूत घटकच होय. प्रथम पुरुषी व तृतीय पुरुषी अशा दोन प्रकारे कादंबरीत निवेदन केलेले असते. कादंबरीच्या घडणीवरून तिचे सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, प्रादेशिक, काव्यात्मक, आत्मचरियात्मक, संज्ञाप्रवाह इ. स्वरूप ठरते व या स्वरूपावरूनच तिचे वर्गीकरण केल्या जाते. कादंबरी हा खुप मोठा काळ व अवकाश व्यापणारा कथात्म साहित्य प्रकार आहे. आज काळाबरोबर तिच्यातही अनेक बदल व विकास झालेला दिसतो.



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

कादंबरी हा अतिशय लोकप्रिय व प्रतिष्ठित असा साहित्य प्रकार आहे. कादंबरी या शब्दाचा इंग्रजी पर्यायी शब्द म्हणजे ष्छवअमरसण याच शब्दावरून मराठीत कादंबरीसाठी 'नावल' हा शब्द का.बा. मराठे यांनी सुचविला. नावल म्हणजे नवलपूर्ण कथा तर हिंदी भाषेत कादंबरीला उपन्यास म्हणतात. उपन्यास म्हणजे जवळ बाळगण अथवा समोर मांडणे. कादंबरीत मानवी जीवन किंवा एखादे तत्व समोर मांडलेले असते.

१९ व्या शतकापासून उदयास झालेला हा साहित्यप्रकार आज बराच विकसित झालेला दिसतो. इंग्रजी राजवटीने आणलेल्या मुद्रण कलेने मराठी गद्य वाङ्मयाचा विकास घडवून आणला. मराठी गद्य वाङ्मयाचा विकास आणि इंग्रजी वाङ्मयाचे अनुकरण या दोन गोष्टीने कादंबरी हा वाङ्मय प्रकार आपल्याकडे रूढ झाला. याआधी प्राचीन मराठी वाङ्मयात आध्यात्मपर व भक्तीप्रवण पद्य परंपरा अशा मुख्यता दोन परंपरा प्रचलित होत्या. अल्प अशी गद्य परंपरा प्रचलित होती. परंतु कादंबरी या वाङ्मयप्रकाराने ती अधिकाधिक समृद्ध होऊ लागली.

कथानकप्रधान या कादंबरी वाङ्मयाप्रकाराच्या पाऊलखुणा पूर्वीच्या वाङ्मयप्रकारात शोघायच्या झाल्या तर आरण्यान काव्याच्या रूपाने दिसून येतात. गोष्ट सांगणे व ती ऐकणे ही मानवाची पुरातन प्रवृत्ती त्यामुळे त्याने ही भूक पोथ्या-पुराण, आरण्याने यातील कथा व लोककथा याद्वारे भागविली. आरण्याने, लोककथा, बखरी इ. मध्ये कादंबरीची काही वैशिष्ट्ये दिसत असली तरी मराठी कादंबरी खऱ्या अर्थाने अस्तित्वात आली ती इंग्रजी राजवटीतच.

मानवी जीवनाला कल्पनेची किनार देऊन कलात्मक रीतीने मांडण्याचे काम कादंबरी करते. म्हणूनच इंग्रजीत कादंबरीला थपबजपवद या नावानेही ओळखले जाते. मराठीत एका विशिष्ट तऱ्हेच्या कल्पित कथेला कादंबरी हे नाव बऱ्याच पूर्वीपासून रूढ असल्याचे दिसते. १९३३ मध्ये प्रकाशित झालेल्या 'महाराष्ट्र भाषेचा कोश' या ग्रंथात कादंबरी या शब्दाचा अर्थ 'कल्पित कथा', सुंदर, मनोरंजक, अद्भूत रसमय गोष्ट असा दिलेला आहे. तसेच कथानक, व्यक्तीचित्रण, लेखकाचा दृष्टीकोन व यांना अनुरूप अशी निवेदनतंत्रे, वर्णने, वातावरणनिर्मिती, भाषाशैली इ. घटकांनी गद्यात विस्तृतपणे संघटीत केलेले वास्तव जीवनाचे चित्रण म्हणजे कादंबरी होय. असे रा.ग. जाधव म्हणतात. बापट व गोडबोले यांनी कादंबरीचे स्वरूप स्पष्ट करतांना कादंबरीला गद्यवाड, मयविभाग हे दोन शब्द वापरले आहे. कादंबरी हा जीवनप्रवाहाबरोबर चालणारा, वाढणारा, बदलत जाणारा असा साहित्य प्रकार आहे. घटना, कथानक, पात्रे, निवेदने, निवेदनशैली भाषा इ. घटकांनी कादंबरीची सरचना घडत असते. सुपरिचित व अतिशय लोकप्रिय असा गद्य साहित्यप्रकार म्हणजे कादंबरी होय.

पाश्चात्म कादंबरी जन्माला आल्यानंतर तिला 'नॉव्हेल' संबोधिले जाऊ लागले. कारण ती आधीच्या सर्व वाङ्मयीन परंपरा व कल्पना यांच्यापेक्षा महाकाव्य, नाटक, आरण्याने इ. प्रकारापेक्षा नवे वेगळे रूप धारण करणारी होती. नॉव्हेल या शब्दाला 'कादंबरी' हा पर्यायी शब्द रूढ करतांना अद्भुत प्रणयरम्य कथा हे कादंबरीचे स्वरूप डोळ्यासमोर होते. कादंबरी या वाङ्मयप्रकाराची व्याख्या करण्याचा प्रयत्न अनेकांनी केला असला तरी तिची सर्वसमावेशक व परिपूर्ण व्याख्या करणे कठीण आहे. कारण कादंबरी हा लवचिक व सर्व समावेशक साहित्य प्रकार आहे जास्तीतजास्त पैलू समावेशून घेणारा हा साहित्यप्रकार सर्वसामान्य व्याख्येत न बसणारा असला तरीही कादंबरीच्या काही व्याख्या करण्याचे प्रयत्न झाले आहे. त्या प्रयत्नापैकीच एक प्रयत्न म्हणजे कॉमरीन लीदर यांनी केलेली कादंबरीची व्याख्या जास्तीतजास्त समावेशक आहे. ती व्याख्या पुढीलप्रमाणे दिसून येते.

“कादंबरी म्हणजे कथनात्म लिखित गद्याचा आवाक्यापैकी दीर्घ म्हणता येईल अशा लेखकाने निर्मिलेल्या नव्या आणि कल्पित वास्तवात वाचकाला गुंतवून टाकणारा रचनाबंध होय.” कादंबरी कथानकप्रधान साहित्यप्रकार असून तो लिखित असल्यामुळे त्याला निश्चित असा आरंभ, मध्य व अंत असतो. कादंबरीचे कलात्मक यश यावरच अवलंबून असते.

कादंबरीचे एक वैशिष्ट्य म्हणून कथनकार व त्याने केलेले कथन याकडे पाहता येईल. इतर काव्यनाटयादी वाङ्मयाप्रकारापेक्षा वेगळे असणारे कादंबरीचे हे एक महत्वाचे वैशिष्ट्य म्हणता येईल. जसे नाटकात कोणताही

व्यक्ती कथन करीत नसते तर व्यक्तिच्या कृतीच तिथे दाखविल्या जातात. प्रत्यक्ष बघितलेल्या कृतीच्या व संवादाच्या आधारे वाचक व प्रेक्षक नाटकातली कथा स्वतः समजावून घेतो. नाटकात कथा असतेच पण कथनकारांपेवजी कृती व संवादाच्या आधारे वाचक व प्रेक्षक तर्क काढीत असते. याउलट कादंबरीत कथनकार स्वतः कथन करीत असल्याने अनेक गोष्टी तो सांगत जातो. कादंबरीच्या माणसाविषयी, त्याच्या कृतीविषयी, वाचकाला जे कुतूहल असते ते पूर्ण करण्याचे काम कथनकार करत असतो. काय घडले आहे जे घडले ते तसेच का बर घडले ? ते कुठे घडत आहे याचे देखील वर्णन कादंबरीकार करत असतो. म्हणजेच कथनाबरोबरच वर्णन, संवाद, स्पष्टीकरण आणि भाष्य हेही कादंबरीचे विशेष असतात. सोबतच आणखी एक विशेष म्हणजे कादंबरीने 'नवतेची' जाणीव करून दिली पाहिजे. कादंबरीत ही 'नवता' येते ती शैलीच्या ताजेपणातूनच उदा. मराठीतील हरी नारायण, श्री.ना. पेंडसे, भालचंद्र नेमाडे यांनी 'नवता' कादंबरीला प्रदान केली ती त्यांच्या पूर्वीच्या कादंबरीकारांपेक्षा वेगळ्या असलेल्या त्यांच्या शैलीद्वारे. भुतकाळ आणि वर्तमानकाळ ह्यांच्यातील कार्यकारणभाव दाखविणे हे आणखी एक कादंबरीचे वैशिष्ट्य मानल्या जाते. या वैशिष्ट्यामुळेच दीर्घकथा आणि कादंबरी ह्यांच्यातील भेद लक्षात घेतल्या जातो. कादंबरी ज्या परिणामांचा उपयोग करते. त्यांचा उपयोग दीर्घकथाही करू शकते. पण ह्या निरनिराळ्या परिणामांना एकत्रित केल्यास दीर्घकथेतूनच कादंबरी होते.

कादंबरीचा उद्गम कसा झाला याबाबत स्थुलमानाने असे म्हणता येईल की पाश्चात्य देशात १८ व्या शतकात ह्या कादंबरीची वैशिष्ट्ये प्रकट होऊ लागली आणि १९ व्या शतकात एक महत्वाचा कथानक प्रधान वाङ्मयप्रकार म्हणून त्याची दखल घेतली जाऊ लागली. इतर वाङ्मयप्रकारांसोबतच प्रत्येक कादंबरीच्या स्वरूपामध्ये तिचे वेगळे असे स्वतःचे वैशिष्ट्ये सामावलेले असते. कादंबरीच्या ह्या स्वतंत्र वैशिष्ट्यामुळेच एका कादंबरीचे स्वरूप दुसऱ्या कादंबरीपेक्षा वेगळे असते. भिन्न असते. एका पेक्षा अनेक कादंबरीकारांच्या कादंबरीचे स्वरूप वेगळे असते असे नाही तर एकाच कादंबरीकाराने निर्माण केलेल्या कादंबरीचे स्वरूप सुद्धा परस्परांपेक्षा वेगळे असते. म्हणूनच एकाच कादंबरीकाराच्या कादंबऱ्याचे सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, प्रादेशिक, काव्यात्म, आत्मचारित्रात्मक, संज्ञाप्रवाह, विज्ञान विषयक इ. स्वरूप धारण केलेले दिसून येते व या आधारेच कादंबरीचे वर्गीकरण केल्या जाते. प्रत्येक कादंबरीच्या घडणीचे हे स्वतंत्र स्वरूप ज्या प्रमाणात आपल्याला जाणवते त्या प्रमाणात ती कादंबरी आपले लक्ष वेधून घेते. अशा या कादंबरी साहित्यप्रकाराचे कथानक, पात्रे वातावरण, भाषा निवेदन महत्वाचे घटक आहेत.

कादंबरीतील कथानक विशिष्ट कालमर्यादित घडणारे असते. कथानक हे गोष्टीतूनच घडलेले असते. परंतु कथानकातील गोष्ट व गोष्ट यात फरक असतो. गोष्ट ही कालक्रमाने फक्त सांगितलेली असते तर कथानकातील गोष्ट ही कालक्रमाने सांगितलेली असतेच पण सोबतच त्यामागील कारणमिमांसाही दिलेली असते. म्हणजेच गोष्टीत पुढे काय झाले हा प्रश्न असतो तर कथानकात असे का झाले हा प्रश्न असतो. एम फॉर्स्टर यांनी गोष्ट (स्टोरी) आणि कथानक (प्लॉट) यांच्यातला फरक स्पष्ट करतांना घेतलेले उदाहरण

सर्वपरिचित आहे. 'राजा मेला आणि त्यानंतर राणी मरण पावली' ही गोष्ट आहे. परंतु राजा मेला आणि नंतर त्या दुःखाने राणी मृत्यू पावली हे कथानक आहे. कथानकाचे शिथिल, गुंतागुंतीचे, स्वच्छंदी, वास्तव असे अनेक प्रकार असतात तर कधी एकाच कादंबरीत त्यांची मिश्रणेही आढळतात. दिवसागणिक कादंबरीच्या स्वरूपात बदल होत गेले. कादंबरीच्या कथानकात काय घडले हे कादंबरीकार निवेदन पध्दतीने न सांगता हळूहळू पात्रचित्रणावर भर देत. एकेका पात्रावर भर देऊन वाचकाला नीट परचित्य घडवून देत पुढे जावे अशी कादंबरीची रचना होऊ लागली आहे. ज्या काही कादंबऱ्या आपल्या लक्षात राहतात त्या त्यातील घटनांमुळे नाही तर त्यातील दर्जेदार पात्रांमुळे लक्षात असतात. कथानकाप्रमाणे 'वातावरणनिर्मिती' ह्या कादंबरीच्या घटकविषयीचीही कल्पनाही दिवसेदिवस बदलत गेलेली दिसते. दर्जेदार कादंबरीनिर्मितीसाठी वातावरण निर्मिती हा घटक प्रभावी ठरतो. त्यामुळे कादंबरीकार या घटकाचा कौशल्याने वापर करतात. कादंबरीतील पात्रे ज्या समाजात वावरतात त्या समाजातील सर्व वस्तू, प्राणी, फळ, फुल, रस्ते, घरे घडणाऱ्या घटना या सर्वांचा समावेश वातावरणनिर्मितीत होतो. कादंबरीतील या वातावरण निर्मितीमागील प्रमुख उद्देश हा कादंबरीच्या भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक घटकाची कल्पना देणे हा असतो. प्रादेशिक कादंबरीत वातावरणनिर्मिती हा घटक अतिशय प्रभावी ठरतो. उदा. उध्व शेळके यांची घग, र.वा. दिघे यांची सराई किंवा गो.नी. दांडेकरांची पडघवली वातावरणात भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रेखाटनासोबतच हवामानातील ढग, विजांचा कडकडाट, भयंकर ऊन, पाऊस थंडी असे हवामानाचे घटकही वापरण्यात येतात व त्यांच्या साहाय्याने भावनांचा ताण चित्रित केला जातो. कादंबरी ही कलाकृती व त्यातही भाषिक कलाकृती असल्यामुळे साहाजिकच कादंबरीत भाषा या घटकाला अन्यसाधारण महत्त्व आहे. लेखक ज्या समाजात वावरतो, त्याचे व्यक्तिमत्त्व याचा प्रभाव भाषेवर पडत असतो. तरीही कादंबरीकाराने कादंबरीत जे विश्व निर्मिलेले आहे. त्या विश्वाची त्यात वावरणाऱ्या माणसाची तिथल्या संस्कृतीला अनुसरणारी भाषा वापरणे अशी अपेक्षा असते. कारण त्यामुळे कादंबरी अधिक वास्तव वाटू लागते. उदा. अनिल बर्वेची 'थॅक्यू मिस्टर प्लाड' जयवंत दळवी यांची चक्र. कादंबरीची भाषा आणि शैली यावरच कादंबरीची परिणामकारकता अवलंबून असते. निवेदनाची भाषा व संवादाची भाषा अशा दोन भाषा कादंबरीत वापरल्या जातात. तसेच कादंबरीच्या प्रकारानुसारही तिच्या भाषेचे स्वरूप वेगवेगळे असू शकते. जसे ऐतिहासिक कादंबरीत इतिहासकालीन असलेले तेव्हाची बोलीभाषा येईल तर ग्रामीण किंवा प्रादेशिक कादंबरीत ग्रामीण किंवा प्रादेशिक बोलीभाषेचा वापर कादंबरीकार करील म्हणूनच कादंबरीची भाषा प्रकारानुसार बदलत असते. पुढे जसेजसे कादंबरीतल्या 'वास्तवविषयी' कल्पना जसजशी बदलत गेली तसतसे कादंबरीच्या 'भाषेचे' स्वरूपही बदलत गेले. कादंबरी हा निवेदन प्रधान साहित्य प्रकार आहे. त्यामुळे निवेदन हे कादंबरीचा महत्त्वाचा आधारभूत घटक आहे. कादंबरीतील हे निवेदन कधी प्रथमपुरुषी तर कधी तृतीयपुरुषी असते. कादंबरीत घडणाऱ्या पात्रांच्या त्यांच्या कृतीचे व घटनांचे निवेदन कधी स्वतः कादंबरीकार करतो तर कधी कादंबरीतील पात्र करत असतात. कादंबरीतील हे निवेदन म्हणजे घडणाऱ्या घटनांचा कालानुक्रम नसतो तर क्रम म्हणजे तार्किक बांधणी तिथे

अपेक्षित असते. 'संज्ञा-संकल्पना कोश' या ग्रंथात निवेदनासंदर्भात म्हणतांना प्र.भा. गणोरकर म्हणतात. "निवेदनात सातत्य व सूत्र असावे लागते. पण क्रम म्हणजे कालानुक्रम नव्हे. क्रम म्हणजे तार्किक बांधणी कार्यकारण भावाने जोडलेली घटनांची साखळी. नेहमीच्या जीवनात कालानुक्रम असतो पण तार्किक सूत्र नसते. कादंबरी आणि आत्मचरित्र यामध्ये फरक पडतो तो यामुळे." (संज्ञासंकल्पना कोश पा.नं. १७७) निवेदनाची विविध माध्यमे असतात. प्रस्तुत करणे म्हणजे आदर करणे इंग्रजीत प्रस्तुतीकरण पध्दतीला चतुर्मेदजंजपवद उमजीवक असे म्हणतात. कादंबरीत निवेदन हे वर्णन, संभाषण, स्वभाषण, भाष्य यांना प्रस्तुतीकरण पध्दती असे म्हटले जाते. कादंबरी हा खुप मोठा काळ व अवकाश व्यापणारा कथात्म साहित्यप्रकार आहे. त्यामुळे कादंबरीत अनेक आशयसूत्रे असतात. कादंबरीतल्या आशयाला नेमके पेलण्यासाठी निवेदनाच्या अनेक पध्दती वापरल्या जातात. अशाप्रकारे कादंबरीचे विविध घटक दिसून येतात.

कादंबरीचे स्वरूप, वैशिष्ट्ये, घटक हे आतापर्यंतच्या निवेचनात आपण बघितले. यावरून सर्वसामान्यपणे आपल्याला कादंबरीच्या संदर्भातील काही निष्कर्ष लक्षात येतील -

- १) कादंबरी हा साहित्यप्रकार १९ व्या शतकापून प्रामुख्याने उदयास आलेला दिसतो.
- २) कादंबरी हा कथानक प्रधान वाङ्मयप्रकार आहे. त्याला निश्चित असा आरंभ मध्य व अंत असतो.
- ३) कादंबरीत घडणारा घटनांचे कथनकार हा कथन करीत असतो. हे इतर साहित्यप्रकारातून कादंबरीचे महत्वाचे वैशिष्ट्य होय.
- ४) कादंबरी हा विस्तृत आवाका असणारा अतिशय लोकप्रिय असा साहित्य प्रकार आहे.
- ५) कादंबरीने नवतेची जाणीव करून देणे आवश्यक असते.
- ६) भूतकाळ आणि वर्तमानकाळ ह्यांच्यातील तार्किक कार्यकारणभाव दाखविणे हे कादंबरीचे महत्वाचे वैशिष्ट्य आहे.
- ७) कादंबरीच्या घडणीवरून तिचे सामाजिक, ऐतिकासिक, प्रादेशिक, संज्ञाप्रवाह इ. स्वरूप ठरून त्या आधारे तिचे वर्गीकरण केले जाते.
- ८) कादंबरी या साहित्यप्रकाराचे कथानक, पात्रे, वातावरण, भाषा व निवेदन इ. महत्वाचे घटक आहे.
- ९) लेखक ज्या समाजात वावरतो त्या समाजाचे, त्याच्या व्यक्तिमत्त्वाचा ठसा कादंबरीतील भाषेवर उमटत असला तरी कादंबरीतील विश्वाची, संस्कृतीची भाषा वापरणे अपेक्षित असते. उदा. उध्दव शेकळे यांची 'घण' ही कादंबरी.
- १०) कादंबरी हा निवेदनप्रधान साहित्य प्रकार असल्यामुळे निवेदन हा कादंबरीचा महत्वाचा व मूलभूत घटक आहे.
- ११) कादंबरीतील निवेदन हे कधी प्रथमपुरुषी तर कधी तृतीयपुरुषी केलेले असते.

संदर्भसूची

अविनाश सप्रे, प्रदक्षिणा-खंड २, कॉन्टिनेटल प्रकाशन, पुणे १९९१, पृ. क्र. २५७.

प्रा. ना. सी. फडके, प्रतिभा साधन, पाप्युलर प्रकाशन, १९७४, पृ. ६२.

प्रभा गणोरकर, वसंत आबाजी उहाके इ., वाङ्मयीन संज्ञा - संकल्पना कोश, जी.आर. भटकळ फाउण्डेशन, मुंबई २००१, पृ. क्र. २७७.

भालचंद्र नेमाडे, 'कादंबरी समाविष्ट मराठी साहित्य प्रेरणा व स्वरूप १९५०-१९७५, पाप्युलर प्रकाशन, पुणे १९८६, पृ. क्र. २७.

कुसुमावती देशपांडे, 'मराठी कादंबरी पहिले शतक, मुंबई मराठी साहित्य संघ, गिरगाव, मुंबई ४, दुसरी आवृत्ती १९७५.



SRJIS
www.srjis.com

IMPACT FACTOR (SJIF) 2021= 7.380 Online ISSN 2278-8808
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

APRIL - JUNE, 2021, VOL - 10, ISSUE-47



Indian Social & Research Foundation Akola ,

ARTS COLLEGE MALKAPUR, AKOLA

(Accredited By NAAC With "B" Grade)
Department of Music & IQAC Organizing



In Collaboration with

Sharda Sangeet - Kala Academy Indore (M.P.)

One Day National E- Conference

Contribution of Modern Technology in Globalization & Development of Music & All Interdisciplinary Subjects

Editor-In-Chief

Asso. Prof. Dr. Yashpal D. Netragaonkar

*MIT World Peace University School of Education,
Kothrud, Pune*

Editor

Dr. Gitali S. Pande

*Principal , Head of Music Department,
Arts College Malkapur, Akola (M.S.)*

Co- Editor

Dr. Sunil B. Patake

*Department of Music Arts College
Malkapur, Akola (M.S.)*

SCHOLARLY RESEARCH JOURNALS

*S. No. 5+4/5+4, TCG'S, Saidatta Niwas, D-wing, Ph- II, 2nd Floor,
F. No. 104, Nr. Telco Colony & Blue Spring Society,
Dattanagar, Jambhulwadi Road, Ambegaon (BK), Pune - 411046.
Website: www.srjis.com*

37. वैश्विक टाळेबंदी व शिक्षण व्यवस्थामधील अमुलाग्र बदल डॉ. अंजली रामचंद्र कदम / नारायणे	688-695
38. गृह अर्थशास्त्र विषयाच्या व्याख्यात्यांकडून माहिती संप्रेषण तंत्रज्ञानाचा अध्ययन अध्यापनामध्ये बापर एक अध्ययन डॉ. अल्पना देवकर	696-702
39. भारतीय संगीत शिक्षणाच्या विकासामध्ये आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान डॉ. पूर्णिमा शिवराज दिवसे	703-707
40. जागतिकीकरण आणि संगीताच्या विकासात आधुनिक तंत्रज्ञानाचे योगदान प्रा. गजानन मारोतराव लोहटे	708-710
41. माहिती साक्षरतेत महाविद्यालयातील ग्रंथालयाची भूमिका अमिता एच. पाटील	711-716
42. आधुनिक तंत्रज्ञान आणि भारतीय बँकिंग क्षेत्र डॉ. प्रदीप ताकतोडे	717-720
43. बौद्ध धर्म स्वीकारा संबंधी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर यांचे विचार प्रा. विलास अ. मेश्राम	721-724

आधुनिक तंत्रज्ञान आणि भारतीय बँकिंग क्षेत्र

डॉ. प्रदीप ताकतोडे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, कला महाविद्यालय, मलकापूर, अकोला.



Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

मानवी मेंदूप्रमाणे काम करणारी कॉम्प्युटिङ टेक्नॉलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजन्स व ब्लॉक चेन या संकल्पना प्रत्यक्षात अवतरल्या असून आज सर्वच क्षेत्रात याचा वापर वाढला आहे. बँकिंग क्षेत्रही त्यापासून दूर राहिलेले नाही. सरकारचे नियम वेळोवेळी बदलत आहेत. त्याचबरोबर खासगी तसेच सरकारी बँकांशी स्पर्धा करावी लागत आहे. आजच्या काळात ग्राहकांना जलद, अचूक सेवा देणे क्रमप्राप्त झाले आहे. अशावेळी कोणतीच बँक आय.टी.पासून लांब राहू शकत नाही. बँकांकडे असलेल्या माहितीचे यथायोग्य पृथक्करण करण्यासाठी नवीन तंत्रज्ञान खूपच उपयुक्त आहे. त्याच्या आधारे बँका आपली धोरणे निश्चित करू शकतात तसेच अचूक व जलद निर्णय प्रक्रिया राबविली जावू शकते. याशिवाय सायबर सिक्युरिटी, डेटा सिक्युरिटीचाही महत्त्वपूर्ण विषय आहे. इंटरनेट, विविध ऍप्स, गॅझेटचा वापर वाढल्या पासून डेटा चोरी, वेकायदा मनी ट्रान्सफर असे प्रकार वाढले आहेत. अशावेळी बँकांनी उच्च तंत्रज्ञान वापरून भवकम संरक्षण प्रणालीही अंमलात आणणे आवश्यक आहे. यात संगणक व इंटरनेटचा वापर करताना बारीकसारीक गोष्टीही महत्त्वपूर्ण ठरतात.

जसे नॉन बँकिंग काळात संगणक पूर्ण बंद करून ठेवणे, विविध पासवर्ड वेळोवेळी रिसेट करणे, मॉनिटरिंग टूल, टिकिटींग सिस्टीम, लॉग सर्व्हर, सायबर इन्शुरन्स तसेच इंटरनेटवर सर्चिंग करताना एखादा हॅकर आपल्या संगणकीय हालचालींचा मागोवा घेत नाही, याची काळजी घेणे अशा अनेक गोष्टी लक्षात घेणे गरजेचे आहे. सध्या चीनमध्ये कोरोना व्हायरसने हाहाकार उडवल्यावर स्वतःच्या आरोग्याच्या काळजीसाठी इंटरनेटवर कोरोनावावत कोट्यवधी लोक सर्चिंग करीत आहेत. याचाही गैरफायदा घेवून हॅकर्स मंडळी कोरोना नावाचाच संगणकीय व्हायरस सोडत आहेत. अशा कळत नकळत घडणार्या अनेक गोष्टींची काळजी घेणे आवश्यक आहे. सर्वात महत्त्वाचे म्हणजे ग्राहकांना आधुनिक तंत्रज्ञानयुक्त सेवा देताना त्या सेवांचा ग्राहकांकडूनही सुरक्षित वापर होईल यादृष्टीने ग्राहकांमध्येही जागृती करणे गरजेचे आहे. या सेवा वापरताना ग्राहकांनीही तंत्रज्ञानाबाबत अधिक सजग राहणे आवश्यक आहे. तंत्रज्ञान हे दुधारी तलवारीसारखे असते. त्याचा वापर सकारात्मक होण्याच्या दृष्टीने बँकांमध्ये सकारात्मक विचारांच्याच तज्ज्ञांची आवश्यकता आहे. त्यामुळे बदलते तंत्रज्ञान बँकांचे कामकाज अधिक गतिमान आणि सुरक्षित करू शकते.

बँकिंग क्षेत्रातील माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर

भारतात १९९०च्या दशकात माहिती तंत्रज्ञानाचा विकास आणि विस्तार इतक्या प्रचंड वेगाने झाला की, आज त्याने आपणा सर्वांचे अवघे आयुष्यच व्यापले आहे. संगणकाद्वारे होणारे व्यवहार तर आता अपरिहार्य झालेच आहेत, त्याचबरोबर ते आता काळाची गरजही झालेत. बँकिंगचे व्यवहारसुद्धा याला काही अपवाद नाहीत. व्यवहारातील

गतिमानता, अधिक अचूकता, वेगवान विस्तार, इ. फायदे ओळखून भारतात बँकांनी आपल्या व्यवहारात माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर सर्वप्रथम सुरू केला. अगदी प्रारंभी आपल्या रोजगारावर गदा येईल, या भीतीपोटी कामगार संघटनांनी संगणकीकरणास विरोध केला होता, परंतु आता तो विरोध नाहीसा झाला आहे. राष्ट्रीयीकरणानंतर बँकांचा शाखाविस्तार फार मोठ्या प्रमाणात हाती घेण्यात आला. ठेवी-कर्जे यांचे प्रमाण वाढले. परिणामी अगदी अलीकडेपर्यंत पैसे काढायचे असोत की ठेवायचे असोत, कर्जे घेणे असो की धनाकर्ष (डी.डी.) काढणे असो, तासन् तास बिचारा ग्राहक रांगेत उभा, मोठाली लेजर बुक्स, फायलींची गाठोडी, कारकुनी व्यवहार, इ.मध्ये भारतीय बँकिंग गुदमरले होते.

या सगळ्याच्या शेवटाचा प्रारंभ झाला एम. नरसिंहम यांच्या अहवालानंतर. भारतीय बँकांची कार्यक्षमता व स्पर्धात्मकता वाढविणे, तसेच त्यांनी नफाक्षमता सुधारणे यासाठी बँकांचे संपूर्ण संगणकीकरण शक्य तितक्या लवकर करण्याची शिफारस नरसिंहम यांनी केली आणि गेल्या दहा वर्षांतील त्याचे दृश्य परिणाम आपल्याला आता दिसू लागले आहेत.

आजकाल आपणास सर्वच बँकिंग (एनीव्हेअर बँकिंग), सर्वकाळ बँकिंग (एनीटाइम बँकिंग), २४x७x३६५ बँकिंग, स्वयंचलित निष्कासन यंत्र एटीएम, मोबाइल बँकिंग, इंटरनेट बँकिंग यांसारख्या सुविधा उपलब्ध झालेल्या आहेत. बँक व्यवहारात विक्रमी वेळेत व्यवहार पूर्ण करणे, कमीतकमी खर्चात व्यवहार करणे, अधिक कार्यक्षमपणे व अचूकतेने व्यवहार पूर्ण करून ग्राहकाची मर्जी राखणे यासाठी माहिती तंत्रज्ञानाच्या वापराला पर्याय अजिबात नाही.

बँकिंगमध्ये माहिती तंत्रज्ञानाचा अधिकाधिक वापर व्हावा. ग्राहकांना तत्पर कार्यक्षम सेवा मिळावी, बँकांची स्पर्धात्मकता वाढावी, या हेतूने रिझर्व्ह बँकेने १९९७ मध्ये हैदराबाद येथे इन्स्टिट्यूट फॉर डेव्हलपमेंट & रिसर्च इन बँकिंग टेक्नॉलॉजी (आयडीआरबीटी) या संस्थेची स्थापना केली आहे. या संस्थेने इंडियन फिनान्शियल नेटवर्क (इन्फिनेट) यंत्रणा विकसित केली आहे.

सन २००० मध्ये भारतात फक्त ४००० एटीएमस कार्यरत होती. गेल्या नऊ वर्षांत त्यात दहा पटीपेक्षा अधिक वाढ झाली आहे आणि आज भारतात ४४ हजार ९०० पेक्षा जास्त एटीएमस वेगवेगळ्या बँकांनी बसविली आहेत. विशेष म्हणजे ही सर्व यंत्रे उच्च तंत्रज्ञानाचा वापर करून एकमेकांशी जोडली आहेत. परिणामी तुमचे क्रेडिट/डेबिट/एटीएम कार्ड महाराष्ट्रातील बँकेने जरी जारी केलेले असले, तरीही तुम्ही तुमचे पैसे अन्य कोणत्याही बँकांच्या एटीएममधून अगदी कोठूनही विनासायास काढू शकता. ग्रामीण भारतात भाषेचा अडसर निर्माण होऊ नये, म्हणून बायोमेट्रिक्स एटीएमसुद्धा सुरू होत आहेत.

माहिती तंत्रज्ञान व वाढती उलाढाल : भारतीय वित्त व्यवस्थेच्या वाढत्या विकासाबरोबरच वित्तीय व्यवहारांचे प्रमाणही वेगाने वाढत आहेत. २००५ मध्ये रिझर्व्ह बँक दरमहा साधारणतः २.७० लक्ष व्यवहार पार पाडत असे. सध्या दरमहा ही संख्या ४० लाखांवर गेली आहे. हे सर्व व्यवहार इलेक्ट्रॉनिक्स पद्धतीने पार पाडले जातात. २००१ मध्ये एकूण वित्तीय व्यवहाराच्या अर्धा टक्का एवढेच व्यवहार इलेक्ट्रॉनिक्स स्वरूपात होते, आता असे व्यवहार दरवर्षी ३० कोटीपर्यंत पोहोचले आहेत. यातील अगदी अलीकडील सुधारणा म्हणजे रियल टाइम ग्रॉस सेटलमेंट किंवा आरटीजीएस होय. या प्रकारच्या व्यवहारात वेळेचा अजिबात अपव्यय होत नाही. जसे तुम्ही तुमच्या मित्राला काही पैसे देणे आहात. तुम्ही आहात मुंबईत आणि मित्र आहे सिल्चरला. तुम्ही तुमच्या मित्राच्या बँकेच्या इथल्या शाखेत त्याच्या खात्यावर पैसे जमा करताच, तत्क्षणी त्याला तेथे पैसे प्राप्त होतात. बँसल तत्त्वास अनुरूप अशी ही सुधारणा आहे. २००४ मध्ये भारतातील ४८०० शाखांतून सुरू असलेली आरटीजीएस ही सुविधा आता ५५ हजार शाखांमधून भारतभर विस्तारली आहे. नॅशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रान्सफर (एनईएफटी) किंवा 'निफ्ट' यंत्रणा कार्यरत आहे.

रिझर्व्ह बँकेच्या अलीकडील माहितीनुसार भारतीय बँकांनी १६७ दशलक्ष क्रेडिट/डेबिट कार्डे ग्राहकांना दिली आहेत. ७६ दशलक्ष किसान क्रेडिट कार्डेही उपलब्ध करून दिलेली आहेत. तरीही बँकांना याबाबतीत प्रचंड संधी अद्याप आहेत, कारण अद्याप ४०३ दशलक्ष मोबाइलधारकांपैकी १८७ दशलक्ष (४० टक्के) लोकांचे बँकेत खाते नाही. या व्यक्ती बँकांच्या संभाव्य ग्राहक होऊ शकतात.

बँकिंगमधील माहिती तंत्रज्ञानाचे फायदे : कोणत्याही क्षेत्रात नवीन तंत्र येत असताना त्यास मोठा विरोध होत असतो. लोकांच्या मनात त्याबाबत भीती किंवा असुरक्षितता असते, परंतु संगणकीकरण किंवा वर उल्लेखलेल्या माहिती तंत्रज्ञानाचे बहुविध फायदे आपण लक्षात घेणे आवश्यक आहे. सर्वप्रथम वित्तीय व्यवहारात गतिमानता येते, व्यवहारात सुसूत्रता आणि अचूकता येते, सुरक्षितता वाढते, गोपनीयता वाढते, ग्राहकाचे पैसे, वेळ आणि श्रम वाचतात. तसेच बँकांची कार्यक्षमता, नफाक्षमता वाढून देशात सुदृढ बँकिंग व्यवस्था प्रस्थापित करणे शक्य होते.

भविष्यातील आव्हाने :

- सप्टेंबर १९९९ ते मार्च २००८ पर्यंत सार्वजनिक क्षेत्रातील बँकांनी १५,०१६ कोटी रुपये संगणकीकरण आणि नेटवर्किंगसाठी खर्ची घातलेत. मार्च २००८ पर्यंत ३५,००० शाखांमधून कोअर बँकिंग सुविधा उपलब्ध करून दिली आहे.
- भारतीय बँकांच्या ९४ टक्के शाखांचे संगणकीकरण पूर्ण झाले आहे. असे असले तरीही माहिती तंत्रज्ञानाच्या वापरातून बँकिंगचे जाळे सर्वदूर विस्तारणे आवश्यक आहे.
- ग्रामीण बँकविरहित क्षेत्रात, निमशहरी भागातील लोकांना या सुविधा मिळणे आवश्यक आहे. अन्यथा आर्थिक दरी, डिजिटल दरीप्रमाणेच वित्तीय दरीसुद्धा निर्माण होईल.
- स्मार्टकार्ड तंत्राचा वापर करणे, फिरती एटीएमस सुरू करणे, भारतात दीड लाखाहून अधिक असणाऱ्या टपाल कार्यालयांचा विक्री केंद्रे (पीओएस) म्हणून वापर करता येईल.
- ग्रामीण भागात वीजतुटवडा असल्याने या यंत्रणांच्या वापरावर मर्यादा जरूर येतील, परंतु सौरऊर्जेसारख्या माध्यमातून त्यावर मात करणे सहजशक्य आहे.
- ब्रॉडबँड आता खेड्यापाड्यांतही पोहोचतेय, मोबाइलधारकांची संख्या तर कोटींच्या घरात आहे. तळहातातील मोबाइलमधील आयसी हा स्मार्टकार्ड म्हणून वापरता आल्यास भारतातील प्रत्येक मोबाइलधारकास बँकिंग व्यवहारात आणता येईल.
- परिणामी वित्तीय समावेशकता (फिनान्शियल इन्क्लुजन) खऱ्या अर्थाने साध्य करणे शक्य होईल. याहीपलीकडे जाऊन व्हीएसएटी (व्हीसॅट) तंत्रज्ञानाद्वारेही बँकिंगच्या विस्ताराची शक्यता अजमावणे आवश्यक आहे.

सारांश

भविष्यात माहिती तंत्रज्ञानाचा वापर करून बँकांना भेदयुक्त (डिस्क्रिमिनेटिंग) सेवा देता येणार आहे. उदा. साधे सेव्हिंग खाते, सुपर सेव्हिंग खाते, क्लासिक सेव्हिंग खाते इत्यादी. स्पर्धेच्या जगात ग्राहक वाढविणे एवढेच पुरेसे नसून, असलेले ग्राहक टिकवून ठेवणे हेही तितकेच महत्त्वाचे आहे. त्या कामी बँकांचे ग्राहक संबंध व्यवस्थापन (सीआरएम) समृद्ध करण्यासाठी भरपूर माहितीचे संकलन, संचय आणि पुनर्वापर अपरिहार्य आहे. ही कामे

मॅन्युअल स्वरूपात होणे केवळ अशक्यच आहे. जेवढ्या वेगाने बँकिंग क्षेत्र नावीन्य स्वीकारते आहे, तितक्याच वेगाने काही अडथळे/आव्हाने यांचा सामनाही करावा लागणार आहे. भारतातील भौगोलिक व भाषिक विविधता हे त्यातलेच एक मोठे आव्हान आहे. स्थानिक भाषांमध्ये सॉफ्टवेअर विकसित करणे, व्यवहारात सुलभता आणणे आणि आतापर्यंत अशा व्यवहारांपासून जे वंचित राहिले त्यांच्या समावेशावर भर देणे, यांसारख्या आव्हानांचा सामना येणाऱ्या काळात भारतीय बँकांना करावा लागणार आहे. कमावलेल्या नफ्यातील काही भाग माहिती तंत्रज्ञानाबाबतच्या लोकशिक्षणावर बँकांनी खर्च केल्यास बँकांना अधिकाधिक ग्राहक आकर्षणे सोपे होईल. भारतीय बँका आणखी सुदृढ होण्यातील तो एक महत्त्वाचा टप्पा ठरेल. असो, येणाऱ्या काही वर्षांतच भारतीय बँकिंग माहिती-संदेशवहन- दूरसंचार क्षेत्रातील क्रांतीच्या माध्यमातून नवी शिखरे गाठेल, यात काहीही शंका नसावी.

माहिती तंत्रज्ञान, संगणक, इंटरनेट क्षेत्राने आज संपूर्ण जग व्यापले आहे. आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स (ए.आय.), संज्ञात्मक तंत्रज्ञान (कॉम्प्युटिव्ह टेक्नॉलॉजी) आय.टी.पॉलिसी, माहिती सुरक्षितता आणि सायबर धोरण प्रत्येक बँकेसाठी महत्त्वपूर्ण बनले आहे. त्यातही स्पर्धेचा काळ लक्षात घेवून सहकारी क्षेत्रातील बँकांसाठी तर अद्ययावत बनणे खूपच गरजेचे आहे. नवनवीन तंत्रज्ञान आणताना ते अधिक सुरक्षित असेल याची काळजी घेणे व या तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून ग्राहकांना सर्वात उत्तम सेवा दिली पाहिजे. यासाठी सहकारी बँकांनी गांभीर्याने पावले उचलत काळजी सुसंगत बदल घडवायला हवेत. हे सर्व आमूलाग्र बदल हेच भविष्यातील बँकिंग आहे.

संदर्भ ग्रंथ

<http://useonlinebanking.blogspot.com/2012/08/india-banking.html>

Arora, Kalpana, *Indian banking managing transformation through I.T.*, Indian Banking Association Bulletin, Vol. 25(3), pp. 134-38. March 2006.

Bhasin, T. M., *E-Commerce in Indian banking*, Indian Banking Association Bulletin, Vol. 23(4&5), 2001

Rao, N. V., *Changing Indian banking scenario : A paradigm shift*. Indian Banking Association Bulletin, Vol. 24(1) pp.12-20, 2002.

Shapiro, C., *Will E-Commerce erode liberty*, Harvard Business Review, May-June 2000. Sabnani, P.- *Universal Banking*, IBA Bulletin, Vol. 22(7) July 2000, pp34-36

पॉस्ट 19-20

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta[®]
Peer-Reviewed International Publication

February 2020
Special Issue-05

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue-05, February 2020

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne
Smruti Arogya And Shikshan Prasarak Mandal's
Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College,
Khamgaon, Dist.Buldhana

Organizes
One Day Interdisciplinary National Conference On
Humanities, Culture And Society

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar & Po), Sci., B.Ed. Ph.D. NET.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd., At.Post. Limbaganesh Dist, Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695, 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

मानव जीवनात संगीताची सर्वांगीण सकारात्मक भूमिका

डॉ. गिताली एस. पांडे

संगीत विभाग प्रमुख, कला महाविद्यालय मलकापूर,
ता. जि. अकोला.

वना :

Music is a moral law. It gives a soul to
Universe wings to mind.

Fight to imagination a charm sandness
gaity and life to every things.

- Pleto

मनुष्य जर स्वतःचा सर्वांगीण, सामाजिक विकास कर
त असेल तर त्याला कलापूर्ण (कलात्मक) जीवन आत्मसात
णे आवश्यक आहे. जर तणाव, वेचैनी, अशांति, भीती, शंका
खालीपणा, स्वतःपुरते मर्यादीत राहणे ह्या सर्व गोष्टी असतील
ते जीवन कलापूर्ण जीवन होऊ शकत नाही. आनंदाची उपासना
णे, ज्ञानाची आराधना करणे आणि शक्तिची साधना करणे या
ही गोष्टींचा समन्वय असणे हाच जीवनाचा कणा आहे व तेच
कलापूर्ण (कलात्मक) जीवन आहे. मनुष्याला प्रकृतिकडून मिळालेली
नृत्य भट म्हणजे बुद्धी आणि मन हे आहेत. मन आणि बुद्धी
प्रीत होऊन तीन कामे करतात. १) स्मरण, २) कल्पना व ३)
न या तिन्हीमध्ये चिंतन सर्वात महत्त्वपूर्ण आहे. चिंतनाने दृष्टि
नि दिशा यामध्ये बदल केला जाऊ शकतो. ज्ञान, विज्ञान, साहित्य,
स्व यासोबतच कलात्मकतेचा प्रयोग भारतीय समाज आणि
कृतीचे आधार स्तंभ म्हणून ओळखल्या जातात, याकरिताच
कलेला भारतीय सामाजिक जीवनाची आणि मानवी जीवनाची
ना म्हटल्या गेले आहे. कला, साहित्यशास्त्र, ललीत आणि
निक याचा मुख्य उद्देश संवेदशील समाज, स्वस्थ समाज, स्वस्थ
नृत्य जीवन निर्माण करण्यास मदत करणे हे आहे.

संगीताची आवश्यकता -

आजच्या आधुनिक काळात प्रत्येक मनुष्य अशांती,
व्रद्वन्ता, व्येप, व्याकुळता, चिंता, व्यथा, श्या, घृणा, क्रोध, आक्रोश,

लोभ इत्यादी मानसिक व्याधींनी घेरले आहे. मानवी जीवनात
प्रत्येक व्यक्तीला वैयक्तिक गरजा, सामाजिक गरजा आणि मानसिक
गरजा सुध्दा असतात. मानसिक दृष्ट्या ग्रस्त झालेल्या व्यक्तीला
मानसिक विकासाची व शांततेची आवश्यकता असते. हे
साधण्याकरिता संगीतामधील तीर्नी तत्वाचा उपयोग होतो. जसे,
गायन, वादन आणि नृत्य यांमधील व्यक्तीच्या आवड व रुचोनुसार
आत्मसात करणे किंवा प्रयोग करून मानसिक विकास साधण्यास
हे तीर्नी तत्वे उपयोगी ठरतील. आधुनिक काळात संगीताच्या
माध्यमातून अनेक प्रयोग होत आहेत त्यामधून मानवी जीवनातील
सर्वांगीण विकासाच्या दृष्टीकोनातून आत्मविश्वास आणि
सकारात्मकता याची वृद्धी साधल्या जाते. म्हणूनच या विषयावर
अधिक संशोधन होऊन मानवी जीवनातील सर्वांगीण विकासाच्या
नव-नविन शाखा शोधण्याची आवश्यकता आहे.

संशोधन पध्दती -

प्रस्तुत शोध निबंध हा "मानव जीवनात संगीताची सर्वांगीण
सकारात्मक भूमिका" या विषयावर देणं आहे. प्रस्तुत शोधात मानवाचे
सामाजिक, मानसिक जीवन कशा पध्दतीचे आहे व संगीताचा
मानव जीवनावर सामाजिक दृष्ट्या कशा परिणाम होतो याचा अभ्यास
सामाजिक संशोधन पध्दतीत होतो. मानवी जीवन हे समाजात विकसित
होत असते त्यामुळे "मानव जीवनात संगीताची सर्वांगीण सकारात्मक
भूमिका" प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये सामाजिक संशोधन पध्दतीचा
आवश्यकतेप्रमाणे प्रयोग करण्यात आलेला आहे. प्रस्तुत शोध
निबंधविषयीचे साहित्य हे विषया संबंधित पुस्तके मासिक, साप्ताहिके,
संगीत पत्रिका, संगीत मासिक, संगीत पुस्तके व विकिपिडीया
याद्वारे एकत्रित करण्यात आले असून प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये
यथोचित उपयोग करण्यात आलेला आहे.

मानवी जीवनात मानवावर संगीताचा सकारात्मक आणि
भावनात्मक प्रभाव -

तसे पाहिल्यास सर्वत्र कलाचा प्रभाव आणि महत्त्वपूर्ण
स्थान मानवाच्या जीवनात आहे, परंतु संगीत कला ही सर्व प्रथम
आहे. हृदयातील भाव-भावनांचे प्रादोर्करण ज्या भाषेत होते ती
भाषा संगीत आहे. प्रेमचंद याच्यानुसार "मनोव्यथा जव असहाय
और अपार हो जाती है, जब उसे कहीं आश्रय नहीं मिलता, जब
वह रुदन और क्रन्दन की गोद में ही आश्रय नहीं पाती तो वह
संगीत के चरणों में जा गिरती है।"

संगीताचा मानव जीवनात खालील विषयानुसार विकास
होतो.

संगीत साहित्य कला विहीन -

साक्षात पशुः पुच्छविषाणुहीनः ॥

१. भावनांचा विकास करणे.
२. ऐकण्याच्या क्षमतेचा विकास करणे.
३. आवाजाचा विकास करणे.
४. मासपेशीच्या समन्वयाचा विकास करणे.
५. कल्पना शक्तीचा विकास करणे.
६. बुद्धीचा विकास करणे.
७. व्यक्तित्वाचा सर्वांगीण विकास.
८. सांस्कृतिक परंपरेचे संरक्षण आणि हस्तान्तरण.
९. धार्मिक चेतनेचा विकास.
१०. भावी जीवनासाठी मनोरंजनाचे साधन उपलब्ध करून

देणे.

आस्ट्रियाई संगीतकार मोत्साई यांचे तत्व -

"विभिन्न शोधो से एक नया तथ्य यह सामने आया है की, अठारहवी शताब्दी के महान आस्ट्रियाई संगीतकार, मोत्साई का संगीत दिमागी बीमारीयों में विशेष रूप से असरकारक है, मोत्साई के संगीत से गंभीर मस्तिष्क रोग से पीडित व्यक्तियों में भी काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया देखी गई।"

मनुष्य जीवनात निर्माण होणाऱ्या व्याधीवर संगीताचा परिणाम-

१. राग वागेश्री - माईग्रेनसारख्या डोक्रे दुखीवर फायदेशीर.
२. राग भूपाली आणि तोडी - उच्च रक्तादाब असणाऱ्या रोग्यांना अत्यंत फायदेशीर व लाभदायक.
३. राग विहाग, बहार, काफी आणि खमाज - अनिद्रा पासून मुक्तता.
४. राग मल्हार - दमा आजारावर अगुसम.
५. राग शिवरंजिनी - स्मरणशक्ति वाढविण्यास फायदेशीर.
६. राग काफी - एक शांत, सौम्य, सुखदायी आणि शांत मुड निर्माण करण्यास फायदेशीर.

७. राग पुरिया धनश्री - एक मधुर, शांत, आनंददायी, स्थिर बुद्धी निर्माण करण्यास फायदेशीर.

संगीतातील स्वर मानव शरीरात असणाऱ्या चक्रांमध्ये निर्माण होणाऱ्या अळचणीना दुर करून चक्रांना प्रकृतिस्थान करतात. संगीतातील स्वरांच्या शक्तिने चक्रावर विराड् प्रान् देवी चक्रांची शक्ती जागृत होते.

१. सा - मूलाधार चक्र
२. र - स्वस्तीप्रज्ञान चक्र
३. ग - नाभी मणिपूर चक्र
४. म - अनाहत चक्र
५. प - विशधि चक्र
६. ध - आज्ञा चक्र
७. नि - सहस्रार चक्र

मनुष्याच्या शरीरात तीन नाड्या व सात चक्र असतात.

वरील दिलेल्या स्वरांच्या माध्यमाने आपण रोग दुर करून संतुलन निर्माण करू शकतो. ज्यामुळे शारीरिक आणि मानसिक संतुलन प्राप्त होते.

सर्वश्रेष्ठ समजली जाणारी संगीतकला ही मनाची कला आहे. मना-मनांना एकत्र गुंफणारी भाषिक, धार्मिक, कलात्मक साखळ्या तोडून टाकणारी अशी ही अखिल मानवजातीला एकत्र करणारी, मानव जीवनातील प्रत्येक सुख-दुःखत निरंकुश प्रभाव टाकणारी कला आहे.

स्वरान्ति त्वा सुते नरो वसो निरंक उच्चिनः

स्वतःच्या उत्कर्षासाठी प्रत्यक्षशील मनुष्याच्या स्वर साधना करतात. ऋग्वेदातील वरील सुमंत्राचा आपणास मानवी जीवनात असणारे संगीत कलेचे वेईल. आपल्या दैनंदिन जीवनातल्या नेहमीच्या परिश्रमातून, ताणतणावापासून दूर नेऊन मजल देण्याची क्षमता ज्यामध्ये आहे ती संगीत कला होय.

"Music is the medicine of mind"

या जगविख्यात वाक्याचे अवलोकन करताना मनःशांती आणि मानवी जीवनातील अनेक निवारणाचे संगीत हे प्रभावी माध्यम असल्याचे मानसोपचारतज्ञ डॉ. ए. ए. कादरी म्हणतात ते ८५ टक्के रोगप्रक्रिया मानसिक स्वास्थ्यावर मानव जीवनातील व्याधी आणि संगीत

"Music is more devious than both experssive and formal"

मानव जीवनातील अनेक रोगांचे संगीताची औषधात्मक महत्वाची भूमिका ही संगीतगंली आहे. थोर शास्त्रज्ञ प्लेटो म्हणतात की, "संगीत मुलाधार विषय आहे." ग्रीक विचारवंत पायथागोरस संगीत विश्वाच्या अणुरेणुमध्ये व्याप्त आहे. डॉ. एन. यांच्या मते बालमनावर होणारा संगीतचा परिणाम

"Children should be activated so that by listening to it they are ignited physical or intellectual reaction" "participation of even the most all of children can be made through music. creativity can be most profitably encouraged"

school."

संगीतातील स्वर आणि त्याचे प्रभावक्षेत्र

सामान्यपणे वायु, जल, अग्नि, वाफ आकाशतील वीज यामध्ये खुप शक्ति असते, हे आपल्याला माहीतच आहे, परंतु संगीतातील स्वरामध्ये सुध्दा शक्ति असते, जी स्थीर आणि सूक्ष्म गोष्टीवर आश्चर्यकारक प्रभाव टाकते आणि मानवाच्या स्वास्थ्यावर सकारात्मक प्रभाव पाडते ते खालील प्रमाणे -

क्र. स्वर	प्रकृति	रंग	रस
१. सा	पित्त	सप्तवर्ण	वीर, अद्भुत
२. रे	वात, कफ	श्वेत	शांत
३. ग	पित्त, कफ	गोर	वीर
४. म	वात, पित्त, कफ	हरित	हास्य, शृंगांर
५. प	कफ	पीत	शांत
६. ध	वात, कफ	श्याम	रोद्र, विभत्स, भयानक
७. नि	वात	कृष्ण	वीर, भयानक, करुण

वरील तक्त्याद्वारा आपणास हे दिसते की, सात स्वरांची प्रकृती, रंग आणि रस यांचा सकारात्मक प्रभाव आपल्या शरीरावर पडतो.

निष्कर्ष -

संगीतामध्ये आनंद देण्याची शक्ती आहे, मानवी जीवनात आनंद हा शब्द किंवा आनंद ही भावना अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे. मनुष्य आनंदी असला की सर्व चांगले आहे, सर्व सुरळीत आहे अशी भावना निर्माण होते. संगीतामधील आनंद देणारी शक्ती मानवाचा विकास साधण्यास सहाय्य करते. संगीतामध्ये हृदयाला स्पर्श करण्याची शक्ती आहे. हृदय हे मानसिकता स्थिर ठेवण्याचे काम करते, संगीताचा हृदयाला झालेल्या स्पर्शामुळे वाईट विचाराचा न्हास होऊन मानवाचा सर्वांगीण विकास होण्यास चालना मिळते. संगीतामध्ये 'स्वरानंद' प्राप्त होऊन दुःखी विचार उत्पन्न होत नाहीत. संगीत हे मनाला केंद्रित करण्याचे एक उपयुक्त साधन आहे, प्रत्येक व्यक्ती आपले मन केंद्रित करण्याचा प्रयत्न करतो. जेवढे जास्त मन केंद्रित होईल तेवढेच जीवन जास्तीत-जास्त यश प्राप्त करेल व मानवी जीवनाचा सर्वांगीण विकास होईल यात शंका नाही.

संदर्भ -

१. संगीत कला विहार, मार्च २०११.
२. भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान
३. संगीत चिकित्सा - डॉ. सतीश वर्मा
४. संगीत मासिक, हाथरस
५. संगीत त्रिचार - अशोक रानडे

58

संत साहित्य मराठी

प्रा. कु. भावना मनोज तायडे
श्री. विठ्ठल रूख्मीणि महाविद्यालय
सवना ता. महागांव जि. यवतमाळ

ज्ञानदेव रचिला पाया तुका झालासे कळस

ज्ञानोवा आणि तुकोवा हे महाराष्ट्राचे अविनाशी साम्यर्थ्य आहे। रवि रश्मी कळा नहे काहि सा निराळा. जसे सूर्या पासून त्याच तोंडा वगळ करता येत नाही. तसेच मराठी भाषेपासून संत साहित्य वेगळ करता येत नाही. ज्ञानोवांनी मराठी मन घडवले तर मराठी जण तुकोवांनी घडवलं. ज्ञानोवांनी कानात सांगितलं पण कानामागे येऊन सांगण्याचं काम तुकोवांनी केलं. ज्ञानोवा -तुकोवा हे असे पुरुष आहे की ज्यांच्यामुळे संत साहित्य उभं राहिलं.

१२ व्या शतकामध्ये जेव्हा चतुर्वर्ग चिंतामणी सारख्या धर्मग्रंथात ३६५ दिवस व्रतवैकल्याची नोंद होती. जेव्हा मनुष्य कर्माकांडात गुंतत चालला होता आणि भक्ती नावाची संकल्पना लोप पावत होती तेव्हा या सर्व व्यवस्थेच्या विरोधात जाऊन संत ज्ञानेश्वरांनी सांगितलं योग माग विधी येणे नोव सिद्धी वायाची आधी देवधर्म अस सांगुण कामाग्राम नावाचं सोप सूत्र लोकांच्या हाती दिलं आणि लष्वीक सुधाणेच्या सामाजिक चळवळीचा पाया रचण्याच काम त्यांनी त्यांनी केल. आणि जगातला हा पहिला लेखक ज्याने वैष्णिक तत्त्वज्ञान जगाला दिलं ते म्हणजे ज्ञानेश्वरी. हिच पाच महाकाव्यापैकी एक आहे.

स्त्रीमुक्ती ही एकोणविसाव्या शतकात नाही तर ती बाराव्या शतकात ज्ञानोवांनी करुण ठेवली. ते जनावारुला भक्तीमार्गाची कास दाखवून करुण दिली. अहंकारी चांगदेवाला अनुग्रह देण्याच काम दारा वर्षाच्या मुक्ताइने करुण ठेवलं होत. हे मान्य करावे लागणार नंतर पुढे ज्ञानोवांच्या समाधीनंतर सर्व संत गोधळले होते पण त्याचे विचारांची समता ही तशीच टिकून होती. नामदेवांनी कीर्तन नावाचा प्रकार प्रसार माध्यमातनं भक्तीचा प्रचार केला. याच उद्गाने सरोवर नामदेव महाराज आहेत का? तर होय.

यानंतर संत एकनाथ यांनी भारूड नावाच प्रबोधन पर्व सुरु वल आणि या प्रबोधन पर्वांमधून समाजाला सुधारण्याच आपला

VOLUME IX, ISSUE I
April 2020

OPEN ACCESS

ISSN 2277 - 8071

IMPACT FACTOR 5.411

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

INDEXED IN 52 DATABASES



RESEARCH NEBULA

AN INDEXED, REFEREED & PEER REVIEWED QUARTERLY
JOURNAL

Chief Editor

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE

Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir Washim Maharashtra
ganukhandare7@rediffmail.com
gpkenglish@gmail.com
Cell 919850383208



WEB BASED JOURNAL MANAGEMENT SYSTEM

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
SIF 5.411

VOLUME IX, ISSUE I
April 2020

OPEN ACCESS

ISSN 2277 - 8071

IMPACT FACTOR 5.411

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10:22183/RN

INDEXED IN 52 DATABASES



RESEARCH NEBULA

AN INDEXED, REFEREED & PEER REVIEWED QUARTERLY
JOURNAL

Chief Editor

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE

Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya,

Mangrulpir Washim Maharashtra

ganukhandare7@rediffmail.com

gpkenglish@gmail.com

Cell 919850383208



WEB BASED JOURNAL MANAGEMENT SYSTEM



WWW.YCJOURNAL.NET

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly
Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071
SIF 5.411

RESEARCH NEBULA

*An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in
Arts, Commerce, Education & Social Sciences*

ISSN 2277-8071

Impact Factor 5.411

April 2020 Volume IX, Issue I

DOI PREFIX 10.22183

JOURNAL DOI 10.22183/RN

Edited & Published by

DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE
Yashwantrao Chavan Arts & Science Mahavidyalaya,
Mangrulpir, Washim, Maharashtra
ganukhandare7@rediffmail.com
Cell: +91-9850383208.
www.ycjournal.net

Research Paper in
English

MEMBER OF



PRAVIN UGALE

Assistant Professor,
Department of English
Kala Mahavidyalya,
Malkapur, Akola,
Maharashtra.**THE EMOTION OF PATRIOTISM IN THE POEM 'GIFT OF INDIA': A
COLONIAL PERSPECTIVE****ABSTRACT**

Sarojini Naidu was the point writer of Indian history. She earned soubriquet The Nightingale of India. She was also contributed in Indian independence struggle. Her works such as the golden threshold, the word of time, death and the spring, Mohammed Jinnah: an ambassador of unity et cetera the celebrated by the readers of Indian subcontinent. Her poetry is well-known for the quality of Indianness. .

KEYWORDS: patriotism, anti-war, suppression

Though she was a great poet but she had a strong feeling of patriotism at the core of her heart. Her experience as a freedom fighter and her participation in Indian National Congress had influenced her literary career. Most of the time, her poetry stresses this influence in a more direct way as in the poem 'The Gift Of India'

The poem 'The Gift. Of India' Wars written in the year 1915. This poem is nothing but a kind of tribute to the murdered Indian soldiers in the First World War. It has been observed that 1.5 million troops of Indians were sent for the First World War by the Britishers who were the colonial masters of contemporary India. Out of those Indians soldiers 62,000 died and 67,000 were wounded. No doubt the poem focuses on the themes of patriotism and nationalism. It also highlights that there is no glory in war and sacrifice for someone else's war. India had been fostering Britishers over many centuries and offered innumerable gifts as benefits. This poem is included in the broken wings. In the poem is very sentimental and is a gesture to demonstrate respect towards the sacrifice and to their bravery. The concluding note of the poem hopes that the war is useless and only peace is sustainable as well as the sacrifice of the Indian soldiers will be remembered ever.

To study this poem from a colonial perspective, there are number of aspects which can be newly discuss. At the time of First World War there were many colonial countries who fought not for their nation but for the colonizers. The Era of War poetry should be considered with this fact. Colonialism is among those few darkest area of human civilization which is considered to be the emblem of exploitation. Colonised people were exploited by all means by the colonisers. India has one of the largest colony of Britishers suffered a lot, exploited, suppressed dominated and subjugated at a great extent. 'The Gift of India' is an expression which criticises the exploitation, simultaneously it appreciate the patriotism of the Indian soldiers. It is because Sarojini Naidu was a person who could be considered a symbol of colonised people in many ways. She was a woman, she was brown and she is from colonised India who is trying to enter in a British literary world which was governed by the white men who not only hated but deny her being.

If you look closer to the poem, she interestingly questions there authority. Her writing is replete with female speakers lamenting the loss of their beloved sons or spouses, mirroring the mourning India shown in "The Gift of India." Her poem "To India" contains

topics that are undoubtedly revolutionary. For instance:

'Mother, O Mother, wherefore dost thou sleep?
Arise and answer for thy children's sake!'

India was still struggling under the brutality and exploitation of British Rule during this time. Our sovereignty had been seized by its dominion. Through immoral means, they pretended to be in charge while denying us our legal rights in our OWN nation. Although the English had seized control of our entire nation and monopolised its affluence, Sarojini cries out that this loss pales in contrast to the ruthless murder of Indian troops who had a duty to protect the country's self-proclaimed emperors. The Indians played no part in the starting of the war or its outcome, but they were dishonestly used by the English to their advantage against the Germans and their Allies. India has been depicted by Naidu as a mother, with her ardent patriotism is revealed when she speaks of her children's love, devotion, and heroism. She speaks of the priceless gifts she has given to the world, the most important of which is the gift of her children's lives.

Mother India demands that the anniversary of the blood of my slain sons! insisting on remembering the brave soldiers of India who gave their lives—a call to honour her martyred sons Their names, etched in history with the indelible ink of their own blood, will speak volumes about their greatness for aeons. Mother India's grief over the loss of her children can be interpreted as a reflection of every mother's grief over the loss of her martyred son. "It is only India, the great India, which represents itself as eternal Mother India, who

loves her sons and daughters as a true mother does," a critic writes. Since time immemorial, literature has glorified war, making it seem worthwhile and romantic.

The Gift of India can also be read as an anti-war poem. Naidu has compounded this by brutally killing soldiers, using them as mere fodder (farmers) and their inability to reunite their lands and families. Their lifeless corpses bear witness to this. Soldiers and their families are therefore victims of any war that results in casualties and bloodshed. Mother India's fear reflects Naidu's anti-war stance.

Thus, the poem 'The Gift of India' is one of the poem who indirectly comments on the patriotism, sacrifice in the light of colonialism and their suppression.

Bibliography:

Primary Sources:

- 1) Naidu, Sarojini. "The Gift of India". Englicist. <https://englicist.com>. accessed on 26 May 2020.

Secondary Source

- 2) Dutt, Manomohini. "Daya; The Conceptual Understanding of Inheritance and Gift in the Dayabhaga". *Journal of Indian Philosophy*, 47, 111-131(2019).Springer. accessed on 1 June 2010.
- 3) Harshananda, Swamy. "Evolution of the concept of gifts in Hinduism". Prabhudda Bharatha. Ramakrishna Math. rkmathbangalore.org. accessed on 2 June 2020.
- 4) Parachin, M. Victor. "In my Opinion: India's gift to the World". *Hinduism Today*. <https://www.hinduismtoday.com>. accessed on 3 June 2020.

V.M. Deshmukh

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2020

SPECIAL ISSUE-CCXXV (225)

Domestic Violence: Impact on Indian Society



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr Nitin A. Mathankar
Principal
Late Vasantao Kolhatkar Arts
College, Rohana

Guest Editor:
Prof. Deoman Umbarkar
Late Vasantao Kolhatkar Arts
College, Rohana

The Journal is indexed in:

- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)



86	युवक आणि घरगुती हिंसा	प्रा. लालचंद एन. मेश्राम	373
87	कौटुंबिक हिंसाचार व प्रतिबंधात्मक धोरण	प्रा. मिश्रीलाल लक्ष्मण अंवादे	377
88	स्त्रीकौटुंबिक हिंसाचार आणि कायदेविषयक तरतूद	प्रा.डॉ. प्रवीणा नागपूरकर	381
89	कौटुंबिक हिंसाचार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. महेन्द्र गावंडे	385
90	सामाजिक स्वास्थ्य में संगीत की भूमिका	डॉ. सारिका विवेक श्रावणे,	389
91	घरगुती हिंसाचाराचा ग्रामीण भागातील खेडाळूवर पडणारा प्रभाव	प्रा.नाजुकराम बनकर	392
92	मानवी हक्क आणि कौटुंबिक हिंसाचार कायदा यातील संबंध	डॉ. कैलाश वि. विसांद्रे	395
93	नोकरदार महिला व कौटुंबिक अत्याचार— एक विश्लेषण	प्रा. डॉ. निलीमा दि. कापसे	404
94	मराठी संस्कृती आणि रंगभूमीवरिल लोककला, प्रकार	प्रा. वंदना म. देशमुख / डॉ. शिरीष व्ही. कडू	407
95	कौटुंबिक आर्थिक हिंसाचार आणि कायदेशिर तरतूद : एक आढावा	प्रा. डॉ. विवेक अ. चौधरी	410
96	कौटुंबिक हिंसाचार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	प्रा. नंदकिशोर उकंडराव राऊत	414
97	कौटुंबिक हिंसाचार — काल आणि आज	डॉ. एच. यु. पेटकर	420
98	प्लेटो यांचे न्याय व शैक्षणिक विचार	डॉ. उज्वला दिगंबर गोंडाणे	425
99	सामाजिक बदलाव एवं संगीत	डॉ. नेत्रा श्रीकांत तेलहारकर	429
100	ऑरिस्टाटलचे कुटुंब संस्थेविषयी व संपत्तीसंबंधीचे विचार	डॉ. साधना मौंदेकर	433
101	पारिवारिक कलह एक दृष्टिपात: हिन्दी साहित्य के अंतर्गत नागार्जुन	नितिन अ. बनकर	435
102	कृषी उत्पादन व्यावसायातील संधी आणि आव्हाने	डॉ. विद्या पा. चन्ने	439
103	वाचन कौशल्य विकास	प्रा. सारिका पाटील	445
104	सक्षम समाजनिर्मितीकरीता महिलांचे सबलीकरण	प्रा. सुरेश पवार	449
105	कौटुंबिक हिंसाचार, स्त्रिया व राज्यघटना	डॉ. चंदु के. पोपटकर	453
106	मानवाधिकार व कौटुंबिक हिंसाचार	प्रा.प्रशांत र. घुलक्षे	457
107	घरेलू हिंसा और स्त्री	प्रा. तेलंगे नागनाथ निवृत्ती	463

मराठी संस्कृती आणि रंगभुमीवरिल लोककला, प्रकार
प्रा. वंदना म. देशमुख
संगीत विभाग
कला महाविद्यालय मलकापूर
ता. जि. अकोला

डॉ. शिरीष व्ही. कडू
संगीत विभाग
श्री शिवाजी मला वाणिज्य
विज्ञान महाविद्यालय, अकोला

प्रस्तावना —

मनुष्य हा संवेदनशील प्राणी आहे. तो विभिन्न परिस्थितीत विभिन्न भावनांना अभिव्यक्त करित असतो. त्याचया कामाच्या स्वरूपानुसार त्यात परिवर्तन करित असतो व हे परिवर्तन त्यांच्या भावनांना उद्दिष्ट करित असते. या भावनांची उकल ही विविध लोककला प्रकारांतून बघावयास मिळते. प्राचीन कालीन या लोककला सादर करण्याचे प्रभावी माध्यम म्हणजे रंगभूमी, प्राचीन काळापासून रंगभूमीचे विशेष महत्व आपल्या नरजेपुढे दिसते ते रंगभूमीवर सादर होणाऱ्या कलाप्रकारांतून याच कला प्रकारांतून संस्कृतीचे दर्शन होत असते. ज्यांचा उल्लेख आज उत्तर भारतीय संगीतातील लोकसंगीत म्हणून संबोधिल्या जाते. लोकसंगीत प्रत्येक प्रांताचा एक विशेष आहे. त्या प्रांताचा तो विशिष्ट गानप्रकार असतो. हे गानप्रकार म्हणजे त्या संस्कृतीची सांस्कृतिकता.

वैदिक काळापासून या देशातील लोक निरनिराळ्या प्रांतांमध्ये एकोप्याने राहत असल्याने भाषा भिन्न असली तरी एकाच सांस्कृतिक छात्राखाली ते वावरत असत. त्यामुळे संस्कृतीच्या सांस्कृतिकतेमध्ये रंगभूमीवर सादर होणाऱ्या कला प्रकाराचे अनन्य साधारण महत्व आहे. या रंगभूमीवरूनच मराठी संस्कृतीचे चित्रण प्रदर्शित होत असे ते लोककलेतून अश्या काही निवडक कला प्रकारांचा उलगडा या शोध निबंधात करण्याचा प्रयत्न करित आहे.

विषय प्रवेश —

मराठी संस्कृतीतील रंगभूमीवरील लोककला प्रकार —

मराठी संस्कृती ही मराठी भाषिक लोकांची म्हणून संबोधल्या जाते. या क्षेत्रामध्ये बोलली जाणारी मराठी भाषा आणि भाषा हे त्या प्रांताचे वैशिष्ट्य असते. कारण त्या सांस्कृतिकता ही भाषा वैभवावर अवलंबून असते आणि भाषा संस्कृतीचा एक महत्वपूर्ण भाग आहे. त्यामुळे येथील संस्कृती ही मराठी, ही मराठी संस्कृती भाषा वैभवामुळे महाराष्ट्रभर पसरलेली दिसून येते व या भाषेवर आधारित लोककला प्रकार, अशा महाराष्ट्रभर विविध भागांमध्ये लोककला प्रकारांचा रंगभूमीवरून प्रयोग होतांना तत्कालीन काळामध्ये बघावयास मिळतात. यक्षगान खेळ, कीर्तन, भारुड इत्यादी लोक कलाप्रकार मराठी संस्कृतीचे चित्रण घडविणारी आहेत. अशा लोककला प्रकारांचे थोडक्यात विवेचन पुढीलप्रमाणे —

लोककला —

कोणत्याही विशिष्ट क्षेत्रातील लोककला ही त्या क्षेत्राचे प्रतिनिधीत्व करित असते. कला हे मानवी जीवनाचे महत्वपूर्ण अंग आहे. तर मानवाचे जीवन जगण्याची पध्दती ही संस्कृतीचे चित्रण दर्शविणारी असते. त्यामुळे कला हे देखील संस्कृतीचे अंग आहे आणि मानवाने मानवाच्या श्रद्धेतून या लोककलांचा उदय केला असावा असा उल्लेख आहे, कधी या कलेचे स्वरूप हे धार्मिकतेच्या आशयाने उदर निर्वाहासाठीचे देखील असायचे, यावरून त्यांचा एक विशिष्ट वर्ग निर्माण झाला व हा वर्ग केवळ मराठी संस्कृतीतूनच बघावयास मिळतो. हा विशेष, लोककला मराठी संस्कृतीतील

रंगभुमीवर नाटयात्मविधी ते विधीमुक्त नाटय या अंतर्गत असायच्या, त्याचे विवेचन खालीलप्रमाणे

—
तमाशा —

साधारणपणे पेशवेकालीन उदयास आलेला हा लोककलाप्रकार, पूर्वी याचे स्वरूप रंजकता आणि मनमोहकतेचे होते. असा उल्लेख अध्ययन करतांना वाचण्यात आला तसा रंगभुमीवर सादर होणाऱ्या लोककला प्रकारांपैकी एक जो की मराठी लोकनाटयाचे प्रतिनिधीत्व करणारा असायचा, तो हा तमाशा लोककला प्रकार या तमाश्याचा घडणीतुन साधारणपणे विधीनाटय आणि लोकगायक यांची ओळख पटत असे आजच्या सणउत्सव, धार्मिक विधी मराठी संस्कृतीमध्ये केले जातात त्या विधीमध्ये या लोककला सादर करणाऱ्यांच्या आवश्यकता दिसून येते. परंतु इथे विषय केवळ रंगभुमीचा असल्याने अन्यत्र जाणे नको. या सण उत्सवातील एका उत्सवाचे प्राचीनत्व खालील उदाहरणावरून लक्षात येऊ शकेल.

या लोककलाच्या उपासकांनी त्यांच्या आदीम श्रद्धेतुन या प्रकारांना जन्म दिला असावा. तो म्हणजे "वासंतिक नवचेतनेचा स्वागत सोहळा म्हणुन साजरा केल्या जाणारा सुग्रीष्मक म्हणजे आजचा शिमगा. या उत्सवातील — 'राधेचा नाच' रंगभुमीवर तमाश्याच्या स्वरूपातुन सादर केल्या जात असे. यातील सांगीतिकता अशी सांगता येऊ शकेन की, 'राधेचा नाच' हा गायन, वादन आणि नृत्य या तिन्ही कल्पना धरुन असावा."

या रंगभुमीवर केवळ रंजकत्व हा एकच रस नव्हे तर भक्तिरसाचाही सुगंध दखळीत असे. तो कीर्तन या लोकविळकाराच्या शैलीतुन.

किर्तन —

कीर्तन ही लोकअविष्कार शैली हयातील नारदीय कीर्तन हे केवळ ईश्वरीय भक्तीसाठी प्रचारात होते. तत्कालीन श्रद्धा, विश्वास, आराधना या भक्तीमय विचारांचा पगडा सामान्य जनतेवर असल्याचे जाणवते. साधारणपणे कीर्तनाचे सादरीकरण हे मौखिक पठनातुन टाळ—झांज यांच्या संगतीने होत असे. यातुन रंगभुमीवरून सादर होणाऱ्या या कलाप्रकारात तालवाद्यांचा व मौखिकतेतुन गायनाचा ही समावेश असल्याचे दिसुन येते. कीर्तन हे लोकजागृतीचे उत्तम साधन होते यातुन आदर्श नितीमुल्याची सांगड घातली जात होती.

आख्यान काव्य —

आख्यान काव्य देखील रंगभुमीवरून सादर होत असे व त्याचा विषय हा पौराणिक कथांवर आधारीत कल्पनावंध असायचा. त्यातुन पुरुषार्थाचे व्यक्ति चित्रण होत असे व हाही प्रकार मौखिक पठनातुन सादर होत असे व पठन क्रिया ही संगीत कलेच्या प्रायोगिकतेकडे वळणारी आहे.

भारुड —

रंगभुमीवर सादर होणारा व अनेक विषयांची उकल करीत चालणारा 'भारुड' हा एक लोककला प्रकार म्हणुन ओळखल्या जातो. संस्कृतीचे संवर्धन आणि संरक्षण करणाऱ्या नातेसंबंधाचा विषय सुध्दा या भारुडात मांडला जायचा. संत एकनाथ महाराजांचे कौटूंबीक विषयाच्या आशयाने आलेले 'भारुड' (मला दादला नको बाई!) लोकप्रिय आहे.

गोंधळ —

मराठी संस्कृतीमध्ये गोंधळ परंपरेचे स्थान महत्वपूर्ण आहे. मराठी संस्कृतीच्या घराघरामध्ये कुळाचाराचा भाग म्हणुन गोंधळाची परंपरा बघावयास मिळते. अशा समृद्ध लोककलांचा वारसा या संस्कृतीला लाभला आहे. गोंधळ या लोककलाप्रकाराने रंगभुमीवर आपले स्थान टिकविले आहे. गोंधळाचे सादरीकरण कौटूंबीक भावनेतुन तर होतच होते शिवाय गोंधळासोबत तुणतुणे डफ यासारख्या वाद्यांचा समावेश बघावयास मिळतो. यांच्यासोबत आराध्य देवदेवतांना गायन वादनाच्या

प्रक्रियेतुन आवाहन केले जात असे. असे विविध लोककलाप्रकार रंगभुमीवरून सादर होतांना मराठी संस्कृतीत बघावयास मिळतात. अशाप्रकारे मराठी संस्कृतीतील रंगभुमीवर सादर होणाऱ्या या लोककला प्रकारांचे थोडक्यात वर्णन शोधनिबंधात मांडण्याचा प्रयत्न केला आहे.

संगीत ही कला श्रेष्ठ अशी कला आहे, ती राष्ट्र असो वा देश असो त्याची ओळख या संगीत कलेवरून होत असते. कारण प्रत्येक राष्ट्राची आपली एक संस्कृती आहे आणि संगीत, काव्य, चित्र, शिल्प इत्यादी कला या संस्कृतीच्या वाहक असतात. अशा वाहकातील संगीत कला व संगीत कलेतील लोककला प्रकार जे की प्राचीन काळी रंगभुमीवर सादर होत असत व ते आपल्या मराठी संस्कृतीचे वैभव सांगित असत. अशा उद्देशातुन काही कला प्रकारांचा उल्लेख या शोध निबंधात मांडला आहे.

संशोधन पध्दती -

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये ऐतिहासिक पध्दतीचा वापर केला आहे. कारण ऐतिहासिक पध्दतीतुन भुतकाळाचा संदर्भ घेऊन भविष्याशी त्यांची सांगड घातली जाते.

सारांश -

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये काही निवडक लोककला प्रकारांचा उल्लेख करण्यात आला आहे. ह्या लोककला मराठी संस्कृतीच्या वैभव वाढविणाऱ्या आहेत, याची प्राचीन स्वरूप हे रंगभुमीवरून प्रस्तुत होत असे कारण हे, रंगभुमीच लोकमाध्यमाची सशक्त अशी वाहक होती. कारण तत्कालीन काळामध्ये लोकांपर्यंत विचारांची देवाणघेवाण करण्याचे प्रभावी माध्यम म्हणुन रंगभुमीचे अनन्य साधारण महत्त्व होते. आजही या लोककला प्रकाराना सामाजिक प्रबोधन, जनजागृती आणि धार्मिक विधीसाठी उपयोजिल्या जाते. मात्र आज रंगभुमीचे स्वरूप काही अंशी बदलले आहे. आजकाही लोककलाप्रकारांचे दर्शन तर शैक्षणिक क्षेत्रातुन विविध कला कार्यक्रमातुन होत असलेले बघावयास मिळते. एवढे सामर्थ्य या मराठी संस्कृतीने जोपासले आहे ती स्वतःमध्ये 'श्रीमंत' अशी संस्कृती म्हटल्या जाते.

संदर्भ सुची -

- १) गोंधळ, परंपरा, स्वरूप आणि अविष्कार
- २) मराठी रंगभुमी उगम आणि विकास
- ३) लोकनागर रंगभुमी
- ४) लोकगायकांची परंपरा

V.M. Deshmukh

MAH/MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta[®]
Peer-Reviewed International Publication

February 2020
Special Issue-05

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Special Issue-05, February 2020

Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne
Smruti Arogya And Shikshan Prasarak Mandal's
Sahakar Maharshi Late Bhaskarrao Shingne Arts College,
Khamgaon, Dist. Buldhana

Organizes

One Day Interdisciplinary National Conference On
Humanities, Culture And Society

Editor

Dr. Babu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci., 3.Ed.Ph.D.NET.)



"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana
Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post.
Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

52) विद्यार्थीनाम धार्मिक स्थाने कु.प्रियंका किसन अष्टाव	177
53) १९ व्या शतकातील सामाजिक धार्मिक चळवळी रिता सुरतीसिंग राजपूत	180
54) महाराष्ट्राच्या ज्योतिषापूर्वीच्या सामाजिक ज्ञानातील मान्यता आणि दृष्टीकोन प्रा.कु. वंदना अशुन विजने, भंडारा	183
55) नव्विन आर्थिक धोरण, भारतीय अर्थशास्त्रज्ञ रामतील आ. तेल डॉ. अलका अमिता मानकर, वृत्तशाखा	186
56) मानवी जीवनशास्त्र मराठी संस्कृती आणि लोकशाहीतीचे महत्त्व प्रा. वंदना म. देशमुख, डॉ. शिरीष कडु, अकोला	190
57) मानव जीवनात संगीताची सर्वांगीण समासनात्मक भूमिका डॉ. पिताली एस. पांडे, अकोला	193
58) संत साहित्य मराठी प्रा. कु. भवना मनोज तावडे, यवतमळ	195
59) राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांचे ग्रामसंस्था विचार प्रा.डॉ. रवींद्र पं. वेवले, वृत्तशाखा	199
60) संत साहित्य : आकलन आणि अस्वाह प्रा. संस्था जंजाळ, यवतमळ	202
61) एका बहुव्यवस्थेतील सौजीवन दर्शन (मराठी काव्यशास्त्राच्या आधारे) प्रा. डॉ. सविता माधवराव पवार, भैरकर	205
62) संगीत का मानव जीवन मध्ये स्थान मिनाश्री बसवत, पुणे	208
63) स्वामी विवेकानंद के साहित्य में युवाओं के लिए विचार सै. रमिंद्र सै. वासिम, बारास	211
64) मानव अधिकार तथा आज की वास्तविकता डॉ. राधा सवर्जावणी, अकोला	213

आधुनिक अर्थव्यवस्थासमोर प्रोटॉम ही एक फाट मशीन
समस्या आहे. लोकशाहीचे अस्तित्व टिकविणे सवायकूट कार्याचे
हीच मूल्ये सवे प्रत्यक्ष मूल्येला प्रत्यक्ष मूल्येला लोकशाहीचे
अर्थव्यवस्था आहे.

५. पाणी :-

पाणी हे जीवन आहे परंतु आता काही पर्यावरणात
विनाशामुळे पाण्याची गोष्टी टंचाई भरत आहे. प्रदूषित पाण्यातून
लोकाना अनेक रोगांना बळी पडत आहेत. मान देशासमोर पाणी
वाचवणे, पाण्याचा योग्य वापर करणे हीच पाहणी आहे.

अशा पध्दतीत जागतिक स्पर्धात भाग घेता आले असता
स्पष्ट करत असताना वैश्वीय आकृती बरोबर सामाजिक सुरक्षितता
योग्यता राखणे, युवावळ बसाव्याची पुरवठा व जन श्रम्ये तसे निर्माण
पुनर्वाटप करणे, त्यातून योग्य जमीन लागवडीखाली आणणे,
सांस्कृतिक वितरण व्यवस्था अधिक गरिमा करणे, शैतक्यता
हमी भाव देणे, गरिबांना किमान किमतीची र देणे, अंधविश्वास,
रुद्धी, परंपरा, सीरिय, केकरी, आर्थिक विषय त्या ही सुद्धा आजचे
आहेत.

या अडकतांना सामोरे जाणे गरजेचीता बदलतात
जागतिककरणाच्या रीतिने संपूर्ण समाजच क्रांती स्वतःचे स्वतः
निर्माण करण्याकरिता स्पर्धात टिकून राहणे याकरिता परंपरा
शिक्षणाला जोड घेणे नव्या गुणात्मक व रचनात्मक पायावर रचना
राहणारी शिक्षणव्यवस्था निर्माण करून आण या सुरु अशा मानवी
संसाधन शाक्तीचा पुरवठा लागू घेणे आवश्यक आहे.

संदर्भग्रंथ :-

१. अर्थशास्त्रकाराणा. डॉ. सराविक यशवंत, प्रा. वि. ग.
गोडबोले, प्रा. जोसून
२. भारतीय अर्थव्यवस्थेची वाटचाल 1. शारद शंकर
३. अर्थशास्त्र डॉ. जी. एक
४. व्यावसायिक पर्यावरण आणि उद्योगिक प्रवाहांचे डॉ. वि.
वि. कडवेकर
५. भारतीय अर्थव्यवस्था. रवींद्र लोटावरे, डॉ. पाव. ग.
एन. एन.

□□□

मानवी जीवनामध्ये मराठी संस्कृती
आणि लोकसंगीतचे महत्त्व

प्रा. वंदना म देशमुख

संगीत विभाग,

कला महाविद्यालय अकोला

डॉ. शिरडीय कडू

संगीत विभाग,

श्री. शिवाजी कला, क्रीडा व विज्ञान महाविद्यालय, अकोला

प्रस्तावना

मानव जीवन जगत असताना एकदा जगण नवी तर नवे
सामुहिक अर्थव्यवस्था निर्माण करत असते. हे जीवन जगणे
असताना वही आणत्या रुद्धी परंपरेनुसार सांस्कृतिक मुल्यांचे
जोपासना ता करीत असते. ही सांस्कृतिक मुल्यांची जोपासना
संस्कृतीची निर्मिती असते. कारण सांस्कृतिक मुल्यांमध्ये संस्कृती
रचते असते. संस्कृती रचते ती समुदायात ठिकाणी आणि समुह
साधारणतः नव विभागा बघायला मिळतात एक म्हणजे कुटुंब नव
दुसरे म्हणजे गणना. कुटुंबातून संस्कृती जोपासली जाते तर गणनातून
धर्माचे रक्षण होते आणि धर्म हा संस्कृतीचा महत्त्वाचा घटक
धर्मानुसार आचार, विचार, तर्क, परंपरेचा रिकार केल्या जाते.
यांना संस्कृती संरक्षण देते व मानवी समुह दर मिठी पावे संजमण.
संवाधन करत व हा मानवी समुह कुटुंब व समुह दोन्हीकडे असतो.
त्यामुळे बऱ्याच विचारातानी संस्कृती ही समाजाची निर्मिती सोलवते
आहे. त्या अनुषंगाने संस्कृतीच्या व्याख्या पुढील प्रमाणे.

१. संस्कृती व्याख्या -

राजकीय 'लक्षणाशरत्वां जीर्णां, याच्या मते, मनुष्य
व्यक्तिसाः य समुदायाः ची जीवन पध्दती निर्माण करतो तेव्हा
कुक्षीपुस्त' हेतुने काही अधिकार व नावित्य निर्माण करतो आणि
जीवन साय लक्ष्य स्थापन व वाहवाविशवावर संस्कार करून नवे
अधिकार भरते. तो पध्दती व तो अधिकार म्हणजे संस्कृती.
२. परकीय शास्त्रज्ञ -

आपने एक रंगत अधुनका होणारी आणि मा-ने समुदाय
द्वारे बनणारी संघटित याच म्णारे संस्कृती."

मानव मनाच्या विविध कृती असतात, त्याचे स्वरुप
कधी संस्कृतीच्या धार्मिक तर कधी अधार्मिक स्वरुपाने असतात.
संस्कृतीचे हे धार्मिक आणि अधार्मिक रूप संस्कृतीचा विकासाने
कारणोप्राप्त ठरता असतात. या विकासामध्ये जरी धार्मिक संस्कृती
विकासशील झाले तर त्या मराठी संस्कृती कधी अढळी राहणार.
कामग्याने राष्ट्रपती गणपती वाजराज्याने असेल तर ते यासाज्यास
असलेल्या लोकसंघानेचलून दिसून येते, कारण का-ा हे संस्कृतीचे
महत्त्वपूर्ण अंग आहे. प्रसून शोभाचलण मराठी संस्कृतीच्या मानवी
जोडनात लोकसंघानेच स्थान प्रसून करणारा प्रयत्न करीत आहे.

संगोपन उद्देश -

मानव आणि संगीत कलायाच्या संगोपासून मानवी
जोडनामध्ये जगण असताना मनुष्य अशा काही निरसनी निर्मिते
करतो की, त्यातून संस्कृतीचा विकास होतो आणि तो संस्कृतीचा
विकास हा कलेतून अधिक प्रकरतेने दिसून येतो करता हे या
निमित्तसह्या आहेत. परंतु प्रसून शोभाचलण मराठी संस्कृतीतील
मानवी जोडनामध्ये संगीत कलेचा उपयोग प्रसून संस्कृतीचा
आहे. मानव आणि संगीत कला याच्या संगोपातून मराठी संस्कृतीचा
होणारा विकास व मानवी जोडनातील लोक संगीत का-ाच स्थान हा
या संगोपनाचा उद्देश्य आहे.

विषय गाथा -

मनुष्य आपले जीवन जगत असताना मानवी मनाच्या
द्वारे असलेल्या विविध आंतरिक कृती या व्यक्त करणावा प्रयत्न
करता असतो. त्या कृती असतात निवळा, प्रेम, स्नेह, आनंदता,
आनंद इत्यादी या ज्या ध्येयानुन प्राप्त होतात. त्या ध्येयाना प्राप्त
करण्यासाठी मनुष्य अपार यत्ने तो कलेचा आणि ह्या कलेचे
श्रेष्ठ मनुष्य शारीरिक आणि मानसिक हालचालीतून येता असतो.
हे कला लोकसंघानेच प्रदरित होताना दिसून येते. अशा कलांना
'Performing Art' म्हटल्या जाते. ही कला (Performing
Art) लोकसंघानेच दिसून येते. यावरून असे म्हणता येते की,
मानवी जोडनामध्ये लोकसंघानेच स्थान महत्त्व पूर्ण आहे.

"लोकसंघानेच चलत आलेल्या परंपरागत सामाजिक रूढी, धर्म,
निसर्ग इत्यादी सांस्कृतिक जोडनाचे दर्शन घडविणारी यत्ना म्हणजे
लोकसंघानेच होय." या व्याख्यानसह संस्कृती आणि लोकसंघाने
आंवा सरळ संबंध दिसून येतो याच लोकसंघाने हे कोणत्या भाषेतील
या प्रदर्शनांत आहे. हे ही संस्कृतीच महत्त्वाचे असते. त्यामुळे प्रसून
शोभाचलण मराठी धार्मिक प्रवेश युक्ति असल्याने मराठी संस्कृती

विषयगत: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal
Impact Factor 7.041(IIJIF)

माण लोकसंघाने व ये मानवी जोडनातील महत्त्व दिसून येते.
मानवने आणि निसर्गाचे अर्धे लय चरचरत असे मान
होरे. त्यामुळे मान लल जेव्हा या वेसीक संसृतीची जगात
लो तेव्हा त्याने। एसातही संघटित असाण्या घडनाचा श्रेष्ठ
होवला तो शोभे व वा श्रेष्ठेचा आणि शोभाचलणानेच हे करण
लाता येऊ शकते. तरण शोभाचलण काम एव शोभाचलण मानसिक
शोभाचलण, मनो नसमाठी कला पुढा नये हा स्वभाविक धर्म
लुचने असणारा। नस होय. त्याच्या या पुढाण्यातून लोकसंघाने
नसाण झाले पुढी। लोकसंघानेच ठरवता शकते पुढक अर्धे
अरे. 'सामान्य व ग्रामीण भाषातील लोकच्या उत्पुन ते भाषना
यक्त करणाने व ला कलाचे लोकसंघाने। लोकसंघाने या उत्पुन ते
लातना परंपरागत सांस्कृतिक जोडना मु-ाचे दर्शन घडविणाऱ्या

असतात व त्यांचे प्रकण संस्कृती करतो। जेते.
लोकसंघाने हे लोकसंघाने, लोकसंघ व आणि लोकसंघाने यानुन
पुन येते, या निरते कलाचे अंगअसल्या ठिकाणी विविध स्वरुप
होते.

संकाशित -

1. 'सामाजिक जीवनचो मुख्य लोका लल प्रदरितचल झालेने
शालता.' लोकसंघाने ये प्रामोण लोकसंघ अशा, अकला, रन,
या, रणवेने, माया, प्र ए इत्यादी भाषना प्रकाश झालेल्या असतात.
2. अवस्थेत भाषना महत्त्वाचे असते। त्याचा ही भाषना
प्र। गीतवापसून ते अण गीत्यक गीतवापसून हे सुन येते. त्याच दर्शन
ल लोकसंघाने होते, म लो जोडनातील भाषना संसंघानेच उतरण
सा लो अधिक प्रभावी त्या वापसवास मिळतात. त्यासोबतच मराठी
सा कृतीचे जोडनामान। या अंवा गीतवापसून शोभा येते, कारण या
अ. गी. गीतवापसून हे भविष्य वापसून अरे आहे. त्यामुळे अरक
हा मय आंध्याचा पर। वापसवास मिळतो

आंधीचे स्वरुप कधी श्रमगीतानुन असते, कधी दूरवाचनाने
असते, कधी संस्कृतीची सांस्कृतिक विधि. मुख्य जोडनामनुन
असते, अशा विविध स्वरुपानुन मराठी संस्कृतीचे दर्शन होते.
आ ही लोकसंघानेच महत्त्वाचा गीत प्रकाश आहे.

उदाहरण -

श्रमगीताने। अंवा - श्रमगीताने अंवा म्हणजे
जा गावतील गाणी लल गातीन काळामध्ये रव गाकाडण हे पणे केले
जा असते हे आणि। श्रमगीत, काव्येचे नाम हे काम करीत
आसता श्रम लोके व टावे म्हणून निस्या र गातीत अंवा म्हणून
असते.

दिव्यादीवा हे रा भाषनाचा झाला।

कडे पुर नसता येता।।

भाव-भावच भांडो।। जाणच एक फिर

नका पालव आडो।। भिना वळी घेईल पान,

अथवा कौटुंबिक नियमाच्या आशयाने तिथी गणवल्या जात असे व जाल्याच्या घाघरांमध्ये असलेल्या सालामध्ये व गायनाच्या लयामध्ये संगीत कर्मा दिग्गज येते. तसेच संस्कृतीचा ही ओंजळ होते. असे विद्य बहुतेक मराठी संस्कृतीत वय यामस मिळते. **देवदेवतांचिचयी ओवी -**

फहिली माझी ओवी ग पदरीच्या विडुला।
चोड्या, जनी, नाथासाठी धाव धाव धाव।।।

अथवा एक, दोन, ती व प्रामाणे घेत देवतांही यतीची ओवी रंगायची त्यातून मराठी संस्कृतीतील देवदेवतांची नाली सतसंध्याची माहिली संगीतली जात असे. त्या सुंदर ओव्याचा संसार मराठी संस्कृतीत मानवी जीवनाने साका लिला आहे. त्यासोदर लोकवाद्याचा उल्लेख लोकगोतातून होतो.

लोकवाद्याचे उदाहरण -

पदाटेच्या प्रकरामध्ये दे व तुळशी कडुवावारी कुण्या देवाची आली र मारी मुरली वाजवी = नापरी।।
असा सुशिर वाद्याचा उल्लेख वाद्यव्यास दे गे. तर पदाटेच्या प्रदरी मां ज गे झाले अर्थात।
साजा पदरी राचा माड, आला वीणा वाजव न।।।
असा तंग वाद्यांचा उल्लेख सापडतो. तर पदरीचा विदु विकली व ज्ञा काळा।

होली टाळ, वीणा यात ना न्याजे नोटी चोळा।
पदरी रचिली मेदून पडुनी।
नवळयाने केले काम झळ, मृदुंग लालुनी।
पदरीला जाले माळ देदान पाहुणी।
पदरीला देव जाले भांडे लालुनी।।।

अथवा प्रकारचो रंगीतातील सुशिर, तु अवनध प्रकारांतल वाद्यांचा लोकगीतांत न सहाभाषा व आरती संगीतवासी घटा, मृदुंग वासांराजो लयवाद्य ही वाद्यव्यास मिळत न.

ज्या ठिकाणां गायत आणि वाद्यांचा उपप ग होता, ज्या ठिकाणां मानवाची शारिरीक गालचाल असणे स्व गीतक होय, मराठी संस्कृतीचे आरंभ्य देय। असलेले 'श्री क्षेत्र' इतरुं याचा नंदा उल्लेख होता. त्यावेळी म व टाळ मृदुंगाच्या नंदा त्या शारिरीक रंगलचाल करणारे यारकरी न रं आड करता येत नाही. पायला पयलातून नृत्य करीत पदरुंग क्षेत्र गाढल्या जाले व तथे गल्यावर विदुनाचा हांगात नयघोष जे यानुन या नाचण्यातु सादर केला

विद्यार्ता : Interdisciplinary Multilingual Peer-reviewed Journal Impact Factor 7.041 (UIJIF)

त्याची साध असा

सर्वांना गीतित असणारे गीत विदुना मगर हरी नामाचा उा रीतिले हय गीताच्या नाचण्यातून अंधकर्मने दिग्गज येते. ङ्गीते, देवतांचिचयी ओवी यानुन जसे लोकनृत्य हिसते तसेच ङ्गीतुलीच्या विभिने ग्यांनून लोकनृत्य केल्या जाते. उदा - भारुड, ङ्गीत, अथवा गिरीगुन संस्कृती दयानसोचन नृत्यावाढी साहाभागा मलेला आळवून जाले. अशाप्रकारे मराठी संस्कृतीच्या या विभिने ङ्गीतरानुन मानवी जीवामध्ये लोकसंगीताचे महत्व असलेले दिग्गज रं।

रंगोपन पधती -

मानवाच्या नैदिन जीवनामध्ये संगीताला महत्त्वपूर्ण स्थान प्र न झाले आहे. संगीताला आजच्या प्रगत स्वरुपातून पंढरवाद्यासाठी न। दयामधुन वाद्यांचा करावी लागली त्याची माहिली ही इतिहासातून घे ङ्गीते असले. व गंगा भूतकालातील कोणत्याही घडामोडींचे सं ध होत असलेला गिरीगुन संशोधन पधतीचा उपयोग केल्या जा ने. या पधतीमुळे विषयाचा भूतकालातील संदर्भ घेऊन मानवाची त्या या संशय जोडला जाे. त्यासाठी प्रस्तुत शोध निबंधासाठी ऐतिहासिक संशोधन पधतीचा उपयोग केला आहे.

निष्कर्ष -

प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये मानवी जीवनामध्ये लोकसंगीताचे एत। महत्व आहे की या लोकसंगीताच्या माध्यमातून संस्कृतीचे ही रचने होते. कारण संस्कृतीची रचने रूपे वकी एक रुपानुन मानवी मनःचा विविध कृती रंगीत आहेत आणि या विविध मानवी कृती ना लो गीतातून वाढता येते. साध्या सरळ, सोप्या भाषेत असणारी ही ले गीते याच्या नैदिन असाणारी वाद्य आणि नृत्य यती साध व पु लोकसंगीत सादर झाले व त्यातून संस्कृतीतील मुल्यांचा उा लून अभ्यास करीत आला व या अभ्यासातून मराठी संस्कृतीचे रं जो एवढे शान प्राप्त झाले. त्याकारिता या विषयाचा निबड केली रंगी की, लोकसंगीतातून करण्याप्रकारे मराठी संस्कृती टिकून आहे

रंगोपन पधती -

१. लोकसंगीत - डॉ. भांडोराम वाडकर
२. मराठी लोकांचे संस्कृती - डॉ. शरदाती कर्वे
३. मराठी संगीत लोकगीत - प्राचार्य विठ्ठल कांडो
४. देवतांगी गणी - विश्वनाथ खेरे
५. नाचव - डॉ. सरांजनी बाबर.

Impact Factor 7.041 (UIJIF)

(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March -2020

SPECIAL ISSUE-CCXXV (225)

Domestic Violence: Impact on Indian Society



Chief Editor
Prof. Virag S. Gawandè
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr Nitin A. Mathankar
Principal
Late Vasant Rao Kolhatkar Arts
College, Rohana

Guest Editor:
Prof. Deoman Umbarkar
Late Vasant Rao Kolhatkar Arts
College, Rohana

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)



20	भारतीय स्त्रीजीवन आणि कौटुंबिक हिंसा	प्रा.डॉ. दशरथ धर्माजी आटे	77
21	आजची संस्कृती नि धरेलु संघर्ष	प्रा.डॉ.लक्ष्मीकांत ना. देशपांडे	82
22	स्त्रियांच्या कवितेतील बदलत्या जाणिवा	अर्चना सं. देशपांडे	85
23	मानवी विकासोपर बदलत्या पर्यावरणाचा परिणाम	प्रा.डॉ.अल्का दहीकर	91
24	महाराष्ट्र राज्यात महीलांवरील अत्याचारांचे वाढते प्रमाण एक समस्या	डॉ.संजय धनविजय	94
25	कौटुंबिक हिंसाचार व शासकीय धोरण	सहा.प्रा. दिपक आर.आटे	99
26	महिला सक्षमिकरण आणि कौटुंबिक हिंसाचार	प्रा.दिपाली अतुल पडोळे	104
27	स्त्रियांवरील हिंसा : एक स्त्रीवादी आकलन	डॉ. धनंजय के. सोनदवळे	107
28	कौटुंबिक हिंसाचाराने-वास्तव	डॉ. एम. एच. झाडे	112
29	कौटुंबिक हिंसाचार : समाजाचे विदारक सत्य	डॉ. वैशाली उगले	117
30	कौटुंबिक हिंसाचार कायदा-२००५ चे सामाजिक अंर्कक्षण-एक अभ्ययन	प्रा.डॉ.संजय गुड्डे	120
31	आर्थिक परिस्थितीमुळे स्त्रियांचेर होणारे अत्याचार : एक अभ्यास	प्रा. जयवंत नथूजी काकडे	125
32	कौटुंबिक हिंसाचार सामाजिक स्वारस्याला पोखरणारी किड	डॉ.मंगला गोरे	132
33	मानवी हक्क आणि स्त्रियांवरीलकौटुंबिक हिंसाचार	डॉ.एम.वी.ठिकरे	136
34	कौटुंबिक सुख, शांती आणि शक्तिचा राज मार्ग संगीत	डॉ.सुनिल बाबुलालजी पटके	141
35	धरगुती स्त्रीमनाचा हुंकार	डॉ.सतीश माधवराव चहांदे	144
36	स्त्रियांवरील कौटुंबिक हिंसाचार : ज्वलंत समस्या	डॉ. साधना विजय लोजेवार	148
37	स्त्रीमुक्ती करणात कायद्याचे महत्व	डॉ.सचिदानंद जुनधरे	152
38	महाराष्ट्रातील कौटुंबिक हिंसाचार	डॉ.एस. पी. झांबरे	155
39	स्त्री शक्ती जागृती	डॉ. रवींद्र एम. बेले	159
40	“धरेलु हिंसा व महिलांसाठी के प्रति हिंसाके कारण”	Dr. Niraj Kumar Khare	163
41	छत्तीसगढ राज्य के विशेष संदर्भ में	डॉ. मुणाल प्रभाकरराव कडू	172
42	समाज एवं संगीत का संबंध	डॉ. मंदा वि. तडस	175



कांद्विक मुख, शांती आणि पाकिच्या राज मार्ग संगीत

डॉ. मुनिल वावुलावजी पटवर्णे

संगीत विभाग कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला.

प्रस्तावना -

भारतीय समाजातील चालीरिती, रूढी, प्रथा आणि परंपरा यांमुळे स्त्रीचे सामाजिक आणि कौटुंबिक खऱ्याकारण मोठ्या प्रमाणात केले गेले. त्यामुळे महिलांचे खऱ्याकारण होऊन नी दुर्बल बनली. स्वातंत्र्यपूर्व व स्वातंत्र्यानंतर शिक्षणाच्या माध्यमातून अनेक समाज सुधारकांनी महिलांचे बंधन शिक्षित करण्यास सुरुवात केली. अनेक स्त्रीवादी संशोधकांनी मुलभूत मुद्यावर विचार मांडले. राष्ट्राच्या, समाजाच्या, घराच्या व कुटुंबाच्या प्रगतीला हातभार लावू शकणारा महत्त्वाचा समूह म्हणून स्त्रियांकडे पाहले जाते. महिलांना माणूस म्हणून समानतेची वागणूक मिळण्यासाठी अजुनही समाजाच्या ५० टक्के असणाऱ्या महिला लोकसंख्येला आरक्षण या शब्दाचा आधार घ्यावा लागत आहे ही यस्तुथिती आहे.कोणत्याही राष्ट्राच्या समाजाचे स्वतः वेगळे स्त्रियांना परत प्राप्त होणाऱ्या स्थानावर अवलंबून असते. स्त्रियांनी स्थिती समानजनक असेल तर समाज सुदृढ व मजबूत असतो. भारतीय समाजाचा विचार केल्यास पूर्ववैदिक काळात स्त्रियांनी स्थिती व दर्जा चांगला दिसून येतो. 'यत्र नाश्रिय पुत्र्यन्ते गरिमाती' अर्थात ज्या ठिकाणी स्त्रियांची पुजा होते त्या ठिकाणी ईश्वर निवास करतात. यावरून प्राचीन काळात भारतीय स्त्रियांना सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राजकीय जीवनानत महत्त्वाचे स्थान होते हे दिसून येते. परंतु कालांतराने स्त्रियांच्या या दर्जाचा ऱ्हास झाला. उत्तर वैदिक काळापासून स्त्रिया कनिष्ठ मानले गेले व तिचे पर्युती शोषण व त्याचे पर्युती हिंसाचारात रूपांतर होत गेले.

संशोधनाची आवश्यकता -

परातील कुटुंबाचे वातावरण चांगले असेल तर ते घर समाजात गावाहायला येते. वेगळे मुलाची शैक्षणिक प्रगती होते, आर्थिक समृद्धी होते आणि कुटुंबातील सर्व लोक आनंदीत जीवन जगत असतात. याचे कारण असे म्हणता येईल की, या घरातील दिवसाची सुरुवात भक्तीगीताने, भावगीताने किंवा संगीतमय वातावरणात होत असेल. भक्तीमय वातावरणामुळे वेधील सर्व लोक आनंदी राहतात. या उलट पाहण्यास ज्या घरात संगीतमय वातावरण नसेल तेथील लोक निरस, निरउत्साही असतात व त्यांचे पर्युती वातावरणात सुली नसते. घरात नेहमी तनावपूर्ण शांतता असते. संगीताचा शाडावर चांगल्या प्रकारे परिणाम होतो हे संशोधनाने सिध्द झाले आहे. मनुष्य तर भावनाशील प्राणि आहे, त्यावर तर नक्कीच सकारात्मक परिणाम होणार. मनुष्याचे जर पर्युती वातावरण शांत, सुखी करावचे व पर्युती हिंसाचारापासून दुर ठेवावचे असेल तर संगीत हा योग्य पर्याय ठरू शकतो. म्हणून पर्युती, सामाजिक, कौटुंबिक, भावनिक, राजकीय हिंसाचार या दृष्टिकोणातून संगीत हे परिणामकारक ठरू शकते म्हणून या क्षेत्राने नव्याने संशोधनाची आवश्यकता संशोधनाला वाटते.

संशोधन पध्दती -

प्रस्तुत शोध विषयासंबंधीत पुस्तके, मासिके, साप्ताहिके, पत्रिका या सर्वांमधून द्वितीय संशोधन सामग्री गोळा करून त्याचे यकींचित विवरलेपण केल्या गेले आणि या द्वितीय सामग्रीला संशोधनात समाविष्ट केल्या गेले आहे. प्रस्तुत शोध निबंधाचा विषय हा सामाजिक क्षेत्रातील संशोधना संबंधीत आहे, कारण की यामध्ये पर्युती हिंसा, पर्युती वातावरण आणि संगीताचा



अनुबंध आहेत. मानवी जीवनात वास्तुसृष्टीचे आणखे, वैशिष्ट्यपूर्ण असे स्थान आहे. त्यासाठी जीवाभावाची बहुमोल अशी त्याची वस्तुत्वना दुषडी भरन वाहते. मातेच्या सद्भावपूर्ण सात्विक योलांनी तिच्या अत्यंत मृदू व ऋजुतापूर्ण शब्दमंत्रांनी वाळासंबंधीचे भावनिक वातावरण निर्माण होते. तिच्या अतःकरणातील पावित्र्य आणि दिव्यत्व बाळ आणि पाळणा याभोवती मांगल्याची वलये निर्माण करतात. यासर्व भावभावनांच्या खंडामध्ये संगीत हे कोणत्या ना कोणत्या रूपात आपली उपस्थिती दर्शवितो व मांगल्यपूर्ण वातावरण निर्माण करण्यास महत्त्वाची भूमिका पार पाडतो.

उपसंहार—

भारतीय कुटूंबव्यवस्था ही पुरुषप्रधान व्यवस्था आहे. परंतु कुटूंबातील एक महत्त्वाचा घटक ही स्त्री आहे. पुरुष आणि स्त्री हे दोन्ही व्यक्ती घरातील वातावरण शांत किंवा वादातित ठेवण्यास कारणीभूत असतात. परंतु जर एखाद्या घरात सकाळची सुरुवात भक्तीसंगीताने होत असेल आणि संगीतमय वातावरण पुजा—अर्चा होत असेल तर त्या घरातील वातावरण हे तनावमुक्त असेल यात शंका नाही. आपल्या भारतीय संस्कृतीमध्ये परगुती वातावरण शांत व सुखमय करण्याकरिता अनेक रंग, उत्सव, स्त्रीगीते आणि प्रत्येक कार्यक्रमाकरिता एक विशेष गीत प्रकार आणि हे गीतप्रकार गायनाकरिता अतःस्थानी महिलांना प्राधान्य दिले आहे. त्यामुळे स्त्री ही आनंदी, शांत राहते व आपल्या कुटूंबाला आनंदी ठेवते. सरते शेवटी असे म्हणणे योग्य होईल की, 'स्त्री म्हणजे घर आणि घर म्हणजे स्त्री' घरातील स्त्री आनंदी तर घर आनंदी, या आनंदाकरिता महत्त्वाची भूमिका ही संगीतमय वातावरणात निभावत असते हे दिसून येते.

संदर्भग्रंथ—

- १) लोकसाहित्य स्वरूप आणि विवेचन — डॉ. पुरुषोत्तम कालभूत.
- २) लोकसंगीतशास्त्र — डॉ. अशोक दामोदर यानडे.
- ३) महिला सवलीकरण — स्वरूप व समस्या— डॉ. लीना कुळकर्णी
- ४) स्त्री सत्तेची पहाट — व्ही चोरमोर.
- ५) महिला सक्षमीकरण समस्या आणि उपाय — डॉ. रेखा हिंगोले.
- ६) संगीत कला विहार — अ.भा.ग.म. मंडळ मिरज
- ७) संगीत मासिक — हाथरस

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta[®]
Peer-Reviewed International Publication

March 2020
Special Issue-01

01

MAH/MUL/ 03051/2012

ISSN :2319 9318



Government College of Education, Akola (CTE)
Near Akola Netra Hospital, Ramdas Peth, Akola

National Conference
on

Research in Interdisciplinary Studies

Date : 18 March, 2020

Editor

Dr. Vasudha V. Deo
Principal

Co-Editor

Dr. Asha Dharaskar (Bhavsar)
IQAC Coordinator



Parshwardhan Publication Pvt.Ltd.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

40) अमरावती विद्यापीठातील संशोधन कक्षाच्या विद्यार्थ्यांना संशोधनकार्यात I. C. T. ... डॉ. शोभना पुरूषोत्तम सावजी, अकोला	159
41) संशोधनात महिला संशोधन तंत्रज्ञान (ICT) च्या भूमिकेचा अभ्यास प्रा. डॉ. नितिन गोविंदराव वाठारे, अकोला	163
42) इयत्ता ९ वीच्या विद्यार्थ्यांना गणित विषयाच्या अभ्यासनात येणाऱ्या ... प्रदिप रामचंद्र क्षीरसागर, वृत्तज्ञाणा	165
43) संशोधन : एक वृत्ती, एक दृष्टीकोन डॉ. संजय एन. बरडे, चंद्रपूर	168
44) संशोधनातील बदलते दृष्टीकोन आणि भारतीय समाज डॉ. सुनिल बाबुलालजी पटके, अकोला	170
45) शारीरिक शिक्षणाचा अंतर्माद्रीय स्तर प्रा. मंजुषा ज. देशमुख, अकोला	173
46) सामाजिक संशोधनात 'आंतरविद्यार्थ्यांतील अभ्यास' पद्धतीचे महत्त्व प्रा. डॉ. सुनिल प्रल्हाद पायगोळ, अकोला	176
47) इतिहासाची ऐतिहासिक संशोधन पद्धती प्रा. डॉ. एस.पी. चव्हाण, वाळापूर	180
48) संशोधनातील बदलता दृष्टिकोन प्रा. डॉ. संभविषा कि. दुपारे, काठोल	182
49) सामाजिक संशोधनाचे सामाजिक समस्यांच्या निराकरणाला महत्त्व - एक विस्तारवाचक अभ्यास प्रा. अमरिष एस. गावंडे, अकोला	184
50) शैक्षणिक संशोधनात मानसशास्त्रीय दृष्टिकोणाची आवश्यकता प्रा.डॉ. मुजलक अहमद शाह, अकोला	186

संशोधनातील बदलते दृष्टीकोन आणि भारतीय संगीत

डॉ. सुनिल बाबुलालजी पटके

संगीत विभाग,

कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला

प्रस्तावना —

आधुनिक युग हे वैज्ञानिक युग आहे. जीवनाच्या प्रत्येक क्षेत्रात वैज्ञानिक दृष्टीने विचार करण्याची जास्त अपेक्षा केल्या जात आहे. यामुळेच शिक्षण क्षेत्रातील सर्वत्र विद्यार्थांमध्ये अभ्यासाला असलेल्या विषयांचे वैज्ञानिक दृष्टीने संशोधन करण्याच्या आवश्यकतेवर भर देण्यात येत आहे. कोणत्याही विषयाचे वैज्ञानिक दृष्टीने विवेचन प्रत्येक संशोधन कार्यात निर्मितल्या सुरुवातीपासून कार्य करते. तसेच संगीत ही एक अशी मकारामक कला आहे की या कलेचा संबंध प्रामुख्याने मानवी भावनेसोबत आहे. गायन कलांना भावनांक तन्मयतेमध्ये शब्दांना जास्त महत्त्व न देता रखावर अर्थीक प्रमाणा लक्ष दिल्या जाते. संशोधन कार्य हे विषय प्रथम कार्य असते. ज्या विषयावर शोधकार्य करावचे असते, तो विषय शोधकाच्या समोर एक वस्तुव्या रूपात प्रस्तुत होणे आवश्यक आहे. आज संगीत कला ही सर्जनात्मक कलेच्या कक्षातून उद्रेन पुढे अभ्ययनाचा विषय बनली आहे.

संशोधनाची आवश्यकता —

प्राचीन काळापासून संगीत या विषयात नवनविन प्रयोग करण्यात आले आहेत. म्हणूनच शास्त्रीय संगीतात नवनविन प्रयोगाचा उपयोग करून नवरागनिर्मिती प्राचीन काळापासून सुरू आहे व होत आहे. प्राचीन काळात संगीत क्षेत्रात जे कार्य झाले त्याला तत्कालीन संशोधन कार्यच आहे असे म्हणण्यात आपल्याला संकोच नाही. व्यवहार रूपात गायल्या जाणाऱ्या स्वराना जेव्हा

नियमबध्द करण्यात आले व ते सिध्दत रूपात त्यांनी रचणाना झाली हा शोधच आहे. अशाप्रकारे संगीतात नवनविन मध्यमानाचा, रघु मसुलाचा, बाळाचा, बाळवृंदाचा प्रयोग करण्यात आला आहे. आधुनिक काळ हा तंत्रज्ञानाचा काळ आहे. सर्वांजवळ वेळेची पुरवठाकता नाही, सर्व मनुष्य प्राणि हे धरतधरतेच, ताननावाचे जीवन जगत आहेत. तंत्रज्ञानाचा विचार केल्यास जग नेनी टेक्नॉलॉजीकडे वेगाने जात आहे. या आधुनिक काळात संगीतातील गायन, वादन आणि नृत्य या तिन्ही कलांचा विकास, प्रशिक्षण आणि मनुष्याच्या मनात आवड निर्माण करण्याकरिता तंत्रज्ञानाचा व प्राचिन सांगीतिक साधन साधणी, साहित्याचा वापर करून संशोधनातील नवनविन बदलत्या आयामांचा वापर करण्याची आवश्यकता आहे. म्हणून भारतीय संगीतात प्रसार आणि प्रचार या दृष्टीकोनातून आधुनिक काळातील विज्ञान आणि तंत्रज्ञानाच्या माध्यमातून संशोधनातील नवनविन बदलते दृष्टीकोन उपर्यागत आणून नव्याने संशोधनाची आवश्यकता संशोधकाला यादते.

संशोधन पध्दती —

मानवी जीवनाच्या व्यक्तित्वात, सामाजिक, सांस्कृतिक सांगीतिक घटकांचा कालक्रमानुसार अभ्यास ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीत होता. प्रस्तुत शोध निबंध हा संशोधनात बदलते नवनविन दृष्टीकोन आणि संगीत वावर आभारित असल्यामुळे या शोध निबंधामध्ये भूतकाळातील दृष्टीकोनांचा आधुनिक काळातील नवनविन बदललेल्या दृष्टीकोणाच्या पध्दतीचा अभ्यास आहे. त्यामुळे आवश्यकतेनुसार ऐतिहासिक संशोधन पध्दतीचा वापर प्रस्तुत शोध निबंधात करण्यात आला आहे. तसेच प्रस्तुत संशोधनात तंत्रज्ञान, वैज्ञानिक या दृष्टीकोनातून नवनविन बदलते दृष्टीकोन या संदर्भात अभ्युन विशिष्ट पध्दतीतील उणिवा शोधणे, त्यावर नवनविन उपाययोजना करणे आणि देण वेगवेगळ्या पध्दतीतील सामोरा अर्थिक स्पष्ट करूण संशोधनातील नवनविन बदलते दृष्टीकोन यांचा अभ्यास प्रस्तुत संशोधनात आहे. याचा सर्व अभ्यास हा तुलनात्मक संशोधन पध्दतीत होतो म्हणून ऐतिहासिक संशोधन पध्दती सोबतच तुलनात्मक संशोधन पध्दतीचा सुध्दा

यथोचित उपयोग करण्यात आला आहे.

संशोधन आणि संगीत —

संशोधनाचा अर्थ म्हणजे समाधान, अनुशिलन किंवा सत्याचा शोध लावणे हा आहे. आवश्यकता ही शोधाची जननी आहे. आजच्या वैज्ञानिक युगामध्ये प्रत्येक विषयाकडे पाहण्याची वैज्ञानिक किंवा संशोधकाची दृष्टी बदलली आहे. प्रत्येक विषयाचे बारकाईने विश्लेषण होऊन त्यामध्ये संशोधन होत आहे. संगीत एक अत्यंत प्रभावशाली ललितकला आहे म्हणून ही कलासुद्धा संशोधनापासून दूर राहू शकली नाही. आधुनिक संगीताच्या कोणत्याही प्रकाराला सत्य रूपात समझण्याकरिता पूर्व परंपरा किंवा ऐतिहासिक परंपरा शोधाद्वारे पाहल्या जाते. संशोधन म्हणजे वास्तवामध्ये प्रकृतिमध्ये पहिले पासून विद्यमान असलेल्या तत्वांचा शोधून काढणे हे होय.

भारतीय संगीताला एक विषय मानून जेव्हा आपण अभ्यास करतो या विषयामध्ये संशोधन करण्याच्या हेतुने अभ्यास करण्यात सुरुवात करतो तेव्हा सर्वप्रथम आपले लक्ष संगीताच्या प्राचिन स्वरूपाकडे जाते, जसे संगीताचा उगम कसा झाला, प्राचिन संगीताचे स्वरूप कसे होते तसेच संगीताला नियमबद्ध करण्याकरिता कोणकोणते प्रयत्न करण्यात आले. वैदिक काळामध्ये जे सामगायन केल्या जायचे त्याचे विवेचन ब्राम्हणग्रंथ, नारदीय शिक्षा इत्यादी ग्रंथांमध्ये दिसून येते. या सर्व साहित्याचा अभ्यास करून संगीतामध्ये नवनविन दृष्टीकोन स्थापित करता येऊ शकतात.

संगीतातील नृत्यप्रकारावरील नविन दृष्टीकोनाबाबत संदर्भ —

नृत्य के क्षेत्र में शोध की बड़ी संभावनाएँ हैं। पूरे भारत के मंदिर नृत्य शिल्प से भरे हुए हैं। लोक में प्रचलित नाट्य-और नृत्य भी इसका संकेत देते हैं।

नाट्य और नृत्यका शिर्ष ग्रंथ भरत का नाट्य शास्त्र है। शोधकर्ता को चाहिए कि वह लोक के परिप्रेक्ष्य में 'नाट्यशास्त्र' का अध्ययन अवश्य करे।

—प्रारल्य

आधुनिक युगात प्रत्येक संशोधन कार्य हे

मनुष्याच्या उपयोगीतेकरिताच होत असते, त्यामध्ये संगीत, साहित्य आणि विज्ञान यापैकी कोणतेपण क्षेत्र असू शकते.

संगीतात नविन दृष्टीकोणाच्या संशोधनाच्या माध्यमातून कार्य करणाऱ्या संस्था —

१. बनरास हिंदू विद्यापिठ — बनारस
२. इंदिरा कला संगीत विद्यापिठ — खैरागड
३. संगीत रिसर्च अकादमी — कलकत्ता
४. प्रयाग संगीत समिती — इलाहाबाद
५. प्राचीन कला केंद्र — चंदीगड
६. भातखडे संगीत विद्यापिठ — लखनऊ
७. गाधर्व महाविद्यालय मंडळ — मिरज
८. दिल्ली विद्यापिठ — दिल्ली

९. 'दि अकाडमिस्टिक कॅरेकअरिस्टिक्स ऑफ दि वोकल्स ऑफ दि हिंदुस्तानी म्युजिक' हे साइन एंड टेक्नोलीजी विभाग भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत.

१०. इंडियन स्टेटिस्टिकल इंस्टीटयुट — कलकत्ता.

संगीतातील नवनविन संशोधनाच्या प्रकाराचे विवेचन —

A. 1. Academic Research

'Has been conceived by A. R. A. same thing as collection and preservation of the Writings and thoughts of all eminent musicians and musicologist. It also proposes to collect authentic writings and manuscripts of the ancient scholars of music.'

2. 'In the performing area, it proposes to have potations of all compositions, Gharana wise.....

B. Individuals Research -

'One student is reported to be prosecuting research for Ph.D as a registered student of the university of Delhi.'

C. Scientific Research -

1. The original project still awaits implementation, however, the processing of the project yielded on paper on 'The acoustics-characteristics of the vowels of the hindusthani Music which the SRA has submitted to the

department of science and technology, Gov. of India. The work was done by the SRA in collaboration with the Indian Statistical Institute, (7) Calcutta.

D. Research in Applied Musicology -

Under this the S.R.A. has reported that it has so far done the work of analysis of the tapes of ustad bade-gulam-Ali Khan and ustad Amir-Khan high-lighting the characteristics/short commings of their 'Gayaki'. Such analysis is reported to have helped the scholars who are trying to follow the styles of these ustads!

संगीत संशोधन आणि वैज्ञानिक दृष्टिकोन -

संगीत या विषयाचा विज्ञानासोबत अत्यंत महत्वाचा व जवळचा संबंध असल्यामुळे या क्षेत्रात संशोधनात नवनविन मार्ग उपलब्ध होण्याच्या शक्यता अधिक प्रमाणात आहेत. आधुनिक युगातील प्रगतीसोबत संगीत या विषयामध्ये सुध्दा नवनविन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणांनी महत्वाचाची भूमिका बजावण्यास सुरुवात केली आहे. सूक्ष्म स्वर-नादाशी संबंधीत अभ्यास करून त्याला कसे अधिक स्पष्ट, सूक्ष्म आणि जोराने ऐकणे आणि त्याचे जतन ठेवल्या जाऊ शकते. भुतकाळातील माइक्रोफोन, टेपरेकार्डर, स्टिरियो-साऊंड-सिस्टम, रिकॉर्ड्स, रेडिओ, दूरदर्शन आणि विविध वाद्यांमध्ये आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करून प्राचिन काळातील ध्वनि-आकारमध्ये केल्या गेलेले परिवर्तन हा सुध्दा एक संशोधनाचा भाग आहे. आधुनिक काळात कम्प्यूटरच्या साहाय्याने संगीत संयोजनाचे काम झपाट्याने होत आहे. कम्प्यूटरमुळे संगीत जगतात मोठी क्रांती झालेली दिसून येते. पाश्चात्य संगीतातील अनेक प्रकारचे वाद्य, तांत्रिक उपकरणाचा आणि संगीतातील स्वरांचा, गायन प्रकाराचा भारतीय संगीतासोबत एकत्रित करून प्रस्तुती करण करणे सुरु आहे, परंतु भारतीय संगीतात आध्यात्मिकता, भावनिकता आणि स्वभाविकता याला अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे, त्यामुळे अत्याधिक प्रमाणात तांत्रिक उपकरणांचा वापर करणे शक्य नाही.

उपसंहार -

भारतीय संगीत हे फक्त मनोरंजनाची वस्तु नसून वैदिक काळापासून संगीत हा भारतीय

जनमानसांच्या जीव्हाळयाचा आणि आध्यात्मिक जीवनासोबत जोडलेला विषय आहे. भारतीय सामाजिक आणि कौटूंबिक जीवनात संगीताच्या कोणत्या ना कोणत्या प्रकाराने दिवसाची सुरुवात करतात. आधुनिक काळात संगीतमध्ये संशोधन होऊन मानवी जीवनात संगीताला अत्यंत महत्वाचे स्थान आलेले दिसून येते. आधुनिक काळात संशोधनातील नवनविन दृष्टीकोन भारतीय संगीताला अधिक समृद्ध करीत आहेत. सामान्य मानसांना त्याचा फायदा होत आहे. अशाप्रकारे भारतीय संगीतातील गायन, वादन आणि नृत्य या तिन्हीप्रकारात संशोधन होऊन नवनविन दृष्टीकोन येत आहेत. म्हणून या नविन दृष्टीकोणातून संगीतात नवनविन प्रकारचे बदल समोर येत आहेत. यामुळे आधुनिक काळात संगीताचा प्रचार आणि प्रसार होण्यास मदत होत आहे.

संदर्भग्रंथ -

1. संगीतातील संशोधन पध्दती - डॉ. अनया धते
2. संगीत शोध अंक जनवरी-फरवरी १९९० - संपादक, डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग
3. सामाजिक संशोधन - डॉ. गुरुनाथ नाडगोडे
4. संगीत कला विहार - अ.भा.गा.म. मंडळ मिरज
5. संगीत मासिक - हाथरस

□□□

मानवाच्या मानसशास्त्रीय विकासात संगीताची आवश्यकता आणि योगदान

डॉ. सुनिल बाबुलालजी पटके
(संगीत विभाग)

कला महाविद्यालय मलकापूर
ता. जि. अकोला.

प्रस्तावना :-

आजच्या आधुनिक समाजातील मोठा वर्ग तणावग्रस्त आहे. विद्यार्थी नैराश्यातून आत्महत्या करतात, मतीमंद किंवा अपंग मुलांचे जन्माला येण्याचे प्रमाण वाढलेले दिसून येते. या सर्व मानवाच्या मानसिक व्याधीवर संगीत हे उत्तम औषध ठरत आहे, हे नवनविन प्रयोगातून सिद्ध होत आहे. मानवाचा मानसिक योग्य विकास झाला तर तो व्यक्ती यशाचे शिखर गाढतो यात शंका नाही, परंतु व्यक्तीचा मानसिक विकास जर योग्य पध्दतीने झाला नसेल तर व्यक्ती समाजात योग्यप्रकारे वावरू शकत नाही व समाजाच्या प्रवाहातून बाहेर लोटल्या जाते. संगीत आत्मसाद केल्याने मानवाचे बौद्धिक व मानसिक व्यक्तिमत्व विकसित होते. आत्मविश्वास, आत्मसंतुष्टी, एकाग्रता, शांती, ज्ञानावस्था, शारीरिक विकास, हावभाव, मुद्रा नियंत्रण, शरीराचा अन्य अवयवांशी ताळमेळ इत्यादी गुणांचा विकास संगीत साधना केल्याने किंवा आत्मसाद केल्याने होऊ शकतो. मानवाच्या मानसशास्त्रीय विकासात संगीताचा अत्यंत मोलाचा व महत्वपूर्ण वाटा आहे.

संशोधनाची आवश्यकता :-

प्रस्तुत शोध निबंध हा मानवाच्या मानसशास्त्रीय विकासात संगीताची भूमिका या विषयावर आधारित आहे. सामाजिक संबंधातून निर्माण होणारे मानसिक ताणतणाव, कठीण परिस्थितीच्या सतत सामना करावा लागतो आणि हा करत असतांना मनुष्याचे शारीरिक व मानसिक संतुलन बिघडते आणि यातूनच तो विविध आजारांना बळी पडतो व तणाव ग्रस्त होऊ न व्यसनाधीस्त होऊ न आत्महत्या करण्याचा मार्ग निवळतो. या सर्व मानसिक व्याधीवर उपाय म्हणून संगीत हा एक उत्तम मार्ग आहे, संगीत श्रवण केल्याने मनःशांती मिळते, जगण्यात उमेद निर्माण करते, रोजच्या तणावपूर्ण वातावरणापासून सुटका करते, मनात आशांची नवी पालवी फुलविते, सकारात्मक विचार करण्याचे सामर्थ्य देते, संगीत ही अविष्कृत करण्याची कला आहे. भावना, जाणिवेचा प्रगट करण्याचे सुगम व सहज साधन आहे. संगीत आणि शरीर स्वास्थ्य या विषयावर जागतिक पातळीवर मोठ्या प्रमाणात संशोधन झाल्याचे दिसते. म्हणूनच या विषयावर अधिक संशोधन होऊ न मानसशास्त्रीय विकासाच्या नव.नविन शाखा शोधण्याची आवश्यकता आहे.

संशोधन पध्दती :-

प्रस्तुत शोध निबंध हा मानवाच्या मानसशास्त्रीय विकासात संगीताची आवश्यकता आणि योगदान या विषयावर आहे. प्रस्तुत शोधात मानवाचे मानसशास्त्रीय विकास संगीताच्या माध्यमातून कसा होऊ शकते. मानसशास्त्राचा अभ्यास करत असतांना समाज हा महत्वाचा घटक असतो. मानसशास्त्र आणि संगीत समाजातील प्रत्येक घटकात अंतर्भूत आहे. म्हणून प्रस्तुत शोध निबंध हा सामाजिक संशोधन पध्दतीच्या अंतर्गत येतो म्हणून प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये सामाजिक संशोधन



पद्यतीचा यथोचित प्रयोग करण्यात आलेला आहे. प्रस्तुत शोध निबंधाविषयीचे महत्त्व हे किंवा संबंधित पुस्तके मानिक, सांजातिक, संगीत पत्रिका, संगीत मासिक, संगीत पुस्तके, मानसशास्त्रीय पुस्तके व विकिपिडीया याद्वारे एकत्रित करण्यात आले असून प्रस्तुत शोध निबंधामध्ये यथोचित उपयोग करण्यात आलेला आहे.

मानसशास्त्र आणि संगीत :-

मानसशास्त्र ज्या अनेक कला आणि शाखांशी संबंधित आहे त्यामध्ये प्रामुख्याने संगीत कलेला क्रियात्मक घटक, भावात्मक घटक या सर्व घटकांवर संगीत श्रवणामुळे प्रभाव पडतो. संगीत आणि मानसिक क्रिया ह्या एकदुसऱ्यावर आधारित असतात. म्हणूनच प्राचीन काळापासून मानसशास्त्राला मनाचे शास्त्र अर्थात च्छन्दोद्वन्द्व दृढ ध्न्द्व कल्पना, स्मृती, योग, ध्यान, आवड, शिक्षण इत्यादी संबंधित मानसिक प्रक्रियेसंबंधित मानसिक विक्राम साधल्या जाते.

सामाजिक मानसशास्त्र आणि संगीताचा सहसंबंध :-

“Man is social Animal”

अनेक कालाशी मानसशास्त्राचा संबंध आहे, त्यापैकी संगीत कलेतून मानसशास्त्राचा दृष्टीकोन समजावून घेतांना हे लक्षात घेणे वी, संगीत हे मानसशास्त्राचे सहाय्यक व समकक्ष आहे. दुसरे म्हणजे मानसशास्त्राच्या माध्यमाने संगीताचा आस्वाद घेता येतो. मानसशास्त्रास संगीताच्या दृष्टीकोनातून त्याची तीन तत्वे समजणे आवश्यक आहे.

१) भावात्मक २) क्रियात्मक ३) ज्ञानात्मक

संगीतामुळे शांती, आनंद, सुख, प्रेरणा मळते. त्यामुळे संगीत व मानसशास्त्र यांचा परस्पर संबंध ज्यात प्रत्येक मानसिक प्रक्रियेचा अभ्यास होतो. उदा. स्मृती, कल्पना, ध्यान, इच्छा, शिक्षण इत्यादींचा संगीतशी संबंध उल्लेखनीय व अभ्यास करण्याजोगा आहे.

“Heart speaks with heart and the music is the language of souls.”

व्यक्तिच्या व्यवहारावर त्या सामाजिक स्थितीचा जो प्रभाव पडतो, त्याचा अभ्यास करणे होय. व्यक्ती समाजाला व समाज व्यक्तिला प्रभावित करतो. पण व्यक्तीचा स्वार्थ व समाजाचा स्वार्थ परस्परांना छेदतात, तेव्हा संघर्ष होतो. तेव्हा संयोजनासाठी संगीताचा आधार घेतल्या जातो. जसे, समुहगीतातून शिस्तभावना व एकात्मभावना साधते तसेच संगीतातून वैयक्तिक भावनाही निर्माण होते त्यामुळे मोठमोठ्या सांस्कृतिक उत्सवांतून सामाजिक ऐक्य साधले जाते

“Folk music is the mirror of contemporary social life.”

संगीताद्वारा बालपणापासून बौद्धिक व मानसशास्त्रीय विकास :-

गर्भावस्थेपासून बालकांना संगीत ऐकवले तर त्यांच्या बुद्धीच्या विकासावर कसा परिणाम होतो याबाबत अनेक प्रयोगाद्वारे संशोधन केलेले दिसून येते. गर्भावस्थेपासून ज्या मुलांच्या कानावर संगीत पडते ती मुले अधिक हुशार होतात असे संशोधकांनी सिद्ध केलेले आहे. फ्लोरिडा येथे या संदर्भात झालेल्या संशोधनानुसार गर्भावस्थेत असल्यापासून ज्या



अशा परिस्थितीत संपूर्ण आयुष्याना आनंदी, सुंदर, शांत, मधुर, आत्मविश्वासी, निडर, ध्येयवादी, मानसशास्त्रीय दृष्ट्या संक्षम बनविण्यासाठी संगीत कलेतील तिन्ही गायन, वादन, नृत्य या माध्यमांचा उपयोग केला तर फायदेशीर ठरेल. कारण संगीत हा आत्म्याचा हूँकार असून परमात्म्याचा ऊँकार आहे.

संदर्भग्रंथ सुची -:

- १) सौंदर्य, रस एव संगीत . प्रो. स्वतंत्र शर्मा
- २) सौंदर्यशास्त्र एक तत्त्व मीमांसीय अध्ययन . डॉ. लक्ष्मी सक्सेना
- ३) Role of Music in all round development of human being (one day national level seminar L.B. Aney college yevatmal.)
- ४) संगीत कला विहार अंक जुलै . २०१०
- ५) संगीत मासिक हाथरस (सितम्बर . २००७)
- ६) संगीत एव मनोविज्ञान . डॉ. किरण तिवारी
- ७) संगीत की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि . डॉ. कविता चक्रवर्ती.



भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभिवृत्ति, कौशल और रियाज़ की वैश्विक संरचना

सुनिल बाबुलाल पटके

संगीत विभाग, आर्ट्स कॉलेज अकोला (मलकापुर), तह. जिल्हा - अकोला, महाराष्ट्र, भारत
patake.sunil@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me

Received 31st December 2019, revised 19th March 2020, accepted 20th April 2020

Abstract

भारतीय शास्त्रीय संगीत कला ने भारत का नाम सम्पूर्ण विश्व में एक उच्चतम कला के रूप में प्रस्तापित किया है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति भारतीय शास्त्रीय संगीत को सुनने में रुचि ले रहा है। वह भारतीय शास्त्रीय की अभिवृत्ति, भावनात्मकता (Attitude), संगीत को सिखने का कौशल (Skills), और भारतीय संगीत की रियाज़ करने की पद्धति (Practices) आदि महत्त्वपूर्ण बातों का अध्ययन और अनेक मार्गों से जानकारी जुटाने का प्रयास कर रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की महानता, मानसिक शांतता, मनोविज्ञान, सर्वोत्तम आनंद, भावनिक प्रसन्नता, ज्ञान का असीमित भंडार, छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध व्यक्ति पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का सकारात्मक होने वाला बदल संपूर्ण विश्व ने मान्य किया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत कला यह मनोव्याज्ञानिक, भावनात्मक, शारीरिक, प्राकृतिक दृष्टि से लाभदायक कला है। इस लिये भारतीय शास्त्रीय संगीत को आत्मसाद करना आवश्यक है।

Keywords: कौशल, रियाज़

स्तावना

श्रवण के कण-कण में संगीत परमात्मा के अंश की तरह व्याप्त है, ही पर अव्यक्त, मौन और कही पर मुखर। मेघों की मन्द गंभीर बनि, सागर की उत्ताल तरंगों का गर्जन, नीझरो का कल-कल निनाद और वन-उपवनो में विहंगों का कलरव यह सब शाश्वत संगीत के ही विविध रूप हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत का जन्म लोक संगीत से हुआ था। इस प्रसंग में स्वरों के नामकरण, सप्तक में षड्ज और ऋषभ, मंचम और धैवत की स्थिति का इतिहास रोचक है। भारतीय साहित्य में श्रुतियों से स्वर का सम्बन्ध और स्वर से स्थान का सम्बन्ध सैद्धांतिक दृष्टि से विचारणीय है। विश्व में कोनसी भी कला देखने पर हमें उस कला की एक विशिष्ट अभिवृत्ति या शैली होती है, उसे हम अंग्रेजी में Attitude कहते हैं।

हर कला का आपणा माध्यम होता है।
हर कला का अपना स्थापत्य होता है,
अपनी चित्रमय व्यंजना होती है।
संगीत का माध्यम नाद है।
नाद ऐसी संवेदनाओं को जगा सकता है,

जिन तक अन्य कलाओं की पहुँच मुश्किल है।'

रामविलास शर्मा

संगीत मानव का चिरसंगी है। यह एक ऐसी भाषा है जिसका प्रयोग आदि काल से अनन्त काल तक होता रहेगा। संगीत में स्वर,लय और ताल समन्वय मिलता है। इन्हीं तीनों के योग से संगीत की सृष्टि होती है।

संशोधन की आवश्यकता

विश्व में सभी देशों में आस्था, मनोरंजन के लिये संगीत विद्यामान है। परंतु भारतीय शास्त्रीय संगीत यहाँ विश्व में मनशांती, आत्मशांती और उपचार पद्धतियों के रूप प्रसिद्ध हो रहा है। प्रस्तुत शोध निबंध यहाँ 'भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभिवृत्ति, कौशल और रियाज़ की वैश्विक संरचना' इस विषय पर आधारित है। विश्व के अनेक देश भारतीय शास्त्रीय संगीत को अपनाकर आनंद प्राप्त कर रहे हैं। भारतीय संगीत यहाँ स्वतः ही जीवन धारा है। इस लिये भारतीय संगीत की अभिवृत्ति कौशल और रियाज़ पद्धति की वैश्विक संरचना इस विषय पर नए दृष्टिकोण से संशोधन करने की आवश्यकता संशोधनकर्ता को महसूस होती है।

संशोधन का उद्देश और उपयोगिता

प्रस्तुत संशोधन यह "भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभिवृत्ति (Attitude), कौशल (Skills) और रियाज (Practices) की वैश्विक संरचना" इस विषय पर आधारित है। प्रस्तुत संशोधन का मुख्य उद्देश विश्व की आधुनिक युवा पीढ़ी, संगीत साधक, गायक, आध्यापक, आध्ययनकर्ता तक भारतीय शास्त्रीय संगीत की वैश्विक संरचना पहचाना और भारतीय में शास्त्रीय संगीत का विश्व में अधिक से अधिक प्रचार प्रसार और विकास हो यह है। प्रस्तुत संशोधन में प्रत्येक कला का अध्ययन करते समय उस कला में किस प्रकार की अभिवृत्ति (Attitude) उपयोग में ली जाती है, और संगीत कला प्रकार में गायन, वादन और नृत्य में कौशल से नये कौशल (Skills) उपयोग में लिए जा रहे इसका ज्ञान नये युवा पीढ़ी देना, कौशल (Skills) का प्रयोग किस प्रकार से किया जाये और नए कौशल की उपयोगिता क्या है। रियाज (Practices) की नई नई पद्धतियाँ, और उसकी उपयोगिता का अध्ययन प्रस्तुत संशोधन में किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध निबंध यह "भारतीय शास्त्रीय संगीत में अभिवृत्ति (Attitude), कौशल (Skills) और रियाज (Practices) की वैश्विक संरचना" इस विषय पर आधारित है। यह विषय सामाजिक संशोधन, आधुनिक संशोधन और ऐतिहासिक संशोधन पद्धतीपर आधारित है। प्रस्तुत शोध निबंध में भारतीय संगीत की पुस्तके, पत्रिकाये, संगीत अंक और इंटरनेट से प्राप्त लिखित साहित्य का यथोचित प्रयोग किया गया है।

भारतीय संगीत विश्व का प्राचीनतम संगीत

अजंता, एलोरा, औरंगाबाद, नागर्जुनकोंडा, पाटदोकल, बेलूर, तंजोर, सोमनाथपुर, खजुराहो, साँची, भरहुत आदि स्थानों में प्राप्त १५०० वर्ष ई.पू. से लेकर १८ वि शताब्दी की मुर्तिया, वादकों, गायकों की विभिन्न मुद्राओं, संगीत सभा, नृत्य मुद्रा, भित्तीचित्रों, रागमाला चित्रों आदि से भारतीय संगीत के दोसौं से लेकर १५०० वर्ष ई. पूर्व प्राचीन होने की बात उपलब्ध साक्ष के आधार पर प्रामाणिक ठहरति है। यदि प्रत्यक्ष चाक्षुष साक्ष्य को ही आधार मान लिया जाय तो भी भारतीय संगीत ईसा पूर्व से कम से कम २००० वर्ष पूर्व का प्राचीन होना चाहिए। संगीत की पुरातन परम्परा की समृद्धि विद्या विशेष में न होकर सर्वतोन्मुख थी।^३ भारतीय संगीतकला, इस देश की प्राचीनतम कलाओं में से एक मानी जाती है।

इस कला के उदगम तथा विकास का, करीब पांच हजार वर्षों इतिहास भिन्न भिन्न भाषाओं में लिखे गये ग्रंथों द्वारा हमारे देश विद्यमान है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत की शक्ती और वैश्विक संरचना

भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भावभूमी पर प्रवाहित होती रही है। तथा उसका प्रयोजन लोक-कल्याण रहा है। अमेरिका जैसे सर्वसाधन सम्पन्न देश के निवासीयों का भारतीय योग एवं संगीत और आकृष्ट होने का यही एकमात्र प्रमुख कारण है। आदिकाल मनुष्य औषधी एवं चिकित्सा पद्धती का संगीत से समन्वय कर मनुष्य का उपचार करता रहा है एवं संगीत द्वारा स्वास्थ्य लाभ तथा उस तरोताजा रखने की विशेषतायें सर्व विदित है।

संगीत को यूनान और अरब में मोसीकी कहते हैं। 'मो' का अर्थ 'आवाज' और 'सीकी' = अर्थ गिरह होता है, अर्थात् आवाज को गिर देना। मोसीकी शब्द यूनानी है। म्यूज़िक (Music) शब्द की उत्पत्ति मोसीकी से हुई है। फ्रांस में पहले Musiq शब्द बना और फिर वह अंग्रेजी में Music बन गया। अरबी संगीतज्ञ सत्रह श्रुतियाँ मानते हैं। सत्रह श्रुतियाँ भारतीय वाईस श्रुतियोमे से ही हैं। अरबी संगीतज्ञ भारतीय संगीतज्ञों की तरह मीड, मुरकी, खटका आदि को अपने साज पर प्रयोग करते हैं। Major Tone को अरब में 'तानित' कहते हैं, Sem Tone को 'बकाया' और Quarrer Tones को 'इरिखा' कहते हैं।^३ रोम अरब अथवा फारस ने जिस प्रकार भारत को सांगीतिक उपादान दिए उसी प्रकार अरब और फारस एवं विशेषतया यूनान ने संगीत सामग्री भारत से ग्रहण की थी। 'सात स्वरों के ग्राम और तन सातको का ज्ञान भारत को यूनान से सदियों-पूर्व था और संभवतः यूनानियों ने इन्हें हिंदुओं से सीखा' भारत और युरूप दोनों जगह पूजास्थान संगीत के प्रधान केंद्र रहे हैं। युरूप ने वाद्य यन्त्रों के संगीत में बहुत विकास किया है किन्तु यह विकास बहुत कुछ नया है। हेन्ड्री और वार्शम के अनुसार "रिनेसन्स से पहले विशुद्ध वाद्य संगीत अपेक्षाकृत बहुत थोड़ा था।" भारत में वाद्य संगीत की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। इस प्रसंग में वीणा का नाम लेना काफी होगा।

भारतीय शास्त्रीय की अभिवृत्ति, भावनात्मकता (Attitude) की वैश्विक संरचना

विश्व की सभी कलाओंको देखने, सुनने पर हमें उस कला की एक विशिष्ट अभिवृत्ति या शैली होती है। मेलडी Melody परिचिनी संगीत के एक सुप्रसिद्ध रचनाकार अथवा कम्पोजर श्री जोसेफ हैडन ने मेलडी

स्वाभाविक रीतिसे होती ही है, परन्तु प्रत्येक मनुष्य को किसी कलामाध्यम द्वारा अपनी सौंदर्यानुभूति प्रगट करने की क्षमता नहीं होती। यह कार्य सर्जनशील अथवा सिध्द कलाकारहि कर सकता है। कलाकार के हृदय सौंदर्य उदय होता,पलटा और पुष्ट होता है अपनी रुचि के कलामाध्यम द्वारा अभिव्यक्त होता है। संगीत की अभ्यास विधि का बहुत बड़ा महत्व है। संगीत की शिक्षा ग्रहण करनेवाले अनेक छात्र होते हैं किन्तु सभी सुयोग्य संगीतज्ञ नहीं बन पाते। परिश्रम और अभ्यास सभी संगीत- छात्र करते हैं। केवल अभ्यास से ही संगीत- शिक्षण में सफलता नहीं होती अपितु अभ्यास विधि के ज्ञान से सफलता मिलती है। जिस साधक को अभ्यास विधि का सम्यक ज्ञान होता है वह कम-से-कम समय और परिश्रम में अधिक-से-अधिक रागो और टालो का अभ्यास कर लेता है। अभ्यास विधि के ज्ञान संगीत की शिक्षा सरल सुगम हो जाती है अतएव संगीत के अभ्यास-विधि का ज्ञान आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है।

संदर्भ ग्रंथ

1. शर्मा रामविलास (२०१०). *संगीत का इतिहास और भारत नवजागरण कसी समस्याएँ*. प्रथम संस्करण, वाणी प्रकाश दिल्ली
2. पाठक पण्डित जगदीश नारायण (संगीत मार्तण्ड) (२००६). *संगीत शास्त्र प्रवीण*, पाठक पब्लिकेशन प्रकाशन, एकादश आवृत्ति इलाहवाद्
3. श्रीवास्तव हरिश्चन्द्र (२०११). *संगीत निबंध संग्रह*. संगीत सः प्रकाशन, इलाहवाद्
4. देशपांडे पं स भ (संगीत अलंकार) (२००७). अखिल भारत गांधर्व महाविद्यालय मंडल., मिराज
5. वाजपेयी सुनृत कुमार (२००५). *पारचात्य सौंदर्य शास्त्र इतिहास*. नमन प्रकाशन, संशोधित संस्करण नई दिल्ली

Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 229 (B) | February 2020 | ISSN – 2348-7143

डा. ताकतस व्यर
अर्थवास्त्र विभाग

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

SPECIAL
ISSUE
229 (B)

INDIAN YOUTH : CHALLENGES AND OPPORTUNITIES



- GUEST EDITOR -
Dr. V. R. Kodape

- CHIEF EDITOR -
Dr. Dhanraj T. Dhangar

- EXECUTIVE EDITORS -
Dr. N. M. Chhangani
Prof. P. S. Shirsat

For Details Visit To :
www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research

Impact Factor (SJIF) - 6.6 | Special Issue 9 (B) : Indian Youth : Challenges

50	39.	Unemployment Unrest and Youth	Mr. Swapnil Tejrao Raut
52	40.	Indian Youth Challenges and Opportunities Modern Life Style and Youth	Mrs. Usha Dinesh Lohande
55	41.	Rural Women Empowerment and Entrepreneurship.....	Prof. Vaishali R. Mofe
57	42.	Current Scenario of Youth Unemployment in India	Dr. Vandana K. Mishra
59	43.	Information Seeking Behavior and Satisfaction of Library Users in Digital Era	Dr. Amol Babasaheb Sawai
61	44.	Institutional Repositories: An Overview	Dr. Avinash Uttamrao Jadhao
63	45.	Information and Communication Technology in Education, Physical Education and sports	Prof. Dr. P. M. Deshmukh
66	46.	A Study of Motor Fitness Training Effect on Selected Physiological Variables of Sgb Amravati University Cricket Players	Dr. Ulhas V. Deshmukh
69	47.	Study of Anthropometric Characteristics of Inter Collegiate volley Ball Players.....	Dr. Chetak R. Shende
71	48.	Youth Entrepreneurship : Opportunities and Challenges in India.....	Dr. Ganesh G. Gondane
75	49.	Open Source Software's for Library.....	Mr. Subhash K. Jogdande, Dr. Shashank S. Sonwane
78	50.	Impact of Historical Heroes on Indian Youth	Dr. K. R. Nagulkar
81	51.	Use of Social Media in Libraries and its Impact on Library Services.....	Dr. Sachin V. Kadam, Dr. Ashok L. Lalanbikar
83	52.	Library and Information Services of Youth in Present Information and Communication Technology Era: A Study.....	Dr. Sandip B. Khandavkar, Dr. Shashank S. Sonwane
86	53.	Caste System in India - A Review.....	Anil Kosamkar
89	54.	Indian Youth Information and Communication: Technology	Prin. Dr. Dinesh Nichit
92	55.	Rural Development and Youth	Prof. Savita V. Nichit
94	56.	A Study of Web-Based Information Source	Prof. Prashant Shamro Shirsat
97	57.	Youth Labor Markets in Rural Areas.....	Dr. Pradip Taktode
99			

Youth Labor Markets in Rural Areas

Dr. Pradip Taitode
Head, of the department of Economics,
Arts College, Malkapur Dist. Akola.

Introduction :

The standard of living of the rural people depends upon factors such as food and nutrition level, health, education, housing, recreation and security. Agriculture is of extreme importance and is considered to be particularly important for the rural people. The youth populations are engaged in the utilization of recommended farm inputs and technologies, they are involved into research activities to find new and innovation techniques and ideas that may be beneficial for rural development.

The growth of the gross domestic product (GDP) over the past fifty years is completely associated to a diminishing agriculture sector and an augmentation in the comparative size of the industrial sectors. This relationship has been understood in the context as a signal of industrializing economies involved in a transmittable process. However, there is no significant connection between GDP growth, labor force participation and unemployment, as one might have expected. This seems to indicate that decreasing labor force participation and increasing unemployment, particularly among women and youth, are structurally implanted phenomenon fundamental to the developing economies with developing industrial and service sectors.

Declining labor force contribution among youth can be explained by a greater number of years spent in schooling and the greater structural complication of labor markets in countries with higher levels of development. Higher levels of interest make achieving an equivalent between labor supply and labor demand more difficult, often resulting in an increase in levels of temporary employment and periods of unemployment between graduation and finding stable employment. Competition for limited employment opportunities are revealed in the constantly higher unemployment rates in urban than rural areas and the longer labor market evolutions of youth.

With decreasing levels of unconditional poverty and increasing levels of education, people are also likely to be less motivated to accept certain unappealing jobs at the bottom end of progressively more fragmented labor markets. In other words, it could be

stated that in middle-income countries more people can manage not to work and, in particular, graduates from middle-income backgrounds may prefer not to work than to do jobs which they may see as undignified, precarious or culturally objectionable. This is most strongly reproduced in the very high unemployment rates and dissatisfaction among young graduates, especially among young women.

Still, it is important to note that there have been countries that have not yet reached the middle income level and that lower income countries sustain a dualistic economic structure that unites a small formal segment with a large non-formal segment. As a result, the employment problem apparently is not in high unemployment but in high incidence of underemployment veiled in self-employment and casual wage employment outside the formal segment. The poor are characteristically those who remain outside the formal segment and work as self-employed and casual wage laborers especially in rural areas.

An Assessment of the Role of Youth in Rural Development :

Youth are taking an active part in the development of the rural areas; the poverty stricken people and the socially depressed people in rural areas are dependent upon others for their welfare. There has been classification of the following activities that should be implemented for the development of the poor (H. Ramakrishna, 2013).

1. **Agricultural Programs** : Copious activities can be undertaken under the agriculture sector; the jobs/works like distributing planting materials, cattle, poultry, minor irrigation, free medical care for cattle's, safe drinking water for animals etc, seeds, fertilizers, insecticides and cropping.
2. **Health Programs for humans and non-humans** : Housing, shelter, pollution free environment, and clean drinking water for animals, medical facilities, regular health check ups and camps will assist in improving the health conditions of the humans as well as non-humans.

3. **Community Development Programs** The community development programs like adoption of villages for progress, medical support during flood and famine period, contribution of food and drinking water during floods and famines, welfare and training programs for the rural youths, housing projects, repair and renovation of houses and so forth will gratify the basic requirements. The main program like training programs for the rural poor will hold the youths from rural migration. These types of training programs may also be extended for the rural women, so that self-sustenance among this community can be realized.
4. **Human Resource Development Programs :** The personality development programs, skill development programs, educational programs, integrated development projects require the involvement of youth and these will enable the rural people to overcome the conditions of poverty and depression and earn a better livelihood.
5. **Trade and Industrial Promotion :** Rural masses are skilled at manufacturing and producing products such as handicrafts, fabrication works, wood works, beedi rolling, agarbathi manufacturing, printing press and so forth. They are keen to always look out for ways for the promotion of their trade and industries, therefore, youth population do participate in assisting the rural people in promotion of their goods.
6. **Government Support** The government, central, state and local support is imperative at all the levels of rural development. Micro-financing and implementation of monetary transactions are necessary for the rural masses to be aware of so that they are able to effectively manage their finances. The role of youth is imperative in making them aware, guiding them and assisting them in case of any problems or difficulties.

Discussion :

The participation of the youth intends to help build and control young people as assets. It has been extended through an inventive process led by young people, which itself has strengthened their aptitude to participate and lead. The challenges and the negative stereotypes of youth and reveals how young people can

absolutely give to development in four operational areas: organizational development, policy and planning, implementation, and monitoring and evaluation.

This subject aims to increase the understanding of the growing significance of, and better potential for the youth participation in development observation and to discover key issues and approaches. But it goes beyond the expression and style of many document advocacy research areas; which simply argue for a focus on youth participation. Rather, this research provides information on how to actually work with youth at a practical operational level in respect of policy and programming. It does this through the provision of capable and hopeful practice case studies and their associated resources, and a number of quality standards that will help organizations get started. When youth are involved in a practical and an operational level, rural development within the country would certainly take place in an effective manner and prove to be advantageous for the entire nation.

References :

- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)

- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from

- [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April
- Development: Evidence from Aguata L.G.A of Anambra State, Nigeria. World Journal of Agricultural Sciences, 7(5), 515-519. Retrieved April 18, 2016 from [http://www.idosi.org/wjas/wjas7\(5\)/2.pdf](http://www.idosi.org/wjas/wjas7(5)/2.pdf)
- Youth Participation in Development A Guide for Development Agencies and Policy Makers. (2010). Retrieved April 17, 2016 from <http://restlessdevelopment.org/file/youth-participation-in-development-pdf>

श्री. देवीश्री शर्मा
श्री. शर्मा

Peer Reviewed Multi-Disciplinary
Annual National Indexed Research Journal
Published as per UGC (India) Guidelines

Impact Factor
5.455
www.sjfactor.com

ISSN 2349-9370
Vol. 7 Issue 7
Jan. 2020
Special Issue

www.researchjournal.net.in www.indramahavidyalaya.com www.mmcdrwha.org

Research Journal of India

Special Issue
One Day Interdisciplinary National Conference on
Recent Trends and Issues in Humanities
Organized by Mungasaji Maharaj Mahavidyalaya, Darwaha
11 January 2020

Published By
DBMRC
INDIRA MAHAVIDYALAYA
KALAMB, DIST. YAVATMAL, MAHARASHTRA 445 401 (India)
In Collaboration with
Principal

MUNGASAJI MAHARAJ MAHAVIDYALAYA
DARWHA, DIST. YAVATMAL, MAHARASHTRA 445 202 (India)



साने गुरूजी यांच्या 'श्यामची आई' या पुस्तकातून होणारे सामाजिक संस्कार

डॉ. दीपाली प्र. गांवडे

सहा. प्राध्यापक

कला महाविद्यालय मलकापुर, अकोला

ई मेल: dipali.nagpure1976@gmail.com मो.नं. ९०२८६४५२९७

सारांश :

मराठी साहित्यातील अनेक शतकाची वैभवशाली परंपरा आहे. या परंपरेतील अनेक वाङ्मय 'अक्षर वाङ्मय' ठरले आहे. या अक्षर वाङ्मयातील एक पुस्तक म्हणजे 'श्यामची आई' हे पुस्तक शंभर वर्ष पूर्ण होऊनही या पुस्तकाची गोडी व महत्त्व कमी झाले नाही. साने गुरूजी यांच्यावर त्यांच्या आईने जे साध्या साध्या तत्वज्ञानातून संस्कार केले आहे. त्याचे चित्रण गोष्टी रूपाने 'श्यामची आई' या पुस्तकात आहे. देशभक्ती, स्वातंत्र्य, स्वाभिमान, स्वातंत्र्य, प्रेम, मातृभक्ती, प्रामाणिकपणा अशा अनेक संस्कारांचा ठेवा म्हणजे 'श्यामची आई' होय. ज्या संस्काराची आजही समाजाला तितकीच आवश्यकता आहे.

प्रस्तावना -

मराठी साहित्याला अनेक वर्षांची नव्वे शतकाची समृद्ध, वैभवशाली परंपरा आहे. या परंपरेला पुन्हा अनेक पदर आहे. यामध्ये ललित, गद्य, निबंध, नाटक कादंबरी, कथा, आत्मकथा, आत्मकथन असे विविध समृद्ध पदर आहे. यातील वरेच वाङ्मय अक्षर वाङ्मय ठरलेले आहे. अक्षर म्हणजे काळाच्या ओघात नष्ट न होणारे वाङ्मय मराठी साहित्यात अश्या बऱ्याच साहित्यकृती ह्या अक्षर वाङ्मय ठरल्या आहे. उदा. 'ज्ञानेश्वर', 'कोसला', 'नटसम्राट', 'संतसाहित्य' ही यादी वाढवली तर खूप मोठी होईल. या कलाकृती अक्षर वाङ्मय ठरल्याच आहे. पण या साहित्याने समाजाला एक चांगली दिशाही दाखवली आहे. विविध परिस्थितींमध्ये वागायचे याविषयी मार्गदर्शनही केले आहे. समाजाचे चांगले उद्बोधनही मराठी साहित्याने केले आहे.

यादृष्टीने मराठी साहित्यातील कादंबरी या वाङ्मयातील साने गुरूजी यांच्या 'श्यामची आई' या कादंबरीतून माणसाला वैयक्तिक पातळीपासून वैश्विक पातळीपर्यंत कसे वागावे याचे अगदी उत्कृष्ट चित्रण 'श्यामची आई' या कादंबरीत आहे. या चित्रणाचा थोडक्यात आढावा घेण्याचा प्रयत्न या निबंधात केला आहे.

विवेचन

खरा तो एकचि धर्म

जगाला प्रेम अपवि

अशा सर्व जगाला प्रेमाचा, बंधूभावाचा धर्म सांगणारे साने गुरूजी म्हणजेच पांडुरंग सदाशिव साने होय. भारतीय स्वातंत्र्यसैनिक, समाजवादी विचारवंत, सामाजिक कार्यकर्ते, मराठी साहित्यिक अशा विविध पैलूंनी त्याचे व्यक्तिमत्व बनलेले आहे. त्यांच्यावर त्यांच्या आईच्या शिकवणूकीचा फार मोठा प्रभाव होता. तसेच मा. गांधींच्या प्रभावानेही ते प्रभावित झाले होते. साने गुरूजींनी आपल्या संपूर्ण आयुष्यात एकूण ८२ पुस्तके व 'विद्यार्थी', 'साधना', 'काँग्रेस' ही तीन साप्ताहिके सुद्धा काढली. त्यांच्या या सर्व साहित्याने समाजाला काही ना काही दिले आहे. कधी भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीला उपयुक्त असे वातावरण तयार केले तर कधी शेतकरी, दलित, स्त्रियांचे दुःख हरण केले. मात्र त्यांच्या या साहित्यातील मुकूटमणी म्हणजे 'श्यामची आई' हे पुस्तक. या पुस्तकाला २०१७ मध्ये १०० वर्ष पूर्ण झाले. २०१७ हे वर्ष 'श्यामची आई' शताब्दी वर्ष म्हणून साजरे करण्यात आले. आज १०० वर्ष पूर्ण होऊनही या पुस्तकाची गोडवी किंवा महत्त्व कमी झाले नाही. अक्षर वाङ्मयकृती म्हणून तिच्याकडे पाहावे लागेल.

आई, आईचे प्रेम ही गोष्ट भारतीय संस्कृतीचा पायाच म्हणावा लागेल. जेथे देवालाही 'विदू माऊली' म्हटल्या जाते. देश म्हणजे माता, आई ही आपल्या संस्कृतीची शिकवण आहे. या प्रेममयी, त्यागमयी, सेवाभावो संस्कृतीचे संस्कार येथील प्रत्येक आई-मुलावर थोड्या फार प्रमाणात झाले आहे. आपल्या आईने मुलावर व

प्रत्येक मुलाचे आपल्या आईवर अतोनात प्रेम असते. पण साने गुरूजी व त्यांची आई यांचे आपआपसातील प्रेम अतुलनीय होते. ते प्रेम श्यामची आई या नावाने अमर झाले. अनेक मराठी साहित्यिकांनी आपल्या आईची थोरवी रक्ताचे पाणी करून लिहिली. पण साने गुरूजींनी आपल्या आईच्या आठवणी साश्रू नयनांनी/आसवांनी श्यामची आई या पुस्तकात लिहिल्या. गुरूजींच्या अंतःकरणात जन्मापासून हेलावत असलेले मातेचे प्रेम गोष्टीच्या रूपाने त्यांच्या मुखातून एकदम उमळून बाहेर आल्या. ते गोष्टी सांगताना सवंगड्यांना म्हणतात, "अरे मी आज जो काय आहे तो माझ्या आईमुळे तिच्या संस्कारामुळे, आई माझा गुरू आहे, कल्पतरू आहे."

त्यांच्या आईने त्यांना गाईगुरावर, फुलपाखरावर, झाडाझाडांवर, प्रेम करायला शिकवले. कोडयाचा मांडा करून कसा खावा व अतिशय हलाखीच्या परिस्थितीत असतानाही आपले सत्व न गमावता कसे राहावे याची शिकवण त्यांना त्यांच्या आईने दिली. ती कशी दिली याचे चित्रण अतिशय सहृदयतेने साने गुरूजी 'श्यामची आई' पुस्तकात करतात. श्यामची आई या पुस्तकात एका ठिकाणी गुरूजींना त्यांचा आई म्हणते, "अरे, शरीराची" मलीनता घालवण्यासाठी प्रयत्न केलास तसेच मनाची मलनिता घालवण्यासाठी देवाकडे चांगली बुद्धी माग हो." कित्ती साधा सरळ पण तितकाच मार्मिक विचार तेथे मांडला आहे वाटेतला काटा वाजुला करावा, दगड वाजुला करावा, फुलझाड लावावे, नेहमी खरे बोलावे, रडणाऱ्यांचे अश्रू पुसावेत, दुसऱ्याचे कष्ट कवी करावेत अशा कितीतरी गोष्टी गुरूजींना त्यांच्या आईने सोप्या, साध्या तत्वज्ञानातून 'श्यामची आई' या पुस्तकात सांगितल्या आहे. प्रेमाबरोबरच त्यांना स्वाभिमानाची, स्वावलंबनाची, स्वातंत्र्याची, देशभक्तांची मानवतेची इ. मूल्याची शिकवणही साध्या गोष्टीतून आपल्या मुलाला पर्यायाने समाजाला दिली. गुरूजींच्या आईने त्यांच्या जीवनात आचारांचे, विचारांचे सौंदर्य निर्माण केले. गुरूजींना त्यांच्या आईने फुलांवर प्रेम करायला शिकवले. फुलांच्या कळ्या झाडावरून तोडून घेत. त्यांना झाडावर नीट फुलू द्यावे.

गुरूजींना त्यांच्या आईकडून जो काही संस्काराचा ठेवा मिळाला तो 'श्यामची आई' या पुस्तकाच्या रूपाने आपल्या समोर आला. जो मराठी साहित्यातील 'मैलाचा दगड' आहे. त्यांनी दिलेला तो चैतन्याचा पान्हा अनेक लोक त्यांच्या मुलांना यापुढेही अनंत काळापर्यंत पाजल्या शिवाय राहणार नाही. झाडे ही या फुलांची आई असते. त्या आपल्या मुक्या कळ्यांना जीववरस पाजून फुलवतात अशा वेळी आपण त्या आधीच कळ्या तोडल्या तर झाडांना वाईट वाटते. अशा कितीतरी गोष्टीतून त्यांच्या आईने त्यांना जीवनाचे तत्वज्ञान शिकवले, जे तत्वज्ञान आजही समाजाला उपयोगी आहे. त्यांनी आईकडूनच निसर्गावर प्रेम करण्याची निसर्ग जपण्याची दीक्षा घेतली. मतिताथ दडलेली गोष्ट त्यांनी सहज शब्दात त्यांना समजावून सांगितली. त्यातूनच गुरूजींच्या जीवनात निरहंकाराचा, प्रेमाचा, सदाचाराचा, ईश्वर व मातृभक्ती अशा सद्गुणाचा सुगंध दरवळला. गुरूजींना आईने निस्वार्थी सेवेचे अन् आत्मसमर्पणाचे धडेही दिले. प्रत्येक मानवामध्ये ईश्वराचा अंश आहे म्हणून माणूसकी जपणे ईश्वरभक्ती आहे. यातूनच मोठेपणी गुरूजींनी सर्व लोकांची मनोभावे सेवा केली, एवढेच नाही तर त्यांनी मुंगी, किडा, झाडे, पशू या सर्वांवर मनोभावे प्रेम केले. आजच्या बदलत्या, धावपळीच्या युगात सगळी माणसे धावत आहे आज कित्येकजण आपल्या वृध्द मातापित्यांना वृध्दाश्रमात नेऊन ठेवतात. त्यांनी आपल्याला लहानाचे मोठे केलेले असते. मग त्यांच्या आधाराच्या काळात आपण आधार देण्याचे टाळतो. समाजातील ही स्थिती बदलण्याची शक्ती श्यामच्या आईमध्ये आहे.

शेवट गुरूजींना त्यांच्या आईकडून जो काही संस्काराचा ठेवा मिळाला तो 'श्यामची आई' या पुस्तकाच्या रूपाने आपल्या समोर आला. जो मराठी साहित्यातील 'मैलाचा दगड' आहे. त्यांनी दिलेला तो चैतन्याचा पान्हा अनेक लोक त्यांच्या मुलांना यापुढेही अनंत काळापर्यंत पाजल्या शिवाय राहणार नाही. मानवी जीवनातील सद्गुणाची, मूल्याची, मागल्याची अन् सौंदर्याची खाण म्हणजे 'श्यामची आई'. ही कादंबरी या पुस्तकाच्या रूपाने गुरूजींचो माता ही फक्त गुरूजीची न राहता साऱ्या देशाची माता झाली आहे. गुरूजींच्या जीवनावर जे सदाचाराचे मानवतेचे संस्कार झाले ते संस्कार 'श्यामची आई' या पुस्तकाच्या रूपाने पुस्तक वाचणाऱ्या सर्वांवर होतील ही या पुस्तकाने समाजाला दिलेली फार मोठी देणगी आहे.

निष्कर्ष —

- १) श्यामची आई ही कादंबरी मराठी साहित्यातील अक्षर वाङ्मय कलाकृती आहे.
- २) श्यामची आई या पुस्तकाला १०० वर्ष पूर्ण झाली तरी त्या पुस्तकाची गोडी अवीट व महत्त्व न संपणारे आहे.
- ३) साने गुरूजींवर त्यांच्या आईने जे संस्कार केले त्याचे गोष्टीरूपाने चित्रण या पुस्तकात आहे.

Impact Factor

5.604

www.sjifactor.com

ISSN p-2454-7409

Vol. 5 Issue 2

Jan. 2020

Regular Issue

डॉ. भाऊ मांडवकर संशोधन केंद्र व
संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ मराठी प्राध्यापक परिषद यांचा संयुक्त उपक्रम

वर्ष पाचवे अंक दुसरा जानेवारी २०२०

मराठी प्राध्यापक संशोधन पत्रिका

www.researchjournal.net.in

www.indiramahavidyalaya.com

Peer Reviewed Annual National Indexed Research Journal
in Marathi

Published as per UGC (India) Guidelines

मराठी भाषा, साहित्य, संस्कृती व अस्मिता जोपासणारे
मराठी विषयाचे प्राध्यापक, संशोधक आणि अभ्यासक यांच्या
संशोधनकार्याला चालना देणारे वार्षिक

Published By

DBMRC

INDIRA MAHAVIDYALAYA

KALAMB DISTT YAVATMAL MAHARASHTRA 445 401 (India)

अनिल बर्वे यांची नाट्यसंहिता—विषय वेगळेपण

डॉ. दीपाली प्र. गावंडे

सहा. प्राध्यापक

कला महाविद्यालय मलकापूर, अकोला, महाराष्ट्र (India)

dipali.nagpure1976@gmail.com मो.नं. 9028645297

सारांश

साठोत्तरी मराठी वाङ्मयामध्ये कादंबरी व नाट्यक्षेत्र समृद्ध करण्यात ज्या मराठी साहित्यिकांचा सहभाग आहे, त्या साहित्यिकामध्ये अनिल बर्वे यांचे महत्वाचे योगदान आहे. कादंबरी व नाटक या दोन्ही क्षेत्रात यांच्या साहित्यकृती लोकप्रिय झाल्या. त्यांच्या नाटकाचे विषय, आशय, व्यक्तिरेखा, संवाद, मांडणी यात इतरांच्या तुलनेत वेगळेपण आहे. 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड', 'हमिदाबाईची कोठी', 'पुत्रकामेष्टी', 'आकाश पेलताना', यासारखी विषयांनी वेगळी असलेली नाटके अनिल बर्वे यांनी लिहिली आहे. समाजातील संवेदनशील प्रश्नाचा वेध घेण्याचा प्रयत्न नाटकाचे विषय निवडतांना केलेला दिसतो.

प्रस्तावना

साठोत्तरी मराठी वाङ्मयामध्ये कादंबरी व नाट्य क्षेत्र समृद्ध करण्यात ज्या मराठी साहित्यिकांचा सहभाग आहे, त्यात कादंबरी वा नाट्यलेखन या वाङ्मयप्रकाराच्या संदर्भात अनिल बर्वे यांचे महत्वाचे योगदान आहे. त्यांनी कादंबरी लेखनासोबतच नाट्यलेखन केले 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड' या कादंबरी लेखनानंतर त्यांचेच रूपांतर अनिल बर्वे यांनी नाटकांमध्ये केले. कादंबरी जेवढी लोकप्रिय झाली तेवढेच नाटक ही लोकप्रिय झाले त्यांच्या नाटकाचे विषय, आशय, व्यक्तिरेखा, संवाद मांडणी यात इतरांच्या तुलनेत वेगळेपण आहे. यातील त्यांच्या नाट्यसहितेच्या विषयातील वेगळेपणाचा थोडक्यात वेध घेण्याचा प्रयत्न सदर शोधनिबंधामध्ये करण्यात आला आहे.

अनिल बर्वे यांची नाट्यसंहिता—विषयविवेचन

अनिल बर्वे यांनी नाट्यविषयाची निवड करतांना समाजातील संवेदनशील प्रश्नांना हात घातला आहे. समाजात असणारे वादग्रस्त पैलू त्यांनी हाताळले आहे. नाट्यविषयची निवड करतानाच त्यांच्या साम्यवादी विचारसरणीचे अनुबध्द ज्या ठिकाणी जोडले आहे, असे विषय त्यांनी हाताळले आहे. त्यांच्या नाटकाची शीर्षके व विषय समकालीन लेखकापेक्षा वेगळे आहेत. याचा प्रत्यय 'जुलिटचे डोळे', 'हमिदाबाईची कोठी', 'पुत्रकामेष्टी' यातून येतो. प्रत्येकाला ताठ मानेने जगण्याचा नैसर्गिक हक्क आहे असे त्यांना वाटते. त्यामुळे प्रत्येकाला आपआपल्या पध्दतीने जगण्याची मुभाही ते साम्यवादी विचाराचा आधार घेऊन देतात. सत्वे स्विकारणे व निश्चयाने त्यांच्या कसोटीला उतरणे, परिणामाची तमा न वाळगता परिणामासही निधड्या छातीने समोर जाण्याचे धाडस करणारा विरभूषण व कुरकमी ग्लाड या दोन्हीही परस्परविसंगत व्यक्तिरेखा त्यांनी उभ्या केल्या. कौर्याला भयभित होऊन शरण जाण्यापेक्षा निर्भयपणे मृत्यू स्विकारणे त्यांना आवडते. आयुष्यात गलितगात्र होणे हा त्यांचा पिंड नाही त्यामुळेच 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड' त्यांनी अत्यंत ताकदिनीशी उभा केलेला नाट्य प्रयोग आहे 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड' हे अनिल बर्वे यांचे तिसरे व गाजलेले पहिलेच नाटक होय. "नाट्यसंपदा तर्फे पणशीकर ग्लाडवर नाटक आणताहेत, मीच लिहतोय, 'पिचरसाठी' या कादंबरीला खोसला, गुलजार यांची स्थळे सांगून आलीयत. वधू या काम काय होणे ने" असे बर्वे यांनी लिहिले होते. ते हे नाटक रंगभूमीवर आले आणि अपेक्षेप्रमाणेच यश त्याने मिळवले. याचा मांडणी तेरा पात्र घेऊन केली आहे. पॉप्युलर प्रकाशनाच्या रामदास भटकळ यांनी इ.स. १९७७ मध्ये त्यांशी पहिली आवृत्ती मुंबई येथे प्रसिध्द केली. तिचे दुसरे पुर्नमुद्रण इ.स. २००४ मध्ये प्रसिध्द झाले तर प्रभाकर पणशीकरांनी २४ ऑ. १९७६ ला रविद्रनाट्य मंदिर प्रभादेवी, मुंबई येथे प्रयोग सादर केला. या नाटकातील तीनही अंक प्रवेश प्रसंग, संवाद, व्यक्तिरेखा यांची मांडणी बर्वेनी कलात्मक पध्दतीने केली आहे संवादातून ही मांडणी करतांनाच त्यांनी मध्येमध्ये साम्यवादी विचारांची पेरणी केली आहे. या नाटकाचे कथानक हे वेगवेगळ्या प्रकारचे आहे. त्यामुळे त्याचे सादरीकरण प्रेक्षकांना खिळवून ठेवणारे ठरते. 'हमिदाबाईची कोठी' या नाटकाद्वारे ते आणखी एकदा वेगळ्या विषयाकडे मराठी प्रेक्षकांना घेऊन जातात. पांढरपेशा मध्यम वर्गीय आयुष्य जगणाऱ्या समाजाला सामाजिक व सांस्कृतिक धक्का या नाटकांतून वसतो. आठ पात्रे घेऊन नाटकाची मांडणी करण्यात आली पॉप्युलर

प्रकाशनने मुंबई येथे १९७९ मध्ये या नाटकाची पहिला आवृत्ती प्रसिध्द केली तर नाटकाचा पहिला प्रयोग १० जून १९७८ ला शिवाजी मंदिर, दादर मुंबई येथे सादर झाला. नाटकात एकूण तीन अंक व चौदा प्रवेश आलेले आहेत या प्रवेशातून युद्धानंतर बदललेली आर्थिक परिस्थिती व युद्धपूर्व आर्थिक परिस्थिती यातील संघर्ष चित्रित केला आहे. कोणत्याही देशाची आर्थिक परिस्थिती युद्धपूर्वी आणि युद्धानंतर अशी असते की ती सवध व्यवस्था बदलून टाकते युद्धपूर्वी सुखी व निर्भय असणारे लोक युद्धानंतर भयभीत होवून हालाखीचे जीवन जगतात. सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, बदलही होत जातात. हमिदाबाईची कोठी ही घरांतज लोकांना शास्त्रीय संगिताची श्रवणीय पर्वणी देणारी असते. पण काळ बदलला की अभिरूचिमध्ये ही बदल होत जातो शास्त्रीय दुर्वोध संगीत ऐकण्यापेक्षा हलके फुलके संगीत व सिनेमाची गाणी याकडे कल वळतो. इंग्रजीराजवटीनंतर हळूहळू पाश्चात्य संस्कृती भारतात पाय रोवायला लागली त्यातून चित्रपटसंगीत, ध्वनिमुद्रिका याचा मुळमुळाट झाल्याने घरांतज पध्दतीने कोठीवर जाऊन गाणे ऐकण्याची परंपराही कालबाहय व्हायला लागली. त्यामुळे जन्मभर पतिव्रता असणाऱ्या हमिदाबाई हिच्या जीवाची घालमेल व्हायला लागली. आपल्या वाटयाला आलेले आयुष्य मुलीच्या वाटयाला येवू नेय म्हणून तिने मुलीला शिक्षणासाठी बाहेर ठेवले पण आर्थिक परिस्थितीमुळे तिला परत बोलवावे लागले. ही आगतिकता आर्थिक परिस्थितीने निर्माण केली. "हमिदाबाईच्या रूपाने कोठीचे पवित्र्य व कोठीवरील जुने मंगीत जे ऐकण्यासाठी मोठमोठे लोक जीव टाकीत त्यांची ज्योती पेटती ठेवली आहे. तिची मुलगी शब्यो हिच्या रूपाने वेश्याकुळ्यात जन्म घेतल्याने त्यापासून कितीही दूर राहिले तरी समाज त्या मर्यादा ओलांडू देत नाही. मोठे लोक तेथे येतात पण विवाह करून उजळमाथ्याने वेश्याशी कोणी संसार करीत नाही हे दाखविले आहे. वेश्याचा दलाल, वस्तोतल गुंड, त्यांच्या दादाने खेळलेले राजकारण त्यात निर्माण होणाऱ्या समस्या, पोट भरण्यासाठी पैसा व तो मिळवण्यासाठी कोणत्याही मार्गाचा अवलंब करणे इ. गोष्टीचे वास्तव चित्र उभे केले आहे." युद्धानंतर दादराने कोठीला आलेली अवकळा त्यामुळे हमिदाबाईची मानसिक, सामाजिक, आर्थिक संघर्ष सुरू झाला. मूल्याधिष्ठित मानसिकता, देहाचे पावित्र्य, एकनिष्ठ वैवाहिक जीवन असे असतांनाही हमिदाबाईकडे पाहण्याचा सामाजिक-दृष्टीकोन हा गणिकासादृश्य आठ पात्र, तीन अंक घेऊन लेखकाने मांडला आहे. त्यातील व्यक्तिगंडा, संवाद संविधानक या सर्वच गोष्टी काळजाला भेदून जाणाऱ्या आहेत. पुत्रकामेष्टी मधूनही त्यांनी समाजातल्या एका अतिसंवेदनशील पैलूला स्पर्श केलेला आहे. 'सेरोगेट मदर' हो वेगळा असा अनुभव सशम आणि वैशिष्टपूर्ण या नाटकात देण्याचा बर्वेनी प्रयत्न केला आहे. समाजातील नवेनवे विषय हेरून त्यातील नाटय पकडण्याचे अनिक बर्वे यांचे कौशल्य पुत्रकामेष्टी मध्ये अधिक ठळकपणे दिसते एकूण दहा पात्र घेऊन हा अनुभव मांडण्यात आला. पॉप्युलर प्रकाशनच्या रामदास भटकळ यांनी १९८० मध्ये या नाटकाची पहिली आवृत्ती मुंबई येथे प्रकाशित केली. तर रंगभूमीवर नाटकाचा पहिला प्रयोग ४ नोव्हेंबर १९८० मध्ये डॉ. भालेश्वर सभागृह, साहित्य सचमंदीर, गिरगाव, मुंबई येथे सादर झाला. नाटकातील तीनही अंक, प्रवेश, संवाद यांची मांडणी बर्वेनी कलात्मकतेने केलेली आहे. मानूच लाभत्याशिवाय स्त्रिजन्माचे सार्थक नाही व वंशाचा दिवा उजळल्याशिवाय पुरुषार्थाला अर्थ नाही. अपत्यहिनता ही स्त्रीत्वाला पुरुषत्वाला संशीयत व संप्रमित करून सोडते. पुरुषाचे अस्तित्व व अस्मिता ही प्रजोत्पादनाशी जोडली जाते. तर स्त्रीची सर्जनशीलता ही तिच्या अपत्यहिनतेशी जोडली जाते अपत्यहिनता म्हणजे स्त्रित्वामध्ये असणाऱ्या उणिवा या उणिवा तिला वांझोटेपणा देऊन जातात. विवाहनंतर अपत्य जन्माला येणे हे एक स्वाभाविक व नैसर्गिक घटना आहे. पण या घटनेचा संबंध स्त्रिपुरुषाच्या शरीरकतेशी जोडला जातो. त्यामुळे पुत्रहिनता ही उभयतांना अस्वस्थ करणारी असते. म्हणून टेस्टयुववेबी, दत्तकविधान असे पर्याय समोर आले. पण या नाटकातील नायक हा पिता होण्यास पात्र असतो. पण पति मात्र ही सर्जनशीलता गमावून वसते हे शल्य दोषांनाही बोचत असते. दत्तक घेतलेल्या मुलांत आपले रक्त नाही आपला वंश नाही त्यामुळे एकप्रकारचा परकेपणा येतो पण आपलेच रक्त आणि भाड्याने घेतलेले गर्भाशय ही अत्यंत पुरोगामी कल्पना अनिल बर्वेनी प्रस्तुत नाटकात मांडली आहे. अनिल बर्वे यांनी राजकारणातील पैलूवरही आपले लिखाण केले. जो विषय मराठीनाटयसृष्टीमध्ये फार थोड्या लेखकांनी हाती घेतलेला आहे राजकारणात होणाऱ्या विविध पडामोडी व राजकीयसत्ता काबिज करण्यासाठी राजकारणी लोकांनी नैतिक पातळी सोडून चालणारे डावपेच यामुळे राजकारणातून नितिमत्ता गळून पडते. आणि मालमत्ता व गुंडागर्दी आशीच मूल्य शिल्लक असतात. या देशाचे लोकभ्रष्टाचारी राजकीय पुढारी, लोकप्रतिनिधी विविध घटकांची कशी मुस्कटदाबी करते व त्यातून परत सत्त्याचाच विजय कसा होतो हे लेखकाने वारापात्रे घेऊन 'आकाश पेलताना' या नाटकाने मांडले आहे पॉप्युलर प्रकाशनच्या रामदास भटकळ यांना इ.स. १९८४ मध्ये नाटकाची पहिली आवृत्ती मुंबई येथे प्रसिध्द केली. रंगभूमीवर नाटकाचा पहिला प्रयोग दि. ६ ऑगस्ट १९८२ रोजी शिवाजी मंदीर, दादर मुंबई येथे सादर करण्यात आला. नाटकात एकूण

तीन अंक व दहा प्रवेश आलेले आहेत. भ्रष्टराजकीय पुढाऱ्यांच्या राजकारणात व सत्तासंघर्षात सामान्य माणूस कसा भरडून जातो हे राजकीय कटूसत्य सत्तेच्या स्पर्धेतून जन्माला आले. सत्ता असेल तर सत्त्व असलेच पाहिजे असे न मापणारा वर्ग जन्माला आला, सत्ता, सत्त्व, नितीमत्ता गुंडाळून ठेवून सत्तेसाठी वाटेल ते करण्याची मानसिकता जन्माला आली. जणू प्रेमात आणि युद्धात सगळे क्षम्य असते. तसेच राजकारणातही सगळे क्षम्य असते. असा काहीसा प्रकार आज राजकारणामध्ये आला आहे तो लेखकाने त्यांच्या आयुष्यातील अनुभवाच्या निरीक्षणाचा आधार घेत घेत या नाटकांतून मांडला. राजकारणातील वास्तव समोर आणणारे वर्णे यांचे सहावे नाटक आहे. 'आकाश पेलतांना' या नाटकावर समीक्षाही झाली. "हया कक्षेत मला नाही, हे नाटकराच नाही तर पाहणारा काय?"³ अशा प्रकारची टिका कमलाकर नाडकर्णी यांनी तर "हे नाटक रचनेच्या दृष्टीने पूर्णतः फसलेले आहे"⁴ असे वि.भा. देशपांडे म्हणतात.

समारोप

अशाप्रकारे अनिल बर्वे यांनी समाजातील विविध समस्या निवडून त्या आपल्या नाटकाचे विषय करून त्या समस्यांना हात घालण्याचा प्रयत्न बर्वे आपल्या नाटकांत प्राधान्याने करतांना दिसतात. त्या प्रयत्नांना वास्तवाचा, साम्यवादाचा चळवळीचा आधार आहे.

निष्कर्ष

- १) साठोत्तरी नाटयवाङ्मयातील अनिल बर्वे हे एक महत्वाचे लेखक आहे.
- २) नाटयविषय निवडतांना समाजातील संवेदनशील प्रश्नांना हात लावलेला दिसतो. ही निवड सहजगतेने विचारपूर्वक केलेली दिसते.
- ३) अनिल बर्वेनी 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड', 'हमिदाबाईची कोठी', 'पुत्रकामेष्टी', 'आकाश पेलतांना' यासारखी महत्वाची नाटके लिहिलेली दिसतात.
- ४) 'थॅक्यू मिस्टर ग्लाड' या नाटकात त्यांनी जाणिवपूर्वक नक्षलवाद व तुरूंगात होणारा छळ हा विषय बर्वे यांनी निवडला. अनिल बर्वेनी नक्षलवादी चळवळीत काम केले आहे. त्यासाठी ते तुरूंगातही गेले आहे त्यामुळे या विषयाला त्यांच्या प्रत्यक्ष अनुभूतीची जोड आहे.
- ५) 'हमिदाबाईची कोठी' हा विषय दोन बदललेल्या संस्कृतीत कोठीची मूल्यघसरण, इतरांनी कोठी संदर्भात स्विकारलेले स्थित्यंतरे पण हमिदाबाईने जोपासलेली निष्ठा याला महत्त्व दिलेले आहे.
- ६) 'पुत्रकामेष्टी' या नाटकांत अनिल बर्वे यांनी पुत्रप्राप्तीबद्दलची आसक्ती किंवा स्त्रीयांना मातृत्वाची असणारी ओढ व त्यासाठी जगावेगळी तडजोड हा विषय झाला आहे.
- ७) 'आकाश पेलतांना' यामध्ये सत्तासंपादनासाठी वाटेल त्या तडजोडी करण्याची मानसिकता प्रामुख्याने दिसते व शेवटी पूर्वाश्रमाची मूल्याधिष्ठीत मानसिकता यात विजयी होत असल्याचे दाखविले आहे.
- ८) अनिल बर्वे यांच्या सर्वच नाटकांना वास्तवतेचा व साम्यवादाचा स्पर्श आहे.

संदर्भ सूची

- १) अनिल बर्वे, 'ललित विशेषांक' पृ.क्र. ३६
- २) सुनिता सहस्त्रबुध्ते, 'मराठी नाटकांतील संवाद : बदलते रंगरूप,' पुणे पृ.क्र. २३५
- ३) कमलाकर नाडकर्णी, 'फाटके आकाश पेलणार काय ? समाविष्ट सोबत' पुणे १७ ऑक्टोबर १९८२, पृ.क्र. ८
- ४) वि.भा. देशपांडे, 'मराठी नाटक : स्वतंत्र्योत्तर काळ १९४७-९०', पुणे, ऑगस्ट १९९२, पृ.क्र. ८९

साधन ग्रंथ

- १) थॅक्यू मिस्टर ग्लाड, अनिल बर्वे, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई १९७७.
- २) हमिदाबाईची कोठी, अनिल बर्वे, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई १९७९.
- ३) पुत्रकामेष्टी, अनिल बर्वे, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई १९८०.
- ४) आकाश पेलतांना अनिल बर्वे, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई १९८४.



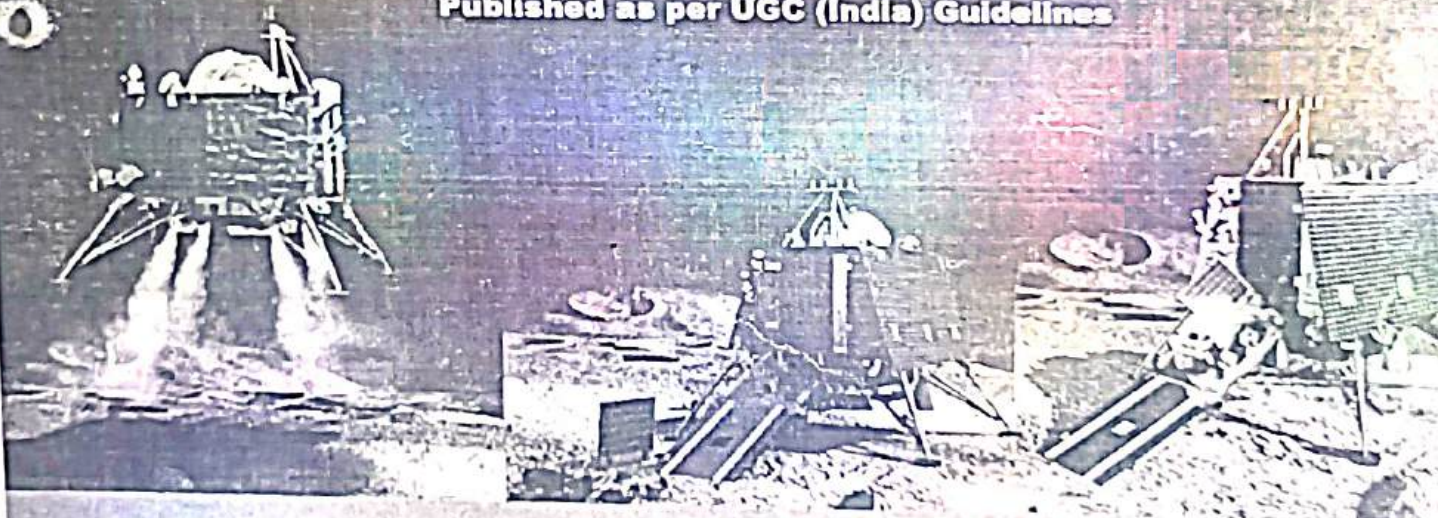
Impact Factor
5.455
www.sjifactor.com

ISSN 2349-9370
Vol. 8 Issue 2
Oct. 2019
Regular Issue

Research Journal of India

www.researchjournal.net.in
www.indiramahavidyalaya.com

Peer Reviewed Multi-Disciplinary
Annual International Indexed Research Journal
Published as per UGC (India) Guidelines



Published by
IRMRC
INDIRA MAHAVIDYALAYA
KALAMB, DIST. AVADH, UTTAR PRADESH, INDIA

मराठी नाटक आणि त्याचे स्वरूप

डॉ. दीपाली प्र. गावंडे

सहा. प्राध्यापक

कला महाविद्यालय, मलकापूर

अकोला, जि. अकोला, महाराष्ट्र (India)

dipali.nagpure1976@gmail.com भ्रमणध्वनी 9028645297

सारांश

माणूस मूलतः लौकिक विश्वापेक्षा अलौकिक सृष्टीत रमतो. दैनंदिन जीवनव्यवहारातील अराजक अतृप्त जाणिवांचा ईच्छेचा पाठपुरावा तो आपल्या अंतःमनात करत असतो त्यातूनच विविध कलाकृती अस्तित्वात आले. त्यापैकी नाटक ही एक होय. नाटक इतर साहित्यप्रकारापेक्षा निराळा सामुहिक कलाविष्कार वाङ्मयप्रकार आहे. नाटक हा कलाप्रकार असल्याने इतर साहित्य प्रकारापेक्षा लोकप्रिय वाङ्मय प्रकार आहे. नाटक म्हणजे प्रसंग आणि संवाद यांच्याद्वारे व्यक्त होणारा संघर्षमय कलात्मक अनुभव होय. मुरारजी लोकरंजन करण्याच्या हेतूने निर्माण झालेले नाटक हळूहळू मनोरंजनासोबतच लोकप्रबोधनही करू लागले. नाटकाच्या वाङ्मयमूल्याबरोबरच त्याच्या प्रयोजनमूल्यालाही तेवढेच महत्त्व असल्याने त्यामध्ये कथानक, पात्रे, संवाद या भाषिक घटकांसोबतच नैपथ्य, प्रेक्षक, प्रकाशयोजना, संगीत या घटकांचाही समावेश होतो. नाटक उगम सर्व जगात एक धार्मिक कृत्य म्हणून झाला असे अनेकांचे मत असले तरी आज जगभरात काळाच्या ओघात नाट्यकलेची वाढ विकास विविध दिशांनी झालेली दिसते. मराठीत संस्कृत व इंग्रजी वाङ्मय प्रभावातून इ.स. १८४३ मध्ये सांगली येथे मराठी नाट्यकला (सिता-स्वयंवर) विष्णूदास भावे यांच्या प्रयत्नांमुळे उदयास येऊन पुढे अधिकाधिक समृद्ध होत गेली. अनेक मान्यवर नाटककारांनी तिच्यात मोलाचा भर घालून तिची योग्य ते आयाम देण्याचे प्रयत्न केलेले दिसतात.

प्रस्तावना

माणूस स्वभावतः कल्पनासक्त असल्याने त्याला कृत्रिम निर्मिती भावते, त्यातूनच विविध कलाकृती अस्तित्वात आले. त्यापैकी एक नाटक हा होय. नाटक सामुहिक कलाविष्कार आहे. कथा, कादंबरी, नाटक निबंध याप्रमाणे हा स्वतंत्र वाङ्मय प्रकार आहे. मात्र इतर वाङ्मय प्रकारांच्या तुलनेत नाटक हा प्रकार अधिक लोकप्रिय आहे. कारण नाटकाला वाङ्मयीन रूपाबरोबरच प्रायोगिक अंगही आहे. नाटकाला प्रायोगिक कला असल्याने नाटकाचा प्रयोग ज्या प्रेक्षकासमोर होणार ते प्रेक्षकही नाटकाच्या यशस्वितेच्या संदर्भात नाटकातूनच एक महत्त्वाचा घटक असतो. नाटक ही सांस्कृतिकदृष्ट्या प्रभावी व परिणामकारक असलेली अभिव्यक्ती आहे. नाटक हा मानवी मनाचा सांस्कृतिक उद्गार आहे. नाटक ज्या समाजात तयार होते. तेथील संस्कृतीने ते प्रेरित व घेऊनच ते अविष्कृत होते. नाटक हे मूलतः लोकरंजनार्थ निर्माण होत असले तरी मनोरंजना इतकेच सन्धान प्रबोधन देण्याची कला आहे. ते समाजातील दोषांचा आविष्कार करू शकते किंवा मानवी दोषांवर प्रकाश टाकते.

विवेचन

प्राचीन ऋषीमुनींनी नाटकास 'यज्ञ' म्हटले आहे तर ब्रह्मदेवाने नाटकाला 'पाचवा वेद' म्हटले आहे. नाटक ही अतिशय प्राचीन कला आहे. नाटक या शब्दाचा मूळ अर्थ अभिनय करणे असा आहे. नट हा मूलतः प्राकृतातील असून तो नर्त या संस्कृत शब्दाचा अपभ्रंश होऊन प्राकृतात आला आहे. मूळ अर्थाप्रमाणे नट म्हणजे तर नाटक या शब्दाचा अर्थ नाचणे असा आहे. नट म्हणजे अभिनय करणारा. सोग करणारा व नाटक म्हणजे नाट्यरूपाने सोगाच्या रूपाने दाखविणे वा सादर करणे असा अर्थ रूढ झाला. नाट्य म्हणजे नटारी अभिनय करणे या अर्थाची फोड भरताने नाट्यशास्त्रात अधिक सविस्तर केली आहे. तो म्हणतो "त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नट भवानु"

भरत मुनींनी नाट्यकलेचा जन्म कसा झाला? याविषयी विवेचन केले आहे. त्या विवेचनावरून नाटकाच्या स्वरूपांवर प्रकाश पडतो. "ऋग्वेदातून 'पाठ्य', यजुर्वेदातून 'अभिनय', सामवेदातून 'गीत' व अथर्ववेदातून 'विविध रस' असे अंश घेऊन नाट्यवेद निर्माण झाला असे भरताने विवेचन केलेले आहे."¹ भरताच्या या विवेचनावरून संवाद, अभिनय, संगीत आणि रस हे नाटकाचे चार अंग आपल्या लक्षात येतात.

भरताच्या मते नाटक आकार घेतांना संवाद, संगीत, अभिनय व रस याचा आधार घेते. पुढे नाटकला 'क्रीडानायक'(खेळ) म्हणून निर्देशितांना ते 'दृश्य' आणि 'श्राव्य' काव्य असेही भरतमुनी सुचवितो. मानवी जीवनातील काही प्रसंगांना संगीत, नृत्य इ. कलांची जोड देऊन भावनाविष्कार घडवणे हे नाट्यकलेचे पूर्वापार चालत आलेले स्वरूप आहे. असे कोणतेही शिल्प, विद्या, ज्ञान, कर्ता, कर्म व योग नाही की जे या नाट्यात प्रदर्शित करता येत नाही असे भरतमुनींनी म्हटले आहे. धनंजयाने आपल्या दशरूपकात नाटकाची व्याख्या दिली आहे. तो म्हणतो,

"अवस्थानुकृतिनाट्याम"²

मानवी अवस्थांचे अनुकरण म्हणजे नाट्य असा त्याच्या व्याख्येचा अर्थ आहे. कालिदासाने सुध्दा आपल्या मालविकाग्निमित्रात नाट्याचे वर्णन केले आहे तो म्हणतो -

"त्रेगुण्योद्भवमात्र लोकचरितं नानारसमं दृश्यते।

नाटयं भिन्नरूचेर्जनस्य बहुधटयेकं समराधनम्।"³

अर्थ - नाट्यात सत्य, रज, तम या तीन गुणांतुन उद्भवणारे आणि नाना रसांनी युक्त असे लोकव्यवहार दिसतात, आणि त्यामुळे नाट्य हे वेगवेगळ्या आवडी असणाऱ्या लोकांचे एकमेव मनोरंजनाचे साधन ठरते. नाटकाच्या माध्यमाने माणसाच्या मनातील विकार, सत्व, रज, तम यांचे दर्शन कलात्मक पध्दतीने घडविले जाते. वरील धनंजयाने व कालीदासाने केलेल्या व्याख्या या भरताच्या मताला अनुसरून केल्याच्या दिसतात. कालिदासाने आपल्या वरील व्याखेत नाटकाच्या महत्त्वाच्या वैशिष्ट्यांचा विचार केलेला आहे. त्याच्या मते, आनंद घेणे हा नाटकाच्या महत्त्वाच्या वैशिष्ट्यांचा विचार केलेला आहे. आनंद घेणे हा नाटकाचा प्राथमिक गुण असून त्यात कलेचे सौंदर्य व काव्य असले पाहिजे. त्रिगुणात्मक लोकजीवन नाटकांत रंगवायचे असल्याने नाटकांत व्यक्तिदर्शनाला महत्त्व येते. तो नाटकाचा गाभाच आहे.

इंग्रजी दृष्टीने नाटक संकल्पना बघितली असता इंग्रजीतील 'ड्रामा' (drama) हा शब्द मूळ ग्रीक 'ड्रॉन' (dran) या शब्दावरून आलेला असून याचा अर्थ कृती करणे (To Do) असा आहे. डॉमिनॉन म्हणजे केलेली कृती व मायथॉस म्हणजे सांगितलेली कृती असा फरक प्राचीन ग्रीसमध्ये केला जाई. नाट्यशास्त्राचे मूळ विवेचन करतांना ऑरिस्टॉटलने 'अनुकृती' हे तत्व प्रधान मानले व त्या अनुषंगाने नाटकाच्या सर्व अंगांचा उहापोह केला. ऑरिस्टॉटलने आपल्या नाटकांचे विवेचन शोकांतिकेच्या अनुषंगाने केले आहे.

"स्वभाव हे मनुष्याचे गुण ठरवितो पण ती मनुष्ये सुस्वभावी असणे हे त्याच्या कृतीवरून ठरते. म्हणून नाट्यात्मक कृतीमागील हेतू स्वभावदर्शन हा नसतो. स्वभावाचा प्रवेश कृतीचा सहाय्यकारी म्हणून होतो"⁴ मानवी स्वभावदर्शन व व्यक्तिदर्शन हेच नाटकाचे प्रधान अंग आहे. असा आशय व्यक्त करणारी त्याची व्याख्या दिसते. नाटक भावात्मक पध्दतीने स्वभाव दर्शन घडविते. प्रा. भा.ल. फडके यांनी मराठी विश्वकोष खंड १२ मध्ये नाटकाची व्याख्या करतांना म्हटले आहे की, "नाटक म्हणजे प्रसंग आणि संवाद यांच्या द्वारे व्यक्त होणारा संघर्षमय कथात्मक अनुभव असे किंवा नाटक म्हणजे माणसाच्या अंतर्बाह्य (क्रिया प्रतिक्रियांचे) दर्शन घडविणारा आकृतीबंध होय. नाटक निर्माण करते ती दंदात्मक जाणीव."⁵ या व्याख्येतून नाटकाचा जास्तीत जास्त गुणधर्मांचा अंतर्भाव झालेला दिसतो.

नाटकात रंजनाचे फार मोठे सामर्थ्य असते. विष्णूदासी नाटकाची निर्मिती या रंजन करण्याचा हेतुनच झाली होती. म्हणूनच स्वतः विष्णूदास भवे आपल्या सादरीकरणास 'खेळ' असे म्हणतात. १८५० पर्यंत नाटक हा शब्द प्रचारात आला नव्हता, खेळ हाच शब्दप्रयोग वापरला जात असे. "नाटक हा शब्दच त्यावेळी (म्हणजे १८५० च्या सुमारास) संस्कृत तज्ञ अथवा मॅक्लॉव्ह साहेबांचे सरोजांतील अथवा मावशास्त्री कोल्हटकरांसारखे बडे लेखक व रंगेल वक्ते यांच्यासारख्या थोड्या कारीना माहीत असेल तेवढाच, बाकीच्यांस हा शब्द माहीतही नव्हता."⁶ असे कृष्णाजी आवाजी गुरुजी म्हणतात नंतर हळूहळू खेळ या शब्दाऐवजी नाटक हा शब्द प्रचलित झाला.

वसंत कानेटकर यांनी आपल्या केलेल्या नाटकाच्या व्याख्येतून संघर्षात्मक आशय स्पष्ट केला आहे तो "नाटकाचा संघर्ष म्हणजे अनुभवातील संघर्ष विजाची कलावंताला येणारी जाग ती केव्हा कोठे कशी येईल सांगता

येत नाही. श्रेष्ठ नाटक हे एकाच वेळी जीवनदर्शन ही असते व जीवनावरील भाष्य ही असते.” मानव जीवनच कसे संघर्षमय आहे. आपल्या जीवनातील संघर्ष नाटक दाखवते त्यामुळे ते रंजकही ठरते. जार्ज बर्नार्ड शाॅ या प्रसिद्ध नाटककाराने संघर्षाचे चित्रण हे नाटकाचे व्यवच्छेदक लक्षण मानले आहे. माणसाच्या संघर्षाला व्यक्तिसापेक्ष मर्यादा असतात. पण आपल्या मनातील संघर्ष नाटकात अभिव्यक्त होतो तेव्हा तो समाजसापेक्ष असतो.

‘वाङ्.मयीन संज्ञा संकल्पना’ या कोशात नाटक या शब्दाचा अर्थ सांगतांना “नाटकांचे प्रयोग रूपाने सादरीकरण हे नाटकाचे व्यवच्छेदक लक्षण मानले आहे. त्यामुळे नाट्यकलेचा विचार अनेक पातळ्यांवर करावा लागतो असे म्हणतांना ते म्हणतात कथानक, पात्रे, प्रसंग, संवाद हे भाषिक घटक नाटकाच्या शब्दसंहितेशी संबद्ध असतात, तर नेपथ्य, प्रकाश योजना व संगीत हे अभाषिक घटक प्रयोगनिष्ठ असतात. म्हणजेच नाट्यकला हा एक साहित्य प्रकारही आणि कलाप्रकारही आहे. त्यामुळे तिला दिविरव स्वरूपाचे अस्तित्व प्राप्त होते आणि तिच्या यशापयशात ही या दोन्ही प्रकारच्या घटकांचा लक्षणीय वाटा असतो.” नाटक ही प्रयोगनिष्ठ कलाकृती आहे. त्यामुळे त्यात नेपथ्याचा, संवाद, अभिनय, पात्र, प्रसंग, संगीत यांचा कलात्मक समन्वय प्रस्थापित करावा लागतो.

नाटकाची व्याख्या करतांना प्रा. भालवा केळकर म्हणतात, “नाटक म्हणजे मनुष्य जीवनाच्या विविध पैलूंचा सत्याभास निर्माण करणारे माध्यम ते जीविताचा कलात्मक आविष्कार करून समुहाला एका सुत्रात गोवते, एकमानस बनविते. एकच प्रक्रिया करायला लावते व बहुतांशी एकच कलात्मक आनंद उपभोगावास लावते. हे दृश्यकाव्य असल्याने साहित्यमूल्याइतकेच त्याचे प्रयोगमूल्य ही महत्त्वाचे आहे. नाटक हा उच्च प्रतिचा सर्वोच्च कलाविष्कार आहे” नाटकात दोन मूल्ये असतात एक साहित्यिक मूल्य व दुसरे प्रयोगात्मक मूल्य, नाटकाचा प्रभाव निर्माण करण्यासाठी प्रयोगमूल्य अधिक जास्त असावे लागते. वरील दोन्ही मतांमध्ये नाटकांच्या वाङ्.मयमूल्या वरोबरच प्रयोगमूल्यालाही वाङ्.मयरूपाइतकेच महत्त्व दिलेले दिसते. अलरडाइस निकल, “संवाद ऐकावयास व रंगभूमीवर घडणाऱ्या नाट्यपूर्ण घटना पाहावयास वसलेल्या प्रेक्षकांसमोर नटांना प्रत्यक्षतः वटवून दाखवता येतील व त्यापासून प्रेक्षकांचे रंजन होऊ शकेल अशा प्रकारे जीवनासंबंधीच्या कल्पना ज्यात व्यक्त केल्या जातात ते नाटक.” या मतामध्येही निकल यांनी नाटकाच्या प्रयोगमूल्याला महत्त्व दिलेले दिसते. सोबतच नाटकाने रंजन सुध्दा केले पाहिजे असेही ते सुचवितात.

वरील निरनिराळ्या तज्ञांच्या नाट्याविषयीच्या मतांचा आढावा घेतला असता लक्षात येते की, नाटक हे दृश्य श्राव्य असल्याने त्याचे वाङ्.मयमूल्यावरोबरच प्रायोगिक मूल्यही लक्षात घेतले पाहिजे. तसेच नाटकाने मानवी जीवनाचा कलात्मक आविष्कार होत असतो व तो द्वंद्वात्मक असतो. तसेच नाटकाने लोकप्रबोधन व रंजनही केले पाहिजे असेही बरेच जण सुचवितात. जनमानसाची सहज रितीने पकड घेणारा एक अत्यंत प्रभावी असा वाङ्.मय प्रकार नाटक हा आहे. ज्याचे स्वभावदर्शन, पात्रे, संवाद, प्रसंग हे प्रमुख अंग मानता येईल.

नाटकाचे वाङ्.मयीन व प्रायोगिक हे दोन्ही अंग सारखेच महत्त्वाचे आहे. त्यामुळे नाटकाचा अभ्यास करतांना तो प्रायोगिक व वाङ्.मयीन दृष्ट्या रसिक वाचकांसाठी असावे की रंगभूमीसाठी असावे या विषयाने परस्पर विरोधीमते मराठी अभ्यासकांमध्ये दिसून येतात. काहीजण या दोन्ही मूल्यांच्या पलिकडे जाऊन केवळ एकच एक नाट्यमूल्य मानतांना दिसतात. उदा. न.चि.केळकर या संदर्भात म्हणतात “रंगभूमीवर फार दिवस आले व फार दिवस टिकले तरच ते नाटक, असे कोणी म्हणोत, पण नाटक हे स्वतंत्र रितीने वाङ्.मय असे म्हणून ते रंगभूमीवर असेल, अगर नसेल तरी वाङ्.मयीनदृष्ट्या त्याची किंमत अबाधितच राहते.” असे विद्वान न.चि.केळकर करतात. मात्र प्रा. ना.सि.फडके यांना ही कल्पना पूर्णपणे मान्य होत नाही, “रंगभूमीवर नटवून अभिनयाच्या व भाषणाच्या द्वारे लोकसमुदायास सांगितली जाणारी कथा म्हणजे नाटक” अशी नाटकाची व्याख्या करून नटनटीचे गुणावगुण लक्षात घेऊनच निर्माण केलेली पात्रे रंगोत्कर्षाला कारणीभूत होतात म्हणून उदाहरणा दाखल ते शेक्सपियरच्या हॅम्लेटचे (रिचर्ड सॅम्बुरबॉज नट) (गंधर्व नाटक मंडळी) डोळ्यांवर ठेवून व किलोस्कर सभोवतालच्या परिवारातील नटसंच लक्षात घेऊन नाट्यलेखन करतात असे मुद्दे आणतात. म्हणजेच नाट्यलेखनात रंगभूमीचा, नटाच्या अभिनयाचा व लोकसमुदायाचा विचार व्हावा असे लक्षात घ्यावे. या दोन्ही मतांच्या पलिकडेच आणखी एक तिसरे मतही आपल्याला या संदर्भात अभ्यासकांमध्ये दिसून येते. “वाङ्.मयीन मूल्य विरुद्ध प्रायोगिक मूल्य असा एक खोटा झगडा आज आपल्याकडे उभा राहिला आहे. वस्तुतः ही दोन्ही मूल्य नाट्यापुरती स्वतंत्रपणे अगदी खोटी आहे. वाङ्गुळवजा आहे. खर मूल्य एक नाट्यमूल्य शब्दांचे अवजड जू भिरकावून नाटक ज्या दिवशी किंवा रात्री स्वतंत्र स्वयंभू कलामाध्यम म्हणून प्रतिभाशा

कलाकारांकरवी जिवंत आणि उत्स्फूर्त स्वरूपात आमच्या रंगमंचावर रंगू लागेल, तेव्हा ते एकच मूल्य, एकच निकष शब्दातीत असा नवप्रत्यय हा त्याचा हेतू कोणत्याही अवांतर मदतीविना ते प्रकट होईल, तिथून निघून कसल्याही आडकाठीविना, पाहणाऱ्याच्या अगदी काळजालां भिडेल.”¹⁴ असे आजचे नाटककार म्हणून ओळखले जाणारे विजय तेंडुलकर आपली भूमिका मांडतात.

नाटक ही साहित्याच्या अंगाने फुलत जाणारी प्रायोगिक कला आहे. ती एक प्रयोगजीवी कला असल्याने तिचे स्वरूप सांघिक असते. नाटक हा एक सामुहिक कला आविष्कार आहे. नट, दिग्दर्शक, प्रेक्षक पडद्यामागील कलाकार, लेखक या सर्वांचाच सहभाग असतो. नाट्यप्रयोग हा रमणीय अनुभव देतो म्हणूनच नाटकाला संस्कृतमध्ये 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' असं म्हटलं जाते. नाटक हा दृकश्राव्य असा करमणूक करणारा वाङ्मय प्रकार आहे. नाटकाचे अत्यंत महत्वाचा असे हे दृकश्राव्य स्वरूप आहे. नाटकाप्रमाणे अन्य वाङ्मय प्रकारात हे वैशिष्ट्य आढळत नाही. नाटक प्रत्यक्ष प्रेक्षकांसमोर घडत असते. त्यातील पात्रांचा अभिनय तो प्रत्यक्ष पाहत असतो. व्यक्तीचे राग, लोभ, त्यांच्या भाव-भावना अभिनयाद्वारे आविष्कृत होत असतात. त्यांचे नाट्यसंवाद कानांवर पडत असतात. ह्या सर्व घटना डोळ्यांने पाहिल्या जात असल्यामुळे त्यांचा मनावर खोलवर परिणाम होतो. चालती बोलती माणसे ते नाट्य दाखवतात, ऐकवतात, म्हणूनच दृकश्राव्य स्वरूप हे नाटकांचे सर्वात महत्वाचे वैशिष्ट्य आहे. नाटकाचे हे दृकश्राव्य मूल्य लक्षात घेतले तर नाटक ऐकण्यासाठी, पाहण्यासाठी प्रेक्षक सुद्धा केवळ प्रेक्षक असून चालणार नाही तर तो बहुश्रुत, प्रगल्भ असायला हवा. म्हणूनच भरताने आपल्या नाट्यशास्त्र या ग्रंथात प्रेक्षकाविषयी विवेचन केले आहे की, प्रेक्षकांची इंद्रिये तिष्ठण असावीत. नटांच्या सुख, दुःखाचा त्यांच्यावर परिणाम व्हायला हवा. त्यांच्या ठिकाणी नाटकांचे गुणदोष विवेचन करण्याची पात्रता असावी. वक्त्याला जसा समोर श्रोता हवाच असतो त्याचप्रमाणे नाटकाला प्रेक्षक हा घटक महत्वाचा ठरतो. म्हणजेच प्रेक्षकाशिवाय प्रयोग संभवत नाही व नाट्य प्रयोगाशिवाय नाटकाच्या वाङ्मयीन रूपाला पूर्णत्व येत नाही. म्हणून नाटक या वाङ्मय प्रकाराच्या बाबतीत प्रेक्षक हा महत्वाचा घटक ठरतो.

नाटकाचा उगम सर्व जगात एक धार्मिक कृत्य म्हणून झाला असे अनेक विद्वानांचे मत आहे. तर काहींच्या मने नाटकाचा उगम ऋतुपरिवर्तन किंवा वर्षवदल या प्रसंगी आदिम मानवांच्या कडून केल्या जाणाऱ्या धार्मिक नृत्यगीतांतून झाला. देवी भगवतीच्या संतोपासाठी तिच्या वार्षिक उत्सवात नाटक करून दाखवित. दक्षिणेत अजूनही अनेक ठिकाणी ही चाल अस्तित्वात आहे. ग्रीक रंगभूमीचा उदय आपल्याला धार्मिक उत्सवाच्या निमित्ताने झालेला दिसतो. निसर्ग आणि देवदेवता यांच्यावर अधिराज्य गाजविणाऱ्या नियतीला धार्मिक उत्सवाच्या निमित्ताने उदयास आलेल्या ग्रीक नाटकात महत्व आहे. गावोगाव भटकून नाटके सादर करणारा येस्मिस हा ग्रीक नाटकाचा जनक असल्याचे लक्षात येते तर रोमन नाटकही उत्साहातून निर्माण झाले असून ग्रीक नाटकांची लॅटिनमध्ये भाषांतरे करणारा गुलाम अॅडोनिकस हा रोमन नाटकांचा जनक असल्याचे दिसून येते. संस्कृत नाटकाच्या परंपरेहून आपल्या लक्षात येईल की भरतमुनी हा संस्कृत नाट्यशास्त्राचा प्रणेता होय. सर्वसामान्य जनांना धर्मतत्वाचे आकलन सोपेपणाने व्हावे म्हणून शब्दांना नृत्य व संगिताची जोड देवून त्याने नाटक सादर केले. इ.स. च्या दुसऱ्या व तिसऱ्या शतकांपर्यंत भारतात संस्कृत नाटक ही संस्था स्थिर झालेली दिसते. संस्कृत नाटके व रंगभूमी यांचा विकास प्रामुख्याने राजाश्रयाच्या आधारेच झालेला दिसतो. संस्कृत नाटकाचे प्रयोग बहुतांशी राज प्रसादातच होत असत. त्यामुळे सामान्य लोकांपर्यंत त्या वेळचे नाटक पोहचूच शकले नाही. राजांची प्रेम प्रकरणे आणि त्यांचे पराक्रम हेच बहुधा नाटकाचे विषय असत आणि शृंगार व चौर रसांचा त्यातून प्रामुख्याने परिपोष होत असे.

काळाच्या ओघात नाट्यकलेची वाढ व विकास विविध दिशांनी होत गेली. शेक्सपिअर, इव्हेंस, बर्नार्ड शाॅ. वेकेट इ. नाट्यकर्त्यांनी नाटक या कलेला अनेक नवीन परिमाणे प्राप्त करून दिली. संस्कृत व इंग्रजी यांच्या प्रभावातून इ.स. १८४३ मध्ये मराठी नाट्यकला उदय पाहू लागली. परंपरेने चालत आलेल्या लोकवाङ्मयातही मराठी नाटकाची विजे आपल्याला दिसतात. पोवाडा, यक्षगान नाट्य, भागवतमेळा, भारूड, लळिते, दशावतारी खेळ, कळमुत्री बाहुल्या, तमाशा, गोंधळ या लोकवाङ्मय प्रकारात आपल्याला नाटकांची विजे दिसून येतात. परंतु मराठी नाटकाला सुरुवात करण्याचा मान सांगली संस्थानाधिपती कै. श्री आप्पासाहेब यांच्याकडे आहे. इ.स. १८४९ मध्ये सांगलीत उत्तर कानडा प्रांतातील एक भागवत नावाची मंडळी आली होती व तिचे काही खेळ श्री आप्पासाहेब पटवर्धन यांनी पाहिले. या प्रकारचे खेळ मराठीत झाले तर चांगले होईल असे श्रीमंत पटवर्धनांना वाटले. त्यामुळे हे काम करण्याचे त्यांनी आपले आश्रित विष्णुदास भावे यांच्याकडे सोपविले. विष्णुदासांनी बरीच खटपट करून हे काम पुर्णत्वास नेण्यासाठी इ.स. १८४३ मध्ये नाटकाचा पहिला खेळ करून

दाखविला. या नाटकांचे नाव होते 'सीतास्वयंवर' आणि येथूनच मराठी नाटकाला सुरुवात झालेली दिसते. मराठी नाटयकलेची मुहुर्तमेढ रोवली गेली. रंगभूमी आणि नाटक यांचा उत्कृष्ट मेळ जमून त्यातून महत्त्वाची नाटयकला जन्माला आली. सांगली हे दक्षिण महाराष्ट्रातील एक लहानसे संस्थान, मराठी इतिहासाच्या नाटयकलेचे माहेर घर म्हणून नोंदले गेले येथुन पुढे बरीच नाटके मराठीत आली. परंतु ती साहित्याच्या महत्त्वाची नव्हती.

इ.स. १८४३ साल मराठी नाटक अस्तित्वात येण्यास उजेडाव लागले. वास्तविक संस्कृत इतर भाषेतील नाटक बरीच आधी उदयास आली होती. त्या मानाने मराठी नाटक बरेच उशिरा सुरू मराठी नाटक उशिरा सुरू होण्यामागील मानसिकता किंवा कारण आपल्याला समाजातच दिसते. प्राचीन वाङ्.मयाचे प्रामुख्याने दोन प्रयोजन आपल्याला दिसतात ते म्हणजे ईशस्तवन व इश्वरी संतोष अलौकिक स्वरूपाची होती. मनोरंजन, विनोद, आनंद या प्रयोजनांचा निषेध या काळातील वाङ्.मयास आपल्याला दिसून येतो. तुकोबांनी 'पोटाचे ते नटा. पाहो नये छंद। विषयाचे भेद। विषयरूप' म्हणून नटाची अवहेलना केलेली दिसून येते. त्यामुळे शक्य तिथे नाटकी प्रवृत्तीचा, स्त्री वेपथान्याचा निषेध नोंदविला दिसतो. अध्यात्म, परमार्थ रूढीग्रस्त धर्म यांचे प्राबल्य समाजात असल्याने नाटक व ते करून दाखविणे यांचीही अवहेलना होत होती नाटक उशिरा सुरू होण्याबद्दलचे श्री.ना. बनहट्टी यांचे काही विचार स्वरूपाचे आहे ते म्हणतात, "समाज जीवनातूनच नाटयसृष्टीला तिचे पोषक रस मिळत असतात अर्थात जितके भव्य, वैचित्र्यपूर्ण व रसोत्कट तितकेच त्याचे नाटयही भव्य, वैचित्र्यपूर्ण व रसोत्कट असे निपजत असते."

समारोप

१८४३ पासून सुरू झालेली मराठी नाटयकला भाव्यापासून पुढे-पुढे अधिकाधिक समृद्ध होत अनेक दिशांनी तिच्यावर संस्कार होत ती पुढे चालत होती व आजपर्यंत ती चालतच आहे. या परंपरा विष्णूदास भाव्यापासून चालू होऊन त्यामध्ये किलोस्कार, देवल, खाडिलकर, कोल्हटकर, गडकरी, वरेकर, अत्रे, देशपांडे, कानेटकर, दारव्हेकर, शिरवाडकर, दळवी, तेंडुलकर, खानोलकर, अनिल बर्वे, एलकुंचवार, आळकर नाटककारांनी त्यामध्ये मोलाची भर घालून तीला योग्य परिमाणे प्राप्त करून देण्याचे प्रयत्न केलेले दिसतात.

वरील विवेचनावरून आपल्या हाताशी काही निष्कर्ष लागतात ते पुढीलप्रमाणे :

१. नाटक हा जनमानसाची सहज रितीने पकड घेणारा एक अत्यंत प्रभावी असा दृकश्राव्य वाङ्.मय आहे.
२. नाटक ही दृकश्राव्य प्रयोगजीवी कला असल्याने तो एक सामुहिक कलाविष्कार आहे. दिग्दर्शक, प्रेक्षक, पडद्यामागील कलाकार व लेखक या सर्वांचाच त्यामध्ये सहभाग व समन्वय असतो.
३. नाटक या संकल्पनेचा अर्थ सांगतांना नाटकाच्या स्वभावदर्शन, संघर्ष, पात्रे, संवाद इ. प्रमुख अंगे उल्लेख केलेले आहे.
४. नाटक ही भाषिक कलाकृती बरोबरच प्रयोगनिष्ठ कलाकृती आहे. त्यामुळे त्यात नैपथ्याचा, संवाद, अभिनय, पात्र, प्रसंग संगीत यांचा कलात्मक समन्वय प्रस्थापित केलेला असतो.
५. नाटकाच्या वाङ्.मयीन मूल्याबरोबरच प्रयोगमूल्यही तेवढेच महत्त्वाचे आहे. नाटयमूल्य हे नाटकाचे प्राणतत्व आहे.
६. नाटकाचा जन्म मुलतः लोकरंजन करण्याच्या हेतूने झालेला दिसतो. मात्र हळूहळू लोकरंजनाबरोबरच लोकप्रबोधन या उद्देशाने नाटकाची निर्मिती झालेली आहे.
७. मराठी रंगभूमी अनेक लोककला प्रकारातील कलांचा संस्कार स्वीकारत १८४३ मध्ये सांगली येथे उदयास आली.
८. विष्णूदास भावे निर्मित 'सितास्वयंवर' हा मराठीतील पहिला नाटयप्रयोग होय, तो सांगली येथे दाखविण्यात आला होता.
९. प्रेक्षकाशिवाय प्रयोग संभवत नाही व नाटय प्रयोगाशिवाय नाटकाच्या वाङ्.मयीन रूपाला पूर्णत्व येत नाही म्हणून नाटक या साहित्य प्रकाराच्या बाबतीत प्रेक्षक हा महत्त्वाचा घटक ठरतो.
१०. बदलत्या सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितीसोबत नाटक, त्याचे तंत्र व सादरीकरण पाहिले बदल होत गेलेले दिसतात.

संदर्भसूची

१. श्री लक्ष्मणशास्त्री जोशी, 'भारतीय संस्कृती कोश खंड ४', पृ.क्र. ७५८
२. श्री लक्ष्मणशास्त्री जोशी, 'मराठी विश्वकोश खंड ८', मुंबई १९९५ पृ. क्र.४५१
३. श्री लक्ष्मणशास्त्री जोशी, 'भारतीय संस्कृती कोश खंड ४', पृ. क्र. ७५९
४. तगैव, पृ.क्र. ७५९
५. सुनिता सहस्त्रबुध्दे, मराठी नाटकातील संवाद, पुणे पृ.क्र ८
६. श्री लक्ष्मणशास्त्री जोशी, 'मराठी विश्वकोश खंड ८', पृ.क्र ४५१
७. श्री कृष्णाजी आवाजी गुरूजी 'नाटकाची स्थित्यंतर, समाविष्ट रंगभूमी मासिक', अंक ११-१२
८. सुनिता सहस्त्रबुध्दे, उनि, पृ.क्र. १२
९. प्रभा गणोरकर वसंत आवाजी डाहाके इ. 'वाङ्मयीन संज्ञा संकल्पना कोश', मुंबई २००१, पृ. क.
२४८
१०. सुनिता सहस्त्रबुध्दे, उनि, पृ. क्र. ६
११. सुनिता सहस्त्रबुध्दे, उनि, पृ. क्र. १७
१२. न. चि. केळकर, 'कोल्हटकर लेखनसंग्रह', पृ. क्र ४०
१३. ना. सि. फडके, 'प्रतिभा साधन' पुणे पृ.क्र. १६०
१४. विजय तेंडूलकर, 'मराठी नाटक आणि मी' ठाणे, एप्रिल १९९७, पृ. क्र ३८
१५. श्री. ना वनहट्टी, 'मराठी नाट्यकला व नाट्यवाङ्मय', पृ. क्र. ४९,
१६. श्री. ना. वनहट्टी, उनि. पृ.क्र. २७

